डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य का विशेष अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी में पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध - प्रबन्ध

वर्ष - 2007

शोध - निर्देशिका

डॉ0 (श्रीमती) कमलेश आनन्द
(भूतपूर्व रीडर - हिन्दी विभाग)
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय,
झाँसी (उ0प्र0)

शोधार्थिनी

सरिता उपाध्याय
(एम0ए0)

बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)
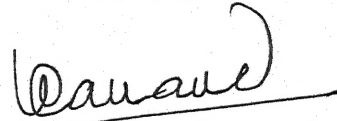
प्रमाण - पत्र

सहर्ष प्रमाणित करती हूँ कि सरिता उपाध्याय ने मेरे निर्देशन में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शोध केन्द्र बुन्देलखण्ड महाविद्यालय झाँसी से हिन्दी विषय के शोध छात्रा के रूप में पंजीकृत होकर "डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य का विशेष अध्ययन" विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण करने हेतु यथाविधि निर्देशन प्राप्त किया । अपनी प्रशंसनीय प्रतिभा और गम्भीर एवं सतत् अध्यवसाय के द्वारा इन्होनें अपना शोध प्रबन्ध पूर्ण कर लिया है तथा शोधार्थिनी 200 दिन शोध-केन्द्र पर उपस्थित रही ।

उर्पयुक्त शोध प्रबन्ध सर्वथा मौलिक और महत्वपूर्ण है। मैं इसका परीक्षण किये जाने हेतु उचित कार्यवाही के लिए अपनी संस्तुति प्रदान करती हूँ ।

दिनाँक :

शोध-निर्देशिका

डॉ0 (श्रीमती) कमलेश आनन्द
(भूतपूर्व रीडर हिन्दी विभाग)
बुन्देलखण्ड महाविद्यालय,
झाँसी (उ0प्र0)

घोषणा - पत्र

मैं घोषणा करती हूँ कि बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के अन्तर्गत हिन्दी विषय में विद्यावाचस्पति की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध ''डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य का विशेष अध्ययन'' मेरा मौलिक कार्य है। मेरे अभिज्ञान से प्रस्तुत शोध का अल्पांश अथवा पूर्णांश किसी भी विश्वविद्यालय में विद्यावाचस्पति अथवा किसी भी उपाधि हेतु प्रस्तुत नही किया है।

दिनांक : 18/09/07

शोध-छात्रा

Sarita

(सरिता उपाध्याय)

एम0ए0 (हिन्दी)

आभार

सर्वप्रथम मैं उस परमपिता परमात्मा की अत्यंत कृपा मानती हूँ जिसकी यह सारी सृष्टि स्वयं एक रहस्यमय कहानी है। तत्पश्चात मैं शोध-निर्देशिका डॉ0 (श्रीमती) कमलेश आनन्द (भूतपूर्व रीडर हिन्दी विभाग बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी) के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने निर्देशिका बनकर मेरा पथ-प्रर्दशन किया । उनकी मैं सदैव आभारी रहूँगी । तत्पश्चात डॉ0 (श्रीमती) कुसुम गुप्ता (रीडर हिन्दी विभाग बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी) के प्रति आभारी हूँ । डॉ0 उर्मिला शिरीष पर शोध-कार्य करने के लिए मैंने उनके वृहद साहित्य का अध्ययन किया उसकी गम्भीरता, मौलिकता और उपयोगिता को देखते हुए मैंने शोध-कार्य करने का निर्णय लिया । मेरे इस विचार को मेरे पति (श्री शैलेन्द्र तिवारी) ने विशेष सहयोग देकर इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण कराया, उनके प्रति मैं जन्म जन्मान्तर तक आभारी रहूँगी । मेरे ससुर श्री नरेन्द्र कुमार तिवारी व सास श्रीमती सुशीला तिवारी का भी विशेष सहयोग रहा जिन्होंने मुझे सदा प्रोत्साहित किया ।

इस शोध-प्रबन्ध के लेखन कार्य में मेरे पति श्री शैलेन्द्र तिवारी के अलावा अपने परिवार जनों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ साथ ही साथ शोध-छात्र राकेश कुमार वर्मा जिन्होंने लेखन कार्य में विशेष सहयोग प्रदान किया ।

इस शोध-प्रबन्ध के कतिपय गूढ़-रहस्य, किलिस्ट शब्द विन्यास, भावों की गम्भीरता, कथावस्तु, कथानक, पात्र, चरित्र, चित्रण एवं अन्य अनेक रहस्योद्घाटन

के लिए मैं डॉ0 उर्मिला शिरीष जी के प्रति विशेष आभार प्रकट करती हूँ । जिन्होंने अपने सहयोग से इस शोध-प्रबन्ध को मौलिकता प्रदान की और उन्होनें मुझे समय-समय पर दिशा-निर्देश दिये ।

अन्त में, मैं उनका भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने जाने - अनजाने में मुझे सहयोग देकर इस शोध - प्रबन्ध को सम्पन्न कराया है।

शोधार्थिनी

Sarita

सरिता उपाध्याय

प्राक्कथन

संसार में अधिकतर गद्य साहित्य का क्षेत्र मनुष्य जाति ही रहा है। नारी व पुरुष की बाह्य व आन्तरिक मनोवृत्तियों की कथा पायी जाती है। कथा-साहित्य के दो प्रमुख प्रकार हैं - उपन्यास और कहानी । कहानी को गल्प, आख्यायिका या लघु कथा भी कहा जाता है। आज के युग में कहानी कला का विकास पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित हुआ है । यों कहानी कहने वाले की प्रथा हमारे यहाँ प्राचीन काल से चली आ रही है । कहानी कही जाती थी; जो कही जाय वह कहानी है, कहीं जाने वाली स्यात् इसलिए कि पहले कहानी मौखिक ही होती थी । एक व्यक्ति कहता था दूसरे सुनते थे । कहानी के सहारे थके बटोही विश्राम के क्षणों में मनोरंजन करते थे । दिल को बहलाते थे और दुस्तरमार्ग और लम्बी रातों को कहानी के सहारे काट लेते थे । उस समय राजा रानी की कहानियाँ होती थी । पशु-पक्षियों की कहानी भी अपनी रोचकता में अद्वितीय थी । कहानी का लिखित रूप भी काफी पुराना है। आजकल की कहानी अपने कलात्मक रूप को लेकर आई है। इसमें भी उपन्यास की भाँति गतिशीलता देखने को मिलती है यानी कहानी का रूप परिवर्तित होता चला आया है। आज की कहानी में घटना चक्र घटता जा रहा है। कौतूहल भी कम दिखलाई देता है। अपनी नवीनता में कहानी बुद्धिवाद को लेकर चल रही है। आज का कहानीकार घटना या विचित्रता या चमत्कार का पक्षधर नहीं है वह तो केवल यथार्थ का पक्षघर है, और कहानी में चरित्र के उद्‌घाटन पर बल देता है। उनकी विविधता और भिन्न-भिन्न तरह की विचित्रता को सामने लाता है। जीवन की छोटी किन्तु मर्म भरी समस्याओं को, पेंचीदगियों को सामने लाता है। कोई विचार, कोई बिन्दु, कोई

क्षण ही आज की कहानी का मूल हो सकता है। डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियाँ नारी चेतना पर पूर्णतः केन्द्रित हैं। विश्व में नारी चेतना का भाव जागृत किए जाने के अथक् प्रयासों के बाद भी नारी को आज भी वह स्थान नहीं प्राप्त हो सका है। जो भारत में दाम्पत्य जीवन में पारिवारिक जीवन में, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में प्राप्त है। आज भी भारत देश में नारी को माता, बहिन एवं पुत्री के रूप में वह गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त है जिसका विश्व की शेष सभी संस्कृतियों में सर्वथा अभाव परिलक्षित होता है। भारत की माताएँ, बहिनें एवं पुत्रियाँ अपने पिता, भाइयों एवं पुत्रों से पूर्ण सुरक्षा पाने के विषय में आश्वस्त रहती हैं किन्तु आधुनिकता में पले पाश्चात्य जीवन में, नारी स्वतंत्रता का गौरव गान तो बहुत किया गया और किया जाता है पर नारी में सुरक्षा का कोई आश्वासन भाव जाग्रत नही हो पाता। और तो और, नारी को मताधिकार या सत्ता संभालने का अधिकार देने में भी हिचक अनुभव की जाती है। शास्त्रों में नारी की महत्ता प्रतिपादित की गई है तथा उसे पुरुष से अधिक महत्व भी दिया गया है किन्तु अनेकानेक कारणों से व्यवहार में स्त्री के साथ न्याय नही किया गया है।

अतः आज पुरुष स्त्रियों के लिये या स्वंय नारियों द्वारा अपने लिए समान अधिकार की मांग करने और पूर्ण स्वतंत्रता की आड़ में उनके चारित्रिक आदि पतन की स्थिति के लिए केवल उन्हें दोषी नहीं ठहराया जा सकता । वास्तविक दोष तो उस समाज व्यवस्था का है जिसने उन्हें ऐसा रास्ता अपनाने के लिए वाध्य किया है।

नारी स्वावलम्बन, समानता एवं शिक्षा का प्रभाव बढ़ने के साथ ही नारी को घर से निकलकर जीवन वृत्ति या जीविकोपार्जन में भी चाहे - अनचाहे लगना पड़ा। नारी ने परिवार, पति या पुत्रों आदि की आर्थिक सहायता के लिए या अपना आर्थिक

भार उठाने के लिए या अपनी शिक्षा आदि का सदुपयोग करने या अपने तथा अपने परिवार के लिए सुख सुविधायें एवं विलासता के साधन जुटाने के लिए नौकरी करना प्रारम्भ किया और उससे उत्पन्न अनेक प्रकार के दुष्चक्रों को परिवार में या कार्यस्थल पर झेला। उसके लिए पढ़ने जाना भी मुश्किलें पैदा करता है और न पढ़ना भी, नौकरी करना भी मुश्किलें पैदा करता है, और न करना भी ।

शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक सभी प्रकार से टूट जाना उसकी नियति बन गयी है या नियति बनते देर नही लगती । पग-पग पर उसके लिए बाधाएँ मुँह बाये खड़ी हैं। विधवा या निराश्रित होने पर तो उसे नौकरी करना बाध्यता बन जाती है और उसी के साथ जुड़े यौन शोषण की भी वह शिकार बनती है । उसे कई प्रकार के उत्तरदायित्व निभाने पड़ते है - उसे अपने वृद्ध या असहाय माता-पिता की सहायता के लिए या विधवा माँ की सहायता के लिए या अनाथ भाई बहिनों के लिए या स्वंय अनाथ होने पर मजबूरन आर्थिक समस्याओं से जूझना पड़ता है और उसके लिए उचित-अनुचित सभी प्रकार के व्यवसाय चुनने पड़ते है और हर प्रकार का शोषण स्वीकार करना पड़ता है। यही सभी समस्याओं को लेकर डॉ0 उर्मिला शिरीष ने अपने कथा-साहित्य का सृजन किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में मैंने डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा-साहित्य का गहन अध्ययन किया है। अपनी निर्धारित रूप-रेखा के अनुसार कहानी के विविध पहलुओं पर विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह सब परमात्मा और गुरुजनों की कृपा का फल है।

डॉ उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य का विशेष अध्ययन

अनुक्रमणिका

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य का विशेष अध्ययन

प्रथम अध्याय

कथा - साहित्य की पृष्ठभूमि और डा0 उर्मिला शिरीष

(i) कथा साहित्य : पृष्ठभूमि और कहानी विकास क्रम

(ii) कथासाहित्य पृष्ठभूमि: डॉ0 उर्मिला शिरीष

कथा साहित्य : पृष्ठभूमि और कहानी विकास क्रम

हिन्दी कथा साहित्य : स्वरूप

सृष्टि के अति आरम्भ में जिसे अनादिकाल की संज्ञा प्रदान की जाती है, मानव ने जब पहली बार इस धरती पर पैर रखा होगा और उसकी चेतना की आँखे खुली होंगी। तब सृष्टि के आश्चर्यजनक असीम विस्तार को देखकर निश्चय ही अभिभूत हुआ होगा। अनन्त आकाश, लहरें लेता सागर, गगन-चुम्बी शैल श्रेणियाँ, पर्वतमाला, सघन-वन, वायु वेग से झरने वाला निर्झर, कल-कल प्रवाहिनी सरिता, सूर्य की स्वर्णिम रश्मियाँ और चन्द्र की रजत ज्योत्सना आदि अनेक दृश्य जगत के उपकरणों को कभी भय से, कभी विस्मय से, और कभी प्रेम से, उस आदि मानव ने देखा होगा। जब उसने अपनी इन प्रेम, भय आदि मनोवृत्तियों को पहली बार अपने किसी साथी से कहा होगा वही कथा गंगा की गंगोत्री को ढूंढा जा सकता है। अपने भावों तथा विचारों को रूप देने के लिए मानव-वंश में प्रथम तो मूक संकेतों से काम लिया होगा। किन्तु जब वह पर्याप्त नहीं पड़े एवं सत्य-स्थापना में समर्थ नहीं हुए तब भाषा का अविष्कार कर लिया, प्रेमचन्द्र ने भाषा एवं कथा का जन्म साथ ही माना है वे लिखते हैं -

" कहानी का जन्म तो तभी हो गया था जब मानव ने बोलना सीखा" (1)

---

1. 'कुछ विचार' – लेखक मुंशी प्रेमचन्द पृ0 33

इसी बात को डॉ0 देवराज अलंकारिक शैली में स्पष्ट करतें हैं :- ''जिस तरह हवा में छोटे-छोटे कीटाणु सदा तैरा करते हैं, उसी तरह कथा के संकेत कहाँ नहीं हैं ? सारा विश्व ही वृहद कथा है, जिसका दामन जरा सा निचुड़ा नही कि फरिश्ते उसमें बजू कर धन्य-धन्य करने लगते हैं।'' (1)

'कथ' धातु से व्युत्पन्न 'कथा' शब्द का शाब्दिक अर्थ है - 'वह जो कहा जाये। निःसंदिग्ध रूप से कहने में सुनने की संभावना निहित है। प्राचीन समय से ही 'कथा' शब्द का व्यवहार किसी ऐसी निश्चित घटना के लिए किया जाता रहा है, जिसका परिणाम भी निश्चित है। कथा का क्षेत्र व्यापक है और समय के अनुसार उसमें परिवर्तन भी होते रहे हैं। डॉ. महेश दिवाकर का कथन है - ''सन् 1888 ई0 के आसपास लिखी गई सैयद इंशा अल्ला खॉ की कहानी 'रानी केतकी' को हिन्दी कहानी का पूर्वाभ्यास माना जा सकता है । कतिपय विद्धानों ने पं0 गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी' कहानी (1870 ई0) को हिन्दी की प्रथम कहानी माना जा सकता है। वस्तुतः वे दोनो रचनाएँ वृहद कहानी के रूप में प्रतीत होती हैं।'' (2)

संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत 'कथा' को एक ऐसे अंलकृत गद्य-काव्य के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है, जिसका प्रधान उद्देश्य रस-सृष्टि है। गद्य-काव्य के अनेकानेक लक्षण संस्कृत के अलंकार ग्रन्थों में उल्लिखित है, जिनमें एक बात जो सर्वाधिक स्पष्टता के साथ उभर कर आती है, वह यह है कि एक कहानी या उपन्यास जरूर

---

1. 'उपन्यास इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास' लेखक डॉ0 देवराज उपाध्याय पृ0 53
2. बीसवी सती की हिन्दी कहानी का समाज – 'मनोवैज्ञानिक अध्ययन डॉ0 महेश दिवाकर पृ0 22

है । क्योंकि जब तक कहानी नहीं है, तब तक उसमें आलम्बन आदि विभाव हो ही नहीं सकते । फलतः रस – सृष्टि असम्भव हो जायेगी । क्योंकि, आखिर रस, विभाव, अनुभाव, संचारी, आदि भावों से ही होता है, इसलिए सभी आलंकारिकों ने तो यह मान ही लिया है। कि गद्य–काव्य एक कहानी है। इसके बाद उसके भेद बताये गये हैं । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है । ''यह दो प्रकार का होता है – कथा और आख्यायिका । कहा गया है कि एक का वक्ता स्वयं नायक होता है दूसरे का वक्ता नायक भी हो सकता और कोई और भी हो सकता है।'' (1)

साहित्य दपर्णाकार ने भी गद्य–काव्य के अवान्तर भेदों में कथा और आख्यायिका इन दो साहित्य रूपों की व्याख्या की है। उनके अनुसार कथा में सरस वस्तु, गद्य में कही जायेगी । उसमें कहीं आर्या छन्द भी होगें और कहीं – कहीं वक्त और अपवक्त छन्द भी । आरम्भ में पद्यबद्ध नमस्कार होगा और फिर साधु–प्रशंसा और दुर्जन निन्दा होगीं ।

आचार्य दण्डी के अनुसार – ''यह भेद व्यर्थ का है क्योंकि कहानी नायक कहे या कोई दूसरा कहे, इसमें क्या बन या बिगड़ जायेगा ? फिर वक्त या अपवक्त छन्द हो या न हो, किसी में उच्छ्वास नाम देकर अध्याय भेद किये गये हों और किसी में लंम्भ नाम देकर, तो इन बातों से कहानी का क्या बनता बिगड़ता है। यह तो नितान्त ऊपरी बातें हैं। इसलिए वस्तुतः कथा व आख्यायिका यह नाम ही भर है दोनों एक ही जाति की चीजे हैं ।'' (2)

---

1. 'साहित्य सहचर' लेखक हजारी प्रसाद द्विवदी पृ0 165

परन्तु कथा और आख्यायिका नाम से प्रचलित ग्रन्थों के विश्लेषण के आधार पर विद्धानों ने यह निष्कर्ष भी निकाला है कि कथा की कहानी कल्पित हुआ करती है और आख्यायिका की ऐतिहासिक । कादम्बरी कथा है और हर्ष-चरित्र आख्यान ।

अमर कोश ग्रन्थ के सम्पादक रामचन्द्र तिवारी भी इसी मत की पुष्टि करते हैं - "कथा को ऐसा साहित्य रूप स्वीकार करता है जिसमें कल्पना - तत्व की प्रधानता हो यहाँ 'कल्पना' का अर्थ रचना माना गया है।" (1)

ध्वन्यालोककार श्री आनन्द वर्धन ने कथा के सम्बन्ध में कहा कि - "गद्य की संगठित रचना की बहुलता होने पर भी बन्ध - वृत्ति, रस-गत औचित्य के अनुसार ही संगठन का निर्माण होना चाहिए ।" (2)

कहानी :-

लोक कल्याण भावना और लोक - रंजक तत्व का जितना सुन्दर समन्वय इस विधा में होता है, दिखाई देता है, उतना साहित्य किसी अन्य विधा में नहीं मिलता। ऐसे सशक्त माध्यम के रूप में कहानी मानव-प्रकृति में निहित प्रेरणाओं के अन्तर्विरोध की अभिव्यक्ति कर सकी है तो इसे इसकी सार्थक उपलब्धि माना जाना चाहिए ।

1. 'अमर कोश' सम्पादक रामचन्द तिवारी पृ0 53
2. ध्वन्यालोककार श्री आनन्द वर्धनाचार्य – अनुवादक डॉ0 सागर त्रिपाठी पृ0 774

कहानी – अवधारणा :-

सम्प्रति, अंग्रेजी – शार्ट स्टोरी (Short Story) के हिन्दी पर्याय रूप में कहानी सर्वमान्य रूप से प्रचलित है। यद्यपि स्थूल रूप से कहानी घटना के परिवेश तक ही सीमित प्रतीत होती है, किन्तु यह वस्तुतः मनुष्य के आन्तरिक क्षोभ और संत्रास को संतुलित रखने और उसका संवरण करने में सफल हुई है। सम्भवतः इसीलिए, क्योंकि कहानी मनुष्य की बौद्धिक व सामाजिक अपेक्षाओं से ज्यादा जुड़ी हुयी है। निरन्तर जटिल होते जीवन को वहन कर सकना शायद कहानी के ही रस में है। कहानीकार कमलेश्वर के शब्दों में – "कहानी लिखना काँपती हुई शमशीरों के मध्य जीना है। यह शमशीरें रोशनी की है थके हुए पानी मे बराबर काँपती रहती है।" (1)

कहानी : परिभाषा :-

यद्यपि कहानी की सर्वविदित और सर्वमान्य परिभाषा देना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं, तथापि पाश्चात्य और हिन्दी विद्वानों ने इस दिशा में सराहनीय प्रयास किए हैं। जो इस प्रकार हैं :-

(1) पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार : परिभाषा

पाश्चात्य – विद्वानों में 'रिचर्ड बर्टन' का मत विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिसमें उन्होनें कहानी को साहित्य की प्राचीनतम् विधा के रूप में स्वीकार किया है।

---

1. 'नयी कहानी की भूमिका' कमलेश्वर पृ 57

'रिचर्ड बर्टन' के अनुसार – " कहानी दुनियाँ की सबसे पुरानी वस्तु है, इसलिए आश्चर्य नहीं कि इसका आरम्भ उसी समय से हुआ हो जब मनुष्य ने घुटनों के बल चलना सीखा।" (1)

'जोन हैडफील्ड' के अनुसार – "छोटी कहानी उसे मानते हैं – जो बहुत बड़ी न हो ।"(2)

'एडलर एलन पो' ने भी आकार की लघुता को कहानी का प्रमुख घटक माना है। वे कहते हैं – "कहानी इतनी छोटी होनी चाहिए कि वह एक बैठक में पढ़ी जा सके वह पाठक पर एक ही प्रभाव छोड़े ।" (3)

'फास्टर' का मत है "कहानी सम्बद्ध घटनाओं का वह क्रम है, जो किसी परिणाम पर पहुँचा देता है।" (4)

'हयूवाकर' महोदय के अनुसार – "जो कुछ मनुष्य करे वही कहानी है।" (5)

'बालपोव' के कथन अनुसार – "कहानी में घटनाओं का विवरण होना चाहिए। वह घटना ही नहीं दुर्घटना से भी संकुल हों उसकी गति में तीव्रता हो और उसकी परिणति अप्रत्याशित हो । उसमें दुविधा का आकर्षण माध्यम हो, और परिणति उसकी संकटापन्न हो, कहानी की स्थिति उस घुड़दौड़ की सी है, जिसका आरम्भ व अन्त ही महत्वपूर्ण होता है।" (6)

'सर पोपाक' के अनुसार – "कहानी का प्रत्येक अंश प्रसंगानुकूल और समीचीन होना

---

1. 'शास्त्रीय समीक्षा के सिद्वान्त – लेखक गोविन्द त्रिगुणायत ' पृ0 454
2. 'शास्त्रीय समीक्षा के सिद्वान्त – लेखक गोविन्द त्रिगुणायत ' पृ0 455
3. साहित्य विविधा – लेखक, रमेश चन्द लवानिया पृ0 81
4. 'कथायन' – सम्पादक डॉ0 राजेन्द्र शुक्ल पृ0 8
5. 'कथायन' – सम्पादक डॉ0 राजेन्द्र शुक्ल पृ0 9
6. 'कथायन' – सम्पादक डॉ0 राजेन्द्र शुक्ल पृ0 9

चाहिए । न तो उसके भावों में दुरूहता होनी चाहिए न शब्द जाल । प्रत्येक शब्द, वाक्य – कथन का सम्बन्ध वस्तु चरित्र तथा वातावरण से होना आवश्यक है जब हम कहानी पढ़ चुके तो हमें कुछ ऐसा प्रतीत हो कि इसमें एक भी पंक्ति छोड़ी नहीं जा सकती । कदाचित उनका अभिप्राय यह है कि थोड़े शब्दों में अधिक से अधिक प्रभाव डालना आवश्यक है।'' (1)

'चेखव' के अनुसार – ''कहानी में साधारण से साधारण बातों का वर्णन हो सकता है, जैसे – सैमियोविच ने किस प्रकार मेरिया से विवाह किया – बस इतना ही।''(2)

'सर हयूपोल' के अनुसार – ''कहानी में घटनाओं का विवरण इस प्रकार चित्रित किया जाना चाहिए, कि एक आशातीत विकास दिखाई पड़े । इस विकास की प्रेरिका संक्रियता होनी चाहिए, यह विकास इस प्रकार दिखाया जाना चाहिए कि वह हमारी जिज्ञासा वृत्ति को स्थिर रखते हुये चरम्–बिन्दु का स्पर्श कर एक संतोषजनक पर्यवसिति तक पहुँच जाए ।''(3)

'जे0बी0 ईसनवीन' के अनुसार – ''प्रभाव की एकता, कथानक की श्रेष्ठता, घटना की प्रधानता, एक प्रधान – पात्र तथा किसी एक समस्या का समाधान कहानी में यह पाँच गुण होने चाहिए । कथानक में घटनाओं का ऐसा तारतम्य हो कि तीव्रता सुरक्षित रहे, घटना स्वाभाविक व सम्भाव्य हो, प्रसंग नाटकीय हो, और दुविधा का परिपूर्ण निर्वाह हो'' (4)

---

1. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्वान्त – लेखक – गोविन्द — पृ0 454
2. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्वान्त – लेखक – गोविन्द — पृ0 455
3. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्वान्त – लेखक – गोविन्द — पृ0 456
4. 'कथायन' – सम्पादक डॉ0 राजेन्द्र शुक्ल — पृ0 9

(2) हिन्दी विद्वानों के अनुसार : परिभाषा

पाश्चात्य – साहित्य से प्रभावित होने के अतिरिक्त हिन्दी कहानी साहित्य का एक विशिष्ट स्वरूप भी है । हिन्दी विचारकों और तत्व चिन्तकों के कहानी सम्बन्ध ी मत निम्नवत् दृष्टव्य है –

आधुनिक कहानी के सूत्रधार 'मुंशी प्रेमचन्द' की दृष्टि में कहानी – "कहानी का उद्देश्य सम्पूर्ण मनुष्य को चित्रित करना नहीं, वरन् उसके चरित्र का एक अंश दिखाना है। वर्तमान आख्यायिका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और जीवन यथार्थ और स्वाभाविक चित्रण को अपना ध्येय समझती है, उसमें कल्पना की भाषा कम अनुभूति की मात्रा अधिक रहती है । इतना ही नही है, बल्कि अनुभूतियाँ ही रचनाशील भावना से अनुरंजित होकर कहानी बन जाती है।" (1)

क्रमशः वे अपना मत स्पष्ट करते हुए पुनः लिखते है –

"कहानी ऐसा उद्यान नही जिसमें भाँति – भाँति के फूल और बेलबूटे सजे हुए हों। बल्कि वह एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।" (2)

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' के अनुसार – "सादे ढंग से केवल कुछ अत्यन्त – व्यंजक घटनाएं और थोड़ी बातचीत सामने लाकर क्षिप्र गति से किसी एक गम्भीर संवेदना या मनोभाव में पर्यवसित होने वाली गद्य विद्या कहानी है।" (3)

---

1. 'कथायन' – सम्पादक डॉ0 राजेन्द्र शुक्ल पृ0 9
2. 'कथा भारती' पाठ्य् पुस्तक कक्षा – 12 'भूमिका' पृ0 (ii)
3. 'कथा भारती' पाठ्य पुस्तक कक्षा – 12 (भूमिका) पृ0 (ii)

'बाबू गुलाब राय' का कथन है – "छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है, जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति केन्द्रित घटना या घटनाओं के आवश्यक परन्तु कुछ-कुछ अप्रत्याशित ढंग से उत्थान – पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतुहल पूर्ण – वर्णन हो ।" (1)

'जयशंकर प्रसाद' के अनुसार कहानी की परिभाषा इस प्रकार है – सौन्दर्य की झलक के रस को कहानी कहते हैं वे लिखते हैं – "आख्यायिका में सौन्दर्य की झलक रस है। मान लीजिए आप किसी तेज सवारी से चले जा रहे हैं । रास्ते में एक गोल-मटोल शिशु खेल रहा है, उसकी सुन्दरता की झलक मिलने भर में ही सवारी आगे निकल जाती है। किन्तु उतनी झलक ही इतनी होती है कि उसकी स्थाई रेखा आपके अन्तर्पट पर अंकित हो जाती है। यही काम कहानी भी करती है।" (2)

'गोविन्द त्रिगुणायत' के अनुसार "कहानी आधुनिक साहित्य की वह लध्वाकर गद्यात्मक विधा है। जिसमें कलाकार जीवन या जगत की किसी एक घटना, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, भावना व विचार को लेकर एक निश्चित कला – विधि का अनुसरण करता हुआ ऐसी संवेदना और प्रभवान्विति का सृजन करता है, जो पाठक को भाव – विभोर कर रस – सिक्त करने में समर्थ होती है।" (3)

'अज्ञेय' कहानी की सम्यक् परिभाषा का प्रयत्न न करते हुए मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि कहानी एक क्षण का चित्र प्रस्तुत करती है "क्षण का अर्थ हम चाहे

---

1. 'साहित्य विविधा' – डॉ0 रमेश चन्द्र लवानिया पृ0 82
2. 'साहित्य विविधा' – डॉ0 रमेश चन्द्र लवानिया पृ0 83
3. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्वान्त (द्वितीय भाग) लेखक गोविन्द त्रिगुणायत पृ0 455

एक छोटा काल – खण्ड लगा ले, चाहे एक अल्प – कालिक स्थिति, एक घटना, प्रभावी डायलाग, एक मनोदशा, एक दृष्टि, एक वाह्य या अभ्यन्तर झाँकी, समझ का एक आकस्मिक उन्मेष, संत्रास, तनाव, प्रतिक्रिया, प्रक्रिया इसी प्रकार चित्र का अर्थ वर्णन, निरूपण, रेखांकन, सम्पुंजन, सूचन, संकेतन, अभिव्यंजन रंजन, प्रतीकन, द्योतन, आलोकन, रूपायन जो चाहे लगा लें ।" (1)

हिन्दी कहानी : विकास क्रम

कथा की विकास यात्रा को पाँच भागों में विभाजित करना होगा –

1. प्रथम सोपान (सन् 1900 ई0 से सन् 1910 ई0 तक)
2. द्वितीय सोपान (सन् 1911ई0 से सन् 1919 ई0 तक)
23. तृतीय सोपान (सन् 1920 ई0 से सन् 1935 ई0 तक)
4. चतुर्थ सोपान (सन् 1936 ई0 से सन् 1950 ई0 तक)
5. पंचम सोपान (सन् 1950 ई0 से अब तक)

प्रथम सोपान के अन्तर्गत सरस्वती पत्रिका (1900) के माध्यम से प्रकाशित कहानियों का है। सरस्वती के अतिरिक्त 'इन्दु' नामक हिन्दी कहानी पत्रिका भी उल्लेखनीय है।

प्रथम सोपान में जिन कथाकारों के नाम उल्लेखनीय है। उनमें निम्नलिखित प्रमुख –

---

1. 'सम्पूर्ण कहानियाँ' भूमिका लेखक – अज्ञेय पृ0 7

1. किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'इन्दुमती' (1900)

2. माधव प्रसाद मिश्र कृत 'मन की चंचलता' (1901)

3. किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'गुलबदन' (1902)

4. भगवानदास कृत 'प्लेग की चुड़ैल' (1902)

5. गोपाल गहमरी कृत 'माल गोदाम की चोटी' (1903)

6. गिरजादत्त वाजपेयी कृत 'पंडित और पंडितानी' (1903)

7. रामचन्द्र शुक्ल कृत 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903)

8. बंग महिला कृत 'दुलाई वाली' (1907)

9. वृन्दावन लाल वर्मा कृत 'राखी बंधभाई' (1909)

सन् 1900 से 1910 तक हिन्दी कहानी अपने आरम्भिक रूप में विद्यमान रही । इन कहानियों का स्वर प्रेम एवं लोकरंजन रहा । इस काल में पौराणिक एवं ऐतिहासिक कहानियों की भी रचना हुई, जासूसी एवं वीरतामूलक कहानियाँ भी लिखी गई ।

द्वितीय सोपान :-

हिन्दी कथा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सोपान सिद्व हुआ । जयशंकर प्रसाद की कहानी सन् 1911 ई0 में 'इन्दु' मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई । सन् 1911 ई0 में ही जे0पी0 श्रीवास्तव की 'पिकनिक' और चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की

'सुखमय जीवन' कहानी प्रकाशित हुयी । कहानी के द्वितीय सोपान के यही प्रमुख कथाकार थे। कहानी विकास यात्रा के द्वितीय सोपान के अन्तिम चरण में हिन्दी कथा क्षेत्र में मुंशी प्रेमचन्द्र का पदार्पण हुआ । उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण के कारण कथा क्षेत्र में एक अपूर्व परिवर्तन आया । डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में –

"यह कहानी मनुष्य जीवन की यथार्थ जटिलताओं के भीतर से निकलकर उसकी यथार्थ सीमाओं को स्पष्ट करती है और सत्य को स्वीकार करने की उस महिमामयी क्षमता का परिचय देती है, जो अनेक व्यवधानों के कारण सत्य ही नही दिखाई देती।"(1)

वस्तुतः प्रेमचन्द ने कथा के क्षेत्र में विभिन्न तकनीक के बीच अपनी नवीन तकनीक अपनाई । उन्होंने ही प्रथम बार निम्न वर्ग के आदमी को अपनी कहानियों का विषय बनाया हैं डॉ0 दिवाकर के शब्दों में –

"इस सोपान के प्रतिनिधि कथाकारों के रूप में जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भर शर्मा, कौशिक, चन्द्रधर शर्मा, गुलेरी, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, पं0 ज्वाला प्रसाद शर्मा, राधिकारमण सिंह आदि थे ।" (2)

<u>तृतीय सोपान :-</u>

इस सोपान के प्रतिनिधि कलाकार थे जयशंकर प्रसाद, और मुंशी प्रेमचन्द ही थे, जैसा कि डॉ0 जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल ने लिखा है – "प्रेमचन्द भारतीय जीवन की सामूहिक और समसामयिक परिस्थितियों के चित्रण में अन्यतम हैं। प्रसाद

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द शुक्ल — पृ0 463
2. 'बीसवी सदी की हिन्दी कहानी का समाज – मनोवैज्ञानिक अध्ययन डॉ0 महेश दिवाकर — पृ0 26

की कहानियाँ एक श्रेष्ठ रोमांटिक कवि की कहानियाँ हैं । उनकी कहानियों का संसार भावात्मक है। वस्तुजगत की क्रूरताओं, विषमताओं, भौतिक घात-प्रतिघातों की सच्चाइयों की तस्वीर प्रस्तुत करना 'प्रसाद' का उद्देश्य नहीं है। उनका भाव जगत मूलतः प्रेम का जगत है। इसमें टीस है, साथ ही आदर्श की कौधंभी ।" (1)

इस सोपान के लेखकों में सुदर्शन, पदुमलाल, पुन्नालाल बख्शी, शिवपूजन सहाय, रामकृष्णदास, चण्डीप्रसाद, हृदयेश, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाटी निराला, महादेवी वर्मा, भगवती चरण वर्मा, भगवती प्रसाद वाजपेयी, पण्डित बैचेन शर्मा उग्र, उपेन्द्रनाथ अश्क, जैनेन्द्र आदि प्रमुख हैं। कहानी की कथा वस्तु में कलात्मकता और मनोविज्ञान का प्रभाव परिलक्षित हुआ ।

संवादों में पूर्व की तुलना में स्वाभाविकता एवं नाट्कीयता का समावेश हुआ। शैली में भी वैविध्य परिलक्षित हुआ ।

चतुर्थ सोपान :-

कथा के विकास में जिन प्रमुख दिशाओं की ओर रचनाकारों ने अपनी दृष्टि दौड़ाई उनमें मनोविश्लेषण, वातावरण चिन्तन तथा चरित्रों के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व प्रमुख थे । मनोविश्लेषण को प्रमुखता देने वाले कथाकारों में जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय और इलाचन्द्र जोशी । 'अज्ञेय' जी ने मनोविश्लेषणपरक कहानियों की रचना की । 'यशपाल' ने मनोवैज्ञानिक कहानियों के साथ मध्यवर्गीय जीवन का स्वाभाविक चित्रण

---

1. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, डॉ0 जयकिशन प्रसाद, खण्डेवाल, पृ0 737

किया । 'यशपाल' की भाँति कुछ प्रगतिशील कहानीकार उपन्यास के क्षेत्र में भी आए, जिनमें राहुल, अश्क, डॉ0 रागेंय राघव, चन्द्रकिरण, भगवतशरण उपाध्याय, विष्णु प्रभाकर, कृष्णचन्द्र, नरेन्द्र शर्मा, अमृतलाल नागर, प्रभाकर माचवे आदि प्रमुख हैं।

इस सोपान के कहानी लेखकों में भाषा-शिष्ट और कथ्य सभी क्षेत्रों में नए-नए प्रयोग किये ।

बीसवी शताब्दी तक हिन्दी कथा के विकास में युग चेतना का भी प्रस्फुटन हुआ। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, परिवर्तनों के प्रभाव के कारण हिन्दी कथा में एक विशाल परिवर्तन हुआ । बीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध की हिन्दी कथा – विकास को तीना भागों में विभाजित किया गया है –

प्रथम सोपान (सन् 1956 से सन् 1960 तक)

द्वितीय सोपान (सन् 1961 से सन् 1975 तक)

तृतीय सोपान (सन् 1975 से आज तक)

प्रथम सोपान –

स्वतंन्त्रता – प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी कथा साहित्य ने एक नया आयाम ग्रहण किया । कहानियाँ, विषयवस्तु, चेतना शिष्य आदि की दृष्टि से नवीन भंगिमाओं की ओर अग्रसर हुयी । पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव के कारण राष्ट्रीयता के स्थान पर

अन्तराष्ट्रीयता ने स्थान ग्रहण किया । गाँधीवाद के स्थान पर साम्यवाद का प्रभाव परिलक्षित होने लगा । भारतीय जीवनादर्श के स्थान पर पाश्चात्य का रंग परिलक्षित हुआ । डॉ0 शिवकुमार शर्मा का कथन द्रष्टव्य है –

"सामाजिक पारिवारिक, वैयक्तिक विषमताओं, विसंगतियों और विकृतियों को इस सोपान की कहानियों में स्थान मिला । इन्हें 'नई कहानी' के नाम से जाना गया ।" (1)

'डॉ0 नामवर सिंह' ने इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली 'कहानी पत्रिका' में सन् 1952 के आसपास नई कहानी को परिभाषित किया । जो इस प्रकार है –

"निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' नामक कहानी को नई कहानी की प्रथम कहानी कहा। समकालीनों में निर्मल वर्मा पहले कहानीकार हैं। जिन्होंने' पुरानी कहानियों के दायरे को तोड़ा है – बल्कि छोड़ा है, और आज के मनुष्य की गहन आन्तरिक समस्या को उठाया है।' (2)

इस सोपान के प्रसिद्ध कहानीकारों में निर्मल वर्मा, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, अमरकान्त, भीष्मसाहनी, मन्नू भण्डारी, ऊषा प्रियंवदा, कृष्णा सोव्वती, नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनकी कहानियाँ आधुनिक जीवन के साथ – साथ नारी की विविध स्थितियों, मान्यताओं, भावनाओं, इच्छाओं, संवेदनाओं, विकृतियों, एवं विषमताओं के यथार्थ चित्र भी बड़ी सजीवता एवं तत्परता के साथ अंकित हुए हैं।

1. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृतियाँ, डॉ0 शिवकुमार शर्मा, पृ0 702
2. कहानी, नई कहानी, डॉ0 नामवर सिंह पृ0 67

द्वितीय सोपान :-

सन् 1960 के बाद की हिन्दी कहानियों में एक बदलाव आया । सन् 1960 के बाद की कथा रचना की एक ऐसी रचनात्मक चेतना सामने आयी जो अपनी पूर्ववर्ती रचनाओं से कई अर्थो में भिन्न थी । यह भिन्नता जीवन दर्शन, रचनाबोध, प्रतिबद्ध जीवनमानों के अन्तर्गत आयी । इस सोपान की कहानियों को समकालीन कहानी कहा गया । समकालीन का अर्थ 'समसामयिक' से है। 'गंगाप्रसाद विमल' के शब्दों में -

"पूर्ववर्ती पीढ़ी से अलगाव का मोटा बिन्दु 'समकालीन जीवन दृष्टि' का बिन्दु है।" (1)

सातवें दशक की कहानी संवेदना और अभिव्यक्ति में पहले पूरी तरह भिन्न थी । 'राजेन्द्र यादव' के शब्दों में -

"साठोत्तरी कथाकारों ने सचमुच कहानी को नया अर्थ दिया ।" (2)

इन कहानियों में मध्य और निम्न वर्गो की कुण्ठा, निराशा, अकुलाहट, पीड़ा, अभावग्रस्त, विवशता आदि का चित्रण अधिक गहनता और मार्मिकता के साथ हुआ । इस सोपान के प्रसिद्ध कहानीकारों में निर्मल वर्मा, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, अमरकान्त, भीष्म साहनी, मन्नू भण्डारी, ऊषा प्रियवंदा, कृष्णा सोवती, प्रभृति नाम उल्लेखनीय है। अन्य कहानीकारों में हरिशंकर

---

1. समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि, डॉ0 धनजंय , पृ0 165
2. समकालीन हिन्दी कहानी : दशा और दृष्टि में प्रकाशित राजेन्द्र यादव का लेख, 'प्रयोग की प्रक्रिया' सम्पादक राजेन्द्र यादव पृ0 7

परसाई, रमेश वक्षी, केशव प्रसाद मिश्र, शेखर जोशी, मार्कण्डेय, रामकुमार, नरेश मेहता, रवीन्द्र कालिया, कृष्ण बलदेव वेद, अनीता, ज्ञानरंजन रेणु, से0 रा0 यात्री, शानी, राजेन्द्र अवस्थी, नरेन्द्र कोहली आदि अनेक कहानीकार है। हिन्दी में चीनी, रूसी, फ्रेंच इत्यादि से कहानियों का अनुवाद भी किया गया । इन अनुवादकों में शिवदान सिंह चौहान, सन्तोष गार्गी, कान्ति चन्द्र, राजेन्द्र यादव आदि के नाम उल्लेखनीय है।

सचेतन कहानी – सन् 1960 के पश्चात् सचेतन कहानी अस्तित्व में आई । 'डॉ0 देवेश ठाकुर' के अनुसार ''डॉ0 महीप सिंह और डॉ0 आनन्द प्रकाश जैन सचेतन कहानी के आधार स्तम्भ बने। डॉ महीप सिंह ने 20 सचेतन कहानियों का एक सचेतन कहानी विशेषांक नवम्बर 1964 में निकाला । डॉ0 महीप सिंह ने सचेतन को एक दृष्टि माना है।'' (1)

'उपेन्द्रनाथ अश्क' ने 'सचेतन' कहानी के समर्थन में अपने विचार व्यक्त किये – ''अधिकांश सचेतन कहानीकारों की दृष्टि सचेतन, स्वस्थ और समाजपरक है और शिल्प अधिकांश का सीधा–सरल और कहानी का आकार छोटा है।'' (2)

---

1. हिन्दी कहानी का विकास, सम्पादक डॉ0 देवेश ठाकुर – पृ0 116
2. हिन्दी कहानी का विकास, सम्पादक डॉ0 देवेश ठाकुर – पृ0 15

'डॉ0 महीप सिंह' के अनुसार – "सचेतन कहानी को सक्रिय भाव क्रोध, तथा जीवन की स्वीकृति की कहानी कहा है।" (2)

'डॉ0 राजीव सक्सेना' के अनुसार – "सचेतन कहानी मनुष्य की चेतना एवं सक्रियता की कहानी है।" (3)

तृतीय सोपान :-

साठोत्तरी, समकालीन, सामयिक या सचेतन अथवा अक्श की कहानी आदि नाम सन् 1960 के बाद की हिन्दी कहानी को दिए गए । 1974 के 'सारिका' के अंक मे कमलेश्वर ने 'समानान्तर' कहानी के नाम से एक नारा दिया । उन्होंने 'समानान्तर' कहानी के नाम से 'आम आदमी' के आसपास की कहानियाँ प्रस्तुत की । ये कहानियाँ सामान्य जन की अपराजेय परम्परा की कहानियाँ बनकर आयी । इन कहानीकारों में राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, ऊषा प्रियवंदा, मन्नू भण्डारी, भीष्म साहनी, कमलेश्वर, अमरकान्त, ज्ञान-रंजन, धर्मवीर भारती, श्री लाल शुक्ल, रवीन्द्र कालिया, कृष्णा सोवती, मृदुला गर्ग, नरेन्द्र कोहली, उर्मिला शिरीष आदि प्रमुख कहानीकारों को स्थान मिला ।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की कहानियों को विभिन्न नारों अथवा आन्दोलनों के द्वारा सजाया गया । इन्हें अकहानी, लघु-कहानी व ग्राम कथा (आँचलिक कथा) कहा गया ।

---

1. सचेतन कहानी विशेषांक (भूमिका) नवम्वर 1964 संपादक डॉ0 महीप सिह पृ0 (ii)
2. सचेतन कहानी : साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य, डॉ0 राजीव सक्सेना – पृ0 14

हिन्दी कहानी अपने विकास की महत्वपूर्ण यात्रा में निरंतर गतिशील है। आज के कथा साहित्य में नए भाव, बोध, नई शैली, नए शिल्प, नए कथ्य , तथा नई भाषा की सर्जना की है। आज कथा साहित्य की समृद्धि को देखकर यह आशा दृष्टिगोचर होने लगी है कि भारतीय कहानी - साहित्य विश्व कहानी साहित्य की कोटि में अपने उज्जवल भविष्य को सुरिक्षत करती हुई निरंतर परिष्कृत एवं परिवद्धित होती रहेगी ।

(ii) कथा साहित्य पृष्ठभूमि : डॉ0 उर्मिला शिरीष

दशवें दशक के कहानीकारों ने विभिन्न पारिवारिक सामाजिक सम्बन्धों के माध्यम से जीवन मूल्यों को निरूपित किया है। राकेश वत्स का कहानी संग्रह 'एक बुद्ध और' की कहानियों में पारिवारिक जीवन देखा जा सकता है।

इस युग के कहानीकारों ने परिवेश को उभारकर जीवन के विशिष्ट प्रसंगों, घटना सन्दर्भों को केन्द्र में रखकर अपनी कहानियों का ताना बाना बुना है। तथा कथ्य और शिल्प के माध्यम से अपनी रचनाओं को सोद्देश्य पूर्ण बनाया है।

दशवें दशक के कुछ कहानीकारों ने अपनी कहानियों में समाज में बदलती नारी की स्थिति तथा नारी के बढ़ते कदमों को विभिन्न कोणों से व्यक्त किया है।

उर्मिला शिरीष की कहानियों में भी नारी चेतना की बात उभर कर सामने आती है। डॉ0 सतीश मिश्रा के अनुसार "आधुनिक कथाकारों में उर्मिला जी का भी अपना एक स्थान है। ये एक लम्बे अरसे से लेखन से जुड़ी हैं।" (1)

'उर्मिला शिरीष' की कहानियों के बारें में 'डॉ0 रामचन्द्र मालवीय' लिखते हैं "इन कहानियों को पढ़कर ऐसा लगा कि लेखिका में आम जिन्दगी की पीड़ा और त्रासदी को अनुभव करने की क्षमता है, परन्तु इसके साथ ही वे जीवन का उजला शुभ पक्ष ग्रहण नहीं कर पाई हैं। जिन्दगी में उज्जवलता की स्वयं रेखा कहीं तो होनी चाहिए ।" (2)

---

1. 'गंगा' फरवरी 1986 लेख डॉ0 सतीश मिश्र
2. दैनिक भास्कर (म0प्र0) भोपाल, सम्पादक – राकेश तिवारी लेख डॉ0 मालवीय

कहानी ने आठवें और नवें दशकों में जितनी प्रगति की है, वह उल्लेखनीय है। कहानी प्रयोगवाद और यथार्थवाद की तरफ बढ़ी है। एक तरह बड़े – बड़े महानगरों का जीवन – रिश्तों नातों को पीछे छोड़ता मनुष्य और दूसरी तरफ ग्रामीण जीवन, जो कई जगह अब भी शहरी प्रभाव से कोसों दूर है। 'मुआवजा' कहानी संग्रह की समीक्षा के आधार पर –

''इन्ही दोनों स्थितियों का बड़ी निपुणता से लेखिका ने मुआवजा कहानी संग्रह में उल्लेख किया है।'' (1)

''आज की पीढ़ी अपनी भाव सम्पदा, वर्णना वैभव, भाषिक नवीनता और नये मूल्यों की चेतना के कारण ही विशिष्ट बन सकी है।'' (2)

इस दौर की महिला कथाकारों के बीच कहानी की अनूठी भावसत्ता और विलक्षण शैलिकीय आयोजना के कारण 'उर्मिला शिरीष' का नाम अब अनजान नहीं रह गया है आज की हिन्दी कहानी में मौजूद मूल्य – चिन्ता और शिल्प – व्यवस्था की सारी नूतनताएँ, उर्मिला शिरीष के कथा सृजन में विद्यमान है। आज उर्मिला शिरीष का नाम कहानी जगत में सर्वोच्च स्थान पर है।

---

1. हिन्दुस्तान, 12 दिसम्बर 1998, सम्पादक, रमेश पठानिया
2. 'कहानी समीक्षा' समीक्षक डॉ0 बालेन्दुशेखर तिवारी (हिन्दुस्तान मेंहदी) 15.12.98

(ख) कथा लेखिका का व्यक्तित्व :-

यद्यपि व्यक्तित्व की एक सम्पूर्ण एवं समुचित परिभाषा देना कठिन कार्य है, फिर भी साधारण रूप में यह कहा जा सकता है। कि

"यह मनुष्य के समग्र व्यवहार का विशेष साँचा है।" (1)

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अपने तन, मन, बुद्धि और व्यवहार की क्षमताओं के अनुरूप व्यक्त होता है। यह व्यक्त या प्रकाशित होना ही व्यक्तित्व है। डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे लिखते हैं -

"यह मनुष्य के व्यवहारों का दर्पण होता है। यह उसके गुण, अवगुण, अनुभव, चितंन - प्रक्रिया आदि का संगठित रूप है।" (2)

'एल0 रॉस्क' के अनुसार -

"वास्तव में किसी व्यक्ति की वे समस्त योग्यतायें, अभिवृतियाँ और दूसरी बाह्य एवं आन्तरिक विशेषताएँ जो उसे अन्य व्यक्तियों से विलग करती है, उसका व्यक्तित्व कही जा सकती है।" (3)

मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण वातावरण एवं परिस्थितियों के अनुरूप होता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश के अनुसार इसका विकास होता हैं। जन्म से मृत्यूपर्यन्त यह विकास प्रवाहमान रहता है।

'डॉ0 हरिश्चन्द्र वर्मा' लिखते है -

"किसी लेखिका के व्यक्तित्व के अध्ययन का विशिष्ट महत्व होता है, क्योकि

---

1. "Pattern of an Individual total behaviour" Ed. Howard C. Warem, Dictionary of Psychology Page No - 197
2. 'समाज मनोविज्ञान', डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे पृ0 107
3. Psychology and life - F Loys L. Ruck Page No. - III

उसके साहित्य में स्थित विचार धारा का मूल उसके व्यक्तित्व में ही होता है। जिस कृतिकार का अन्तर्जगत महान संस्कारों गहन और व्यापक संवेदनाओं, अडिग आस्थाओं और सशक्त प्रेरणाओं से अनुप्राणित होता है, उसकी कृति का स्वरूप अनिवार्य रूप से उदात्त होता है। व्यक्तित्व की गरिमा कृतित्व की गरिमा का मूल स्त्रोत है।"(1)

जीवन की परिधि में परिवार का रिश्ता भौतिक आधार है। नारी परिवार की अभिन्न अंग ही नहीं, उसकी धुरी है। परिवार में नारी के लिए कोई कार्य असम्भव नहीं । एक चेतना प्रभाव, नारी अस्तित्व को जन्म देता है। प्राचीन भारतीय चिन्तन की दो दिशायें, जो महाभारत, रामायण कथा के साथ पौराणिक कथाओं से जुड़ी है, नारी की महानता को स्वीकार ही नहीं करती बल्कि अंगीकार भी करती है।

"नारी का रूप भले ही आकर्षण का केन्द्र बिन्दु रहा हो, पर नारी जीवन, नारी मन की अनन्त चेष्टाओं के निर्माण को जन्म देता है। मेरा तो अपना मन यही कहता है कि नारी सृष्टि है, जन्म से मरण तक यात्रा में भले कंधा न दे, पर अपने मन से यात्रा की पूर्ण आहूति तो अवश्य करती है।" (2)

सरल, सहज, शालीन, सामान्य कद – काठी और उतने ही साधारण भारतीय वस्त्रों को धारण करने वाली उर्मिला शिरीष जी को देखकर ऐसा लगता है कि यथार्थ को पा लेना, उनकी अपनी व्यवस्था तो है ही, पर उनका अपना चिन्तन स्वच्छ लेखन

---

1. हिन्दी के श्रेष्ठ काव्यों का मूल्याकंन' सम्पादक – डॉ0 यश गुलाटी लेख – डॉ0 हरिश्चन्द्र वर्मा 'परिमल' पृ0 470
2. क्रान्तिघोष (साप्ताहिक), 10 नवम्बर 1988

व भाषा के रूप में परिभाषित करता है।

नारी जीवन से जुड़ी स्थितियों, परिस्थितियों सच्चाइयों को जो कुछ देखती है, उसे चिन्तन पक्ष पर अपनी स्वतन्त्र कलम से कागज पर उतार देती है, तब जाकर उनके हृदय में लगी टीस कुछ कम होती है।

लेखन प्रतिभा की धनी डॉ0 उर्मिला शिरीष जी का जीवन एक खुली किताब की तरह है। वैसे तो उनके कथा रचना का वैचारिक परिप्रेक्ष्य जन-जन की समस्याओं से ओत-प्रोत है, लेकिन नारी जीवन की समस्याओं पर उन्होंने विशेष रूप से लेखनी चलायी है। उन्होंने नारी समस्याओं को उसके मन से युद्ध द्वन्द्व के परिप्रेक्ष्य में देखा और समझा है । जहाँ समानता का स्तर प्रदान करने की बात संघर्ष रूप में आयी है, वहीं उनका नारी मन ज्वालामुखी की भाँति विस्फोट हो उठा है।

उनका मुस्कुराता चेहरा, उनके लिबास की सादगी, सुहाग चिन्हों को धारण करने की अनिवार्यता से परे बेहद सादे व्यक्तिव की धनी डॉ उर्मिला शिरीष जी को देखकर सहज अंदाजा नही लगाया जा सकता है कि ये उर्मिला शिरीष है, जिन्होंने अपने सशक्त लेखनी से हिन्दी कहानी संसार में हलचल मचा रखी है।

डॉ उर्मिला शिरीष के व्यक्तित्व निर्माण का श्रेय उनके पूरे परिवार तथा उनके गुरू जी का रहा है वे एक साक्षात्कार में स्वीकारती हुई कहती हैं -

"श्याम सुंदर जी श्याम की मै चिर ऋणी रहूँगी, जिन्होंने मुझे साहित्य के

व्यापक संसार से जोड़ा है।" (1)

'डॉ0 उर्मिला शिरीष' साक्षात्कार में अपने ससुराल पक्ष के बारे में कहती है-

"मै सौभाग्यशाली रही कि मेरे स्वर्गीय सुसर की हार्दिक इच्छा थी कि मै बड़ी लेखिका बनूँ । उन्होने प्रोत्साहित तो किया ही और पति डॉ० शिरीष का तो पूरा सहयोग मिलता ही रहा है। मेरी रचनाओं के पहले पाठक, आलोचक और प्रशंसक वही होते हैं।" (2)

आधुनिक लेखिकाओं में डॉ0 उर्मिला शिरीष का महत्वपूर्ण स्थान है। समकालीन हिन्दी कथा संसार में महिला लेखकों की अत्यन्त सशक्त उपस्थिति है। लेखिकाओं की एक पूरी पीढ़ी उस दौर में बहुत महत्वपूर्ण होकर उभरी है। यह शायद पहले के दौर में नहीं था । लेखिकाएँ लिख रही थीं, लेकिन इधर जिस तरह उन्होंने महिला लेखिकाओं की पूर्व धाराणाओं को तोड़ा है वह इसी दौर की खासियत है।

---

1. 'गीताजंली सरोवर' नई दिल्ली मार्च (द्वितीय) 2003 (मौके से मुलाकात)
2. 'गीताजंली सरोवर' नई दिल्ली मार्च (द्वितीय) 2003 (मौके से मुलाकात)

कथा लेखिका : डॉ० उर्मिला शिरीष

डॉ0 उर्मिला शिरीष का जीवन परिचय

जन्म - आपका जन्म 19 अप्रैल 1959 ई0 को मध्य प्रदेश के दतिया जिले के आसेर नामक गांव के सनाढ्य ब्राहम्ण परिवार में हुआ । साहित्यिक, धार्मिक तथा राजनीतिक वातावरण के साथ, शिक्षित सम्भ्रान्त संस्कारवान् परिवार की प्रतिष्ठा इस समय दूर - दूर के गांवों में थी । आपके पूर्वजों का संबंध दतिया महाराज से था ।

शिक्षा - आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव में हुई। बाद में जहाँ-जहाँ पिता रहे वहाँ हुई। बी0ए0, एम0ए0 की शिक्षा भोपाल में हुई । पढ़ाई में आद्योपांत प्रथम श्रेणी रही। एम0ए0 हिन्दी साहित्य में भोपाल विश्वविद्यालय में तृतीय स्थान प्राप्त किया । आपने गुरूनानक देव यूनिवर्सिटी से "मोहन राकेश के कथा साहित्य में नारी पात्रों का अध्ययन" विषय पर पीएच0डी0 उपाधि प्राप्त की थी। "गोविन्द मिश्र के कथा साहित्य में भारतीयता की अवधारणा" विषय पर डी0लिट् की उपाधि के लिए भी आपने कार्य किया ।

नौकरी- आप 1984 ई0 से महाविद्यालय की नौकरी में आई । वर्तमान में शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय मे हिन्दी की प्रोफेसर रही ।

साहित्य सृजन का आरम्भ – बचपन से ही घर में साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं तथा पुस्तकों को देखकर आपके साहित्य के प्रति अनुराग जागृत हुआ । चंदा मामा, नंदन, पराग, सरिता .... बच्चों की पत्रिकाएं पढ़ी। बाद में धर्मयुग सारिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, रविवार, माया, दिनमान सहित सभी तरह की पत्रिकाओं को पढ़ते हुये लेख लिखने से साहित्य के प्रति रूचि पैदा हुई । आपक बड़े भाई डा0 आर0एस0 गोस्वामी उन दिनों लिखा–पढ़ा करते थे उनकी देखा – देखी पढ़ने में आपकी काफी रूचि जागी और बी0ए0 प्रथम वर्ष तक आते – आते अन्ना कारेनिना सहित प्रेमचन्द, शरतचन्द टैगोर, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, चित्रा मुदगल, ममता कालिया सहित उस समय के तमाम रचनाकारों को आपने पढ़ा । आपकी पहली कहानी ग्वालियर से प्रकाशित नवभारत पत्र के रविवारीय संस्करण में प्रकाशित हुई । धीरे–धीरे लेखन की शुरूआत हुई। बीच में छः वर्ष का गैप रहा, जब बच्चे छोटे थे ।

शादी – आपका विवाह डा0 शिरीष कुमार शर्मा से 1985 ई0 में जो पेशे से चिकित्सक है पर साहित्य में पूरी तरह से सहयोग देते है। श्वसुर स्वर्गीय बी0एल0 शर्मा का साहित्य को लेकर बेहद गहरा लगाव था और आपको बड़े साहित्यकार के रूप में देखने का सपना था।

माता–पिता – आपकी माँ गिरिजा गोस्वामी बहुत सीधी–सादी एवं घरेलू महिला है। बहुत संदुर परिश्रमी, होशियार महिला है। डॉ0 शिरीष का उनके प्रति बहुत ज्यादा लगाव है और आपकी इच्छा थी कि उन्हें बहुत प्यार और सम्मान दें । आपने उनमें किसी प्रकार का छल–कपट नही देखा है। माता गिरिजा जी में इतने बड़े परिवार को लेकर चलने और सबको समान भाव से रखने का भावना है।

पिता – आपके पिता डा0 डी0वी0 गोस्वामी बहुत ही संघर्षशील जीवट व्यक्तित्व है उनकी अक्षय उर्जा और चेतना डॉ0 शिरीष में आई । आपके पिता ने परिश्रम से अपना जीवन बनाया था । वे बेहद अनुशासन प्रिय है। जीवन में अपने सिद्धान्तों और मूल्यों पर चलना पिता का न हारने वाला स्वभाव आपमें आ गया है वे पेशे से चिकित्सक हैं बाद में भोपाल में दबाओं की फैक्ट्री डालकर उद्योगपति के रूप में प्रतिष्ठित हुए । उन्होंने अपने बच्चों को इच्छा अनुसार पढ़ाया लिखाया । उन्होंने ईमानदारी और परिश्रम जीवन के दो मूल मंत्र दिए।

बचपन – डॉ0 उर्मिला शिरीष का प्रारम्भिक बचपन गांव में बीता इसलिए गांव की बहुत अच्छी स्मृतियां आज भी मानस पटल में हैं। उन स्मृतियों में हैं पलाश के घने जंगल, महकते हुए महुआ, बेर, गेंहू के हरे–भरे खेत ..... बहुत सारे रिश्ते – सम्बंध । गांव में होने वाली राम लीलाएँ

नौटंकी, नटों के खेल। सुआटा, रासलीला, भजन – कीर्तन, फागें .... और है। खौपनाक यादें जब आसपास डाकू डकैती डालते थे, पकड़ करते थे, घरों में आग लगा देते थे । बाद में पढ़ाई के सिलसिले में आप कुछ समय के लिए दतिया फिर ग्वालियर उसके बाद स्थायी रूप से भोपाल में आकर परिवार सहित रहने लगी और अब यहीं पर हैं।

कहानी लिखने की प्रेरणा – कहानी लिखने की प्रेरणा आपको अपनी हिन्दी के अध्यापक श्री श्याम सुंदर से मिली । उन्होंने एक दिवस दिया था कहानी लिखने के लिए । कहानी देखकर उन्होने कहा था कि "तुम कहानी लिख सकती हो इसलिए कहानी लिखो" और तब से आपने कहानी लिखना प्रारम्भ किया । हालांकि बीच में छः वर्ष तक लेखन स्थगित रहा क्योंकि आपके बच्चे छोटे थे।
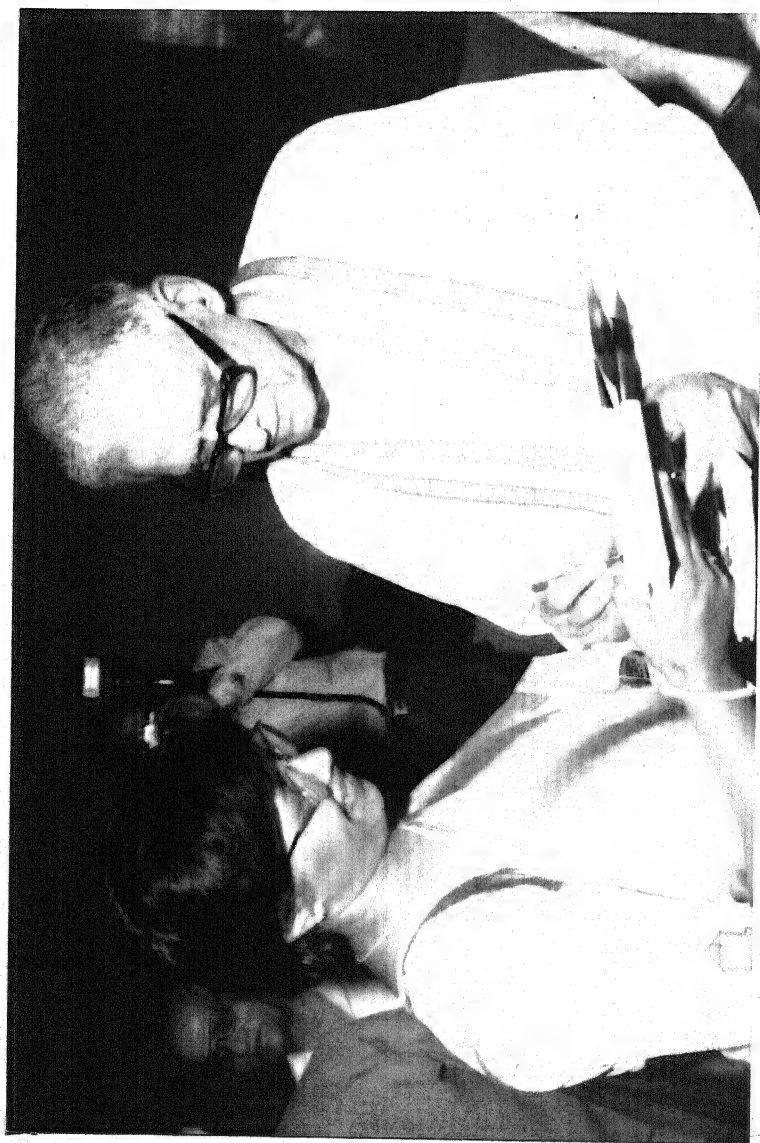
डॉ0 उर्मिला शिरीष द्वारा रचित पुस्तक 'सृजन यात्रा' का लोकार्पण करते हुये तत्कालीन महामहिम राज्यपाल (उ0 प्र0) मान्नीय विष्णुकांत शास्त्री जी

(ग) कथा लेखिका का कृतित्व :-

डॉ0 उर्मिला शिरीष का कथा संसार एक अलग ही दुनिया का निर्माण करता प्रतीत होता है। डॉ0 शिरीष की लेखनी समाज में व्याप्त कुरीतियों को उजागर करती है। नारी के जीवन से जुड़ी स्थितियों, परिस्थितियों सच्चाइयों, जो कुछ देखती है, उसे चिन्तन पक्ष पर अपनी स्वतन्त्र कलम से कागज पर उतार देती है, तब जाकर उनकी अपनी पीड़ा कुछ कम होती दिखाई देती है। डॉ0 उर्मिला शिरीष की लेखनी प्रक्रिया कहानी से शुरू हुई है। उन्होने विभिन्न समस्याओं को लेकर कहानियाँ लिखी है। जैसे – आर्थिक समस्या, शोषण की समस्या, सामाजिक समस्या, राजनीतिक समस्या, नारी की व्यक्तिगत समस्या, वर्गभेद की समस्या, धार्मिक समस्या, वेश्या जीवन की समस्या, सेक्स की समस्या, विवाह की समस्या, वर्णभेद की समस्या, शिक्षा की समस्या आदि समस्याओं के आधार पर कथा साहित्य का प्लॉट तैयार किया है। इन समस्याओं को लेकर डॉ उर्मिला शिरीष ने समाज पर व्यंग्य किया है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष का प्रथम कहानी संग्रह "वे कौन थे" 1983 ई0 में प्रकाशित हुआ । जिसमें दस कहानियाँ इस प्रकार है –

1. यह सच है।
2. दलाल ।

3. अपने लिए ।

4. वे कौन थे ।

5. कन्या ।

6. बाकी सब ठीक है।

7. सपनों की बारात ।

8. कदमों के आगे ।

9. सफर जारी है।

10. लौट जाओ प्यार ।

"वे कौन थे" उदीयमान कथा लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष के पहले कहानी संग्रह 'वे कौन थे' में कुल जमा दस लम्बी कहानियाँ शामिल है। इन कहानियों में लेखिका ने जीवन के विविध पहलुओं को छूने का प्रयास किया है। सन्तोष की बात है कि आज की अनेक कथा लेखिकाएँ जो घरेलू और पारिवारिक विषयों को लेकर कहानियाँ लिख रही हैं, उर्मिला जी उनसे लगभग मुक्त हैं। लगता है, आज के अधिकांश युवा रचनाकार स्थितियों के दबावों से बेहद बैचेन हैं। जन सामान्य की तकलीफों का स्वर उनकी कहानियों में प्रायः विद्यमान रहता है। उर्मिला जी की कहानियों में यह स्वर इतना तीखा – तल्ख तो नही है, मगर यहाँ – वहाँ इसके संकेत अवश्य हैं।

'असगर वजाहत' एक लेख में लिखते हैं – " 'यह सच है" 'वे कौन थे', 'कदमों के आगे', 'सफर जारी है', 'सपनों की बारात' कुछ कहानियाँ है। जो निमी रूढ़ियों से लड़ती हुई अन्ततः अपनी राह खुद बनाती है। " (1)

'डॉ0 सुनीति मिश्र' का कथन है "उर्मिला शिरीष आधुनिक नवलेखन के क्षेत्र में एक उदीयमान कड़ी है, जिनकी तरोताजा कहानी संकलन 'वे कौन थे' है । इस संकलन से जीवन की विविधताओं, विरोधों तथा संसारगत अनेकानेक अनुभूतियों का समाहार लेखिका ने प्रस्तुत किया है।"(2)

प्रसिद्ध पत्रकार 'त्रिलोक दीप सिंह' का कथन है –

"युवा लेखन आज जिस तड़फ के साथ जन सामान्य की दुःख तकलीफों और लड़ाई से संबद्ध है उसकी झलक उर्मिला की कहानियों में मिलती है, भाषा की सबसे बड़ी कमजोरी है।" (3)

'वे कौन थे' संग्रह के शीर्षक की कहानी में तीन नौजवानों को मिली अपेक्षाएं, अपमान, बदनसीबी का गहरा चित्र है। वे जहाँ रहने पहुँचते है वहाँ का हाल भी बुरा है। अंतिम कहानी में ग्रामीण जीवन की गंध है।

'संध्या राय' 'नीरजा लिखती हैं –

"कहानियों की भाषा सहज है और कथानक में नयापन है जो पाठक को सन्तुष्टि प्रदान करता है।" (1)

---

1. ऋतु चक्र जून 1995 पृ0 51
2. नया आलोचक जून 1995 पृ0 62
3. 'अक्षरा' अप्रैल 1984 पृ0 10
4. 'अक्षरा' 20 अक्टूबर 92 पृ0 100

दूसरा कहानी संग्रह "मुआवजा" 1985 ई0 में प्रकाशित हुआ । जिसमें पांच कहानियाँ प्रकाशित है।

1. उसका अपनापन
2. सवाल
3. पलकों पर ठहरी जिंदगी
4. ढहते कगार
5. मुआवजा

'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष अपनी लेखनी से मानव जीवन के विविध पक्षों व सामाजिक विसंगतियों को उभारने में सफल रही है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से मानसिक - अन्तर्द्वन्दों, मनोद्वेगों और मानव-मन की विचित्रताओं का अत्यन्त स्वाभाविक अंकन हुआ है । वैसे तो संकलित प्रत्येक कहानी सरसता, रोचकता व उत्सुकता के रूपहले आवरण मे लिपटी हुयी है । लेकिन इनमें 'ढहते कगार' 'पलकों पर ठहरी जिन्दगी व मुआवजा' कुछ अधिक हृदय स्पर्शी बन पड़ी है।

'मृदुला जोशी' का कथन है - "आधुनिक कथाकारों में उर्मिला जी का भी अपना एक स्थान है। ये एक लम्बे अरसे से लेखन से जुड़ी है। यह इनका द्वितीय कथा - संकलन है । सरल तथा प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखी गयी रूचिकर कहानियाँ पाठ्कों को अवश्य ही प्रभावित करेंगी ऐसा विश्वास है।" (2)

---

1. 'गंगा' फरवरी 1986 पृ0 78

'डॉ० उर्मिला शिरीष' की कहानियाँ हमारे देश की हजारों असमय विधवा हुई स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है। जिन्हें हमारे समाज की वर्जनाओं के कारण अपनी इच्छाओं को दमित कर तिल – तिलकर ही जीना है। यही उनकी नियति है और शायद बेबा होने की गलती या उन्हें यही *'मुआवजा'* भी चुकाना है जिन्दगी – भर ।

डॉ० शिरीष के कहानी संग्रह मुआवजा की कहानियों में आम जिन्दगी की पीड़ा और त्रासदी को अनुभव करने की क्षमता है, परन्तु इसके साथ ही वे जीवन का उजाला शुभ पक्ष ग्रहण नहीं कर पाई हैं। जिन्दगी में उज्जवलता की स्वर्ण रेखा कहीं तो होनी चाहिए ।

'अविनाश' का कथन है – "मुआवजा वास्तव में कहानी है भी नहीं, वह एक अविकसित लघु उपन्यास है।" (1)

'रमेश पठानिया' लिखते हैं – "कहानियों में कई जगह लेखिका ने बहुत ही उत्तम शब्दों का प्रयोग करके उसे और भी रोचक एवं मर्मस्पर्शी बनाया है।"(2)

डॉ० उर्मिला शिरीष द्वारा रचित तीसरा कहानी संग्रह (सम्पादित) "धूप की स्याही" 1986 ई० में प्रकाशित हुआ ।

1. नई नौकरी – मन्नू भंडारी
2. पुष्पहार – शिवानी

---

1. 'दैनिक भास्तक' (म०प्र०) भोपाल 15.12.1999
2. 'हिन्दुस्तान' भोपाल (म०प्र०) 15.12.1999

3. टुकड़ा – टुकड़ा आदमी – मृदुला गर्ग

4. मोह भंग – मालती जोशी

5. यात्रा – मुक्त – राजी सेठ

6. कुत्ते की मौत – मृणाल पाण्डे

7. फरिश्ते – सूर्य बाला

8. दर्द – नमिता सिंह

9. अन्वेषी – मणिका मोहनी

10. खण्डहर और बौन्साई – कुसुम अंसल

11. सौगात – कृष्णा अग्निहोत्री

12. मुट्ठी भर पहचान – सुमित अय्यर

13. केंचुली – उर्मिला शिरीष

'धूप की स्याही' 'धूप की स्याही' कहानियों का संग्रह डॉ0 उर्मिला शिरीष का सम्पादित संग्रह है। जिमसें तेरह अलग–अलग कहानीकारों की कहानियों को चुनकर एक सुगठित संग्रह पाठक के सामने डॉ0 शिरीष ने प्रस्तुत किया । डॉ0 शिरीष भूमिका में लिखती है कि "आज साहित्यकार को अपने लेखन के द्वारा कुछ इतना श्रेष्ठ और क्रान्तिकारी देना है जैसा इससे पहले साहित्यकारों में समय की आवाज सुनकर दिया था, सुना था ..... जो आज भी हमें छूता है ... उद्वेलित करता है और

कहता है – चेतो, जागो, देखो और समझो" । (1)

इस संग्रह में हिन्दी संसार की जानी – मानी कथाकारों की रचनाएँ ली गई है । इन कथाकारों ने साहित्य को अपनी समुचित दृष्टि और जीवनानुभव के साथ रचा है। इनकी रचनाओं में चेतना के स्वर, जीवन के छोटे – बड़े रूप .... परिवार से लेकर देश तक के रूप मुखरित होते हैं। और अभिव्यक्ति के इन्द्रधनुषी मशाल रोशनी करते हैं।

डॉ० उर्मिला शिरीष का चौथा कहानी संग्रह "केंचुली" जो 1990 ई० में प्रकाशित हुआ । इसमें छः कहानियों का संग्रह किया गया है।

1. साझेदारी
2. हिसाब
3. शून्य
4. सिगरेट
5. चौथी पगडण्डी
6. केंचुली

'केंचुली' उर्मिला शिरीष की 'केंचुली' आधुनिक सामाजिक संदर्भ में पल रहे है मौजूद नारी जीवन के बदले उन्मेष की तथ्यपरक कहानियों का एक संकलन है।

---

1. 'धूप की स्याही' – सम्पादिका उर्मिला शिरीष भूमिका

साहित्यिक कहानियों की विडम्बना है कि वे यथार्थ को छूते – छूते रह जाने वाले ऐसे चित्र है, जो लाख प्रयासों के बावजूद झुठलाये भी नहीं जा सकते, उसकी काया समग्र सामाजिक अनुभूतियों, समष्टीजन्य चेतनाओं घटित – विघटित परम्पराओं और संवेदना की झील में डूबते – उतराते संदर्भों का मानक प्रारूप होता है।

निःसंदेह केंचुली की छः कहानियाँ ही समकालीन नारी जीवन के समस्त युगबोध की कहानी नहीं मानी जा सकती । परन्तु वे इसके मानक प्रारूप का प्रतिनिधित्व तो करती ही है।

उर्मिला शिरीष के रचनाएँ बिना किसी आक्रोश व उत्तेजना के स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पर, उसके आंतरिक द्वन्दों पर, उसके प्रति समाज में पल रहे वैचारिक कुंठाओं पर सह प्रहार करती है।

'धनेश दत्त पाण्डेय' के लेख के अनुसार – "ये कहानियाँ नारी समस्याओं पर लिखी जाने वाली फार्मूला कहानियों से अपनी अलग पहचान भी बनाती हैं और शायद यही उर्मिला शिरीष की मौलिकता भी है।" (1)

पाँचवा कहानी संग्रह "सहमा हुआ कल" जो 1990 ई0 में प्रकाशित हुआ । इसमें सात कहानियों का संग्रह है।

1. सहमा हुआ कल

---

1. 'मुहिम' जुलाई – सितम्बर 1991 पृ0 95

2. प्रतिरोध

3. कोशिश

4. बाबा ! मम्मी को रोको

5. शून्य

6. अतीत जीवी

7. सिगरेट

'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष के इस कहानी संकलन की प्रायः सभी कहानियाँ भाव – भूमि, मध्य – वर्ग व कुछ – कुछ उच्च वर्ग से रही है । पर डॉ0 शिरीष ने तत्वों को उभारने का ही अधिक प्रयास किया है। कहानियों के पात्र वास्तविक और 'ट्रीटमेंट' तर्क – संगत एवं क्रमबद्ध हैं। संत्रास की अनुभूतियाँ प्रखर हैं। परिवेश से प्रभावित होकर अचेतन मनः स्थितियों को शब्द, भाषा या बिम्ब के सहारे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है । ये तत्व मुख्यतः कहानियों के नारी पात्रों में सघनता के साथ उजागर हुए हैं क्योंकि स्वयं लेखिका उस वर्ग से आती है।

प्रायः सभी कहानियों के प्रेम, विवाह, दहेज, विवाह से पूर्व एवं विवाह के पश्चात्, परिवार, व्यक्ति, नौकरी, बडे – बड़ों की बीमारी, उनकी मानसिकता, परिवार के संघटन की कथा – व्यथा, जैसी आधुनिक नगरीय जीवन की समस्याएँ इस कथा

– संग्रह में मुख्य विषय है।

डॉ0 उर्मिला का छठवाँ कहानी संग्रह "खुशबू" जो सन् 1993 ई0 में प्रकाशित हुआ । (सम्पादित)

1. नमकदान
2. मैं हार गयी
3. मुक्ति पर्व
4. नूराबाई
5. रामोगति देहु सुमति
6. ब्लेड
7. कितनी बार
8. शक्ति परीक्षा
9. अक्षम्य
10. यही तर्क
11. छोटा डाक्टर
12. हिसाब
13. जमाना बदल गया
14. मेरा गुल्ला कहाँ है
15. उधड़ी हुई कहानियाँ

'खूशबू' उर्मिला शिरीष के अपने संपादकत्व में देश की लब्धप्रतिष्ठ लेखिकाओं की पन्द्रह प्रतिनिधि कहानियों का संकलन खुशबू के रूप में पेश किया, वहीं वे अपनी कहानी भी शामिल करने का मोह संवरण नहीं कर पायी हैं। 'नासिरा शर्मा' की कहानी बदलते संदर्भो में नारी के स्थायित्व का प्रतिबिम्ब है, तो 'चन्द्रकान्ता' की 'नूराबाई' की नायिका नूराबाई और अपनी किशोर बालिका के प्रति पुरूषों की बदलती हुई लोलुप नजरों और उनके शोषण के खिलाफ एक जेहाद का ऐलान करती

प्रतीत होती है। इन कहानीकारों ने नारी की विद्रोही छवि को ही अपने शब्दों में नही बाँधा है, अपितु उसे पुरूषों के संघर्ष की सहगामिनी और संबल के रूप में प्रस्तुत किया है।

संग्रह में चयनित सभी कहानियाँ – जिनमें 'मेहरून्निसा परवेज' की 'जमाना बदल गया है' 'राजी सेठ' की 'यही तक' 'पद्मा सचदेव' की 'मेरा गुल्ला कहाँ है' 'मंजुल भगत' की 'छोटा डाक्टर' सम्मिलित है।

डॉ0 शिरीष का सातवाँ कहानी संग्रह "शहर में अकेली लड़की" जो 1998 में प्रकाशित हुआ था । इसमें आठ कहानियों का संग्रह किया गया है।

1. शहर में अकेली लड़की
2. झूलाघर
3. वानप्रस्थ
4. चौथी पगडण्डी
5. अन्तिम यात्रा से पहले
6. न बन्द करो द्वार
7. दाखिला
8. लौटकर जाना कहाँ है

'शहर में अकेली लड़की' उर्मिला शिरीष का सातवां कहानी संग्रह है। नौवें दशक

के शुरू में उर्मिला जी ने कथा लेखन में अपनी पहचान बनाई ।

'शहर में अकेली लड़की' की निर्द्वन्द निर्भय मनः स्थिति या भानुमति की भाग चलने की मानसिकता या मीनाक्षी का पतिग्रह त्याग या वन्या का पापा को माफ न करना – ये सभी नारी – मुक्ति कामना के ही विभिन्न 'शेड्स' हैं उर्मिला के कहानी पात्र कुछ देर में ही अपने होने अर्थात अपनी अस्मिता की तलाश में सफल हो जाते है । मध्यवर्गीय नारी की विवशता को प्रौढ़ और परिपक्व तरीके से व्यक्त कर सकी है। इन कहानियों में विशेष वर्तुलता न होने से ये सामान्य पाठक वर्ग के लिए भी भली – भाँति ग्राह्य है।

''शहर में अकेली लड़की'' संग्रह की शीर्षक कहानी में अपनी दीदी पर पति के जुल्म का विरोध करती है, अदालत का दरवाजा खटखटाती है। बहुत कठिनाईयों के बाद आतताई पति से मुक्ति मिलती है तो वह दीदी को पुनर्विवाह के लिए तैयार करती है। अपनी लड़ाई जीत लेने की सकारात्मक उपलब्धि उसे बहुत बल देती है।

आँठवा संग्रह ''रंगमंच'' 2001 में प्रकाशित हुआ । इसमें डॉ0 उर्मिला शिरीष ने दस कहानियों का चयन करके पाठको के सामने प्रस्तुत किया है।

1. रंगमंच
2. समुन्दर

3. भाग्यविद्याता

4. चांदी का वरक

5. उस रात का सपना

6. पत्ते झड़ रहे है

7. बांधो न नाव इस ठाँव, बन्धु !

8. स्वाँग

9. तूफान

10. चीख

'<u>**रंगमंच**</u>' डॉ0 शिरीष की कहानियों में मानवीय जीवन तथा सम्बन्धों को परत-दर-परत उधेड़ती उनकी इन कहानियों में भाव, शिल्प तथा संवेदना का अद्‌भूत समन्वय है । आधुनिक समाज के अर्तसंघर्षो तथा द्वन्दों से जूझते पात्र तमाम व्यवस्थाओं के खिलाफ न सिर्फ संघर्ष करते हैं अपितु अपने लिए नया रास्ता भी खोजते है।

आज के न्यायतंत्र, अर्थतंत्र, राजनीतिक घटनाओं के बीच पिसता - टूटता मनुष्य अपनी जरूरतों के लिए जिन्दगी को दाँव पर लगाने के लिए किस तरह विवश है - इस त्रासदी एवं विडम्बना को इन कहानियों में देखा जा सकता है। डॉ0 उर्मिला शिरीष अपनी धारदार दृष्टि तथा सहज - सरल - सी भाषा के द्वारा, जब वे मानव

- जीवन के विविध पक्षों को तलाशती हुई इस उपभोक्ता वादी समाज में मनुष्य के तत्व को खोजतीं हैं तो वो खोज किसी एक मनुष्य, किसी एक परिवार, किसी एक समाज तथा जाति की न होकर समूचे विश्व की हो जाती है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष का नवाँ कहानी संग्रह "निर्वासन"जो सन् 2003 में प्रकाशित हुआ । इसमें नौ कहानियों का संग्रह है।

1. दहलीज पर
2. किसका चेहरा
3. जुड़े हुए हाथ
4. हैसियत
5. प्रतीक्षा
6. निर्वासन
7. पत्थर की लकीर
8. धरोहर
9. उसका अपना रास्ता

'<u>निर्वासन</u>' पिछले डेढ़ - दो दशकों में जिन महिला कथाकारों ने तेजी से अपनी जगह बनाई है तथा जिनकी कहानियाँ आज की जड़ होती हैं दुनिया में एक

संवेदनात्मक हस्तक्षेप की तरह महसूस होती है, उनमें उर्मिला शिरीष भी हैं । अपने कहानी संग्रह 'निर्वासन' में वे काफी सधी हुई भाषा में लिखी गई अपनी ताजा कहानियों के साथ उपस्थित हुई है। उनके अनुभव का रंग कहीं अधिक गाढ़ा नजर आता है।

इस संग्रह की एकदम अलग तरह की कहानी, जिसे भूल पाना नामुमकिन है, 'किसका चेहरा है' । यह कहानी इतनी गहरी उत्तेजना से भरी हुई है कि हम मानो साँस रोककर उसे पढ़ते हैं। अंत तक कहानी के 'पटरी से उतर जाने का भय और आंशका पाठ्क को प्रंकपित करती रहती है।

उर्मिला शिरीष की कहानियों का संग्रह हिन्दी कथा संसार में अपनी ठोस उपस्थिति दर्ज कराता है । पठ्नीयता और भाषा की रवानी इन कहानियों का ऐसा गुण है, जो पाठ्क को पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

दसवाँ कहानी संग्रह "धर्म - अधर्म" जो सन् 2004 में प्रकाशित हुआ जिसमें डॉ0 शिरीष ने नारी समस्याओं को उभारा है। इसमें चौदह कहानियों का संग्रह किया गया है।

1. माया महाठगिनी
2. अश्व भागवत कथा

3. कब तक

4. चमगादड़

5. सुपारी

6. राम कन्या के हसीन सपने

7. प्रेम दिवानी

8. धर्म – अधर्म

9. बिन – सुरताल

10. कंबल

11. धूप अभी शेष है।

12. पुनरागमन

13. गिरगिट

14. चपेटे

'<u>धर्म अधर्म</u>' कहानी संग्रह में वे कहानियाँ है जो गाँव – देहात से शुरू होकर महानगर तक की जीवनानुभूतियों को अभिव्यक्त करती है। छल – कपट, ऊँच–नीच, जातीय द्वेष, दलितों की स्थिति, स्वतंत्रता के बाद भारतीय जीवन की वास्तविक तस्वीर, अभावों के बीच जीता हुआ मनुष्य ...... धधकता हुआ आक्रोश, चुप तड़प, सपनों का टूटना – विखरना, आदि । जो लोक जीवन से लेकर समाज के उच्च वर्ग तक व्याप्त है। बाहर के परिदृश्य में स्त्रियाँ भक्ति रूप में उभरती दिखाई देती है वहीं

दूसरी ओर 'धर्म-अधर्म' की नायिका पारिवारिक हिंसा का, पति की प्रताड़ना का शिकार होती है।

'धर्म - अधर्म' की भूमिका में डॉ0 उर्मिला शिरीष अपने कथा साहित्य में यथार्थ चित्रण को स्वीकारती हुई लिखती है - ''मैं समाज के हर वर्ग के, हर अवस्था के, हर उम्र के पात्रों से मिलती हूँ उनके साथ जुड़ पाती हूँ, उनका अध्ययन करती हूँ, तभी लिखती हूँ । मेरे पात्र काल्पनिक नहीं होते हैं, अपने आसपास के चेहरे होते हैं। जाने - पहचाने चेहरे । जीवन का संघर्ष झेलते पात्र । मृत्यु को पराजित करते पात्र ।'' (1)

ग्यारहवाँ कहानी संग्रह ''पुनरागमन'' जो सन् 2005 में प्रकाशित हुआ । जिसमें डॉ0 शिरीष ने नारी की समस्या को प्रमुखता की संज्ञा प्रदान की है। इसमें अट्ठारह कहानियों का संग्रह है, जो इस प्रकार है।

1. सहसा एक बूँद उछली
2. प्रत्यारोपण
3. मुक्ति
4. माँ, बेटी और चिड़ियाँ
5. डोर

---

1. धर्म – अधर्म, डॉ0 उर्मिला शिरीष (भूमिका)

6. सखा

7. अंतरात्मा की आवाज

8. जीत

9. भय

10. टोहनी

11. पीली धातु

12. मरीचिका

13. चपेटे

14. पुनरागमन

15. गिरगिट

16. अथ भागवत कथा

17. पॅपट शो

18. मन न भए दस बीज

इस प्रकार डॉ0 उर्मिला शिरीष के कुल ग्यारह कहानी संग्रह है। जिसमें मध्यवर्गीय समाज के यथार्थ व नारी की यथार्थ स्थिति को कहानी के माध्यम से प्रकट किया है। समस्याओं का समाधान भी आधुनिक दृष्टि से किया है। कहानी का अन्त वे प्रायः चरमोत्मकर्ष पर कर देती हैं। अतः कहानी अधिक कलात्मक बन जाती है।

संक्षेप में सूक्ष्म निरीक्षक शक्ति, मानवीय संवेदना, जीवन और जगत के अनुभव, सतेज अन्तः-दृष्टि तथा व्यापक सूझ-बूझ के कारण ही दस कहानी संग्रह की रचना कर सकी है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से हिन्दी कहानी साहित्य को समृद्ध बनाया है।

समकालीन कहानी की चर्चित और सशक्त लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष का यह संकलन कई मायनों में महत्वपूर्ण है। इन कहानियों में घटनाएं सीधे – सीधे न आकर परोक्ष रूप में आई हैं, इसलिए जीवन की आंतरिकता, अजेयता , असीमता तथा शाश्वतता के सवाल में उतरकर चितंन की धारा को उद्‌भूत करती है।

'सहसा एक बूंद उछ्ली', मुक्ति, भय, अंतरात्मा की आवाज मरीचिका आदि कहानियाँ जीवन की अंतः शक्ति को तलाशती है, थामती है, विस्तार देती है और आस्था को मजबूत करती है। पुनरागमन की भूमिका में लिखा है कि "जीवन – मृत्यु फिर जीवन प्राप्ति की कामना, शरीर से परे आत्मा का अस्तित्व, सत्य के प्रति समर्पण, प्रेम और प्रेम का गहरा मौन, एहसास स्पर्श" (1)

भाषा और शिल्प का सधा हुआ खूबसूरत प्रयोग इन कहानियों की पठ्नीयता को बढ़ाता है। अनायास निःसृत होती भाषा कहानी के भीतर फैले संसार को आत्मसात् करने में मदद करती है। कहानी में कहानीपन का बोध इनकी सहजता को बढ़ाता है।

---

1. 'पुनरागमन' डॉ0 उर्मिला शिरीष (भूमिका)

सहायक ग्रन्थ - सूची

1. कुछ विचार - मुंशी प्रेमचन्द

2. उपन्यास, इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास - डॉ0 देवराज उपाध्याय

3. बीसवी सदी की हिन्दी कहानी का समाज - मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ0 महेश दिवाकर

4. साहित्य सहचर - हजारी प्रसाद द्विवेदी

5. अमर कोश - सं0 रामचन्द्र तिवारी

6. ध्वन्यालोककार श्री आनन्द वर्धनाचार्य - अनुवादक डॉ0 सागर त्रिपाठी

7. नयी कहानी की भूमिका - कमलेश्वर

8. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त - लेखक गोविन्द त्रिगुणायत

9. साहित्य विविधा - लेखक रमेश चन्द्र लवानिया

10. कथायन - सं0 डॉ0 राजेन्द्र शुक्ल

11. कथा भारती पाठ्य पुस्तक कथा - 12 (भूमिका)

12. सम्पूर्ण कहानियाँ भूमिका लेखक - अज्ञेय

13. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

14. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, डॉ0 जय किशन प्रसाद खण्डेवाल

15. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ0 शिवकुमार शर्मा

16. कहानी, नई कहानी – डॉ0 नामवर सिंह

17. समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि – डॉ0 धनजंय

18. हिन्दी कहानी का विकास सं0 डॉ0 देवेश ठाकुर

19. संचेतन कहानी : साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य – डॉ0 राजीव सक्सेना

20. समाज मनोविज्ञान – डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे

21. हिन्दी के श्रेष्ठ काव्यों का मूल्याकंन – सम्पादक डॉ0 यश गुलाटी

22. धूप की स्याही – सम्पादिका – डॉ0 उर्मिला शिरीष

23. धर्म – अधर्म – डॉ0 उर्मिला शिरीष

24. पुनरागमन – डॉ0 उर्मिला शिरीष

द्वितीय - अध्याय

कथा साहित्य की समकालीन पृष्ठभूमि

समकालीन साहित्य का नवीनतम अंश (भूखी, विद्रोही पीढ़ी, अन्यायवाद, अनर्थकता के आन्दोलन, कथा साहित्य में अनेक नामों के अंतर्गत 'सेक्स' का बढ़ता मदन भाव आदि) जहाँ तक इन स्थितियों का अंकन करता है, वह एक तरह से सही और प्रमाणिक है। उस का मूल विद्रोह परंपरागत जीवन की अर्थहीनता को लेकर है, जो समझ में आता है। इस संदर्भ में किया गया अनेक सामाजिक स्थितियों का नितांत उघरा चित्रण उपलक्षण मात्र है। पर इस समूचे विखराव को नये सिरे से सजाना और उसमें सार्थकता के तत्व खोजना यही तो मनुष्य का लक्षण और दायित्व है। यह ठीक है कि जीवन में परंपरागत ढंग से प्रतिष्ठित अर्थ आज बेमानी, कृत्रिम और उबकाई लाने वाला लग सकता है। तब उचित होगा कि पुराने अर्थ को निरस्त करके हम नये अर्थ का सृजन करें, क्योंकि जीवन में अर्थ को नकार कर तो हम मानवीय बैशिष्ट्य को ही नकारतें हैं, और मनुष्य को सामान्य पशु के धरातल पर उतार देते हैं। इस दृष्टि से समकालीन कथा साहित्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती अर्थहीन लगने वाले प्राणी जीवन में नये अर्थ संदर्भों के निर्माण की है।

साहित्य को समाज का दर्पण या युग का प्रतिबिम्ब कहा जाता है, क्योंकि साहित्यकार अपने युग की तत्कालीन पृष्ठभूमि व परिस्थितियों का दृष्टा और भोक्ता होता है। वह जिस मानव जीवन का और स्थितियों, परिस्थितियों का चित्रण अपने

लेखन में करता है, वह उसके द्वारा देखी गयी और भोगी गयी पृष्ठभूमि और परिस्थितियाँ होतीं हैं। 'डॉ0 भूलिका त्रिवेदी' लिखती है –

"कोई भी कथाकार युगीन पृष्ठभूमि व परिस्थिति के प्रभाव से बंचित नहीं रह सकता । अपने साहित्य में जीवन और जगत के प्रति जो अभिव्यक्त विचार होते हैं, वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में उसी प्रभाव से प्रकट हो ही जाते है।"(1)

साहित्य कर्म भी एक सृष्टि है और प्रत्येक सृष्टि के पीछे द्वन्द्वात्मक गति निहित होती है। साहित्यकार अपनी रचना दृष्टि से मनुष्य और प्रकृति तथा मनुष्य और समाज के संघर्षो को देखता है, और उस संघर्ष की गति को विश्लेषित व विस्तारित रूप प्रदान करता है उसे साहित्य में अभिव्यक्त करता है। अतः स्वातंत्रयोत्तर काल की बदलती हुई परिस्थितियों के दबाव में लेखिका की चेतना के तार को बहुत गहरे स्पर्श किया है और उसकी ग्रहण शक्ति ने परिस्थितियों के दबावों को समग्रता के साथ अपनी कथा – रचनाओं में उजागर करने के लिए उसे लालायित किया ।

कथाकार ने समय की चुनौतियों को निर्भीकता से स्वीकार किया, और जीवन तथा परिस्थितियों के यथार्थ को अपनी कहानियों में उद्घाटित करने का प्रयास किया । स्वतंत्रता भारतीय जनमानस के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी । डॉ0 शिरीष ने राजनैतिक प्रश्नों और विसंगतियों से रूबरू करने के लिए अपनी सूक्ष्म दृष्टि से कथा साहित्य में परिचय स्वातंत्रयोत्तर भारत के प्रागंण में नवीन राजनैतिक,

---

1. 'यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व' डॉ0 भूलिका त्रिवेदी पृ0 17

सामाजिक, और आर्थिक परिस्थितियाँ उपजी । राजनीतिक स्थितियों में द्रुतगामी परिवर्तन हुए और राजनीतिक घटनाचक्रों ने सामाजिक आर्थिक स्थितियों को प्रभावित किया ।

आर्थिक विषमताएँ बढ़ी औधोगिक उत्पादन और कृषि क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने के लिए जो योजनाएं बनायी गयी । वे आंशिक रूप से फलीभूत तो हुई, परन्तु देश की आर्थिक नीति पर नौकरशाही, पूँजीपति और भ्रष्ट नेताओं का प्रभुत्व हावी होने के कारण गरीबों की स्थिति बद से बदतर होती गयी, अमीर और अमीर होते गये ।

सामाजिक जीवन में भी परिवर्तन की परिस्थितियाँ आयी । संयुक्त परिवारों का विघटन, जाति वर्ग की मर्यादाओं का टूटना, नारी को पुरूषों के स्तर पर लाने का प्रयास, नैतिक मूल्यों को आधुनिकता की चुनौती, युवा पीढ़ी का आक्रोश इत्यादि कथा - साहित्य की पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखती है।

डॉ0 पुष्पपाल सिंह के कथन अनुसार -

"किसी भी साहित्यिक प्रवृत्ति या विधा के विकास के चरण को पिछ्ले चरण से सर्वथा विच्छिन्न करके नहीं देखा जा सकता । प्रत्येक अगला चरण पिछ्ले चरण के कारण ही सम्भव होता है। विकास की यही सहज प्रक्रिया है। इसलिए यह समझना चाहिए कि जिस प्रकार 'नयी कहानी' प्रेमचन्द की परवर्ती कहानियों में प्रस्थापित

परम्परा का पूर्ण विकास है, उसी प्रकार 'नयी कहानी' की स्वाभाविक परिणति 'समकालीन कहानी' के रूप में हुई है।" (1)

समकालीन कहानी की पृष्ठभूमि पर 'कमलेश्वर' लिखते है -

"नयी कहानी में 'यथार्थ चित्रण की प्रमाणिकता' और अनुभव की प्रमाणिकता का मुहावरा प्रेमचन्द के इसी दिशा - निर्देश से प्राप्त किया था । यही कारण है कि नयी कहानी के प्रस्तोताओं एवं पक्षधरों ने यह भी स्वीकार किया है कि उनके प्रेरणा - पुरुष प्रेमचन्द ही थे और प्रेमचन्द की (परिवर्ती) कहानियों में ही नयी कहानी के बीज देखे जा सकते हैं।" (2)

---

1. समकालीन कहानी : रचना – मूद्रा 'पुष्पापाल सिंह' पृष्ठ 11
2. 'नयी कहानी की भूमिका' कमलेश्वर पृष्ठ 41

(क) कथा साहित्य की सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि :-

आर्थिक संघर्ष और जीविका की जटिलतर समस्याओं के कारण संयुक्त परिवार टूटने लगे । परिवार टूटने के साथ ही नयी - नयी परिस्थितियाँ निर्मित हुई । परिवार के सदस्यों के मन में कई प्रकार के अन्तर्द्वन्द उठे तथा उन्हें कई प्रकार के मानसिक तनावों से गुजरना पड़ा । परिवार संकुचित हुये एक दूसरे के लिए कुछ करने की प्रवृत्ति की जगह स्वार्थपरिता आ गयी । परिवार में नारी की स्थिति में भी बदलाव आया वह एक ओर अपनी प्रतिष्ठा की ओर अधिक सक्रिय हुई तो दूसरी ओर आर्थिक आत्मनिर्भिरता की ओर सचेत हुई । नारी के इस बदलाव से पुरूष वर्ग चकित हुआ और नये - पुराने विचारों के मानसिक संघर्ष से पीड़ित रहा । उसे नारी के इस नये रूप को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा । आर्थिक दबाव के कारण नारी को जीविका कमाने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा । अविवाहित रहकर भी उसे जीवन अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ा ।

नारी को घर - बाहर के साथ - साथ बाहरी जिम्मेदारियों, नये - पुराने संस्कारों के संघात को भी सहन करना पड़ा । प्रेम विवाह तथा यौन - सम्बन्धों के सन्दर्भ में उसका दृष्टिकोण बदला तथा यौन सम्बन्धों जैसी मूल्यवान उसे निरर्थक लगने लगे । इन परिस्थितियों के कारण पति - पत्नियों के सम्बन्धों में बदलाव आया। प्रेम-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, समलैगिंक विवाह, विधवा विवाह आदि को पारिवारिक स्तर पर स्वीकृति मिलने लगी । पति - पत्नी के साथ पिता-पुत्र, माता-पुत्री आदि सम्बन्धों में बदलाव आये । भारतीय स्वरूप की जाति व्यवस्था में

भी वदलाव की स्थितियाँ आयी । जाति – बन्धन ढीले हुये और जाति के आधार पर कर्म क्षेत्र चुनने की परम्परा टूटी । आज समाज में एक नये तरह के परिवर्तन की स्थितियाँ उभरकर सामने आ रही हैं। कुछ काम – काजी बड़े ओहदो पर प्रतिष्ठित स्त्री –पुरूष एकल जीवनयापन कर रहे हैं। महिलाओं में आत्म विश्वास गहराया है और वह समाज में स्वयं अपनी स्थिति सुदृढ़ करती हुई सामाजिक घटनाओं में परिवर्तन चाहती है। इन परिस्थितियों को देखकर आज के स्त्री–पुरूषों की बदलती सोच का उदाहरण है।

हमारे भारत देश में लम्बे अर्से से वर्ण – व्यवस्था तथा संयुक्त परिवार की प्रथा चली आ रही थी । समाज में वर्ण व्यवस्था के अनुसार श्रम की व्यवस्था का विभाजन था, क्योंकि उद्योग–धंधा, वर्ण–व्यवस्था के अनुसार करते थे । परन्तु धीरे – धीरे उसमें परिवर्तन होने लगा और लोगों की रूचि योग्यता तथा आवश्यक्तानुसार व्यवस्थित होने लगी । स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद शहरों में नये उद्योग – धन्धों का विकास होने लगा । इससे गांव की सामाजिक स्थिति बदलने लगी । गांव के लोग शहरों की ओर पलायन करने लगे । परम्परागत वर्ण व्यवस्था टूटने लगी ।

उस समय लोगों में वहम्, अन्ध – श्रद्धा एवं परम्परागत रूढ़ियों ने घर कर लिया था । इसे सामाजिक विकास नहीं हो सकता था । भारतीय समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी । वह पराधीन थी, इसलिए किसी भी प्रकार का अधिकार उसे नहीं दिया जाता था । आर्थिक पराधीनता के कारण उसकी स्थिति एकदम करूण बन जाती है।

समाज में स्त्री – पुरूष का प्रेम केवल शारीरिक सम्बन्ध की दृष्टि से ही महत्व

नहीं रखता है, परन्तु सामाजिक कर्तव्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

आधुनिक शिक्षा तथा पश्चिमी सभ्यता के जबर्दस्त प्रभाव के कारण भारतीय चिन्तन बौद्धिकता प्रधान, पुरोगामी प्रगतिशील ओर अत्य आधुनिक हो गया है। जिसके फलस्वरूप परम्परागत धार्मिक भावनाएँ तथा सामाजिकता खत्म होने लगी। अध्यात्मिक रहस्य तथा अमूर्त विषयों को सन्देह की दृष्टि से देखा जाने लगा । मानव की वाह्य स्वतंत्रताओं से वैष्ठित इस भौतिक दृष्टिकोण ने आर्थिक विपन्नता के भार से दबे भारतियों को आकृष्ट किया । परिणाम स्वरूप धर्म तथा ईश्वर जैसी वस्तुओं की आस्था में उनका विश्वास नहीं रहा । उन्हें लगने लगा कि इनकी भौतिक समस्याओं का निदान धर्म तथा ईश्वर के पास नहीं है।

भारतीय चिन्तन पर मार्क्स, फ्रायड, सार्त्र, काम, कीर्केगार्द जैसे विचारकों का प्रभाव पड़ा । तथा परम्परागत भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता निरर्थक - सी प्रमाणित होने लगी । उसकी जगह पर शहरीकरण और महानगरीयकरण की तीव्र प्रक्रिया गहराने लगी । महानगरों की व्यस्त जिन्दगी से यहाँ के साँस्कृतिक जीवन में कुंठा-जगुप्सा, विराग, हताशा, निराशा, भय, अकेलापन जैसे भाव व्याप्त हो गये। धर्म और नैतिकता के बन्धन भी समाज से ढीले हुए । आध्यात्म लोगों को ढकोसला लगने लगा । आज मानवीय मूल्यों की उपासना की जगह सुविधा भोगी संस्कृति की उपासना होने लगी है। समस्त मानव मूल्य धन केन्द्रित हो गये हैं।

'डॉ0 त्रिवेदी' के अनुसार -

"मानव मन - मस्तिस्क पर युग के सांस्कृतिक वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है । युगीन संस्कृति पर मनुष्य का आचार - विचार एवं व्यवहार आधारित होता है, भारतीय संस्कृति में विशेष रूप से धर्म का महत्व रहा है। परन्तु समय बदल गया है, वैसे मनुष्य की बुद्धि का भी विकास होता गया । विज्ञान की प्रगति ने नये - नये अन्वेषण किए । अतः धर्म का महत्व कम होने लगा । विज्ञान के नियम ने ईश्वर सम्बन्धी भावना का खण्डन कर दिया" (1)

स्वतंन्त्रता के बाद स्त्री-पुरुष का समान अधिकार स्थापित किया गया । जाति की दृष्टि से न कोई हीन है न कोई श्रेष्ठ है । भारतीय प्रजा के सामने एक समस्या उपस्थित हो गयी कि प्राचीन और नवीन में से किसका चुनाव किया जाय । अतः इस संघर्ष में नवीनता को स्वीकारते हुए भी ईश्वर के प्रति जो आस्था थी, वह सम्पूर्ण रूप में लुप्त नहीं हुई । इस प्रकार सांस्कृतिक दृष्टि कोण का प्रभाव धर्म एवं वर्ण - व्यवस्था पर विशेष रूप से दिखाई देता है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष के सम्पूर्ण कथा साहित्य की पृष्ठभूमि का आधार सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन है। उनके कहानी संग्रहों में प्रमुख केंचुली, मुआवजा, धर्म-अधर्म, सहमा हुआ कल, वे कौन थे, शहर में अकेली लड़की, पुनरागमन और रंगमंच आदि जो मुख्य रूप से सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन से प्रभावित है।

---

1. 'यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व' डॉ0 मूलिका त्रिवेदी पृ0 19

कहानी संग्रह 'वे कौन थे' में 'यह सच है' कहानी पूर्णतया समाजिक जीवन पर आधारित है। जिसमें 'निमी' एक पात्र है जो अपनी पीड़ा को व्यक्त करती हुई कहती है –

" मैं गा सकती हूँ, मैं नाच सकती हूँ, ड्रामे खेल सकती हूँ, मैं कविताएं लिख सकती हूँ पर मुझे कोई कुछ करने देता .... निमी घंटो रोया करती लेकिन अपने इस रोने पर उसे ग्लानि भी होती कि मैं क्यो इतनी कमजोर हूँ ? यह रोना माकूल है ? बेहतर था गाँव में ही होती । " (1)

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में भी सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण का उद्‌भव मिलता है जिसमें कहानी 'कोशिश' में शहरी व ग्रामीण वातावरण में सामाजिक महत्व को स्पष्ट करती हुई 'शुभा' कहती है – "उसे गांव भेज देगें तो पढ़ाई – संगीत .. और डांस में कितना पिछड़ जायेगी वह ...... कैसी रहेगी अब वहाँ ? कुछ भी तो नहीं है वहाँ .... ? ।" (2)

'निर्वासन' कहानी संग्रह सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन पर आधारित कहानियों का संग्रह है। जिसमें प्रमुख कहानियों में 'उसका अपना रास्ता' कहानी में 'वृन्दा' जो प्रमुख पात्र है शहरी वातावरण के लिए वह कहती है –

"वह दुनिया इस घर के संस्कारों की हमारी दुनिया से एकदम अलग है। वहाँ तरह-तरह के लोग आते हैं। फब्तियाँ कसते हैं। सीटियाँ बजाते हैं।" (3)

---

1. 'वे कौन थे' 'यह सच है' – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 18
2. 'सहमा हुआ कल' 'कोशिश' – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 51
3. 'निवार्सन' 'उसका अपना रास्ता' – डॉ उर्मिला शिरीष पृ0 113 – 114

'पुनरागमन' कहानी संग्रह की कहानियाँ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई है जिसमें सामाजिक जीवन का चित्रण किया गया है प्रमुख कहानियों में 'अंतरात्मा की आवाज' *'शर्मा जी'* के शब्दों में –

"नियमित योग करना, ध्यान लगाना, ... शाम को आरती करना .... हर शनिवार सत्संग में बैठना .... हमारी दिनचर्या रहती है।"(1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह भी है, और कहानी का नाम भी जिसमें बड़ी बहन छोटी बहन को समझाती हुई कहती है –

"अपनी परेशानियाँ परिवार की विषम कठिनाईयाँ । दीदी कहाँ जायेगी । एक उखड़े, कटे – तोड़े गये वृक्ष को पुनः रोपना आसान काम नही है।" (2)

'रंगमंच' कहानी संग्रह पूर्णतया सामाजिक जीवन को समर्पित है। जिसमें नारी जीवन की समस्याओं को उभारा गया है। जिसमें प्रमुख कहानियों में 'भाग्यविधाता' में एक ग्रामीण जीवन के परिवेश को दिखाया गया है। नेता बोट मांगने के लिए गाँव – गाँव जो है और लम्बे चौड़े वादे करते है ग्रामीण कहते हैं –

"कोई नहीं आता बाद में हुजूर । झोपड़ियों में पानी भर जाता है। बच्चे बीमार हो जाते है । कुछ भी तो नहीं है।" (3)

'धर्म – अधर्म' कहानी संग्रह पूर्णतया सांस्कृतिक वातावरण पर आधारित है, प्रमुख 'अथ भागवत कथा' में कुछ पक्तियां दृष्टव्य है –

---

1. 'पुनरागमन' अंतरात्मा की आवाज – डा० उर्मिला शिरीष पृ0 61
2. 'शहर में अकेली लड़की' – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 09
3. 'रंगमंच' भाग्य विद्याता – डॉ उर्मिला शिरीष पृ0 27

"एक घाट का पानी । एक मंदिर की पूजा । एक पंगत में साथ बैठकर खाना । यह प्रगति या प्रेम की गहराई नहीं भय की सामूहिक परिणति थी" (1)

इस कथन से स्पष्ट होता है कि सभी सांसारिक प्राणी एक सांस्कृतिक भावना में बंधे रहकर एकता की एक मिशाल कायम करें । जिससे देश व समाज का कल्याण हो सके । "सत्यम शिवम् सुन्दरम"

'मुआवजा' कहानी संग्रह नारी सामाजिक चेतना पर लिखी गई कहानियों का संग्रह है। जिसमें सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को प्रमुखता दी गई है। जिसमें प्रमुख कहानियों में 'पलकों पर ठहरी जिदंगी' में एक बालक बीमार रहता है जिसके दिल में छेद है वह कभी – कभी बेहोश हो जाता है। वह अपनी माँ से कहता है–

"माँ मेरे हाथ–पाँव चूल्हे की लकड़ी की तरह क्यों हैं, और रंग कोयले की तरह ..... मेरी मम्मी तुम क्यों इस तरह रोती हो । तुम्हें दुख है कि तुम्हारा लड़का खराब है ... कुरूप है... क्या मेरे भाई – बहिन नहीं हो सकते हैं। मैं उन्हीं के साथ खेलता .... अगर मैं मर जाऊँगा तो आप अकेली रह जायेगी .... लाओ मैं तुम्हारा सिर दबा दूँ । मैं बेहोश हो जाता तब तुम रोती हो क्या मम्मी ?" (2)

डॉ0 उर्मिला शिरीष ने हृदय विदारक व सामाजिक चित्रण करके हर वर्ग के पाठक को पढ़ने पर मजबूर कर देता है।

'केंचुली' कहानी संग्रह डॉ0 शिरीष ने सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को

---

1. 'धर्म – अधर्म' अथ भागवत कथा – डा़ उर्मिला शिरीष पृ0 25
2. 'मुआवजा' :पलको पर ठहरी जिंदगी' – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 42

प्रमुखता प्रदान की है। प्रमुख कहानियों में 'शून्य' कहानी में निरुपमा अपने प्रेमी प्रशान्त से कहती है –

"मै भाग्यशाली हूँ कि मुझे तुम्हारा निःस्वार्थ और असीम प्यार मिला है। वो दिन मेरे जीवन का सबसे महान और सुखद दिन होगा जिस दिन मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगी ।" (1)

'खूशबू' कहानी संग्रह की भूमिका में डॉ0 शिरीष लिखती है – "घर – परिवार सामाजिक, आर्थिक सभी तरह के कार्य–कलापों में संघर्षरत नारी की स्थिति आज एक मशीन के समान हो गयी प्रतीत होती है। नारी की सामाजिक, मानसिक, आत्मिक पीड़ा कम नहीं हुई । आज के समाज के बीच संघर्ष करती नारी कितनी बार टूटती – बिखरती है। लेकिन फिर भी वह जीने के लिए विवश है।"(2)

डॉ0 शिरीष अपनी कहानियों की पृष्ठभूमि के बारे में एक साक्षात्कार में कहती है –

"जब होश संभाला तो स्वयं को किताबों के बीच पाया । तमाम तरह की पुस्तकें और पत्रिकाएँ। धार्मिक, साहित्यक और बच्चों की पत्रिकाएं । बचपन में कोई ऐसी पत्रिका नही थी जो न पढ़ी हो । 'रामायण' पढ़ते हुए आंसू नहीं रूकते थे और महिलाओं के व्रत–उपवास की कथाएं सबके बीच बैठकर सुनाती थी। बहुत आनन्द आता था । गांव का वो परिवेश आज भी स्मृतियों की सबसे सुंदर धरोहर है। बड़े

---

1. केंचुली 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ 43
2. 'खूशबू' :'भूमिका' – डॉ0 उर्मिला शिरीष

भाई को पढ़ता हुआ देखकर उपन्यास पढ़ने शुरू किए और तब प्रकाशित उपन्यास तथा कहानियाँ दिलोदिमाग को झंकृत कर देती थी । नौवीं में थी तब मेरी कलम से शब्द फूटे वह भी मेरे मास्टर जी के कहने पर । कुछ विषय देते थे लिखने को कहानी के लिए जो विषय दिया गया था उस पर कहानी पढ़कर उन्होंने ही बोला था कि तुम कहानी लिख सकती हो।'' (1)

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि डॉ0 शिरीष के कथा साहित्य की मुख्य पृष्ठभूमि सामाजिक सांस्कृतिक रही है। उनकी कहानियों की सामाजिक रीति-रिवाज और परम्पराओं का निर्वाह और दूसरी ओर वर्तमान समाज द्वारा की जा रही आलोचना को भी उजागर किया है। एक साक्षात्कार में वे नारी विषयक कहानियों के प्रति कहतीं हैं, जिनमें नारी की समस्याओं, को खुलकर बयान किया गया है -

''मैंने ऐसे स्त्री पात्रों को देखा है जो आज के इस पढ़े - लिखे सुशिक्षित समाज में मानसिक यातनाओं के भीषण दौर से गुजर रही है न उन्हें ससुराल में हक प्राप्त है, न मायके में, कानून, न्याय उनके लिए क्या दे पाता ?'' (2)

उनके कहने का तात्पर्य यह है कि यदि कहानियाँ नारी विषयक है तो उसमें बुराई क्या है ? क्या नारी के बिना समाज बन सकता है ? क्या उसकी समस्यायें, समस्यायें नहीं हैं। अतः डॉ0 शिरीष की कहानियां अधिकतर नारी चेतना से जुड़ी हैं।

---

1. साक्षात्कार (दैनिक जागरण) 23 फरवरी 2003 कला संस्कृति / साहित्य
2. साक्षात्कार, गीताजंली सरोवर, नई दिल्ली, मार्च द्वितीय 2003

(ख) कथा साहित्य की राजनैतिक पृष्ठभूमि :-

डा0 उर्मिला शिरीष ने सातवें-आठवें दशक से अपना लेखन प्रारम्भ किया। वह समय राजनीतिक घटना चक्रों के उथल-पुथल का समय था और भारतीय राजनीति में होने वाली घटनाओं से समाजिकार्थिक स्थितियाँ भी प्रभावित हो रही थीं। राजनीतिक परिवेश में देखा जाए तो 1962, 1964, 1971 में होने वाले युद्धों का प्रभाव राजनीति पर पड़ा। साथ ही सन् 1967 में होने वाले आम चुनाव में विरोध की नीति राजनीति सामने आई। कांग्रेस को कई राज्यों में पराजय का मुँह देखना पड़ा, सत्तारूढ़ दल की सरकार की असफलता ने स्पष्ट कर दिया, कि ये स्थितियाँ जनसाधारण के मोहभंग का परिचायक है। परन्तु सन् 1971 में होने वाले मध्यावधि चुनावों में कांग्रेस को जो समर्थन मिला वह इस बात को प्रमाणित करता है, कि 'इन्दिरा गांधी' के कुछ प्रगातिशील कदमों बैंकों का राष्ट्रीकरण, प्रिवीयर्स की समाप्ति आदि ने जनता को विशेष रूप से आकर्षित किया। लेकिन 24 जून 1975 में इलाहाबाद हाइकोर्ट द्वारा इन्दिरा गांधी का चुनाव अवैध ठहराये जाने पर एक अजीब सी स्थिति पैदा हुई और जैसे उस स्थिति पर काबू पाने के लिए 26 जून 1975 को देश में आपात स्थिति लागू कर दी गयी। आपात स्थितियों के बीस महीनों में जो कुछ हुआ वह विश्व के सबसे बडे गणतन्त्र के इतिहास का काला अध्याय है। आपातकालीन स्थितियों ने राष्ट्र नेताओं को नयी सोच दी। नयी योजनायें,

नयी व्यवस्थायें, नयी पद्धतियां प्रकाश में आयी। सन् 1977 में कांग्रेस को मिली सफलता से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह एक दूसरे ऐतिहासिक मोहभंग का जन्म था। केन्द्र में कई राजनीतिक दलों की मिली-जुली सरकार बनी और 'मोरार जी देसाई' के प्रधान नेतृत्व में सरकार ने कामकाज शुरू किया। परन्तु इस सरकार में मतभिन्नता की स्थितियां पैदा हुई और सरकार गिरी। इसके बाद 'चौधरी चरणसिंह' प्रधानमंत्री बने पर चन्द महीनों में ही व्यवस्था को बदलना पडा। इन्दिरा गांधी के राजनीतिक दल ने सत्ता संभाली। इन्दिरा गांधी ने राष्ट्र की बिखरी शक्ति को संगठित करने का प्रयास किया तथा आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए कई विकास योजनाओं को लागू किया। परन्तु आन्तरिक संकट की स्थितियां उत्पन्न होती रहीं पंजाब, कश्मीर और असम की समस्यायें उग्रतर हो रही थी। कुछ नेताओं ने साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता, स्थानीयता और जातीयता का बीज बपन किया। जिससे राजनीति में स्वार्थपरता, विषमता, कटुता घुलती चली गयी। स्वतन्त्रता के पश्चात हम जिस स्वच्छ प्रशासन की आशा कर रहे थे, वह स्वप्नमात्र रह गया। राजनैतिक दलों के मतभेदों में व्यवस्था को राजनीतिक रंग दिया। सन् 1984 में इन्दिरा गांधी की हत्या से सम्पूर्ण देश गहरे शोक सागर में डूब गया। इसका प्रभाव भारतीय राजनीति पर भी पडा। राजनीतिक वातावरण की अस्थिरता के मारक प्रभाव से सामान्यजन में संकट की स्थितियां पैदा हुई। 'राजीव गांधी' की हत्या से पुनः देश प्रभावित हुआ। इस समय 'विश्वनाथ प्रताप सिंह' और 'चन्द्रशेखर' ने थोड़े-थोड़े

समय के लिए प्रधानमंत्रित्व संभाला। सन् 1991 में होने वाले आम चुनाव में कांग्रेस पार्टी की सरकार केन्द्र में बनी और 'नरसिंह राव' प्रधानमंत्री बने। विदेशी कम्पनियों का प्रभाव बढ़ा जिसे राजनीतिक नेताओं और दलों ने ही नहीं उद्योगपतियों, व्यवसायिकों, व्यापारियों, पूंजी निवेशकों, अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों और समुदाय प्रतिनिधियों में भी विदेशी कम्पनियों के बढ़ते प्रभाव का स्वदेशीयता पर आक्रमण माना। राजनीतिक और आर्थिक विचारों की टकराहट में सत्ता के प्रति मोह उत्पन्न हुआ जिसके फलस्वरूप राजनीति में अपराधीकरण का प्रवेश हुआ। राजनीतिक नेताओं में अवसरवादिता बढ़ी। लोकतंत्र के नाम पर उच्छृंखलता को प्रश्रय दिया गया। सत्ता, शासक, व्यवस्था, और लोक तंत्र में लोगों की आस्था डगमगाने लगी। सन् 1996 के आम चुनाव होते होते तक शासन व्यवस्था बुरी तरह चरमरा गयी। किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत न मिलने के कारण प्रधानमंत्री 'अटल बिहारी वाजपेयी' के नेतृत्व वाली भा0ज0पा0 सरकार केवल 13 दिन तक चल सकी। फिर कांग्रेस के समर्थन से संयुक्त मोर्चे की सरकार बनी और जनता दल के नेता 'एच0डी0 देवगौडा' को प्रधानमंत्री बनाया गया कुछ समय बाद ही कांग्रेस द्वारा समर्थन वापस ले लिया गया। नरसिंह राव के स्थान पर सीताराम केसरी को कांग्रेस दल का अध्यक्ष बनाया गया, तथा पुनः कांग्रेस के समर्थन से गठित संयुक्त मोर्चे की सरकार ने 'इन्द्रकुमार गुजराल' को प्रधानमन्त्रित्व का भार सौंपा। कुछ महीने

बीतने पर पुनः कांग्रेस ने समर्थन वापस ले लिया और लोक सभा भंग हुई आम चुनावों की घोषणा हुई। मई–जून 1996 से नवम्बर दिसम्बर 1997 तक लगभग डेढ़ वर्षों की अवधि में ही तीन सरकारों का गिरना और तीन व्यक्तियों का प्रधानमंत्री बनाना भारतीय लोकतंत्रीय व्यवस्था में पनपी राजनीतिक और सामाजिक सोच की विकृत परिणति कही जा सकती है। 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनीं। परन्तु 13 महीने बाद ही सरकार गिर गयी। अटल बिहारी वाजपेयी के ही नेतृत्व में काम चलाऊ सरकार शासन व्यवस्था चलती रहीं। सन् 1999 में आम चुनाव के बाद भा0ज0पा0 पुनः नेतृत्व में आई और अटल बिहारी बाजपेयी ने प्रधानमन्त्रित्व का कार्य संभाला। ये समय राजनीतिक उथल–पुथल का समय रहा। भारत–पाक मित्रता के सम्बन्ध में लाहौर बस सेवा शुरू की गयी, परन्तु किन्हीं कारणों से बिगड़े सम्बन्धों में सुधार न हो सका। कारगिल में घुसपैठियों की घुसपैठ, संसद पर हमला, गोधरा कांड, गुजरात का दंगा, जम्मू–कश्मीर में रघुनाथ जी के मन्दिर की घटित घटना जैसी अनेक आंतकवादी घटनाऐं घटी और अनेक धार्मिक स्थलों पर हमला करके हिन्दु भावनाओं को ठेस पहुंचायी गयी। परन्तु आंतकवादियों के शमन के भी प्रयास हुए। इस कालावधि में भारत वर्ष उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर हुआ और आर्थिक स्थिति मजबूत हुई वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भारत प्रगति करते हुए परमाणु अनुसंधान विषय इत्यादि पर

विश्व के छः प्रमुख देशों में छठवें स्थान पर पहुंच गया और सूचना प्रौघोगीकरण में भारत के लोग अमेरिका जैसे देशों में छा गये। रूस, चीन, अमेरिका, ईराक जैसे बडे देशों के साथ भारत के मधुर सम्बन्धों में उत्तरोत्तर विकास हुआ। डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियाँ राजनीतिक पृष्ठभूमि पर भी लिखी गई है। जिनमें प्रमुख कहानी संग्रह, वे कौन थे, मुआवजा, धूप की स्याही, केंचुली, खुशबू, रंगमंच, निर्वासन आदि। 'रंगमंच' कहानी संगह में 'चांदी की वरक' कहानी में एक नेता का बेटा अस्पताल में भर्ती है डाक्टर आपस में वार्तालाप करते हुए कहते हैं – "वो वी0आई0पी0 पेसेन्ट है।" साहब का इकलौता बेटा है। हमारे तुम्हारे ट्रान्सफर एवं भविष्य इनके हाथों में रहता है। (1) धर्म-अधर्म कहानी संग्रह में धर्म अधर्म शीर्षक की कहानी में राजनीतिक खेल देखने को मिलता है कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है। – "वह अपनी पावर का इस्तेमाल कर रहा है। नेताओं से दबाब डलवा रहा है। मैं कहाँ जाऊं। बच्चों के साथ अकेली रहती हूँ" (2)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में 'न बन्द करो द्वार' का शीर्षक की कहानी में आज की राजनीति और शिक्षा का प्रचार प्रसार को शब्दों के माध्यम से प्रकट किया गया है –

"आज तुम पढ़-लिखकर काम करने लायक हो गये हो तो इसका मतलब ये तो नही कि मुझे दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल फेंकों" (3)

---

1. 'रंगमंच', 'चांदी की वरक' – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 41
2. धर्म अधर्म – 'धर्म अधर्म' – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 95
3. 'शहर में अकेली लडकी' 'न बन्द करो द्वार' – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 59

'पुनरागमन' कहानी संगह में 'पुनरागमन' शीर्षक की कहानी में महाराज भाषण दे रहे हैं। पटेल बोला – "नेताओं की तरह भाषण दे रहे हो" (1) 'निर्वासन' कहानी संगह में राजनीतिक घटनाक्रम देखने को मिलते हैं 'हैसियत' शीर्षक कहानी में राजनीतिक घटनाक्रम की पृष्ठभूमि बनती हुई दिखाई देती है –

"पैसे का लालच होता तो लाखों रूपये होते हमारे पास। सब कुछ चला गया अब तो चार रोटी मिल जाया करें, वही बहुत है।" (2) 'धरोहर' कहानी में बेटा अपनी मां से देशहित में कहता है कि – "मां, जीवन से बढ़कर कर्तव्य होता है। देश के लिए आगे बढ़कर उसकी रक्षा करने में जो चुनौतियां आती हैं, कठिनाइयाँ आती हैं उनको झेलकर ही अपने लक्ष्य को पाया जा सकता है। काश! मैं अपनी डायरी लिख पाता अपनी अनुभूतियां व्यक्त कर पाता" (3) 'किसका चेहरा' शीर्षक कहानी में राजनीतिक वातावरण बनता नजर आता है। पात्र आपस में बातचीत करते हैं एक उद्धरण दृष्टव्य है – "कुछ तो बताते होंगे पार्टी के बारे में। देश के बारे में। कौन-2 आया था।" (4) 'सहमा हुआ कल' संगह में 'सहमा हुआ कल' शीर्षक कहानी में देश-विदेश की पृष्ठभूमि का सम्बन्ध झलकता है और राजनीतिक व सामाजिक दृष्टिकोण से कहानियों में नया मोड देता है , जिसका एक उद्धरण दृष्टव्य है – "दीदी के पास हंगरी, नाइजीरिया और लंदन से चिट्ठीयां आती हैं। दीदी कहती है, विदेश में उनकी बहुत सारी सहेलियाँ हैं।" (5) 'मुआवजा' कहानी संग्रह में मुआवजा शीर्षक

---

1. 'पुनरागमन' – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 58
2. 'निर्वासन, हैसियत' – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 53
3. निर्वसन, धरोहर – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 102
4. निर्वसन, किसका चेहरा – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 31
5. 'सहमा हुआ कल' सहमा हुआ कल – डा0 उर्मिला शिरीष पृ 16

की कहानी में एक पात्र सलिल अपनी बहन को समझाते हुए कहता है – "तुम एम0ए0 कर लो फिर पी0एच0डी0 कर लेना। जीवाजी यूनिवर्सिटी से कर लो, वहां गर्ल्स हॉस्टल में रह लेना। लड़कियों के बीच रहकर जीने के नये तौर–तरीके सीखने को मिलेंगें।" (1) 'पलकों पर ठहरी जिन्दगी' कहानी में शहरी राजनीतिक वातावरण देखने को मिलता है कुछ पक्तियां दृस्टव्य है – "सामने वालों के यहाँ जन्मदिन पार्टी है। उनके यहाँ आये दिन पार्टी होती है। जमकर खुशियां मनाते हैं जन्म की .....शादी की ......परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में दी गयी पार्टी।" (2) डॉ0 शिरीष की कहानी 'अथ भागवत' कथा में राजनीतिक प्रेरणा लेकर मानवीय आस्था निर्माण के लिए अपनी वेश–भूषा ही बदल लेते है – "सारे लोग पीले वस्त्र धारण किये हुए थे। सूट–बूट पहनने वाले भाइयों ने राम नाम के प्रिंट वाले गमछे डाल रखे थे गले में। माँथे पर तिलक। छाती पर जनेऊ। हाथ में लाल कलावा" (3) राजनीतिक क्रिया–कलाप आदि सामाजिक स्तर प्रत्येक प्राणी के रहन–सहन पर केन्द्रित रहता है। समाज में नेता को वोट तो अमीर–गरीब सभी देते हैं। क्योंकि संवैधानिक अधिकार सभी को प्राप्त हैं जिसे मताधिकार कहते हैं। संसार में विभिन्न प्रकार के प्राणी हैं – "यहां तो हजारों जिन्दगी पड़ी रहती है .... बेसहारा। अनाथ घर से निकले या निकाले गये लोग या फुटपाथों पर पैदा होकर यहीं पले बढ़े हुए ये सब मच्छर–मक्खियों की तरह लगते हैं, मगर जीने की इच्छा इन्हें मरने नहीं देती है।"(4)

---

1. 'मुआवजा' मुआवजा – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 78
2. 'मुआवजा' पलकों पर ठहरी जिंदगी – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 47
3. 'धर्म–अधर्म' 'अथ भागवत कथा' – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 31
4. निर्वासन – डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 83

निष्कर्षतः कह सकते है डॉ0 शिरीष के कथा साहित्य में सामाजिक जीवन के साथ राजनैतिक जीवन भी जुड़ा हुआ है जो कहानियों के माध्यम से पाठक वर्ग तक पहुंचता है। जिससे एक चेतना का संचार समाज में होता नजर आता है।

(ग) कथा – साहित्य की धार्मिक पृष्ठभूमि :-

समाज में धर्म की स्थापना सौद्देश्यपूर्ण की गई थी। वस्तुतः समाज में सुव्यवस्था स्थापित करने की भावना थी। परन्तु कालान्तर में धर्म ने व्यवस्था के नाम पर अव्यवस्था फैला दी। कथा साहित्य में धर्म की भावना जगह–जगह व्याप्त है। कथा साहित्य की दृष्टि से ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्व और शूद्र सभी का महत्व था।

कहानीकार 'यशपाल' जी कहते है–"धर्म सम्बन्धी प्राचीन मान्यतायें आज बेमौसमी बीज की तरह हमारे सामाजिक जीवन के खेत में केवल कूड़ा–कबाड ही पैदा कर रही है और मौसमी बीज को या जीवन में सफलता दे सकने वाली विचार–धारा को सफलता से पनपने का अवसर नहीं दे रही है।" (1)

कहानियों में धार्मिक वातावरण का चित्रण या तो आंशिक रुप से प्रसंग के अनुसार किया गया है और या धर्म भावना प्रधान रचनाओं में आरमभ से लेकर अन्त तक मिलता है। उत्तर भारतेन्दु काल में जब समस्या प्रधान कहानियों की रचना उपेक्षाकृत अधिक होने लगी, तब भी इस प्रकार के वातावरण का चित्रण विविध लेखकों द्वारा किया गया। धार्मिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत प्रायः किसी धर्म, स्थान, देवी देवता की महिमा, पर्व के महत्व तथा भक्ति भावना आदि का विवरण दिया जाता है।

धार्मिक पृष्ठभूमि का चित्रण प्रायः ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित कहानियों में अधिक मिलता है। भारतेन्दु युग में किशोरी लाल गोस्वामी लिखित 'इन्दुमती' जैसी

---

1. 'बात बात में बात' कहानीकार – यशपाल पृ 51

कहानी में धार्मिक सांस्कृतिक वातावरण का अभाव महसूस होता है। प्रेमचन्द्र युग में कलात्मक प्रौढ़ता से मुक्त लिखी गयी ऐतिहासिक कहानियों में सफल धार्मिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का चित्रण हुआ है।

डॉ0 प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं – "समकालीन जीवन के किसी पक्ष का प्रस्तुतीकरण करने वाली कहानी में सामाजिक वातावरण का चित्रण होता है। इसी के साथ ग्रामीण सामाजिक चित्रण के अन्तर्गत ग्राम्य वातावरण प्रस्तुत किया जाता है। ऐतिहासिक अथवा सामाजिक पृष्ठभूमि में ही धार्मिक पृष्ठभूमि का चित्रण भी कथा प्रसंग के अनुसार किया जाता है।" (1)

ऐतिहासिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में भी धार्मिक वातावरण हिन्दी कहानी के क्षेत्र में उपलब्ध होता है। इस प्रकार के वातावरण में इतिहास के युग-विशेष से सम्बन्धित धर्म भावना आदि का परिचय दिया जाता है। कहानी में देशकाल और वातावरण के चित्रण का महत्व निर्विवाद है। कहानी की कथावस्तु का सम्बन्ध किसी भी विषय अथवा काल से हो, देशकाल के चित्रण से उसकी पृष्ठभूमि सुनियोजित की जाती है। धार्मिक पृष्ठभूमि डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों में दृष्टव्य है –

"पवित्र और धार्मिक माहौल में ....खाना-पीना.................पानी की तरह बह रहा है"(2)

धार्मिक पृष्ठभूमि कहानियों में विशेष रूप से स्थान रखती है। कहानी के कथा-काल और घटना क्षेत्र के अनुरूप वातावरण के चित्रण से उसकी विश्वसनीयता और

---

1. 'हिन्दी कहानी कला' – डा0 प्रतापनारायण टंडन पृ0 427
2. 'धर्म-अधर्म' (अथ भागवत कथा) डा0 उर्मिला शिरीष पृ0 31

प्रभावात्मकता में वृद्धि हो जाती है। सर्वथा कल्पना पर आधारित कहानी को भी प्रभावाभिव्यंजक वातावरण से युक्त बनाकर यथार्थ–परक बनाया जा सकता है। आधुनिक कहानी कथावस्तु तथा पात्र–योजना की दृष्टि से अनेक प्रयोगात्मक श्रेणियों से होती हुई अपने वर्तमान स्वरूप तक विकसित हुई है। डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में धार्मिक पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण योगदान है जिनमें प्रमुख कहानी संग्रह धर्म–अधर्म, रंग मंच, पुनरागमन, निर्वासन, केंचुली आदि प्रमुख है।

'केंचुली' कहानी संग्रह में साँझेदारी शीर्षक की कहानी में प्रमुख पात्र 'विजया' अपने पति से कहती है – "आज के जमाने में कौन किसको आत्मिक प्रेम (प्यार) करता है ?" (1) इससे यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक पृष्ठभूमि को साथ लेकर चली है, समकालीन लेखिका डॉ0 शिरीष 'हिसाब' कहानी में एक युवती के सुसंस्कृत गुण व धार्मिक लगन को व्यक्त करता हुआ 'संतोष' कहता है – "बहुत सुसंकृत और विनम्र है। गजब का आकर्षण है उसमें। घमण्ड तो है ही नहीं।" (2) 'शून्य' कहानी में 'निरुपमा' अपने जीवन के बारे में सोचती है – "पहली बार वह अपने और प्रशान्त के लम्बे अन्तराल से चले आ रहे प्रेमिल सम्बन्धों को स्थायी संस्कार, पवित्रता और शाश्वत बन्धन में बांधने को विकल हुई थी, साथ ही अन्तराल में पुलकित भी हो रही है।" (3)

---

1. 'केंचुली' साझेदारी – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ 13
2. 'केंचुली' हिसाब – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ 25
3. 'केंचुली' शून्य – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ 42

'मुआवजा' कहानी संग्रह में 'पलकों पर ठहरी जिंदगी' शीर्षक कहानी में पूरा वातावरण धार्मिक है क्योंकि बच्चे की स्थिति इतनी दया करने लायक है कि अब केवल ईश्वर का ही सहारा है लेखिका परिचय देती हुए लिखती है कि – "यह हमारे पड़ोसी का लड़का है इसके ह्दय में छेद है। जरा सा दबाब पडने पर बेहोश हो जाता है। इसका कोई भरोसा नहीं कभी भी मर सकता है यह .... इतनी दया आती है कि .... ?" (1)

'ढहते कगार' कहानी में ग्रामीण परिवेश में आज की संस्कृति कायम है जो इस कहानी के माध्यम से एक ऐसा वातावरण उभर कर सामने आता है जो हमारे ग्रामीण जीवन की तस्वीर दिखाता है – "उसने आँगन को झाड़ा................कुरेदा..पानी छिडका और माटी छाब दी। दूसरे दिन गोबर से लीपा, तीसरे दिन चूने की दिग देकर छोटे-छोटे चौक निकालकर लीप लिया। दो दिन में ही घर का रूप-रंग शक्ल-सूरत बदल गयी।" (2)

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में धार्मिक पृष्ठभूमि की कहानियों में प्रमुख है 'यह सच है, 'कन्या', 'वे कौन थे' , 'सपनों की बारात' 'सफर जारी है', 'लौट आओ प्यार' आदि। 'यह सच है' कहानी में धार्मिक वातावरण के साथ-साथ साहित्यिक वातावरण भी मिलता है जिसकी कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं – "ये कविताएं पढ़ना, नाटक का पूरा सेट मंगाया था मैनें। 'कीट्स, शैली, बच्चन और भवानी प्रसाद की कविताएं तथा शेक्सपियर के नाटक को पढ़कर निमी को जीवन में कुछ आभास हुआ था। फिर तो

1. 'मुआवजा' 'पलकों पर ठहरी जिंदगी' – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ 40

पन्यास, ऐसे कितने उपन्यास दिया करता था, जिन्हें वह रात–रात भर जागकर पढ़ा करती – गुनाहों का देवता – धर्मवीर भारती देवदास और कोरेल तो निमी ने छः–छः दफे पढ़ डाले थे।'' (1)

'अपने लिए' कहानी में शोभा अपनी माताजी के बारे में सोचती है – ''पिताजी के प्रति उनके मन में अब भी वही समरूपता, वही ममत्व, वही स्निग्ध प्यार है। क्या अम्मा के मन में नफरत नहीं उमड़ती... नाराजगी नहीं उमड़ती... मेरी जैसी हो तो कब की ऐसे आदमी को छोड़ देती..... एक पागल, बदनाम बर्बाद आदमी के पीछे भी औरत पागल बनी, दीवानी बनी पीछे लगी रहती है। क्यों ?'' (2)

इसमें हमारी भारतीय संस्कृति की परम्परा झलकती है। जिसमें पति को परमेश्वर माना जाता है।

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में डॉ0 शिरीष ने मुख्य पृष्ठभूमि धार्मिक स्तर पर ली । जिनमें सभी कहानियां धर्म की संस्कृति से ओत प्रोत हैं। 'कोशिश' कहानी में रवि की पत्नी को काफी समय बाद संतान उत्पन्न होती है तो सभी लोग कहते हैं – ''ईश्वर का चमत्कार है .... हम तो पहले ही कहते थे कि बच्चा जरूर होगा देखो, हो ही गया न।'' (3) उनकी कहानियों में विश्वास धार्मिक विश्वास भी कहानियों में झलकता है।

'रंगमंच' की भूमिका में लिखती है डॉ0 शिरीष ''मानव जीवन के विविध पक्षों को

---

1. 'वे कौन थे' , 'यह सच है' – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 15
2. 'वे कौन थे' , 'अपने लिए' – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 40
3. 'सहमा हुआ कल' , कोशिश – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 58

तलाशती हुई इस उपभोक्तावादी समाज में मनुष्य के तत्व को खोजती है, तो वो खोज किसी एक मनुष्य, किसी एक परिवार किसी एक समाज तथा जाति की न होकर समूचे विश्व की हो जाती है , क्योंकि शाश्वत सत्य तो यही है कि भौगोलिक सीमाओं के पार भी मानव-जीवन का जन्म तथा मरण इस पृथ्वी पर एक समान ही होता है।" (1) इसमें यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य का जीवन मरण शाश्वत है। 'पन्त जी' की पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

"इस धारा-सा जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम, शाश्वत है गति, शाश्वत संगम" (2)

'धर्म-अधर्म' में धर्म के आधार पर प्रत्येक प्राणी को अधिकारी होता है , इसी क्रम में कुछ पंक्तियां – "इस संसार में हर प्राणी को अपना मार्ग चुनने का अधिकार है" (3)

एक लड़की गुरूमाता पर व्यंग्य करती हुई कहती है – "आप सर्वशक्तिमान अपने मायावी वाकजाल से सम्मोहित करने वाली पथ-प्रदर्शिका जो थीं। विश्वास तथा भोलेपन की ओट लेकर भक्ति, श्रद्धा तथा आस्था के नाम पर खेलती थी" (4)

धार्मिक अंधविश्वास पर कटु व्यंग्य करती हुई वही लडकी कहती है – "ये कैसी श्रद्धा है कि उन्होंने जो प्रसाद में दिया गेंदें का फूल........ नींबू के छिलके वही खाए जा रहे हैं। पावों को थाल में धोकर ....चरणामृत कहकर पीते हैं। इतनी बेवकूफी, इतना अंधभक्ति" (5)

---

1. 'रंगमंच' , भूमिका – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ
2. 'तारापथ' , नौकाविहार – पंत पृ 116
3. 'धर्म-अधर्म' माया महाठगिनी – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 11
4. 'धर्म-अधर्म' माया महाठगिनी – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 16
5. 'धर्म-अधर्म' माया महाठगिनी – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0

'पुनरागमन' कहानी में एक मंदिर व आसपास के वातावरण का दृश्य – ''पूजाघर में तो अँधेरा, धूल और जालों ने उनके सिर को घेर लिया। सामने खुलनेवाली खिड़की की ओर से खींचा तब कहीं जाकर खुली। बाहर का दरवाजा बंद था .... इसी दरवाजे से होकर लोग मंदिर में दर्शन करने के लिए आते थे।'' (1)

डॉ0 शिरीष के कथा साहित्य में धार्मिक वातावरण को भी विशेष महत्व दिया गया है , लेकिन आज के वैज्ञानिक परिवेश से तुलना भी की गई है। अतः निष्कर्षतः धार्मिक पृष्ठभूमि का उद्‌भव ग्रामीण परिवेश से हुआ है। शहरी परिवेश में तो आम–आदमी इतना व्यस्त नजर आता है कि उसे धार्मिक क्रिया–कलाप के लिए समय ही नहीं रहता है लेकिन कभी–कभी वह विवश होकर धार्मिक मान्यताओं में फंस जाता है फिर वह अपनी सारी सम्पत्ति पानी की तरह बहाने के लिए मजबूर हो जाता है। 'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में बच्ची को आश्चर्य होता है तो वह काका से कहती है – ''पवित्र तथा धार्मिक माहौल में जहां चाय, दूध, खाना–पीना..... पानी की तरह बह रहा है।'' (2)

अतः डॉ0 शिरीष ने समाज में बसी धार्मिक कुरीतियों को भी उजागर किया है, जिसमें वर्तमान समाज उन सभी समस्याओं से वाकिफ हो, जो प्राचीन समय से लकीर की भाँति मानव–समाज का पीछा करती चली आ रही है।

---

1. 'धर्म–अधर्म' , 'पुनरागमन' – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 150
2. 'धर्म –अधर्म' , 'अथ भागवत कथा' – डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 31

(घ) कथा साहित्य का प्राकृतिक परिप्रेक्ष्य :-

सैद्वान्तिक दृष्टिकोण से प्राकृतिक वातावरण के सम्यक चित्रण को कहानी में सर्वथा औचित्यपूर्ण माना जाता है। इस प्रकार का वातावरण या तो कहानी की कथावस्तु को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रस्तुत किया जाता है ; और फिर कहानी में नियोजित पात्रों की विभिन्न मनः स्थितियों को अधिक भाव-पूर्ण बनाने के लिए होता है। वस्तुतः प्राकृतिक वातावरण भौतिक सृष्टि का विशुद्व नैसर्गिक भाग है। मनुष्य अपने दुख के क्षणों में प्रकृति से अकृत्रिम सम्वेदना और सहानुभूति पाता है। प्रकृति के अकलंक रूप से सुन्दर रूप उसके ह्दय में सहज आच्छादकारी भावनाओं को जन्म देते हैं। मानवीय वितृष्णा से छ्ला हुआ व्यक्ति प्रकृति के अंक में शीतलता ; शांति और संतोष का अनुभव करता है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से कहानी में प्रकृतिचित्रण के वे ही रूप अनुमोदनीय होते हैं , जो कहानी के प्रसंग तथा पात्रों की मनः स्थिति के अनुकूल हों। कहानी में चित्रित प्राकृतिक वातावरण का एक रूप वह होता है, जो कहानी का आधार भी होता है। इस कोटि की कहानियों में वर्णित सभी घट्नाएँ आदि उसी विशिष्ट वातावरण में घट्ति होती हैं। इस प्रकार की रचनाओं में प्राकृतिक वातावरण का चित्रण यत्र-तत्र स्फुट रूप में तो होता है, परन्तु वे समग्र रूप में भी कहानी के मूल सन्दर्भ में महत्व रखती हैं। उर्मिला शिरीष लिखित 'शहर में अकेली लड़की' 'धर्म-अधर्म' कहानी संग्रह में कहानी इसी कोटि कीं है।

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में मनोविश्लेषणात्मक पृष्ठभूमि में लिखी गई रचनाओं में प्राकृतिक वातावरण का जो रूप मिलता है, उसमें कल्पनात्मकता, अंलकारिकता तथा भावात्मकता आदि गुण विद्यमान है। इस प्रकार के प्रकृति चित्र लेखक की सूक्ष्म दृष्टि के बोधक होने के साथ कहानी को भी पृष्ठभूमिगत परिपूर्णता प्रदान करते हैं। कहानी में प्राकृतिक वातावरण का एक रूप विशुद्ध कल्पना पर आधारित मिलता है। यह प्रकृति–श्री का प्रभावशाली चित्रण अवश्य प्रस्तुत करता है। परन्तु यह चित्रण किसी प्रदेश की विशिष्टता से युक्त न होकर किसी भी स्थल का हो सकता है। इसका आधार प्रकृति के सामान्य कार्य व्यापार और सौन्दर्य वर्णन होते हैं। कभी–2 आलंकारिक, भाषा शैली की सहायता से भी प्रभावपूर्ण बनाया जाता है। इनमें अपेक्षाकृत कृत्रिमता लक्षित होती है। कहानी में प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्गत प्रकृति के रमणीय, मोहक और सौन्दर्यात्मक स्वरूप के साथ–2 उसके भयावह रूप का चित्रण भी मिलता है। इस प्रकार का चित्रण कहानी में प्रस्तुत पृष्ठभूमि अथवा पात्रों की भावात्मक स्थिति के सन्दर्भ में भी किया जाता है। यह प्रकृति की विनाशकारी लीला तथा तांडव नृत्य के रोमांचकारी विवरण से युक्त होता है। डॉ0 उर्मिला शिरीष द्वारा लिखित 'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में 'पुनरागमन' शीर्षक से इस प्रकार का उद्धरण है। – "सांध्यबेला थी। सूरज की लालिमा पेड़ों पर उतर आई थी। आकाश में धूल की परतें जमा थी। चारों तरफ उजाड़ पडा स्थान दो दिन पहले ही तेज आंधी आई थी, इसीलिए अब तक आंधी की निशानियाँ बिखरी पड़ी थी।" (1)

---

1. 'धर्म–अधर्म' – डॉ0 उर्मिला शिरीष 'पुनरागमन' पृ0 152

इस प्रकार से कहानी में देशकाल अथवा वातावरण के चित्रण के उपर्युक्त प्रमुख भेदों का समावेश मिलता है। कहानी में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की योजना काल्पनिक अथवा यथार्थ आधारभूमि पर की जाती है। इसी के अन्तर्गत सांस्कृतिक, प्राकृतिक वातावरण का चित्रण भी मिलता है, जिसका आधार कथाकालीन सभ्यता व संस्कृति होती है। सामाजिक वातावरण के अर्न्तगत समकालीन जीवन का समग्र रूपात्मक चित्रण प्रस्तुत किया जाता है। प्राकृतिक वातावरण की योजना कहानी को भावात्मक पृष्ठभूमि प्रदान करने की दृष्टि से अपेक्षित है।

कथा–साहित्य में 'वातावरण के चित्रण में मात्र चमत्कारिक तत्वों' का योग रहता था, वहां वर्तमान कहानी में वातावरण का सर्वथा स्वाभाविक रूप चित्रित होता है। स्थानीय रंग, लोक तत्व तथा प्रादेशिक विशेषताओं से युक्त पृष्ठभूमि विशेष रूप से प्रभाव की दृष्टि से सक्षम होती है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में प्राकृतिक परिप्रेक्ष्य सम्पूर्ण रूप से फैला हुआ है। जिनमें उनके प्रायः सभी कहानी संग्रहों में प्राकृतिक मनोदशा देखने को मिलती है । 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'प्रत्यारोपण' शीर्षक की कहानी में प्राकृतिक व धार्मिक परिवेश को आज समाज किस रूप में लेता है – "ईश्वर तथा उसके अस्तित्व पर विश्वास न करने वाले जी0डी0 वैज्ञानिक चिंतन और उसकी तात्विक संरचना पर अधिक विश्वास करते थे । पूजा पाठ को ढकोसला मानते थे । व्रत उन्हें निरर्थक लगते थे । पंडितों द्वारा बताये गये विधि – विधान उन्हें

पाखण्ड लगते थे । झूठ का माध्यम भर और पूरे धार्मिक ग्रन्थ यहाँ तक कि पुराणों और रामायण में वे खिल्ली उड़ाते थे । राम को वे दुष्ट और धोखेवाज मानते थे, क्योंकि उन्होंने अपनी पत्नी को गर्भावस्था में त्याग दिया था वो भी झूठ बोलकर ।" (1)

'टोहनी' कहानी में एक गांव का प्राकृतिक वातावरण सुमित्रा की स्मृतियों में है, वह सोचती है – "अपने गांव में, घर में स्वयं को हमेशा अकेला पाया था । कच्ची छत का छोटा सा मकान । पीछे आँगन और आँगन में छपरी के नीचे बना चूल्हा । बगल में जलधरा । एक कोने में नीबू का पेड़ लगा था और दूसरे में पपीता" (2)

'निर्वासन' कहानी संग्रह 'प्रतीक्षा' की कहानी में प्राकृतिक परिवेश झलकता है –

"अण्डों के भीतर एक जीव है नयी सृष्टि का प्रतीक । एक आत्मा । एक प्राणी । कुदरत ने हर चीज का आकार कैसा तो गढ़ा है ताकि वह शरीर धारण कर सकें ।" (3)

"प्रकृति ने हरेक को स्वतन्त्र कर रखा है । पर क्या हर कोई स्वतन्त्र है, अलग है ? एक प्रकृति से , इसके तन्त्र-जाल से, इसकी रहस्यमयी शक्तियों से ?" (4)

---

1. पुनरागमन 'प्रत्यारोपण' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 20
2. पुनरागमन 'टोहनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 79
3. पुनरागमन 'प्रतीक्षा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 59
4. पुनरागमन 'प्रतीक्षा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 61

मनुष्य का प्रकृति से जन्म – जन्मांतर का नाता रहा है और इसी तरह आत्मा और परमात्मा का डॉ0 शिरीष प्राणी की उन्मुक्त अवस्था का वर्णन करती हुई लिखती हैं –

"नींद में मनुष्य की चेतना स्वतन्त्र होती है और आत्म – स्वतन्त्रता की यह उड़ान ब्रम्हाण्ड के किसी कोने से पहुँच सकती है । उन पराबिम्बों को जो उसमें भ्रमण करते रहते हैं अनन्त तक, क्या मेरा आत्मतत्व भी कहीं जाकर स्पर्श हो रहा है किसी को । सब कुछ लहरों में डूबते – उतराते हुए – सा लग रहा है, जैसे अतल गहराइयों के बीच का सफर हो।" (1)

'अपना – अपना रास्ता' कहानी में वृन्दा आज के वातावरण के अनुसार बोलती है जब दादी उसको नियंत्रित करना चाहती है । वर्तमान युग का प्राकृतिक परिवेश बदल चुका है । वृन्दा दादी से कहती है –

"चरित्र ! चरित्र ! चरित्र न हो गया, मोम हो गया ! क्या होता है चरित्र? क्या लड़कों के साथ खड़े हो गये या हँसकर बात कर ली उनके साथ काम कर लिया, तो चरित्र बिगड़ गया ? फेशनेबिल कपड़े पहन लिये, किसी कान्टेस्ट मे भाग ले लिया तो चरित्र बिगड़ गया ? आपकी अपनी कोई सोच है या नही ? लांछन लगाती जा रही है।" (2)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में 'लौटकर जाना कहाँ है' कहानी में प्राकृतिक वातावरण को उभारती हुई डॉ0 शिरीष पात्र के माध्यम से कहती है –

---

1. 'निर्वासन' निर्वासन डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 65
2. निवार्सन 'उसका अपना रास्ता' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 127

"तुम कहीं नहीं दिखे बाजार में, सड़को पर, सिनेमाघरों में, मंदिर में? क्या तुम इन स्थानों पर नहीं जाते?" (1)

'धर्म–अधर्म' संग्रह में प्राकृतिक वातावरण का चित्रण धार्मिक आधार पर किया गया है । 'माया महाठगिनी' में गुरू पूर्णिमा के दिन का गुरू महत्व भक्तों का गुरू के प्रति विश्वास व श्रद्धा को प्राकृतिक परिवेश के माध्यम से डॉ0 शिरीष ने उजागर किया है जो वर्तमान समय से कुछ कम मेल खाता है – " गुरू पूर्णिमा के दिन अच्छी खासी भीड़ थी । रौनक थी । कुछ नए जोड़े आये थे। दूर–दूर तक आश्रम का प्रांगण फैला था । हरे भरे खेत .. फलों में लदे – लंबे – चौड़े वृक्ष । सैकड़ों स्वस्थ सुंदर गायें, उनकी सेवा करने के लिए – अनगिनत शिष्य । अलस्सुबह ही सारी गतिविधियाँ आरंभ हो जाती थी । सुबह की पूजा – आरती ... फिर प्रवचन ... उसके बाद .... नए लोगो से भेंट – वार्तालाप । भक्तों मे होड़ लगी रहती थी कि कौन गुरू जी के पास जाकर बैठे । किसकी तरफ देखकर गुरू जी मुस्कराए ? उनके चरण दबाने का सौभाग्य किसे – किसे मिला ? इतनी सी बातों से लोग स्वयं को धन्य मान लेते थे ।" (2)

'अथ भागवत कथा' में मानव की प्रकृति सोच – विचार कर कार्य करने की रही है – "गंभीर मंत्रणा ! लंबी बातचीत । नाप तौल ! फायदा – नुकसान! अपना – पराया! तराजू पर बराबर चीजें तौली जा रही थीं ।" (3)

'प्रेमदीवानी' कहानी में एक स्त्री की प्रकृति के साथ प्राकृतिक वातावरण का

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' लौटकर जाना कहाँ है डॉ0 शिरीष पृ0 72
2. धर्म – अधर्म, 'माया महाठगनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 17
3. धर्म – अधर्म, 'अथ भागवत कथा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 37

समावेश डॉ0 शिरीष ने किया है । सुधा एक पात्र है जिसकी सोच आदर्शवादी है लेकिन वह भी यथार्थ प्रेम के वश में हो जाती है जिसकी मनोदशा और शारीरिक दशा बिगड़ती चली जा रही है –

"यह वही सुधा है जो डी0 लिट0 है। जो नृत्य करती थी । जो पागलों की तरह किताबों की दीवानी थी । जिसकी रूचियाँ और जीवन शैली कितनी सादगी पूर्ण है।" (1)

डॉ0 शिरीष 'बिन सुर – ताल' कहानी में प्राकृतिक वातावरण का शुरू में वर्णन करती हुई लिखती है – "कड़ाके की सर्दी थी । लग रहा था शाम को आसपास के क्षेत्र में बारिश हुई है और ठंड सिर से होती हुई शरीर के एक – एक अंग से गुजरकर रक्त प्रवाह को जमा रही थी ।" (2)

'पुनरागमन' कहानी में ननकू सोचता है सामाजिक प्राकृतिक वातावरण बनाने को वह कहता है – "बगीचा ठीक हो जाए तो वहाँ एक योगशाला बनाई जा सकती है या छोटा – सा स्कूल या डिस्पेंसरी या जड़ी – बूटियों को उगाया जा सकता है।" (3)

'रंगमंच' कहानी संग्रह में 'भाग्य विधाता' कहानी में प्रारम्भ में ही डॉ0 शिरीष प्राकृतिक वातावरण का उल्लेख करती हुई कहती है –

" आज महसूस हो रहा है कि पृथ्वी की गोद कितनी विराट है । कितनी

---

1. धर्म – अधर्म, 'प्रेम दिवानी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 79
2. धर्म – अधर्म, 'बिन सुर–ताल' डॉ0 शिरीष पृ0 101
3. धर्म – अधर्म, 'पुनरागमन' डॉ0 शिरीष पृ0 153

कोमल! सबको समेट लेती है । एक से दुलार के साथ सब तरफ से फेंके गये उतारे गये मनुष्यों की गन्दगी को समा लेती है। अपनी नाजुक गहरी गोद में ।'' (1)

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में कहानी सहमा हुआ कल में प्राकृतिक आपदा आने का संकेत मिलते ही वार्तालाप शुरू होता है जो इस प्रकार है –

''सूर्य की किरणें पृथ्वी पर नहीं पड़ेंगी तो सारी फसलें नष्ट हो जाएंगी । हे भगवान! बंटी, तब सब खेत सूख जाऐंगे । अपना खेत भी सूख जाएगा । तब क्या खाएंगे सब ? गेहूँ नहीं होगा ..... चावल नहीं होगा .... सब्जियाँ और फल नहीं होगें ...... फिर हम लोग खाएगें क्या ।'' (2)

प्राकृतिक आपदा किसी भी प्रकार की हो मानव के लिए कष्टकारी ही होती है । 'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'वे कौन थे' शीर्षक की कहानी में एक ग्रामीण परिवेश जिसमें असभ्य लोग निवास करते हैं लेकिन वहाँ की भी एक प्रकृति है – ''दस पन्द्रह टूटे गिरे, अधबनी चितकबरी दीवारों के घर लम्बी चौड़ी नालियाँ उनमें बहती गंदगी .... भिनकती मक्खियों के झुण्ड । असभ्य गंवार शक्की और अपने में डूबे हुए लोग'' (3)

डॉ0 उर्मिला शिरीष को प्रकृति से लगाव है इसीलिए उनके कथा साहित्य में प्राकृतिक वातावरण भी देखने को मिलता है । एक साक्षात्कार में डॉ0 शिरीष कहती है –

''भौतिकवादी जीवन – पद्धति ने हमें कितना संवेदनहीन बना दिया है कि हमारे

---

1. 'रंगमंच' भाग्यविधाता डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 24
2. 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 10
3. 'वे कौन थे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 52

अपने ही हमारे लिए बोझ बन जाते है । ऐसे कितने ही लोगों को मैने इंसान से 'वस्तु' में बदलते देखा है। उनकी उपयोगिता इस पृथ्वी पर क्या रह जाती है? बढ़ती हुई आवश्यकताओं तथा स्पर्धाओं ने स्त्री को भी बाहर निकल कर काम करने के लिए विवश कर दिया है।" (1)

डॉ० शिरीष अपनी सम्पूर्ण कथा – जगत के बारे में कहतीं हैं –

"मेरी कहानियों के मूल स्वर मनुष्य जीवन की उन तमाम परिस्थितियों को शब्द देना है, जो उनके परिवेश, घटनाओं और जीवन जगत से पैदा होती हैं। अपने समय में जी रहा मनुष्य कितना संघर्षशील है, कितना द्वन्द्वग्रस्त है, कितना अकेला है, कितना ताकतवर है और कितना असहाय है – इनकी विसंगतियों को मैं कहानियों के माध्यम से व्यक्त करती हूँ ।" (2)

---

1. राष्ट्रीय सहारा दिल्ली, नवम्बर, 2003
2. साक्षात्कार (दैनिक जागरण) 23 फरवरी 2003 कला संस्कृति / साहित्य

(ड.) कथा साहित्य और आधुनिक युग बोध :–

स्वतंत्रता के बाद कहानी एक साथ कई दिशाओं में विकसित होने लगी थी। तथापि सातवें आठवें दशकों में कहानी के क्षेत्र में कई प्रभावशाली परिवर्तन हुये और कहानी–साहित्य की प्रखरतर विधा बनती गई । नयी कहानी की चर्चा छठें दशक में ही शुरू हो गयी थी, परन्तु सातवें दशक में इसे एक आन्दोलन का रूप दिया गया। आधुनिक कहानीकारों में राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, मार्कण्डेय, धर्मवीर भारती, अमरकांत आदि की कहानियों में व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्धों को नयी मान्यताओं के सन्दर्भ में देखा और परखा गया । नयी कहानी ने जीवन के गतिशीलता को परिवर्तित राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिप्रेक्ष्यों में दर्शाया तथा जीवन को उसकी समग्रता, सम्पूर्णता विविधता तथा जटिलता में उभारा । नयी कहानी में नये भाव–बोधों को प्रश्रय दिया गया ।

सन् 1960 के बाद कहानी की चर्चा आरम्भ हुई । कहानी के प्रमुख लेखकों में योगेश गुप्त, गंगाप्रसाद विमल, जगदीश चतुर्वेदी, रवीन्द्र कालिया, दूधनाथ सिंह, प्रयाग शुक्ल, सुधा अरोड़ा, ज्ञानरंजन, रमेश बख्शी, श्रीकान्त वर्मा, विजय मोहन सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कहानीकारों ने कहानी में कथानक या कथातत्व को नकारा तथा पात्र और घटनाओं को महत्वपूर्ण न मानकर क्षण–क्षण विशेष मन की प्रतिक्रियाओं पर बल दिया ।

संज्ञाहीन पात्रों की सृष्टि की नाम की तरह क,ख,ग आदि का प्रयोग किए कुछ

कहानीकारों ने परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों का खुलकर विरोध किया तथा यौन जन्य चेष्टाओं और सम्भोग के चित्र उकेरे । अकहानी आन्दोलन बहस का मुद्दा बना रहा । पत्र – पत्रिकाओं में बहसें प्रकाशित होती रहीं । अकहानी आन्दोलन भी नयी कहानी की भाँति धीरे–धीरे ठंडा पड़ गया ।

इसलिए इन कहानियों में परिवेश रोमांटिक न होकर संघर्षरत जीवन के आसपास का खुरदरा परिवेश है चरित्र धूमिल और रहस्यमय नही है, गहन होकर भी अपनी प्रकृति में स्पष्ट है । 'सारिका' के माध्यम से सामांतर कहानी का सुनियोजित विस्तार हुआ ।

नवें दशक के अन्त तक कहानी के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए । हिन्दी कहानी ने विभिन्न आन्दोलन के दौर से गुजर कर अपने स्वरूप को संवारा । कहानीकारों ने जीवन को स्वाभाविकता के रूप में प्रस्तुत कर संवेदनाओं को गहराना अपना लक्ष्य समझा तथा परिवेश की पृष्ठभूमि में जीवन के विशिष्ट प्रसंग, घटना और सन्दर्भों को केन्द्र में रखकर अपनी कहानियों का ताना–बुना । पिछले तीन दशकों से लघु कथा की भी चर्चा हुयी है और ये विधा निरन्तर सम्पन्न होती जा रही है; इसके प्रस्त्रोताओं में विशेषतः कृष्णदेव, कमलेश्वर, रमेश बत्रा, भागीरथ, बलराम अग्रवाल, सतीश दुबे, विक्रम सोनी, जगदीश कश्यप आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

लघु कथा पर आलोचना लिखने वालों के नामों में विशेषतः डॉ0 कमल

गोयनका, डॉ0 ब्रजकिशोर पाठक, राधिकारमण अभिलाषी, भगीरथ, बलराम अग्रवाल, कमल चोपड़ा, डॉ0 सुरेश, डॉ0 रत्नलाल शर्मा व डॉ0 अशोक प्रमुख है। आज आधुनिक परिवेश में भी कहानी निरन्तर विकासमान व सम्पन्नतर होती जा रही है।

डॉ0 शिरीष के कथा साहित्य में आधुनिक समकालीन परिस्थितियों को उभारा गया है। जिसमें आज की मानवीय संवेदना को गहराई से उजागर किया गया है। नारी संवेदना आज समाज में सम्पूर्ण रूप से अपना स्थान बना चुकी है । 'खुशबू' की भूमिका में डॉ0 शिरीष लिखतीं हैं –

"सामाजिक राजनैतिक और पारिवारिक अपमानो और निष्कासन के बाद भी अक्षम् शक्ति समेटे वह स्त्रोतस्विनी के समान बढ़ती जा रही है। जीवन के यह सभी रंग – संवेदन – करूणा, मोह, संधर्ष, शोषण संताप और यातना की आँच से तपे नारी चरित्र प्रस्तुत संग्रह 'खुशबू' की कहानियों में सजीव प्रतीत होगें ।" (1)

आज वर्तमान आधुनिक युग को एक सही दिशा की जरूरत है वह सही दिशा कहानियों के माध्यम से डॉ0 शिरीष समाज को देना चाहती हैं। 'धूप की स्याही' कहानी संग्रह की भूमिका में साहित्य का महत्व बताती हुई लिखती हैं –

"साहित्य संस्कृति का निर्वाह करता है मानव में मानवीयता उत्पन्न करता है। जीवन को झकझोरकर .. बदलकर रख देता है फिर क्यों वही साहित्य जनमानस के

---

1. 'खुशबू' सम्पादक डॉ0 उर्मिला शिरीष (भूमिका)

लिए उतना जरूरी नही रह गया है ... जबकि साहित्य ही मनुष्य को सही सोच की दिशा देता है और कहानी उस सोच की सबसे महत्वपूर्ण प्रभावशाली व सशक्त सम्राज्ञी विधा है।" (1)

नयी कहानी का आधुनिक बोध स्पष्ट करते हुए डॉ0 पुष्पपाल सिंह लिखते हैं – "नयी कहानी की कथ्यगत और शिल्पगत प्रवृतियों के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा गया है । इस कथनों में अधिकांशतः आन्दोलनधर्मी दृष्टि और घोषणाएँ, मसीहाई अन्दाज, फतवेबाजी और समीक्षा में नये – नये शब्दों की घुमाचक्करी अधिक दिखाई देती है।" (2)

समकालीन युग बोध को स्पष्ट करते हुए डॉ0 रमेश पंड्या लिखते हैं –

"शिल्पगत नवीन दृष्टि, संवेदनशीलता और जन–जीवन की निकटता के कारण नई कहानी ने रूढ़िवादियों के ऊहापोह के बावजूद भी न कभी पराजय स्वीकार की है, और न करेगी।" (3)

'निर्वासन' की भूमिका में आधुनिक परिवेश की कहानियों का परिचय मिलता है –

"उर्मिला शिरीष की कहानियों में स्त्री और वृद्धों के प्रति गहरी संवेदना और जागरूकता दिखाई देती है । समाज का बदलता हुआ चेहरा और आज की समस्याओं का विश्लेषण है। इसलिए ये समकालीन प्रासंगिक कहानियाँ हैं।" (4)

---

1. 'धूप की स्याही' सम्पादक डॉ उर्मिला शिरीष (भूमिका)
2. 'समकालीन कहानी रचना मुद्रा' डॉ0 पुस्पापाल सिह पृ0 15
3. 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी' सम्पादक डॉ0 रामकुमार गुप्त पृ0 26
4. 'निर्वासन' भूमिका डॉ0 उर्मिला शिरीष

आज का परिवेश समाजिकता के साथ-साथ समानता के अधिकार को पाना चाहता है , चाहे पुरूष हो या स्त्री वर्ग। वर्तमान में जनसंख्या बढ़ने के कारण प्राणियों को प्रत्येक कार्य में कठिनाई होनी स्वाभाविक है 'निर्वासन' कहानी संग्रह में 'किसका चेहरा' शीर्षक कहानी में एक यात्रा का वर्णन करती हुई एक रेलगाड़ी के डिब्बे का वर्णन करती हुई लिखती है जिस स्त्री की चार – पाँच बेटियाँ है और उसे यात्रा करनी है तो वह रास्ते में अनेक समस्याओं का सामना करती हुई यात्रा करती है –

"मैडम बचाइए। मैडम देखिए। हमारा सामान! हम कहाँ जाएँ? मैडम, दम घुट रहा है।" (1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में डॉ0 शिरीष की कहानियों में जहाँ एक ओर विविधता, पठनीयता तथा जीवन के प्रति गहन अंतर्दृष्टि है, वहीं एक निश्चित उद्देश्य तथा संघर्षपूर्ण चेतना का स्वरूप भी विधमान है। इन सभी कहानियों का मूल स्वर तथा मूल संवेदना आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री के विविध रूपों – माँ, पत्नी तथा अन्य रूपों को समग्र यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में उनके व्यक्तित्व को साकार करना है।

'शहर में अकेली लड़की' कहानी में बड़ी बहिन छोटी बहिन से कहती है जो आधुनिक कालीन परिवेश है आज नारी को किस रूप में देखना चाहता है या वह किस प्रकार वातावरण में ढलना चाहती है । समाज से पीड़ित लड़की व उसका परिवार दुखी तो होता ही है साथ में सामाजिक यातनाएँ भी झेलता है । आज के

---

1. 'निर्वासन', 'किसका चेहरा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 21

सभ्य समाज में क्या नहीं होता जो प्राचीन काल के समाज में नहीं होता था वह आज का समाज अपने घिनौने कार्य पर गर्व महसूस करता है –

"एक लड़की के पीड़ित होने से उस परिवार के कितने लोग पीड़ित हो जाते है, कितनों की नींद उड़ जाती है, मुस्कराना छोड़ देते हैं। रिश्तों की पवित्रता और गहराई से विश्वास उठ जाता है । जवान होती लड़कियों के सपने चूर–चूर हो जाते है । कौन कहता है कि इतने पढ़े – लिखे समाज में लड़कियों पर अत्याचार नहीं होते।" (1)

इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज कितना ही सभ्य हो जाये जब तक अपनी मानसिक स्थिति में परिवर्तन नहीं लाता है तब तक आधुनिक परिवेश में बदलाव नहीं आ सकता है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष ने आज के मशीनी युग में कम्प्यूटर फोन आदि को अपने कथा साहित्य में भरपूर स्थान दिया है जिसमें 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'प्रत्यारोपण' शीर्षक कहानी में डॉ0 तिवारी और जी0डी0 के माध्यम से चित्रित होते हैं –

"डॉ0 तिवारी के फोन रखते ही जी0डी0 लैपटॉप लेकर बैठ गये । ग्रे कलर की स्क्रीन वाला एक बॉक्स दुनिया जहान की जानकारी का खजाना था" (2)

'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में आधुनिक बोध की झलक नारी चेतना के रूप में मिलती है।

"ये ढोंग कब तक चलेंगे ? इस बाबा ने तो तुम्हें पागल कर दिया है। कैसा

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 10
2. 'पुनरागमन' 'प्रत्यारोपण' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 19

नशा सवार है तुम्हारे ऊपर कि सारी फसल का पैसा तुमने उसके स्वागत–सत्कार और दान – दक्षिणा में बर्बाद कर दिया ।" (1)

इससे यह स्पष्ट होता हे कि पुरानी रूढ़ि–परम्पराओं में कुछ नहीं है। आज विज्ञान का युग है, जहाँ नये – नये मशीनी उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है। जो कार्य घण्टों का होता था अब आज वर्तमान समय में चंद सैकण्डों में समाप्त कर लिया जाता है । यही वातावरण आज की समकालीन कहानियों में भी प्रायः देखने को मिलता है।

---

1. 'धर्म–अधर्म', 'माया महाठगनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 17

सहायक ग्रन्थ - सूची

1. यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व डॉ0 भूलिका त्रिवेदी पृ0 17
2. समकालीन कहानी : रचना डॉ0 पुष्प पाल सिंह पृ0 11
3. 'नई कहानी की भूमिका' कमलेश्वर पृ0 41
4. 'वे कौन थे' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 18 (यह सच है कहानी)
5. 'सहमा हुआ कल' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 51 (कोशिश कहानी)
6. 'निर्वासन' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 113-114 (उसका अपना रास्ता कहानी)
7. 'पुनरागमन' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 61 (अंतरात्मा की आवाज कहानी)
8. 'शहर में अकेली लड़की' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 9 (शहर में अकेली लड़की कहानी)
9. 'रंगमंच' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 27 (भाग्य विधाता कहानी)
10. 'धर्म - अधर्म' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 25 (अथ भागवत कथा कहानी)

11. 'मुआवजा' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 42 (पलकों पर ठहरी जिंदगी कहानी)

12. 'केंचुली' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 43 (शून्य कहानी)

13. 'खूशबू' (कहानी संग्रह)' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 (भूमिका)

14. 'हिन्दी कहानी कला' डॉ0 प्रताप नारायण टंडन पृ0 427

15. 'तारापथ' 'नौका विहार' सुमित्रानन्दन पंत पृ0 116

16. 'धूप की स्याही' सम्पादिका डॉ0 उर्मिला शिरीष 'भूमिका'

17. 'स्वातंत्रोत्तर' हिन्दी कहानी सम्पादक डॉ0 रामकुमार गुप्त पृ0 26

तृतीय अध्याय

(क) I - कथा साहित्य का वस्तु विधान और लेखिका

गद्य की सभी विद्याओं में कहानी - विधा का विशेष महत्व है । कहानी कहना और सुनना मानव जीवन की अभिरूचि का सबल पक्ष है। वस्तु - विधान कहानी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपकरण है। इसके समानार्थक शब्दों में कथा, विषय वस्तु तथा कथानक आदि का प्रयोग किया जाता है । अंग्रेजी में इसके लिए 'प्लाट' तथा 'थीम' आदि शब्द प्रयुक्त होते हैं । कहानी की कथावस्तु लेखक के जीवनानुभव की उपज होती है। कथानक में सरलता, मार्मिकता तथा संक्षिप्तता होनी चाहिए ।

कहानी कला की दृष्टि से कहानी के तत्वों में, शीर्षक, कथावस्तु, चरित्र चित्रण, कथोपकथन वातावरण, भाषा शैली और उद्देश्य का समावेश होता है।

"वस्तु विधान के तत्व" -

1. शीर्षक
2. कथावस्तु
3. चरित्र - चित्रण
4. कथोपकथन
5. वातावरण
6. भाषा शैली
7. उद्देश्य " (1)

---

1. 'हिन्दी कहनी कला' 'डॉ0 प्रतापनारायण टंडन', पृ0 234

1. शीर्षक :-

कहानी के शीर्षक का एक आवश्यक गुण उसका लघु होना भी है। लघु आकार वाला शीर्षक सदैव ही तात्कालिक प्रभाव की सृष्टि करने वाला होता है और कहानी का शीर्षक ही प्राथमिक उपकरण हैं। जो पाठक पर सबसे पहले प्रभाव डालता है। यदि कहानी के शीर्षक को पढ़कर ही पाठक के मन में उत्सुकता नहीं उत्पन्न होती है तो वह कहानी को पढ़ेगा ही नही, भले ही उसके शेष सभी उपकरण अत्यन्त कलात्मक रूप से प्रस्तुत किये गये हैं। इसीलिए कहानी के शीर्षक औत्शुल्यपूर्ण होना सफल कहानी का पहला लक्षण है। कहानी के शीर्षक में अर्थपूर्णता भी होनी चाहिए । कहानी के शीर्षक में नवीनता भी होनी चाहिए । डॉ0 टंडन लिखते हैं -

"हिन्दी कहानी के क्षेत्र में विभिन्न रूपों तथा भेदों के अन्तर्गत विविध प्रकार के शीर्षक उपलब्ध होते हैं। कहीं पर किसी शीर्षक से कहानी में निहित मुख्य भाव का बोध होता है, तो कहीं पर उससे कहानी की मुख्य घटना का संकेत किया जाता है। कहीं पर यदि कोई संज्ञासूचक शीर्षक मिलता है, तो कहीं विशेषपरक शीर्षक ।" (1)

'श्री भालचन्द्र गोस्वामी प्रखर' लिखते हैं -

"कहानी यदि फूलों से भरा सरोवर है, तो शीर्षक उन फूलों से तैयार किया हुआ सुवासित इत्र" (2)

---

1. 'हिन्दी कहानी कला' डॉ0 प्रताप नारायण टंडन, पृ0 250
2. 'कहानी दर्शन' श्री भालचन्द्र गोस्वामी प्रखर, पृ0 159

'डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा' ने शीर्षक का महत्व निर्दिष्ट करते हुए लिखा है -

"जो चतुर और प्रवीण कहानी प्रेमी हैं वह केवल शीर्षक की ओर ध्यान देता है। या तो वह शीर्षक की आकर्षकता के आग्रह से आकृष्ट होगा अथवा उसकी सहायता से अनुमान लगायेगा कि रचना की गति क्या हो सकती है और उसी अनुमान के परिणाम के आधार पर या तो कहानी पढ़ेगा अथवा छोड़ देगा । इस प्रकार के पाठकों के लिए शीर्षक का विशेष महत्त्व होता है उच्च कोटि के शीर्षक से पाठक के अनुमान, कल्पना और भाव प्रवणता को उत्तेजना प्राप्त होती है।"(1)

कहानी के अन्य सभी मूल तत्वों की भाँति शीर्षक तत्व का यह विकास भी उसके महत्व के साथ ही साथ कहानी क्षेत्रीय कलात्मक विकास का द्योतन करता है। डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा - साहित्य में सभी कहानियों के शीर्षक रोचक व आकर्षक हैं, केवल शीर्षक ही पाठक के हृदय में कौतूहल पैदा कर देता है - 'धर्म-अधर्म' में कहानियों के शीर्षक विशेष रूचि पूर्ण हैं -

"माया महाठगिनी, अथ भागवत कथा, कब तक, चमगादड़, सुपारी, रामकन्या के हसीन सपने, प्रेम दिवानी, धर्म-अधर्म, बिन-सुर-ताल, कंबल, धूप अभी शेष है, पुनरागमन, गिरगिट, चपेटे ।" (2)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में संकलित कहानियाँ "सहसा एक बूँद उछली,

---

1. 'कहानी का रचना विधान' डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, पृ0 141
2. 'धर्म-अधर्म' डॉ0 उर्मिला शिरीष (भूमिका व अनुक्रमाणिका)

प्रत्यारोपण, मुक्ति, माँ, बेटी और चिड़िया, डोर, सुख, अंतरात्मा की आवाज, जीत, भय, टोहनी, पीली धातु, मरीचिका, पॅपट शो आदि ।'' (1)

2. कथावस्तु :-

कथावस्तु कहानी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपकरण है। इसके समानार्थक शब्दों में कथा, विषय वस्तु तथा कथानक आदि का प्रयोग किया जाता हैं अंग्रेजी में इसके लिए 'प्लाट' तथा 'थीम' आदि शब्द प्रयुक्त होते है। कहानी की कथावस्तु लेखक के जीवनानुभव की उपज होती है। वह अपने अनुभव को कल्पना के संयोग से एक सर्वथा नवीन स्वरूप प्रदान करता है। यह आवश्यक नही है कि कहानी की कथावस्तु का सम्बन्ध किसी प्रकार के विषय विशेष से हो । सामान्य साहित्य की भाँति ही कहानी की कथा वस्तु का विषय क्षेत्र भी अत्यन्त व्यापक है। कहानी का प्राण तत्व होने के कारण यह कथावस्तु मानव जीवन और मानव स्वभाव की भाँति ही प्रशस्त क्षेत्र वाली होती है।

'डॉ0 टंडन' ने लिखा है -

''कहानी की कथावस्तु में निबद्ध घटनाएँ और कार्य व्यापार कहानी की गतिशीलता में वृद्धि करते हैं। यह गतिशीलता कहानी के विकास और समाप्ति के साथ अन्य भी अनेक स्थितियों में समान रूप से बनती रहती है । कहानी की चरम सीमा पर पहुँचने पर यह गतिशीलता एक प्रकार की प्रभावात्मकता में परिवर्तित हो जाती है।'' (2)

---

1. 'पुनरागमन' डॉ0 उर्मिला शिरीष (क्रम)
2. 'हिन्दी कहानी कला' डॉ0 प्रताप नारायण टंडन, पृ0 250

कहानी के अन्य सभी उपकरणों में कथावस्तु कहानी का प्रधान तथा अनिवार्य तत्व है।

'डॉ0 भूलिका त्रिवेदी' लिखती है –

"कथानक में सरलता, मार्मिकता तथा लाघवता होनी चाहिए ।" (1)

'ए0 बैरीडेल कीथ' के अनुसार –

"आधुनिक युगीन हिन्ही कहानी में कथावस्तु के तात्विक ह्रास की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है परन्तु यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि प्राचीन भारतीय कथा-साहित्य में कथावस्तु तत्व ही प्रधान तथा अनिवार्य रूप में विद्यमान मिलता है।" (2)

'आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी' ने इस सम्बन्ध में अपना मत प्रकट करते हुए लिखा है –

"कहानी के लिए सबसे आवश्यक वस्तु है घटना सम्बन्धित कथानक का ऐसा प्रसार, जो अपनी सीमा में, एक प्रभावशाली और असाधारण जीवन मर्म को पूरा-पूरा व्यक्त कर दे ।" (3)

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में कथानक अपनी अलग पहचान बनाता है जिसकी अपनी मौलिक विशेषता है 'निर्वासन' कहानी संग्रह में संकलित समस्त कहानियाँ अपना एक विशेष प्रकार का मौलिक कथानक रखती है। निर्वासन में 'जुड़े हुये हाथ' शीर्षक कहानी में बाई को कथानक का केन्द्र मानकर कहानी लिखी गई है ।

---

1. 'यशपाल व्यक्ति और कृतित्व' डॉ0 भूलिका त्रिवेदी पृ0 172
2. 'ए हिस्ट्र ऑफ संस्कृत लिटरेचर' में दि ओरीजिन ऑफ दि फेविल; – ए0 बैरीडेल कीथ पृ0 242
3. 'आधुनिक साहित्य' श्री नन्ददुलारे वाजपेयी पृ0 190

"बाई के थरथराते हुए होठों को .... आँखों में उमड़ते आँसूओ को और लाल होती नाक को, जिस पर उसकी मेहनत और विश्वास का रंग उतरने लगा था ।. .. वैसा रंग, जैसा सुबह की लालिमा में दिखता है।" (1)

3. चरित्र - चित्रण :-

आधुनिक कहानियों में कथानक से भी अधिक महत्व चरित्र-चित्रण ने प्राप्त कर लिया है। चरित्र-चित्रण के लिए कहानीकार मुख्यतः दो प्रकार की शैलियों का प्रयोग करते हैं। प्रत्यक्ष या विश्लेषणात्मक और परोक्ष या नाट्कीय ।

'डॉ0 भूलिका त्रिवेदी' लिखती है - "प्रत्यक्ष पद्वति में लेखक पात्र के चरित्र का स्वयं विश्लेषण करता चलता है और नाट्कीय शैली में चरित्र या पात्र के वार्तालाप और कार्य -कलाप के माध्यम से उसके चरित्र का चित्रण करता है। चरित्र-चित्रण की नाट्कीयता शैली कला की दृष्टि से उत्कृष्ट मानी जाती है।" (2)

कहानी में पात्र योजना और चरित्र-चित्रण के विषय में विविध विद्वानों ने अपने मत अभिव्यक्त किये है -

'डॉ0 श्याम सुन्दर दास' ने कहानी में चरित्र - चित्रण का महत्व प्रतिपादित करते हुए लिखा है -

"यदि लेखक में शुद्व तथा स्पष्ट अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति है, यदि उसके लिए घट्ना का महत्व चरित्र के महत्व से न्यून है, यदि वह ऐसी संगठित रचनाएं करने में पटु है जिनमें एक भी वाक्य अनावश्यक या व्यर्थ नही, तो समझना चाहिए

1. 'निर्वासन' 'जुड़े हुए हाथ' डॉ0 उर्मिला शिरीष, पृ0 50
2. यशपाल व्यक्तित्व एवं कृतित्व डॉ0 भूलिका त्रिवेदी पृ0 173

कि उक्त लेखक आख्यायिका के क्षेत्र में कार्य करने और यशस्वी होने के लिए ही उत्पन्न हुआ है।''

'डॉ0 वेदप्रकाश अभिताभ' लिखते है -

''रंगमंच कहानी संग्रह की 'चाँदी की वरक' 'भाग्य विद्याता जैसी कहानियों में व्यवस्था का क्रूर चरित्र प्रतिबिम्बित है।'' (1)

'डॉ0 गुलाबराय' ने कहानी में चरित्र-चित्रण तत्व के आनुपातिक महत्व का निदर्शन करते हुए बताया है -

''आजकल कथानक को उतना महत्व नहीं दिया जाता, जितना कि चरित्र-चित्रण और भावाभिव्यक्ति को । चरित्र चित्रण का सम्बन्ध पात्रों से है। कहानी में पात्रों की संख्या न्यूनातिन्यून होती है। कहानी में पात्रों के चरित्र का पूर्ण विकास क्रम नही दिखाया जाता, वरन प्रायः बने बनाये चरित्र के ऐसे अंश पर प्रकाश डाला जाता है, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व झलक उठे ।'' (1)

'डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा' के विचार -

''चरित्र के चित्रण के विषय में मुख्यतः ध्यान देने की बात यह होती है कि चरित्र की विशेषताओं को क्रमशः धनीभूत और प्रभावमय बनाया गया है कि नही। चरित्र के विषय में कहानीकार का जो कथन हो उसे सब एक ही स्थल और समय में नही कह देना चाहिए । चरित्र विकास की सारी दौड़ कहानी के कथानक में आधंत फैली रहनी चाहिए, अन्यथा कहानी का सौन्दर्यवाहक संतुलन बिगड़ जायेगा । पात्र

---

1. 'रंगमंच' समीक्षा — डॉ0 वेदप्रकाश अभिताभ
2. 'काव्य के रूप' डॉ0 गुलाव राय पृ0 221

की मूलवृत्ति और उससे संबद्ध विषय आनुसंगिक उतार चढ़ाव की बाते अत्यन्त क्षिप्र पर क्रमागत रूप में उपस्थित की जानी चाहिए ।" (1)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में 'दहलीज' शीर्षक कहानी में पारू विधवा हो जाती है जिसका एक बच्चा है अब पारू की माँ दूसरा विवाह करवा देती है और उस बच्चे को समझाती हुई नानी कहती है जिससे सम्पूर्ण परिवेश व चरित्र उभरकर पाठक के समक्ष प्रस्तुत होता है –

"डर कैसा... सो जाओ। तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि अपनी माँ के पास जा रहे हो । देखो ध्यान रखना । वहाँ तुम्हारी माँ को कोई परेशान न करें । कोई दुख हो तो हमे फोन करके बताना ।" (2)

'रंगमंच' कहानी संग्रह में सभी संकलित कहानियाँ चरित्र – चित्रण की दृष्टि से बेजोड़ है 'रंगमंच' शीर्षक की कहानी में डॉक्टर के पूछने पर ग्रामीण पात्र उत्तर देता है । जिससे उसका सम्पूर्ण चरित्र झलकता है –

"रोनी सी सूरत बनाकर बोला, वह मर गयी थी उस घर की किस्मत ही ऐसी है । वह मकान ही मनहूस है साला । कितनी पूजा – पाठ करवाई तान्त्रिक से . ... फिर भी अनर्थ होता रहता है।" (3)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में प्रमुख कहानी 'टोहनी' में पुरानी परम्पराओं के अनुसार विधवा स्त्रियों की दशा, जो आज का समाज स्वीकार नही करता 'सुमित्रा' कहती है कि गाँव वालों ने उसके साथ कैसा नीचता भरा

---

1. 'कहानी का रचना विधान' डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा पृ0 94
2. 'निर्वासन' दहलीज पर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 13
3. 'रंगमंच' 'रंगमंच' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 14

व्यवहार किया जिससे आज के तथाकथित खल पात्र ऐसा करते हैं जिससे समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है –

"माँ–बेटी हमारे मर्दो को खराब कर रही हैं । कितने दूध पीते बच्चों को कुछ मिलाकर मार दिया तूने ! हत्यारिन ! कुतिया ! चल तो ।"

4. कथोपकथन :–

कथोपकथन द्वारा पात्रों के चरित्र का परिचय मिलता है इससे कहानी में सजीवता आ जाती है । कथा प्रवाह में तीव्रता आ जाती है । घटना या कार्य – व्यापारों के संकेत मिलते हैं, कहानी में रोचकता आ जाती है । वास्तव में कथोपकथन के लिए आवश्यक है कि वह सजीव संगत, चमत्कारपूर्ण और पात्र एवं परिस्थिति के अनुकूल हों।

'डॉ0 श्यामसुन्दर दास' ने कहानी में संवाद तत्व का महत्व निर्दिष्ट करते हुए लिखा है कि –

"कथोपकथन का आख्यायिका के लिए बहुत बड़ा महत्व है । ..... कथोपकथन के द्वारा यदि वह अत्यन्त मार्मिक तथा वास्तविक हो तो एक अनोखा चमत्कार उत्पन्न किया जा सकता है और पाठक स्वतः उससे अपना निष्कर्ष निकाल लेता है । ... आधुनिक कथोपकथन, जिसका प्रयोग नाटक तथा आख्यायिका में किया जाता है, अत्यन्त मार्मिक मनोवैज्ञानिक वस्तु है । इसका उपयोग उच्च कोटि के कलाकार करते

---

1. 'पुनरागमन' 'टोहनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 99

हैं और उसमें बौद्विक उत्कर्ष की पराकाष्ठा दिखा देते हैं । उनके हाथों में पड़कर कथनोपकथन श्रेष्ठ ध्वन्यात्मक अभिव्यक्त की प्रणाली बना जाता है।'' (1)

'डॉ0 गुलाब राय' ने कथोपकथन के स्वरूप को स्पष्टीकरण करते हुए बताया है –

''कथोपकथन या वार्तालाप द्वारा ही हम पात्रों के हृदयगत भावों को जान सकते है । यदि वार्तालाप पात्रों के चरित्र के अनुकूल न हो, तो हम उनके चरित्र का मूल्यांकन करने में भूल कर जायेंगे । कहानीकार 'घर के मौतबिर नाई' की भाँति विश्वासपात्र अवश्य है किन्तु मार्मिक स्थलों पर पात्रों के वार्तालाप को ज्यों का त्यों उपस्थित कर देने में हमको दूसरे आदमी द्वारा बताई हुई बात की अपेक्षा परिस्थिति का ठीक अंदाज लग जाता है । कहानी में कथोपकथन का तिहरा काम रहता है। उसके द्वारा पात्रों के चरित्र का परिचय ही नही मिलता, वरन् उसके सहारे कथानक भी अग्रसर होता है और एक जी उबाने वाले प्रबन्ध कथन के भीतर आवश्यक सजीवता उत्पन्न हो जाती है।'' (2)

कथोपकथन की व्याख्या करते हुए 'डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा' ने विभिन्न साहित्य रूपों में उसकी अनिवार्यता बताई है। उनके विचार से –

''यदि देश–काल और संस्कृति विशेष का कोई प्राणी किसी से भी किसी प्रकार की बातचीत करता है तो उसकी बातचीत की प्रांजलता और विदग्धता, शब्द और

1. डॉ0 श्यामसुन्दर दास, 'साहित्यलोचन' पृ0 190
2. 'काव्य के रूप' डॉ0 गुलाब राय पृ0 223

वाक्य के प्रयोग, भाषा और पदावली से हमें प्रत्यक्ष मालूम होता है कि व्यक्ति किस कोटि, वर्ग, देश ओर काल का है। संवाद से अन्य सभी तत्वों का सीधा सम्बन्ध होता है। संवाद जहां एक ओर कथा के प्रसार का मुख्य साधन होता है। वही चरित्र्योद्घाट्न का भी, साथ ही देश–काल का भी पर्याप्त बोध करा देता है।" (1)

'आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी' के मतानुसार कथोपकथन –

"कथोपकथन कहानी का छोटा, स्वाभाविक और प्रभविष्णु अंश होता है । उसका प्रत्येक शब्द सार्थक और सोद्देश्य होना चाहिए । बड़े संवादों के लिए कहानी में स्थान नही होता । कहानी के कथोपकथन ऐसे न होने चाहिए जो स्वतंत्र रूप से पाठ्क का ध्यान आकृष्ट कर उसे बिलमाते चलें या कथा के प्रवाह में किसी प्रकार का विक्षेप डालें ।" (2)

'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में छोटे तथा बड़े कथोपकथन का समावेश है 'अथ भागवत कथा' शीर्षक की कहानी में श्याम और कक्का का वार्तालाप दृष्टव्य है –

"आप शांत रहो । हमें संभालने दो ।

जैसा वो चाहेंगे वैसा करोगे ?

आप बीच में मत पड़ो । श्याम भी गुस्से में बोले

"तो बैठाओ अपने सिर पर इन चमारों को, हम चले जाते हैं।" (3)

---

1. 'कहानी का रचना विधान' डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा पृ0 121
2. हिन्दी कहानियाँ आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी पृ0 14
3. 'धर्म–अधर्म' अथ भागवत कथा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 34

'मुआवजा' कहानी संग्रह में 'मुआवजा' शीर्षक की कहानी में पाती और शशांक के कथनों मे स्पष्टता झलकती है –

"कहाँ थी ।

परीक्षा थी ।

ढाई बजे लौटकर आना ।

तब तक हम कहाँ जाये ।

इन सबको देखना है । घूम घाम आओ यार" (1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में संकलित कहानी शहर में अकेली लड़की' मे दोनों बहनें आपस में बातचीत करती हैं।

"कोई नही मिलेगा ऐसा । सब मतलबी होते हैं।

तुम कुछ करने लगोगी तो मुझे सन्तोष होगा ।

मै क्या करूँ बोलो ?

अपनी थीसिस लिखना शुरू कर दो ।" (2)

5. वातावरण :-

कहानी में देश–काल अथवा वातावरण को प्रमुख स्थान दिया गया है। इस तत्व की आयोजना कहानी को विश्वसनीय एवं यर्थाथत्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए की जाती है। कहानी में संग्रथित घटना व्यापार तथा पात्र योजना के अनुकूल

1. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 116
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'शहर में अकेली लड़की' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 11

वातावरण के चित्रण से उसकी सफलता की सम्भावनाएँ बढ़ जाती है। यदि किसी कहानी में इस तत्व की उपेक्षा रहती है, तो पाठक की सामाजिक, राजनीतिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अपरिचित रहता है। कहानी में देश-काल अथवा वातावरण तत्व के अर्न्तगत उसकी उपर्युक्त पृष्ठभूमि के साथ ही सांस्कृतिक परम्पराओं, सामााजिक आचार-विचार, रहन-सहन तथा रीति - रिवाज आदि का चित्रण किया जाता है। कहानी की विषय वस्तु और घटना के अनुसार ही देश-काल और वातावरण की योजना की जाती है। यदि कहानी की कथावस्तु का सम्बन्ध किसी अतीत युग से होता है, तो उसमें ऐतिहासिक वातावरण का चित्रण किया जाता है । इसी के साथ सांस्कृतिक वातावरण का भी उल्लेख किया जाता है, जो उन कहानियों में चित्रित होता है, जो ऐतिहासिक घटनाओं के स्थान पर तत्कालीन सभ्यता और संस्कृति का निरूपण करती है।

समकालीन जीवन के किसी पक्ष का प्रस्तुतीकरण करने वाली कहानी में सामाजिक वातावरण का चित्रण होता है। इसी के साथ ग्रामीण सामाजिक चित्रण के अर्न्तगत ग्राम्य वातावरण प्रस्तुत किया जाता है।

देशकाल के भेद -

1. ऐतिहासिक वातावरण
2. सांस्कृतिक वातावरण
3. सामाजिक वातावरण
4. ग्राम्य वातावरण

5. धार्मिक वातावरण 6. राजनीतिक वातावरण

7. भौगोलिक वातावरण 8. जादुई तिलिस्मी–जासूसी वातावरण

9. प्राकृतिक वातावरण

'धर्म अधर्म' कहानी संग्रह में 'चमगादड़' शीर्षक की कहानी में सांस्कृतिक वातावरण उजागर होता है जिसकी कुछ पंक्तियाँ दृस्टव्य है –

"अब वो जमाना नही रहा लाजवंती बनकर रहने का, कि पुरुष को देखा और सिमट गए पल्लू में । " (1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में 'दाखिला' शीर्षक की कहानी में आज का सामाजिक वातावरण चित्रित है – मीरा सोचती है –

"इतना पैसा, कार, बंगला सब–कुछ होते हुए भी यदि बच्चा स्टैण्डर्ड के स्कूल में न पढ़े तो इन सब चीजों की अहमियत क्या है । पिछले साल इसके साथ वालों का एडमिशन हो गया था, यही रह गया था ..... इस बार भी कहीं वैसा ही न हो अन्यथा मैं तो शरम के मारे मुँह न दिखा पाऊँगी ।"(2)

'केंचुली' कहानी संग्रह में 'हिसाब' शीर्षक कहानी में ग्रामीण परिवेश का वातावरण जिसमें ससुर अपनी बहू से कहता है –

---

1. 'धर्म – अधर्म' चमगादड़ डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 61
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'दाखिला' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 64

"बहू ! तू हमारा सम्मान नही करेगी तो हम तुझे धूल में मिलाकर रख देगे, समझी । मै बहुत खतरनाक आदमी हूँ । मिटाकर रख दूँगा ।" (1)

'सहमा हुआ कल' कहानी में संग्रह में संग्रहित कहानियों में प्रमुख कहानी 'सहमा हुआ कल' में भौगोलिक वातावरण की झलक मिलती है जिसमें कई देशों का वर्णन है –

"दीदी के पास हंगरी, नाइजीरिया और लंदन से चिठ्ठिया आती है।"(2)

6. भाषा शैली –

भाषागत अभिव्यक्ति ही तो कहानी है। भाषा – शैली का सम्बन्ध कहानी के सब तत्वों के साथ है और उसकी अच्छाई या बुराई का प्रभाव पूरी कहानी पर पड़ता है । कहानी में शब्द चयन, पद–मैत्री, सुसंगठित वाक्य विन्यास, अकुंठित प्रवाह, अंलकार योजना, भाषा की चित्रोपमता, मुहावरे, लक्षणा–व्यंजना आदि शब्द शक्तियों का सफल प्रयोग, हास्य–व्यंग्य का पुट आदि शैली के प्रधान गुण है। भाषा के सौष्ठव के साथ–साथ कहानी के लिए संगति और प्रभाव की एकता भी महत्वपूर्ण है।

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार 'मुंशी प्रेमचन्द' ने भाषा के विषय में विचार करते हुए बताया है कि – "भाषा साधन है, साध्य नही, अब हमारी भाषा ने वह रूप प्राप्त कर लिया है कि हम भाषा में आगे बढ़कर भाव की ओर ध्यान दें और

---

1. 'केंचुली' 'हिसाब' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 37
2. 'सहमा हुआ कल' 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 16

इस पर विचार करें कि जिस उद्देश्य से यह निर्माण कार्य आरम्भ किया गया था, वह क्योंकर पूरा हो । वही भाषा, जिसमें आरम्भ में 'बागोबहार' और 'बेताल पचीसी' की रचना ही सबसे बड़ी साहित्य सेवा थी, अब इस योग्य हो गयी है कि उसमें शास्त्र और विज्ञान के प्रश्नों की भी विवेचना की जा सकें । " (1)

कहानी की भाषा शैली का विवेचन करते हुए 'डॉ0 गुलाब राय' लिखते है -

" शैली का सम्बन्ध कहानी के किसी एक तत्व से नही वरन् सब तत्वों से हे और उसकी अच्छाई या बुराई का प्रभाव पूरी कहानी पर पड़ता है। कला की प्रेषणीयता अर्थात दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति भाषा शैली पर ही निर्भर करती है । किसी बात के कहने या लिखने के विशेष प्रकार को शैली कहते है।" (2)

पाश्चात्य विचारक 'एस0ओ0 फाउलेन' ने बताया है कि

"कहानी का शिल्प विधान उसकी घटनात्मक संरचना का आधार होता है।"(3)

कहानी की प्रमुख शैलियाँ -

1. वर्णनात्मक शैली
2. विश्लेषणात्मक शैली
3. आत्मकथात्मक शैली
4. संवादात्मक शैली
5. नाटकीय शैली
6. डायरी शैली

---

1. 'साहित्य का उद्देश्य' मुंशी प्रेमचन्द पृ0 2
2. 'काव्य के रूप' डॉ0 गुलाब राय पृ0 225
3. 'दि शार्ट स्टोरी' (भूमिका) श्री एस0ओ0 फाउलेन पृ0 12

7. पत्र शैली
8. काव्यात्मक शैली
9. लोक कथात्मक शैली
10. स्मृतिपरक शैली
11. स्वप्न शैली
12. मनोविश्लेषणात्मक शैली

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में 'सहमा हुआ कल' शीर्षक की कहानी में वर्णनात्मक शैली व भाषा का उद्धरण द्रष्टव्य है –

"जब 'आपरेशन फेथ' का प्रचार जोरों से किया जा रहा था और गरीब, लुटे-पिटे, तबाह लोग अपनी बकरी, गाय, सोना .... चाँदी, झुग्गी झोपड़ी बेचकर अनजान जगह पर सामान लादकर जा रहे थे और भयानक शारीरिक व मानसिक यंत्रणाओं के दौर से गुजर रहे थे ।" (1)

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में 'यह सच है' शीर्षक की कहानी में डायरी शैली द्रस्टव्य है –

"चाहे जब मैं उसकी कविताओं की डायरी उठाकर बैठ जाती हूँ । लिखा है 'सस्नेह शशि को ।' अबाध आँसुओ से अक्षर धुधलाते जाते, लेकिन एक कविता को मैं बार – बार पढ़ती हूँ और अंदर तक बरसाती पानी की तरह भींग जाती हूँ।"(2)

इसी कहानी में पत्र शैली का भी प्रादुर्भाव मिलता है –

"प्यारी शशि । मैं जानती हूँ तुमने मेरे बारे में क्या – क्या सोचा होगा और महीनों तक मेरे खतों का इंतजार किया होगा । सोचती होगी मैं जिन्दा हूँ या मर

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 23
2. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 25

गयी लेकिन मै वहाँ से पराजित लड़की के रूप में आयी वहाँ से आकर महीनों बीमार पड़ी रही , अस्पताल में पड़े-पड़े मुझे जिन्दगी का अहसास इन बातों से हुआ कि कैसे-कैसे लोग जिजीविषा के लिए जूझते हुए जीते हैं, संघर्ष करते हैं, यातना भोगते हैं और सब कुछ सहन कर अपने को खड़ा कर लेते हैं।" (1)

7. **उद्देश्य –**

कहानी का अन्तिम मूल उपकरण उद्देश्य है। प्राचीन युगीन कथा-साहित्य से लेकर वर्तमान कालीन कहानी तक उद्देश्य तत्व का स्वरूप भी परिवर्तित और विकसित होता रहा है। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से प्रत्येक कहानी की रचना का एक उद्देश्य होता है। यह उद्देश्य पाठकों के मनोरंजन से लेकर गम्भीर समस्या का निरूपण तक हो सकता है । ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यदि प्राचीन कथा साहित्य में उद्देश्य के तात्विक स्वरूप पर विचार किया जाए तो यह ज्ञात होगा कि उसकी रचना मूलतः मनोरंजन तथा उपदेशात्मकता की दृष्टि से की जाती थी ।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अनेक विचारकों ने कहानी के उद्देश्य तत्व स्वरूप के विषय में अपने विविध विचार व्यक्त किए है। 'डॉ0 श्याम सुन्दर दास' ने बताया है कि –

"कहानी एक निश्चित लक्ष्य को आधार बनाकर लिखी जाती है तथा उसी की पूर्ति के लिये उसमें अन्य तत्वों की योजना होती है। यदि तत्व उस लक्ष्य की पूर्ति में सहायक नहीं होते और उनकी स्वतंत्र सत्ता होती है, तो कहानी सफल नहीं कही

---

1. 'वे कौन थे' "यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 25

जा सकती । इस रूप में एक ही मुख्य लक्ष्य या भाव की अभिव्यक्ति करना, आख्यायिका कला की अनिवार्य और प्राथमिक विशेषता है।" (1)

'डॉ0 गुलाब राय' के विचार से -

"प्रत्येक कहानी में कोई उद्देश्य या लक्ष्य अवश्य रहता है। कहानी का ध्येय केवल मनोरंजन या लम्बी रातों को काटकर छोटा करना नहीं है, वरन् जीवन सम्बन्धी कुछ तथ्य देना या मानव - मन का निकट परिचय कराना है । किन्तु वह उद्देश्य या तथ्य हितोपदेश या ईसा की कहानियों की भाँति व्यक्त नहीं किया जाता है। वह अधिकांश में व्यंजित ही रहता है। कहानी के अध्ययन में उसका उद्देश्य समझना एक आवश्यक बात होती है।" (2)

'श्री रायकृष्ण दास' के अनुसार -

"कहानी में मनोरंजन के साथ-साथ ही किसी अन्य उद्देश्य का निहित होना भी अनिवार्य रूप में रहता है। आख्यायिका चाहे किसी लक्ष्य को सामने रखकर लिखी गयी हो या लक्ष्य विहीन हो, मनोरंजन के साथ-साथ अवश्य किसी न किसी सत्य का उद्‌घाटन करती है।" (3)

पाश्चात्य विचारक 'ए0जे0स्मिथ' तथा 'डब्लू0 एच0मैसन' ने कहानी के परंपरागत उद्देश्य पर विचार करते हुए बताया है -

---

1. 'साहित्यलोचन' डॉ0 श्याम सुन्दर दास पृ0 185
2. 'काव्य के रूप' डॉ0 गुलाब राय पृ0 224
3. 'इक्कीस कहानियाँ' श्री रायकृष्ण दास 'आमुख' पृ0 5

"आज का पाठक कहानी से मनोरंजन से अधिक कुछ और भी अपेक्षा करता है।"(1)

'डॉ0 उर्मिला शिरीष' के कथा साहित्य का उद्देश्य सामाजिक चेतना को जाग्रत करना, उसमें प्रमुखता नारी चेतना को दी है । 'वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में 'यह सच है' में निमी अपना उद्देश्य पत्र के माध्यम से शशि को लिखती है –

"अब तो मेरे जीवन का लक्ष्य सेवा करने में है। मैं दीन हीन निर्धन तथा प्यार से हीन बच्चों को प्यार देकर उन्हें आगे लाना चाहती हूँ, क्योंकि विवशता की जो यातना मैने भोगी है वैसी कोई न भोगे, मैं यही चाहती हूँ ।" (2)

'अपने लिए' कहानी का उद्देश्य गलत कामों को करना पागलपन है। लेकिन रमानाथ को पुलिस पकड़ लेती है जो सबसे बडा सट्टेबाज है। अपने कामों पर पछताता है –

"अपनी बेटियाँ ... पत्नी .... बेटे... की करूण सिसकियों में गहन व्यथा का आभास रमानाथ को हुआ । अपनी गलतियों पर .... गुनाहों पर .... ग्लानि किसने था ...... ? अहसास किसे-किसे हुआ था ... ?" (3)

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में सिगरेट कहानी के

---

1. 'शार्ट स्टोरी स्टडी' : ए क्रिटिकल एंथालोजी, प्राक्कनि : श्री ए0जे0 स्मिथ तथा श्री डब्लू0एच0मैसन पृ0 3
2. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 26
3. 'वे कौन थे' 'अपने लिए' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 51

चानी से उसका पति कहता है जो सदा सिगरेट पीता है –

"नहीं हम कोई नही है..... । कुछ नहीं हैं हम .... बस एक सिगरेट की तरह जलते हैं भर रहे हैं ...... जिसका एक सिरा चानी के होठों पर रहा है और दूसरे सिरे पर .... सिर्फ राख बनते ..... हम .... ।"(1)

(क) II - वस्तु विधान से सम्बन्धित डॉ0 शिरीष के विचार :-

कथा साहित्य में वस्तु विधान का स्थान सर्वोच्च है यह कहानी का प्राण तत्व है और इसका समग्र रूप इसी के सहारे विकसित होता है । अतः कथानक के चयन में ही कहानीकार की कला के दर्शन होते हैं। इसके लिए जीवन का परिपूर्ण ज्ञान कहानीकार के लिए अपेक्षित है । साथ ही, इसके विन्यास के लिए क्रम तथा कार्य – करण श्रंखला को बनाये रखना भी आवश्यक है । जीवन और जगत का प्रत्यक्ष अनुभव जिस कहानीकार का जितना अधिक और व्यापक होगा, उसके कथानक में उतनी ही सजीवता और सप्राणता होगी । उपन्यास या कहानी के कथानक में सत्यता, मौलिकता नवीनता तथा उसकी घटनाओं के नियोजन में क्रमिक संगठन एवं रोचकता आदि गुणों का होना अनिवार्य है । इसके अतिरिक्त उसमें जीवन की विविध समस्याओं की व्याख्या एवं अवस्थाओं और पक्षों का मूल्यांकन होना चाहिए । स्त्रोत की दृष्टि से कथानक इतिहास प्रसिद्ध या लोक–प्रचलित हो सकता है। इसे 'प्रख्यात' कथानक कहते हैं अथवा कहानीकार की नितान्त कल्पना पर

1. 'सहमा हुआ कल' 'सिगरेट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 156

आधारित होने पर भी यथार्थ जीवन के मेल में हो सकता है । इसे 'उत्पाध' कथानक कहते हैं, अथवा इन दोनों का मिश्रित रूप हो सकता है। इसे 'मिश्र-कथानक' कहते हैं। 'डॉ0 उर्मिला शिरीष' के विचार से वस्तुविधान यथार्थ वादी होना चाहिए । जो समस्याओं को उभारकर समाज के सामने प्रस्तुत कर सकें । 'डॉ0 महेश दिवाकर' के अनुसार –

"सम्पूर्ण हिन्दी कहानी भारतीय संस्कृति की कहानी है, सम्पूर्ण भारतीय समाज की कहानी है, भारतीय मानव जाति और उसके समूह की कहानी है।" (1)

'रामनिवास झॉ' के अनुसार –

"उर्मिला की कहानियों में प्रेम, सम्बेदना और प्रकृति को पहचानने की चेष्टा है किसी शाश्वत त्रिकोण से हट्कर" (2)

'धर्म-अधर्म' की भूमिका में 'डॉ0 उर्मिला शिरीष' लिखतीं हैं –

"कई बार सोचती हूँ मैं कहानी क्यों लिखती हूँ । मेरी मनः स्थिति के साथ इन कहानियों का क्या तादाम्य रहता है जो इनके साथ मैं भी बहती जाती हूँ, इन कहानियों के पात्रों के साथ जीती हूँ, इनके दुखः दर्द को इनकी खुशी को, आत्मसात करती हूँ । दरअसल मैं उन रचनाकारों में से हूँ जो अपने लेखन को सर्वोपरि लक्ष्य मानकर चलते है .... जीवन स्वयं एक रस एक पथ पर चलने वाला नहीं । हर मोड़ पर, हर कदम पर कुछ न कुछ बदलता है, अनुभव देता है, इसीलिए मनुष्य को आसानी से नहीं समझा जा सकता है।" (3)

---

1. बीसवी सदी की हिन्दी कहानी का समाज : मनोवैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 महेश चन्द्र दिवाकर पृ0 187
2. साक्षात्कार मई 2005, पृ0 113
3. 'धर्म-अधर्म' भूमिका डॉ0 उर्मिला शिरीष

'डॉ0 उर्मिला शिरीष' कथा वस्तुविधान को स्पष्ट करती हुई लिखती हैं –

"एक रचनाकार को अपनी यात्रा से गुजरते हुए उन्हीं तमाम अनुभवों से गुजरना पड़ता है जो उसकी रचना के भीतर चल रहे होते हैं, हर क्षण वह पात्र, वह स्थिति, वह घटना पूरी शिद्दत के साथ दिल–दिमाग पर छायी रहती है। उसका दुःख उसकी करूणा, उसके क्रिया–कलाप सब कुछ छाये रहते हैं।" (1)

"मैं सिर्फ स्त्री जीवन की ही कहानियाँ लिखती हूँ, ऐसा नही है कि मैंने अन्य पात्र नही लिये हो 'रंगमंच' 'स्वांग' 'निर्वासन' 'बांधो न नाव इस ठॉव बंधु, 'हैसियत', 'किसका चेहरा', 'पुनरागमन', ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें पुरूष पात्र ही प्रमुख रूप से उभरकर सामने आते है। मेरी कहानियों में कल्पना नही रहती है न ही चौकाने वाला कोई घटनाक्रम । बार–बार नैतिकता, न्याय तथा भ्रष्टाचार पर सवाल उठाता मेरा मानव मन अस्तित्व की तलाश पर जाकर टिक जाता है मरणासन्न स्त्री का झूठ बोलना सिर्फ संतान के जीवन के लिए ।" (2)

"ऐसे कितने ही लोगों को मैंने इंसान से वस्तु में बदलते देखा है। उनकी उपयोगिता इस पृथ्वी पर क्या रह जाती है? बढ़ती हुई आवश्यकताओं तथा स्पर्धाओं ने स्त्री को भी बाहर निकल कर काम करने के लिए विवश कर दिया है।" (3)

"मेरे लिए लिखना उन तनावों और दुःखों से गुजरना होता है जो मेरे भीतर हलचल मचाए रहते हैं । दरअसल मेरी रचना का आधार आसपास की मनोभूमि है।" (4)

---

1. कथाबिंब / अक्टूबर–दिसम्बर / 2002 / 29 / प्रकाशित (आमने / सामने)
2. कथाबिंब / अक्टूबर–दिसम्बर / 2002 / 29 / प्रकाशित (आमने / सामने)
3. 'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली फरवरी 2004 (प्रकाशित) 'प्रिय है संघर्षशील पात्र'
4. दैनिक भास्कर (कला–संस्कृति) मार्च 2004 (प्रकाशित) 'कहानी के किरदार मुझसे जबाब'

(ख) कथा साहित्य का वस्तु विधान :-

'डॉ0 उर्मिला शिरीष' के कथा – साहित्य में वस्तु–विधान समकालीन परिस्थितियों के अनुरूप कहानियों में झलकता है । वर्तमान से संगति की जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । सभी कहानी संग्रहों में नारी चेतना के स्वर गूँजते है जिनमें मुख्यतः नारी की दयनीय स्थिति पर गहराई से प्रहार किया गया है। नारी किसी से कम नहीं है वह आज के परिवेश में पुरूष वर्ग से कन्धा मिलाकर चलने के लिए तैयार है। डॉ0 शिरीष की कहानियों में यह कहा जा सकता है कि दो – एक कहानियों को छोड़कर शेष सभी आसपास घटी घटनाओं का संयोजन – लेखन मात्र है लेकिन ऐसा नही है । कहानियाँ सिर्फ मन – बहलाने या खाली समय को पाटने के लिए नहीं होती हैं। उनमें जीवन के ऐसे अबूझ प्रश्न छूटते हैं। जिनके उत्तर संघर्ष तथा साहस के रूप में मिलते हैं। जूझने का काम 'यह सत्य है' कहानी से शुरू हुआ है और उसे अंतिम कहानी में विस्तार मिला है । 'यह सत्य है' कि निमी जैसी कितनी लड़कियां होगी, जो निरीह जीवन जीते हुये अंततः सच को स्वीकार करती है । 'दलाल' कहानी में संवादों का उबाल है तथा विद्रोह का तीखा स्वर – जैसे – आगे लगे रिवाजो में ।

'अपने लिए कहानी में अम्मा की पहाड़ जैसी चिंताएं तथा विवश जिदंगी का बोझ है । 'वे कौन थे संग्रह की कहानी में 'वे कौन थे' में तीन नौजवानों को मिली

उपेक्षाएं, अपमान, बदनसीबी का गहरा चित्र है । वे जहाँ रहने पहुँचते हैं वहाँ का हाल है कि 'घर में अंधेरा' गली में अंधेरा, लोगों के दिलों तक में अंधेरा । बस इसी अंधेरे में वे खो जाते हैं। और दे जाते हैं तीन खत । इन तीन खतों में बारे खतों में सारे अंधेरो को चूर-चूर कर देने का हौसला है।

'कन्या' कहानी में मासूम जीवन को शोषण, यातना, कमजोरी से लड़ने के लिए भाषा दी गई है। 'कदमों के आगे' में हरबतिया का हृदय दाऊ साहब के प्रति समय-दर-समय पश्चाताप के साथ पसीज उठ्ता है। अंतिम कहानी में ग्रामीण जीवन की गंध है। जैसे कि लेखिका ग्रामीण प्रेमा से निकट्ता बना लेती है, वह प्रेमा जिसका दर्द अंतहीन है उसके प्रति सर्म्पण भाव है लेखिका में ।

'कन्या' विशेष रूप से सांकेतिक शैली में प्रस्तुत कहानी है जिसमें एक अबोध बालिका के साथ धर्म के ठेकेदार पण्डित जी के कुकृत्य को खुले रूप में लेखिका ने उभारा है। इस संकलन की अंतिम रचना 'लौट आओ पार' में लेखिका ने बाल विवाह के फलस्वरूप होने वाले कुपरिणामों को अंकित किया है 'सपनो की बारात' में बाल मनोविज्ञान का परिचय लेखिका ने उच्च और निम्न वर्ग के अन्तर को दर्शाते हुए किया है। 'कदमों के आगे' कहानी हृदय-परिवर्तन की गाथा उपस्थित करती है । जिसके द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि रावण में भी राम का जन्म हो सकता है।

मुआवजा' कहानी संग्रह संकलित कहानियों का वस्तुविधान यथार्थवादी है। आजकल लिखी जा रही प्रायः अधिकांश कहानियों विभिन्न समस्याओं से उपजी मनुष्य की त्रासदी और पीड़ा का ही उद्घाटन करती है। यह समस्याएँ राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यक्तिगत या किसी भी क्षेत्र सें संबधित हो सकती है। डॉ0 शिरीष की कहानियाँ निर्धनता में पिसते ईमानदार आदमी की नियति के सवाल को उठाती है । मालिक के अत्याचार से पीड़ित कगार पर खड़े मजदूर की विवशता को रेखांकित करती है। और बाल विधवा समस्या को उठाकर तिल-तिल टूटती नारी की मानसिकता का भी बयान करती है। सबसे लम्बी कहानी 'मुआवजा' बाल विधवा की भावात्मक मनोदशा को उद्घाटित करती हुई बाल विवाह और विधवा समस्या के प्रश्न को उठाती है । डॉ0 शिरीष ने सामाजिक सर्जनाओं में जीती नारी के आंतरिक उद्वेगों को शहरी अनुभूति के साथ स्पर्श किया है। जीवन साथी के वियोग का असहनीय दुःख सारा जीवन अकेले काटने की चिंता और तिस पर पग-पग पर समाज, संबधियों व परिचितों के द्वारा आक्षेप और तिरस्कार अपने समाज में विधवा की यही मंत्रणा रही है। लेखिका ने बाल बिधवा की मनोव्यथा का प्राकृतिक उपमानो का प्रयोग करते हुए कलात्मक भाषा में मार्मिक चित्रण किया है। सवाल आज ईमानदारी से जीने के त्रासदी का है। एक ईमानदार व्यक्ति जब बेईमानों को तेजी से संपन्न और सुखी होते देखता है, अपनी निर्धनता का बोझा ढोना कितना कठिन हो जाता है उसके

लिए। एक बौद्धिक, दार्शनिक, अध्यापक की भीतरी दृढ़ता को निर्धनता धीरे-धीरे कैसे मथती है, उसी का दयनीय चित्रण किया है।

'ढहते कगार' सदियों से समर्थ के द्वारा असमर्थ के कुचले जाने की व्यथा है। मालिक से काशी ने तीन हजार रूपया उधार लिया, बहन की शादी के लिए । वह ब्याज उतारता जाता है। रूपया कभी नहीं उतरेगा । बदले में रात-दिन मालिक के खेतों में काम करता है और झिड़कियाँ खाता है। एक दिन 'रनिया बीबी' मालिक को जबाब दे देती है। जिस कगार पर वे खड़े थे वह ढह गयी । 'उसका अपनापन' और पलकों पर ठहरी जिंदगी, दो व्यक्तिगत समस्याओं की कहानियाँ है। उसका अपनापन के पुरूष का चेहरा शताब्दियों से रखैल को रखते आये उस पुरूष का चेहरा है जो दूसरी बीबी रखने पर पहली पत्नी का तो निरादर करता ही है, उसके बच्चों के साथ अत्याचारी की भांति व्यवहार करता है। 'पलको पर ठहरी जिन्दगी' में हृदय रोगी बालक की दयनीय स्थिति और उसके प्रति माँ की ममता का हृदयस्पर्शी वर्णन है । इकलौते और अपाहिज बेटे की माँ ने अपना सारा ध्यान उसी पर केन्द्रित कर रखा है। बेटे के हृदय में छेद है । वह बच्चों के साथ नही खेल सकता । दूसरे बच्चों के जन्म समारोहों में अपनी बाल-सुलभ जिज्ञासा के कारण वह जाना चाहता है, लेकिन उस उत्सव का आनंद नही उठा पाता ' उसकी यह विवशता उसकी माँ के मन में एक अजीब सी टीस पैदा करती है। कहने के लिए इस अपाहिज का पिता भी

है। लेकिन बाहर किसी गाँव में नौकरी करने के कारण उससे दूर रहने से वह इसके प्रत्यक्ष दुखों का उतना भागी नहीं है जितनी माँ । पात्रों के चरित्रांकन तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में कहानी निश्चय ही पठनीय और प्रभाव प्रवण बन गयी है।

'मुआवजा' मूलतः एक प्रेम कहानी है जिसमें पाती अपने उद्यम से शिक्षा की सीढ़ियाँ तो चढ़ जाती है किन्तु अपने धड़कते हुए यौवन से वैधव्य का पोस्टर हटा नही पाती । ऐसे भी क्षण आते हैं कि एक विवाहित के प्रति समर्पण आतुर हो उठता है, किन्तु निष्ठावान पुरूष का सत् उसे बचा लेता है । पाती जीने की नई राह खोजती है और आधार के लिए एक बच्चा गोद लेना चाहती है।

'केंचुली' कहानी संग्रह में मात्र छः कहानियाँ संकलित हैं यह सभी कहानियाँ वस्तु विधान की दृष्टि से पाठक के मन पर अपनी छाप छोड़े बिना नहीं रहती हैं। ये कहानियाँ नारी – जीवन के आन्तरिक एवं वाहय तनावों की गूंज बहुत समर्थ ढंग से प्रस्तुत करती हैं। इन कहानियों को पढ़ने के बाद एक समग्र प्रभाव यह शेष रहता है कि अपनी विद्वता, अपने विवेक और तर्कशील अहं के बावजूद नारी एक भावुक प्राणी है जो अपना सर्वस्व पुरूष पर समर्पित कर बैठती है या यूँ कहें वह स्वभावतः एवं सहजतः पुरूष के जाल में फँस जाती है। पूरी मार्डनिटी के बावजूद उसका मन तो वही पुराना नारी सुलभ भोला मन है। जहाँ कहीं नारी अपने को पुरूष के पौरषेय गुणों से समन्वित करने की कोशिश करती है, वहाँ वह अपने को छलावा ही देती

है । परन्तु छलावा तो पहले विकल्प में भी निश्चित है। पहली कहानी 'साझेदारी' वर्तमान युग की एक बेहद नयी समस्या प्रस्तुत करती है। 'चौथी पगडण्डी' में भी प्रेम विवाह है, चतुर एवं लम्पट पति द्वारा पत्नी की अवहेलना की गाथा है । कहानी के अन्त मे पति में अचानक परिवर्तन दिखाकर लेखिका ने कहानी को प्रभावोत्पादक दिया है।

साहित्यिक कहानियों की है विडम्बना कि वे यथार्थ को छूते-छूते रह जाने वाले ऐसे चित्र है, जो लाख प्रयासों के बावजूद झूठलाये भी नहीं जा सकते उसकी काया समग्र सामाजिक अनुभूतियों, समस्तीजन्य चेतनाओं घटित - विघटित परम्पराओं और संवेदना की झील में डूबते उतराते संदर्भो का मानक प्रारूप होता है। निःसंदेह केंचुली की कहानियाँ ही समकालीन नारी जीवन के समस्त युग बोध की कहानी नही मान जा सकती है केंचुली की विजया, लक्ष्मी, मंजू, निरूपमा, प्रिया, अंजू और लतिका को लेकर हम उस भारतीय समाज की एक तस्वीर कायम कर सकते हैं जहाँ औरतें ऊपर से तो पढ़ी - लिखी हैं। कहानीं नारी - पुरूष दोनों को सामान्य रूप से उद्वेलित करती है । 'साझेदारी' की विजया पढ़ी लिखी है, दंबग है, कामकाजी है वह अपना भला - बुरा स्वयं सोच सकती है ..... नौकरी शुदा होने के कारण पराक्रमी भी नही है वह चाहती तो खुलकर फ्लर्ट करती । परन्तु उसकी परेशानी कृष्णा सोबती के 'यारों के यार' : तिन पहाड़' की नायिका परेशानी नही है। हृदय में भारतीयता

की रूढ़ चेतना मस्तिष्क में अति रूढ़ भारतीय संवेदना पाले हुए है । डॉ० शिरीष की बेचारी निरूपमा है जो बहुसंख्य भारतीय स्त्रियों की तरह अपने पति की अहमन्यता पर किसी 'शून्य' में खो जाती है और उसे अपने लिए उपकारों की दुहाई तक नहीं देती । 'सिगरेट' कहानी की प्रिया भी बैंक की नौकरी करती है। अपने पति चानी के प्रति समर्पित है चानी निहायत निकम्मा और बीमार मर्द तो है ही अपने परिजनों से उसे इतना प्यार है कि प्रिया की सबसे पंसदीदा और बेशकीमती वस्तुओं को भी उन्हें दे देने के लिए न तो संकोच ही करता है और ना ही प्रिया की इजाजत लेना आवश्यक मानता है।

इस तरह डॉ० उर्मिला शिरीष की रचनाएँ बिना किसी आक्रोश व उत्तेजना के स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पर उसके आंतरिक द्वन्दों पर, उसके प्रति समाज में पल रहे वैचारिक कुंठाओ पर सहज प्रहार करती है । हालांकि उनकी किरदारों में पुरूष सत्ता के सामने सीधे – सीधे समर्पित हो जाती है और अपने लिए कोई नयी जमीन नही तलाशती है। जैसे केंचुली की लतिका अथवा 'हिसाब' की मंजू आधुनिक काल के बदलते परिवेश में ऐसी पात्राओं की कोई सार्थकता रह ही नही जाती । 'हिसाब' की नायिका 'मंजू' को भी चंद्रकांता की 'कम्मो' सी कोई शारीरिक सुखोपभोग का दर्द हनी है उसे दर्द है तो सिर्फ यह कि संयुक्त भारतीय परिवार में बेटे पर अपना एकाधिकार माँ–बाप की कुंठित मान्यताओं को एक ही झटके मे तोड़कर वह पूरे परिवार

को नष्ट कर देना नही चाहती, वरन् अपने उत्सर्ग से अपने पति – संतोष की गुलाम – दृष्टि को सत्य का एहसास कराती है। वरना वह स्वयं कमाऊ होने के कारण निठल्ले संतोष को कब का ठेंगा दिखला देती और अमृता जी की स्त्री पात्रों की तरह महानगरीय सभ्यता में पोलीगैमी का एक बेमिसाल नमूना पेश करती । कहानी यह तब भी साहित्यिक ही होती । क्योंकि महानगर के संकुचित दायरे में इसका सार्वभौम स्वरूप तो निर्धारित हो ही जाता । परन्तु तब कहानी की पात्रा उन करोड़ो कामकाजी महिलाओं की भावनाओं को नहीं समेट पाती, जो कमाती तो खुद है, परन्तु खरचती नही हैं। पति की तुष्टि के लिए, ऐसा नही कि वे महिलाएँ निरी मूर्ख है और एक अदद पति की खातिर अपनी आत्मा को ही बेच डालती है । प्रत्युत सच्चाई है कि विकृत हो रहे सामाजिक मान्यताओं को वे अपने आत्मिक संघर्ष से रास्ते पर लाना चाहती है और इसी क्रम में अपने त्याग और उत्सर्ग से वे समाज के विकृत वृत्तियों पर करारा प्रहार करती हैं फिर ऐसा भी नहीं कि उनका यह प्रहार निष्फल जाता है बल्कि इस कारण ही हमारे समाज की आँखे, बहू–बेटियों के रूप में सम्मानित होती है और तेजी से बिगड़ रहे सामाजिक मनोवृत्तियों के बीच भी वे अपने इर्द–गिर्द असंख्य पिता, भाई और पुत्र को पालती है ... काश त्याग की भावना पुरूषों में भी जाग्रत हो पाती है। यही एक मात्र कसक है हमारे पुरूष प्रधान समाज की । 'शून्य' का किरदार प्रशान्त अपने समाज के इसी पुरूष वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, निरूपमा के संघर्ष बलिदान और अदम्य साहस के बल पर वह कलेक्टर तो हो

जाता है, परन्तु जैसे ही वह कलेक्टर का रूतबा पाता है अपने अतीत को भूलकर निरूपका को अपने पौरुष के कैद में जकड़ना शुरू कर देता है।

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह का वस्तु विधान एकदम मौलिक व यथार्थवादी है जिसमें संकलित प्रायः सभी कहानियों की भाव भूमि मध्य वर्ग या कुछ – कुछ उच्च वर्ग से रही है पर तत्वों को उभारने का ही अधिक प्रयास है। कहानी के पात्र वास्तविक एवं क्रमवद्ध है। संत्रास की अनुभूतियाँ प्रखर है। परिवेश से प्रभावित होकर अचेतन मन स्थितियों को शब्द, भाषा या बिम्ब के सहारे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है । ये तत्व मुख्यतः कहानियों के नारी पात्रों में सघनता के साथ उजागर हुए है। क्योकि स्वयं कथा – लेखिका उस वर्ग से आती है।

'सिगरेट' कहानी में चानी किसी लड़की को प्यार करता है जिसकी मृत्यु एक्सीडेंट मे हो जाती है। इस गम को भूल जाने के लिए वह सिगरेट का सहारा लेता है और हृदय रोग का शिकार हो जाता है खासकर अपने परिवार के सदस्यों के प्रति अत्याधिक उन्मुख रहता है हर प्रकार की सुविधा देने की कोशिश करता है। मन से वा बेमन से पत्नी के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता है पर रानी अपने को अकेली नेगलेक्टेड महसूस करती है।

"हम कोई नही एक सिगरेट की तरह जलते रहे हैं ..... जिसका एक सिरा चानी के होठों पर और दूसरे पर सिर्फ राख बनते हम । बहुत दर्द, पीड़ा है जो मर्म को स्पर्श कर जाता है।" (1)

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'सिगरेट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 156

'कोशिश' कहानी में संतान न रहने की तड़प राशि को है। अपनी बहन के लड़के को लाकर अपने पास रखती है लेकिन बहन की इस उक्ति पर राशि कि जब दूसरे के बेटे से इतना लगाव है, तो हमें अपने बेटे से कितना प्रेम तथा लगाव हो सकता है वह विफर जाती है । फिर चाचा की बेटी को ले आती है लेकिन वह घर का सामान चुरा – चुरा कर अपने माँ-बाप को दे देती है। राशि को इस हरकत से बड़ा कष्ट होता है और वह उसे वापिस कर देती है। उसका पति रवि पत्नी की जिन्दगी में खुशी लाने के लिए राशि को बलात इस पर राजी कर लेता है कि वह 'सीमन बैंक' से गायकोलाजिस्ट के निर्देशन में कृत्रिम गर्भादान करवा ले और इस क्रम में बच्चा हो भी जाता है । इस प्रकार इस तथाकथित मासिक बलात्कार की प्रतिक्रिया में राशि को यह महसूस होता कि रवि परिस्थितियों को सहजता से स्वीकार कर पाने में अपने को असमर्थ पा रहा है। और जो पिता का प्यार शिशु को उन्मुकता के साथ देना चाहिए वह नहीं दे पा रहा है। राशि और रवि के दरम्यान संकोच की गाँठ कसती जाती है। आपस की दूरी बढ़ती जाती हैं और दोनों के जीवन में तनाव गहराता जाता है। इसी प्रकार अगली कहानी 'बाबा ! मम्मी को रोको' में उस बच्ची की संत्रास की कहानी है जिसके मम्मी और डैडी अल्ट्रामार्डन है। बराबर घर से बाहर ही रहते हैं । माता-पिता के प्रेम एवं स्नेह के लिए बच्ची तरसजाती है। 'प्रतिरोध' और 'अतीत जीवी' कहानी में मुख्यतः नारी की मानसिकता की कहानी है।

कहानी संग्रह 'शहर में अकेली लड़की' कथाकार डॉ0 उर्मिला शिरीष का पाँचवा कथा – संग्रह जिसमें वस्तु विधान नारी चेतना को आधार बनाकर किया गया है। लेकिन इस संग्रह की 'दाखिला' या 'झूलाघर' जैसी कहानियों को छोड़ दे तो इन कहानियों में हमारे बदलते समय की आहट उस तरह से मौजूद है । जो इधर की कहानियों में एक महत्वपूर्ण स्वर की तरह मिलता है। डॉ0 उर्मिला शिरीष की अधिकांश कहानियों का मूल – विषय घर–परिवार और उसमें आते बदलाव हैं इन कहानियों के जरिए वे हमारे बदलते संबधों को दिखाने का प्रयास करती है। उनकी विसंगतियों को उभारती है। जिसमें स्त्री सब कुछ सहती जाती है और प्रतिशोध भी नहीं करती । 'झूलाघर' कहानी अभी के समाज की उपज है जहाँ पति – पत्नी कामकाजी होने के कारण अपने बच्चों को यहाँ चंद घण्टों के लिए छोड़ जाते है।

कहानी में झूलाघर के संचालिका के वैम्प होते ही कहती अपनी मूल समस्या से मिट जाती है और पाठ्क के मन में तमाम झूलाघरों के लिए यही छवि बन जाती है। कहानी के केन्द्र में कमाँऊ दंपत्ति की विवशताओं का होना घर बन जाती है। यह झूलाघरों की कलई खोलने वाली कहानी है। इस संग्रह की एक कहानी 'दाखिला' भी मध्यवर्गीय परिवारों की और बच्चों की मौजूदा समस्या को उठाने वाली कहानी है। 'शहर में अकेली लड़की' से अपेक्षाएँ कुछ ज्यादा थी । शीर्षक से आभास होता है कि यह शहर में अकेली रह रही लड़की की कठिनाइयों, उसके संघर्षो की कहानी

होगी, लेकिन यह कहानी नायिका बिनी के अकेलेपन से ज्यादा संघर्षो की कहानी है। नायिका अपनी बड़ी बहन के विवाहोपरांत उपजे दुखों से अत्यन्त विचलित लड़की है। अपनी परिव्यक्ता बहन और टूटते – ढहते परिवार को संभालने की महती जिम्मेदारी लेकर संघर्ष करती स्त्री की कथा है। यह संघर्ष करती अपने इरादे में मजबूत लड़की की कहानी है । जो घर की खुशियाँ वापस लाना चाहती है। लेखिका ने बिनी के द्वन्द्व और मानसिक उतार–चढ़ाव को उकेरने में अच्छी सफलता पाई है। एक तरह से यह अकेली लड़की के मानसिक द्वन्द्व की ही कथा है। लेखिका अपने उद्देश्य में कितनी साफ है उसे इस अंश के द्वारा जाना जा सकता है।

"कई – कई रातें उसने छत पर घूमते हुए गुजारी हैं। दीदी की बीती जिन्दगी का एक – एक दिन उसके ऊपर पाले की तरह पड़ा है। क्यों नहीं समझते लोग कि एक लड़की के पीड़ित होने से उस परिवार के कितने लोग पीड़ित हो जाते हैं।" (1)

'न बंद करो द्वार' संग्रह की कहानी सपाट कहानी है । यह कहानी एक विवाहिता के जीवन संघर्ष की कहानी है जो अपने काम से बेहद लगाव रखती है, इसी परिश्रम को वह जीवन में सबसे ज्यादा महत्व देती है, क्योंकि उसका काम उसे एक निजी पहचान देता है। यह कहानी भी दूसरी कहानियों की तरह बड़बोलेपन, अतिनाट्कीयता और फिल्मी अंदाज की शिकार हो जाने के कारण अपना उचित प्रभाव नहीं छोड़ पाती । ये कहानियाँ औसत भारतीय मध्यवर्गीय घर–परिवार के दायरे की

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'शहर में अकेली लड़की' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 9

कहानियाँ हैं। डॉ0 उर्मिला शिरीष का यह संग्रह मध्यवर्गीय नारी की विवशता को प्रौढ़ और परिपक्व तरीके से व्यक्त कर सकी है।

'रंगमंच' संग्रह में संकलित सभी कहानियों का वस्तुविधान कोई न कोई हादसा है और अधिकतर कहानियों में वह हादसा किसी की मृत्यु है। कोई भी मृत्यु-प्रसंग स्वाभाविक नही है और अनेक तरह की जटिलताऐं उसे आवृत किये हुए है। 'रंगमंच' में ससुराल में जला दी गयी औरत है, जिसके मातृत्व को उकसा कर उसका बयान बदलवा दिया जाता है जबकि 'समुन्दर' में पति की आकस्मिक मृत्यु के बाद पत्नी की मनोदशा केन्द्रस्थ है। 'भाग्यविधाता' में बम विस्फोट का शिकार राजनेता है। 'स्वॉग' में मधु मृत्यु शैय्या पर है और कई मौतों का हवाला इस कहानी में है।

'बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु' में पकी उम्र में व्यक्ति का शरीरांत है, लेकिन वह भी स्वाभाविक नहीं है। जिन कहानियों में सीधे मृत्यु के हादसे नहीं है, वहाँ भी स्थितियाँ-अनुभूतियाँ मारक और त्रासद है।

'पत्ते झड़ रहे है' और 'चीख' कहानियों के नारी चरित्र जिस यातना को जीते है, वह मृत्यु से भी अधिक तकलीफ देह है । यह आकस्मिक नहीं है कि कुछ कहानियों में छुरी या चाकू का अप्रस्तुत प्रयुक्त हुआ है और वह स्थिति की भयावहता की व्यंजना में सहायक सिद्ध हुआ है। इस संग्रह की अधिकतर कहानियों में

भुक्तभोगी नारियाँ तमाम प्रतिकूलताओं के मध्य अपने हौसले को कायम रखती है और एसे फैसले लेती हैं जो पुरामूल्यों में विश्वास रखने वाली पुरानी पीढ़ी को चौकाने वाले है । 'चीख' में बलात्कार के बाद लड़की को अनके कटु अनुभवों से गुजरना होता है। घर-बाहर के लोगों के लिए वह दयनीय और मजाक की चीज बन जाती है। डॉ० शोभा के प्रोत्साहन से वह देह की अपवित्रता को लेकर तड़पना छोड़ देती है और आत्मा की आवाज पर आत्मग्लानि से मुक्त होने का निर्णय लेती है । मैंने कोई गलती या अपराध नहीं किया जिसके लिए मैं जिन्दगी भर आत्मग्लानि में घुलूँ । 'स्वाँग' में मधु का बिना विवाह किए विवाहिताओं जैसा रहना केवल स्वाँग नहीं है, इसमें पुरुष वर्चस्व से आक्रांत 'विवाह' संस्था का अस्वीकार भी है। इस कहानी में भी देह की चिन्ता छोड़ आत्मा की आवाज सुनने पर बल दिया गया है और इसी का सुफल है कि मधु उसे जला कर भाग जाने वाले साथी के विरुद्ध बयान देने को प्रस्तुत करती है।

"मैं लड़ूँगी, वायदा कीजिए आप रोज आएँगी । मुझे अकेला नहीं छोडेंगी ......।" (1)

'समुन्दर' की पत्नी का निर्णय सकारात्मक और आश्वस्तकारी है। वह अनुकम्पा – नियुक्ति के लिए आवेदन करती है । अपने घर की जिम्मेदारी को खुद निभाना चाहती है । ये सभी निर्णय स्थितियों की सहज परिणति है, कहीं से भी

---

1. 'रंगमंच' 'स्वाँग' डॉ० उर्मिला शिरीष पृ० 101

धोये हुए नही लगते । इन कहानियों में अनुभूति, विचार और कथन पद्वति का सहज संश्लिस्ट रूप सर्जनात्मक बन पड़ा है।

'निर्वासन' कहानी संग्रह मे नौ कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों में 'किसका चेहरा' 'जुड़े हुए हाथ' और 'उसका सपना रास्ता' इन तीन कहानियों को छोड़कर शेष छः कहानियाँ विभिन्न पारिवारिक रिश्तों पर लिखी गयी हैं, और इन छः में से 'हैसियत', 'प्रतीक्षा' और 'निर्वासन' ये तीन कहानियाँ वृद्धों की विभिन्न स्थितियों, समस्याओं से जुड़ी है। यदि अपवाद छोड़ दे तो वृद्धावस्था किसी भी व्यक्ति के जीवन के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और संवेदनात्मक स्तर पर सबसे दयनीय अवस्था होती है। 'निर्वासन' एक ऐसे वृद्ध की कथा है जिसने अपना पूरा जीवन अपने बेटों के भविष्य संवारने में लगा दिया लेकिन उसके व्यापार के घाटे में जाते ही उसके बेटों ने स्वयं को उससे अलग कर लिया । बेटों की नजर में अहंकारी वृद्ध को अपना घर छोड़कर ऐसे स्थान पर जाना पड़ा जहाँ उसे कोई न जानता हो । उसे भीख माँगकर अपना जीवन यापन करना पड़ा । डॉ0 शिरीष ने कहानी में दिखाया है कि जब भीख माँगते हुए वृद्ध पर उसके पोते की नजर पड़ती है तो वह यह बात अपने पिता से बताते हुए अपने दादा के प्रति संवेदना प्रकट करता है। उसके संवेदनशून्य पिता उसे "अतीत की मुर्दा बातों को उखाड़ने" (1) से मानकर अपना भविष्य देखने को कहते हैं । लेकिन अपने पिता की बात को नकारकर वह अपने

---

1. 'निवार्सन' 'निवार्सन 'डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 68

दादा जी को लेने जाता है क्योंकि उसे अपने बचपन में अपने दादा से मिला प्रेम और स्नेह आज भी याद है। लेखिका डॉ0 शिरीष ने वृद्ध की मार्मिक दशा का वर्णन करते हुए और उसके द्वारा अपने पोते से यह कहलाकर कि "बेटे, वहाँ जाकर यदि पुनः लौटना पड़ा तो अब बरदाश्त नहीं कर पायेंगे । इसे पत्थर की तरह बनाने में कितने ही साल लग गए ।"(1) कहानी का अन्त हो जाता है।

'प्रतीक्षा' एक ऐसे वृद्ध दम्पति की कहानी है जिसके दोनों बेटे अपना कैरियर बनाने के चक्कर में अपने माँ–बाप को छोड़कर चले जाते और दोनों में कोई भी माँ–बाप को अपने पास नहीं रखना चाहते । डॉ0 शिरीष ने फाख्ता पक्षी, जो इस दम्पत्ति के घर में अपना आशियाना बनाए है, कई बहाने से उस वृद्ध दम्पत्ति की पीड़ा को दिखाया है। उन्होंने दिखाया कि जैसे एक पक्षी पहले अपने लिए आशियाना बनाते हैं । अण्डे देते हैं, उन्हें सेते हैं चूजों की रक्षा करते हैं, पालते हैं, उड़ना सिखाते हैं । वैसे ही विभिन्न झंझावतों से बचाकर माँ–बाप अपने बच्चों को पालते हैं किन्तु वे बच्चे –

"... अपना भविष्य पहले देखते हैं । अपना कैरियर, अपनी गृहस्थी, अपने बच्चों और बीबी का आराम । बीबी के चेहरे पर झुर्रिया दिख जाएँ तो साहबजादों का ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है।" (2)

पीढ़ी अन्तराल की समस्या पर लिखी गयी 'हैसियत' नामक कहानी एक ऐसे वृद्ध की कहानी है जो नयी – पीढ़ी के बीच अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने की

---

1. 'निर्वासन' 'निर्वासन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 84
2. 'निर्वासन' 'प्रतीक्षा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 61

समस्या से ग्रस्त है। वह परिवार की प्रत्येक घटना, क्रिया कलापो से अपना सरोकार रखना चाहता है किन्तु नयी पीढ़ी से तारतम्य न बिठा पाने के कारण वह खुद समस्या बन जाता है । वह खुद को परिवार की मुख्यधारा में रखना चाहता है, वह कहता है –

"ये लोग क्यों नहीं समझते कि हमें घर के भीतर जगह चाहिए । सबके बीच " (1)

'धरोहर' कहानी में डॉ0 शिरीष ने शहीदों के सम्बन्धियों (माँ/बाप/पत्नी) को सम्मानित करने के पीछे चलने वाली राजनीति और उनके धन्धे को उद्‌घाटित किया है। शहीद के माँ/बाप की मुख्य समस्या अपने जीवन के सहारे के छिन जाने की है और इसीलिए वे युद्धों के औचित्य को ही प्रश्न के घेरे में ले जाते हैं क्योंकि प्रत्येक युद्ध हजारों के जीने का सहारा छीन लेते हैं । वह सम्मानित किये जाने की राजनीति को समझते हैं –

"सम्मान और सहयोग के नाम पर ले जाकर बैठा देते हैं और बुला देते हैं सम्मानित करने के लिए उन्हें, जिनसे आपकी संस्था को लाभ मिलना होता है। व्यक्तिगत संघर्ष तथा लाभ की भावना वहाँ भी नहीं छूटती ।" (2)

बुआ होने की समस्या डॉ0 शिरीष की अगली कहानी 'पत्थर की लकीर' का विषय है। बड़ी विचित्र बात है कि प्रत्येक औरत बुआ होती हैं लेकिन प्रत्येक परिवार में बुआ और सम्पत्ति को लेकर शंका की भावना होती है।

---

1. 'निर्वासन' 'हैसियत' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 57
2. 'निर्वासन' 'धरोहर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 98

'शैला' जो कहानी की मुख्य पात्र है विपन्न स्थिति में जी रही अपनी बुआ की सहायता के लिए अपने घर में लड़ती है और प्रश्न उठाती है -

"यहाँ इतना पैसा है, बुआ को कुछ करवा दो । उसके नाम एक फ्लैट खरीद दो । पैसा आएगा तो जी सकेगी । आपने सुना नही, उनको खाने पहनने तक को नहीं मिलता । इस घर की है वो फिर इतना अन्तर क्यों । बोलो मम्मी, इतना अन्तर क्यों !" (1)

वह बुआ जो कानून का सहारा लेकर अपने परिवार से सम्पत्ति हासिल करती है, मरने के पूर्व अपनी वसीयत में उसे अपनी भतीजी 'शैला' के नाम कर यह संदेश छोड़ जाती है कि -

"बेटियाँ हर बात में शामिल हो रही हैं, दुःख में, बीमारी में । सिर्फ शामिल नहीं हो पाती तो जमीन के टुकड़ों और घर के आंगनों में । वे जमीन के टुकड़े और आँगन किसी के जीवन को सँभाल सकते हैं, सहारा बन सकते हैं जो वहाँ बेकार पड़े होते हैं .... । काश, कोई समझ पाता ।"(2)

'जुड़े हुए हाथ' बर्तन धोने वाली एक बाई की कहानी है जिस घर में काम करती है उस घर में वाशिंग मशीन आ जाने के कारण उसे मानसिक यन्त्रणा है क्योंकि उसे लगता है कि अब उसे वह 150 रू0 नही मिल पायँगे, जो कपड़े धुलने के एवज में मिलता था और वह अपनी बेटी की फीस नहीं दे पायेगी । वह

---

1. 'निर्वासन' 'पत्थर की लकीर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 90
2. 'निर्वासन' 'पत्थर की लकरी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 92

नही चाहती कि उसकी बेटी भी कपड़े धोए । उधर उसकी बेटी अपने घर में पैसों के लिए लड़ती है क्योंकि उसे कॉलेज में 'मिस कालेज' प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कपड़े लेने है। डॉ0 शिरीष ने यहाँ पूंजीवाद के उस शिंकजे की ओर ध्यान खींचा है जो मध्यवर्ग से आगे बढ़कर निम्न वर्ग को भी चूसने लगा है।

नेताओं द्वारा अपने स्वार्थ हेतु युवा पीढ़ी को भीड़ बना देने और उस भीड़ द्वारा अराजकता फैला देने की समस्या को लेकर 'किसका चेहरा' कहानी आती है। ट्रेन से अपनी छात्राओं को दूर पर ले जाने वाली अध्यापिका के डिब्बे में रैली से लौट रही भीड़ का सारी बर्थ कब्जे में कर लेना और पुलिस द्वारा डिब्बा खाली कराने के दौरान एक युवा को लगे चोट से गिरे हुए खून की बूँदे यह प्रश्न छोड़ती है कि महत्वपूर्ण यह नहीं है कि वह कौन था जो जख्मी हुआ, महत्वपूर्ण यह कि कैसे युवा पीढ़ी जख्मी की जा रही है।

एक विधवा द्वारा शादी कर लेने के बाद उसके पहले पति से उत्पन्न पुत्र की मानसिक यन्त्रणा की कथा है 'दहलीज पर' इस कहानी में बच्चे की माँ यदि अपनी आर्थिक और मानसिक सुरक्षा की खोज में शादी कर लेती है किन्तु उस बालक को न तो मामा के घर ही अपनत्व मिलता है और न नए घर में । डॉ0 शिरीष ने इस कहानी में बालक की उसी मानसिक भावानात्मक पिपासा के प्रश्न को उठाया है।

सौन्दर्य प्रतियोगिता के मोहपाश में बंधकर अपना घर परिवार सबको छोड़ देने

वाली मध्यवर्गीय लड़की 'वृन्दा' की कहानी है 'अपना - अपना रास्ता' । डॉ0 उर्मिला शिरीष ने दिखाया है कि पूँजीवाद के जाल स्वरूप फेंकी गई सौन्दर्य प्रतियोगिता किस प्रकार आधुनिक विचार की कही जाने वाली लड़कियों का शोषण कर रही हैं । इस कहानी में उन्होने आधुनिकता के प्रभाव में मरती हुई संवेदनाओं और दम तोड़ते रिश्तों का स्वरूप प्रस्तुत किया है।

'धर्म-अधर्म' की कहानियाँ वे कहानियाँ है जो गाँव देहात से शुरू होकर महानगर तक की जीवनानुभूतियों को अभिव्यक्त करती है । छल-कपट, ऊँच-नीच, जातीय द्वेष, दलितों की स्थिति, स्वतंत्रता के बाद भारतीय जीवन की वास्तविक तस्वीर, अभावों के बीच जीता हुआ मनुष्य .... धधकता हुआ आक्रोश, चुप तड़प, सपनों का टूटना - बिखरना, राजनीतिक व्यवस्थाओं के कुरूप चेहरे .... राजनीतिक प्रभाव से उपजी व्यक्तिसत्ता का खेल ... । 'पुनरागमन' का पूरा परिवेश ... तीन पीढ़ियों ... और एक लंबे अंतराल में आए परिवर्तन को रेखांकित करना सब कुछ मेरे मानस में था .. मेरी आँखो के सामने । बचपन के तमाम दृश्यों .... उन हवाओं का मधुर स्वर ..... जादुई स्पर्श .... और वर्तमान में देखे हुए दृश्य ही कहानियों का वस्तु विधान है।

'पुनरागमन' संग्रह की कहानियाँ नए व पुराने मूल्यों के संक्रमण से उपजे द्वन्द्व की कहानियाँ हैं। जिनमें जीवन की गत्यात्मकता के साथ - साथ शाश्वतता की

अंदरूनी लय को साफ–साफ सुना जा सकता है । प्रचलित विमर्शो से परे लेखिका आज के क्रूर होते समय के तात्कालिक आघातों से क्षुब्ध होकर मनुष्य जीवन की त्रासदी के विविध पहलुओं की बेबाकी से खोलती है। झूठ, मक्कारी, स्वार्थ, लालच, निर्लज्जता और चरम स्थितियों में मृत्यु जैसे सवालों से टकराती लेखिका धैर्य पूर्वक कहानी का प्रतिपाठ तैयार करती है। इंसानी रिश्तों के श्वेत – श्याम चित्रों की भीतरी तहों में छिपाए गए कांइयापन की धुंध को चुपके से साफ करते हुए वे मनुष्य होने व बने रहने जैसी बुनियादी सवालों से सीधे मुठभेड़ करते हुए रचती है कुछेक स्मरणीय कहानियाँ 'चपेटे' 'गिरगिट' 'अथ भागवत कथा' और मारीचिका जैसी कहानियाँ मौजूदा दौर की विसंगतियों और चरमराते जीवन मूल्यों के दौर मे छीजती मनुष्यता के बीच चुकती आस्थाओं की निरायास अभिव्यक्तियाँ हैं, जहाँ स्वार्थ की भयावह दुरभिसंधियों के बीच मनुष्य के अस्तित्व पर ही खतरा मंडरा रहा है।

'सहसा एक बूँद उछ्ली' कहानी मे जीवन से हारी विकलांग बच्ची की बेबसी व असहनीय यातना पर संवेदना का कोमल फाहा रखते हुए लेखिका पुरुषों के मानसिक दिवालियेपन की बखिया उधेड़ती हैं। मौजूदा परिस्थितियों कें लड़की होने की विवशता ढोती जीने की जद्दोजहद में संघर्षरत पात्र की बैचेनी पूरी संवेदनशीलता के साथ उकेरी गई है, इसी तरह 'माँ बेटी और चिड़िया' कहानी में एक तीखा सवाल उठाया गया है । लड़की कहती है –

''माँ आपने क्यो पैदा किया था हमें ? पापा तो लड़के ही लड़के चाहते होंगे जो उनके कारोबार को हिन्दुस्तान भर में फैला दे । हम तो अनवांटेड संताने है।''(1)

'पीली धातु' जैसी सशक्त कहानी हाशिये पर चले गए आदिवासी समाज की दुश्वारियों का दस्तावेज है जिसमें यथार्थ की सूक्ष्म बारीकियों को जैसी चिमटी पकड़ कर दिखाया गया हो। दैनंदिनी जीवन की घटनाओं को कहानी मे पिरौते समय लेखिका की नजर वैश्विक पटल पर हो रहे परिवर्तनों पर भी है।

'पॅपट शो' कहानी स्त्री जीवन की हकीकत को विस्तार से उद्‌घाटित करती हुई स्त्री-विमर्श का प्रतिपक्ष तैयार करती है । सूक्ष्म मनोभावों का संस्पर्श करती कहानी 'मन न भये दस बीस' हमारे आसपास बिखरी विषमताओं के टुकड़ों को एक साथ जोड़ कर पठनीयता को संबर्धित करती है । मगर अति आदर्शवाद के चलते यह अपनी विश्वसनीयता खो देती है।

बेशक इन कहानियों में अजस्र झरता मीठे झरने जैसा कथा रस गहरी तृप्ति से भर देता है, जिनमें हम आसपास की जानी - पहचानी दुनिया के अजब-गजब रिश्तों के किस्मों को जीवन की आंतरिकता, अजेयता, असीमता एवं शाश्वतता के विविधवर्णी रंगो को बखूबी पढ़ सकते हैं, मगर एक बात अकसर कचोटती है कि आज के ऐसे जटित दौर में कहाँ बचे वैसे आदर्श मूल्य ? 'पुनरागमन' जैसी कहानी की

---

1. 'पुनरागमन' 'माँ बेटी और चिड़िया' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 33

वही पुरानी थीम है – आज के भागदौड़ वाले जीवन से त्रस्त होकर पुरानी दुनिया की तरफ वापसी लेकिन शहरी समस्या का यह सिर्फ एक पहलू ही बयान कर पाती है जब कि सिक्के का दूसरा पहलू उतना ही भयावह और जटिल है शहरी आत्मकेन्द्रितता और रिश्तों के अजनबीपन से त्रस्त पात्र जिस आत्मीय ऊष्मा की तलाश में अपनी जड़ो की तरफ लौटता है, लेकिन आज के हमारे वे गाँव अब वैसे रहे नहीं, ग्लोबल होते गाँवो की बड़ी – बड़ी बातें क्यों न कर लें, सपनों एवं हकीकत के बीच बड़ी खाई बनती जा रही है, जिसका बखूबी एहसास लेखिका को भी है। सांप्रदायिक, जातिवादी एंव स्त्री–पुरूष समानता के बीच लंबे – चौड़े व्याख्यान क्यों न दिए जाएँ मगर मध्यवर्गीय मानसिकता 'पॅपेट शो' की तरह जस की तस । समााजिक फलक पर उभरे आयामों मे से काफी कुछ डॉ0 उर्मिला शिरीष ने अपनी कलम से कहानियों में वस्तु विधान को नयी दिशा व चेतना प्रदान की है।

(ग) कथानक का आधार :-

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य का मुख्य आधार यथार्थता का चित्रण है । नारी की वर्तमान व भूतकालीन स्थिति पर विशेष जोर देते हुए कथानक का आधार बनाया है। लेकिन आज समकालीन स्थिति को यथार्थ रूप में डॉ0 शिरीष ने कथानक को नया आयाम दिया है। कहानी संग्रहों में मुख्य नारी चेतना के स्वर गूँजते हैं प्रथम कहानी संग्रह 'वे कौन थे' मे समस्त कहानियों का आधार नारी चेतना है। पहली कहानी 'यह सच है' में कथानक का आधार हॉस्टल के जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है -

"सभी लड़कियाँ एक साथ रहती, खाती-पीती, बैठती, विभिन्नताओं की दीवारें ही खत्म हो गयी थी ।"(1)

दूसरी कहानी 'दलाल' मे लड़की की माँ ही अपनी लड़की 'सौमय्या' की दलाली करती है । रतन नाम के लड़के के हाथों पैसे ले लेती है और अपनी लड़की को वेश्यावृत्ति के लिए बाध्य करती है -

"फोकट का पैसा नहीं देता वो मरदूद ।"(2)

---

1. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 9
2. 'वे कौन थे' 'दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 27

तीसरी कहानी 'अपने लिए' में भी नारी चेतना के स्वर गूँजते नजर आते है। अम्मा अपने बच्चे के बारे मे कहती है –

''जुआ ..शराब... सट्टा पूरा घर बर्बाद हो गया पर आदतें नही छूट रही उनकी ऐसी तबाही ... अम्मा बेधड़क सिसक उठी थी ।'' (1)

चौथी कहानी 'वे कौन थे' में कथानक का आधार शहरी परिवेश व ग्रामीण परिवेश का समावेश हुआ है।

''एक दूसरे के प्रति वे कितने सहिष्णु, कितने दयाशील, कितने स्नेहसिक होते गये थे इन थोड़े दिनों में ।''(2)

डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों मे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण रोचकता के साथ गूँथा गया है । उन में नारी मन की अच्छी समझ है। मनोवैज्ञानिकता 'सपनों की बारात' में भी जहाँ एक गरीब लड़की चंदा एक धनी लड़की बेबी की देखादेखी स्वयं भी वैसा ही व्यवहार करने लगती है । 'कन्या' कहानी मे 'शिवा' के माता–पिता एक पंडित पर अगाध श्रद्धा रखते है पंडित उनके घर रहता भी है और 10 वर्षीय शिवा को अपने भूखे लिजलिजे स्पर्श से परिचित कराता है । दो वर्ष बाद फिर वही पण्डित ठहरता है और अपनी क्रियाएं दोहराता है परन्तु इस बार शिवा पंडित की पिटाई कर देती है । 'दलाल' जैसी कहानी भले ही वास्तविकता की धरती पर लड़खड़ाती आये,

---

1. 'वे कौन थे' 'अपने लिए' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 43
2. 'वे कौन थे' 'वे कौन थे ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 61

परन्तु उस चरित्र की पीड़ा पराई नहीं लगती जो कहानी का मुख्य आधार है। कुल मिलाकर इस कहानी संग्रह में उनकी अपनी उपलब्धि तो है ही – वह इस क्षेत्र के कथा साहित्य की जड़ता को मिटाने और जीवंतता, सृजनशीलता का मंगलाचरण है। 'वे कौन थे' कहानी को जिन्दा रखते हैं, और एक घृणित सच से साक्षात्कार करवाते हैं। नायिका घिनौनेपन से दूर भाग जाना चाहती है यही कहानी का आधार है।

'मुआवजा' कहानी संग्रह जिसमें प्रमुख कथानक का आधार आज समकालीन परिस्थितियों को बनाया गया है। इसमें चार कहानियाँ तथा एक लघु उपन्यास के रूप में संकलित है। पहले संकलन की भाँति इस संकलन की रचनाओं में भाषा का प्रवाह और परिपक्वता निरीक्षण की क्षमता और कथ्य की स्पष्टता साफ परिलक्षित होती है। 'उसका अपनापन' कहानी में आज के युवा वर्ग के आक्रोश को कथानक का आधार बनाया गया है। दूसरी कहानी 'सयाल' में बेरोजगारी को बड़ी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत कर कथानक का आधार बनाया गया है। तीसरी कहानी 'पलकों पर ठहरी जिन्दगी' को इकलौते बेटे की करूणा को आधार बनाया गया है । इसी प्रकार 'ढहते कगार' कहानी में सामान्य वर्गीय करूण गाथा को कथानक का आधार बनाया गया है।

लेखिका ने अपनी कहानियों की संरचना को अनुभूति के साथ संवारने और अभिव्यक्ति देने का पूरा प्रयास किया है। प्राकृतिक उपनामों के प्रयोग ने भाषा और शिल्प को निखार दिया है।

'केंचुली' कहानी संग्रह में कथानक का मुख्य आधार समाज में बसी रूढ़ियों को निकाल फेकना ही मुख्य ध्येय है। उर्मिला शिरीष की 'केंचुली' आधुनिक सामाजिक संदर्भ में पल रहे मौजूद नारी जीवन के बदले उन्मेष की कहानियाँ है। *'केंचुली'* की छः कहानियाँ ही समकालीन नारी जीवन के समस्त युगबोध की कहानी नहीं मानी जा सकती, परन्तु वे इसके मानक प्रारूप पर प्रतिनिधित्व तो करती ही है। केंचुली की विजया, लक्ष्मी, मंजू, निरूपमा, प्रिया, अंजू और लतिका को लेकर हम उस भारतीय समाज की तस्वीर कायम कर सकते हैं। जहाँ औरतें ऊपर से तो पढ़ी लिखी होने का संवैधानिक सामाजिक सामानता का, प्रगतिशील चेतना का संपन्न स्वतंत्रता का और वैचारिक अहमन्यता का लबादा ओढ़े हुई होती है। परन्तु भीतर ही भीतर उन्हे रिश्ते – दर – रिश्ते टूट जाने का, प्रेम के बाजार में नुमाइश की चीज होने का पुरूष संचालित समाज के संस्कारों से बिधकर जख्म का आरोपित मर्यादाओं के ज्वलनशील दीपों से जलते फफोले लेकर देवी हो जाने की शिष्टता पालने का और यौन लिप्सा सम्पन्न पुरूष सत्ता के सामने घुटने टेक देने का दुःख सिसकता होता है।

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में कथानक का मुख्य आधार आज के संवेगों की अभिव्यक्ति मनुष्य के अन्तः प्रदेश में भाव–अभावों का द्वन्द्व, सघर्ष, भय, आक्रोश, राग–द्वेष, घृणा, प्रेम आदि । जिनका स्त्रोत हमारी सहज प्रवृत्तियाँ है। ये

प्रवृत्तियाँ कहानियों की रीढ़ है। 'सहमा हुआ कल' में सात कहानियाँ संग्रहित है। 'सहमा हुआ कल' शीर्षक की कहानी में एक लड़की की मानसिक समस्याओं को कथानक का आधार बनाया गया है। 'शून्य' कहानी में परिस्थितियाँ वा खुद के सृजित जीवन समस्याओं से कमर कसकर जूझने की भरपूर शक्ति को कथानक का आधार बनाया गया है।

शिरीष जी के इस संकलन के प्रायः सभी कहानियों की भाव - भूमि मध्य वर्ग का या कुछ - कुछ उच्च वर्ग से रही है। पर तत्वों को उभारने का ही अधिक प्रयास है। कहानी के पात्र वास्तविक और ट्रीटमेंट तर्कसंगत एवं क्रमवद्ध है। संत्रास की अनुभूतियाँ प्रखर हैं । परिवेश से प्रभावित होकर अचेतन मनः स्थितियों को शब्द भाषा या बिम्ब के सहारे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है। ये तत्व मुख्यतः कहानियों के नारी पात्रों में सघनता के साथ उजागर हुए हैं। यही कथा संग्रह के कथानक का आधार है।

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों के कथानक का आधार मध्यवर्गीय स्त्री के दैनिक जीवन के राग-विरागों और दुखों के सहज - सरल को बनाया गया है। शिरीष की कहानियों में शैली के स्तर पर वह कौंध भले न हो लेकिन एक सादगी जरूर है। 'शहर में अकेली लड़की' कहानी में अकेली औरत के

दुःख हैं। 'झूलाघर' में उन शहरी पारिवारिक स्थितियों की पड़ताल है। जहाँ पति - पत्नी दोनों काम करने जाते हैं।

'अंतिम यात्रा से पहले' कहानी में भी स्त्री यातना के मार्मिक प्रसंगो को कथानक का आधार बनाया है अधिकतर कहानियों में नारी - चरित्र पितृसत्तात्मक समाज की विडम्बनाओं और अवमूल्यों से सन्तप्त और उत्पीड़ित है। पति की कठोरता, पुत्र की उपेक्षा और घर की वर्जनाओं में आज की नारी का दम घुट रहा है। वे मुक्ति के लिए छटपटा रही हैं। डॉ0 शिरीष ने बहुत ही ईमानदारी से इन सभी समस्याओं को कहानियों का मुख्य आधार बनाया है। जिससे कथानक अति रूचिपूर्ण बन गया है।

'रंगमंच' कहानी संग्रह में कहानियों के कथानक का मुख्य आधार नारी चेतना को बनाया गया है। कहानी 'रंगमंच' आज की चालाक और जोड़-तोड़ वाली संस्कृति का आईना है। वैयक्तिक और सामाजिक यथार्थ से साक्षात्कार कराती इन कहानियों में अति संवेदनशीलता नारी - मन को अक्सर देखा जा सकता है। नारी मन की अनुभूतियाँ यहाँ जैसे जीवन्त हो उठी हैं। इनमें एक किस्म की आत्मपरकता है जो झूठे पड़ते जा रहे सामाजिक संबधों और सरोकारों की वजह से है। इसके अलावा पाँव पसारता राजनैतिक विद्रूप चरमराती व्यवस्था, दम तोड़ते न्यायतंत्र और अर्थतंत्र इसकी अन्य वजह हैं। मानवीयता की बात इस परिदृश्य में बेमानी लगती हैं। इस

परिदृश्य की विडंबनाएँ और त्रासदियाँ इन कहानियों का आधार है प्रस्तुत संग्रह की 'समुन्दर', 'आज रात का सपना' 'स्वांग', 'तूफान' और 'चीख' शीर्षक कहानियों में करूणा और संवेदना के मुख्य स्वर हैं जो कथानक के आधार हैं जिनमें आज की समकालीन स्थिति का दृश्य साफ यथार्थ रूप में दिखलाई पड़ता है।

'निर्वासन' कहानी संगह में संकलित कहानियों के कथानक में मुख्य आधार मध्यवर्गीय संवदेना का बनाया है। नौ कहानियों के इस संग्रह में लेखिका ने दरअसल एक ऐसा संवेदनशील मार्ग पकड़ा है, जो स्त्री के अपने आसपास के समाज, पात्रों और परिस्थितियों के प्रति एक प्रकार की स्वाभाविक संवेदनशीलता का आख्यान है। पात्र सामान्यतः जीवन में चारों ओर एक सामान्य और सहज उपस्थिति के तौर पर मौजूद है, चाहे फिर वह स्त्री हो, बूढ़े हो या बच्चे, यानी वे समाज को सक्रिय रूप से हिला रहे हों या नहीं लेकिन बदलाव की भूमि तैयार करने वाले निर्वासन को बाखूबी उकेरते हैं। 'उसका अपना रास्ता' की पात्र आज के समाज की है जो सिगरेट पीती है लेखिका इस चित्रण के माध्यम से यह कहना चाहती है कि स्त्री के लिए इस समाज में कई तरह के निर्वासन है। वे बातें भी जिनसे स्त्री के असली व्यक्तित्व की छवि उभरने की बजाय समाज की परम्पराओं में लौट आने की गरज है। पर ऐसे संस्कार मध्यवर्गीय परिवारों में ही अधिक है, उनकी संवेदना की हैसियत पर

निर्भर करता है। डॉ0 शिरीष ने नारी चेतना को ही कहानियों के कथानक का आधार बनाया है।

'धर्म – अधर्म' कहानी संग्रह में कथानक का आधार नारी की विडम्बनाओं और दुर्दशाओं को बनाया गया है। जिसमें वह समाज में कई तरह से प्रताड़ित की जाती है। यह हकीकत है कि वर्तमान प्रौद्योगिक समाज में नारी के प्रति समूचे समाज के नजरिए में बदलाव आया है। दुनिया भर के नारीवादी आंदोलनो के प्रभाव एवं नारीवादी संगठ्नों के प्रयास से नारी की सामाजिक हैसियत में बढ़ोत्तरी हुई है। सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र के सभी आयामों मे उसे शरीक करने की मानसिकता समाज मे पल्लवित हुई है। सतही तौर पर ही हमारे पूंजीवादी समाज की तब्दीली हुई है, उसका अधिष्ठान अब भी पुरूष मेधा ईकाईयों का समुच्च है। इस नींव से उभर आती पुरूष की अधिनायक वृत्ति में दरार नही आयी है। आज भी वह, स्त्री की तुलना में आगे है, हर क्षेत्र मे उसे वरीयता मिल रही है । सबसे बड़ी बात यह है कि पुरूषत्व हासिल करने के लिए उसे पुरूष लिंगत्व ही काफी है, स्त्री के समान स्त्रीत्व के तथाकथित तथ्यों जैसे लज्जा, मसृणता, श्रद्धा आदि को अपनाने की जरूरत नहीं पड़ती । इसलिए अपने अहम पर ठेस आज भी किसी हालत में पुरूष के लिए असह्य है। इसी भावना को कहानियों के कथानक का आधार बनाया गया है।

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में कथानक का आधार

लेखिका न आज के क्रूर होते समाज के तात्कालिक आघातों से क्षुब्ध होकर मनुष्य जीवन की त्रासदी के विविध पहलुओं को बेबाकी से खोलती है। झूठ, मक्कारी, स्वार्थ लालच, निर्लज्जता और चरम स्थितियों में मृत्यु जैसे सवालों से टकराती लेखिका धैर्यपूर्वक कहानी का प्रतिपाठ तैयार करती है, इंसानी रिश्तों के श्वेत-श्याम चित्रों की भीतरी तहों में छिपाए गए काइयांपन की धुंध को चुपके से साफ करते हुए वे मनुष्य होने व बने रहने जैसे बुनियादी सवालों से सीधे मुठभेड़ करते हुए रचती है। कुछेक कहानियाँ – 'चपेटे', 'गिरगिट' 'अथ भागवत कथा' और 'मरीचिका' जैसी कहानियाँ मौजूदा दौर की विसंगतियों और चरमराते जीवन मूल्यों के दौर में छीजती मनुष्यता के बीच चुकती आस्थाओं की निरायास अभिव्यक्तियाँ हैं जहाँ स्वार्थ की भयावह दुरभिसंधियों के बीच मनुष्य के अस्तित्व पर ही खतरा मंडराता जा रहा है। 'सहसा एक बूँद उछली' कहानी में जीवन से हारी विकलांग बच्ची की बेबसी व असहनीय यातना पर संवेदना का कोमल आश्वासन रखा है। 'पॅपेट शो' कहानी में स्त्री जीवन की हकीकत को विस्तार से उद्‌घाटित करती हुई स्त्री विमर्श का कथानक तैयार करती है जिसका मूल आधार नारी ही है।

(घ) कथा योजना का वैशिष्ट्य :-

कहानी के समस्त मूल उपकरणों में कथावस्तु ही मूल है। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से कथायोजना का महत्व कहानी के अन्य तत्वों की तुलना में अधिक है। वस्तुतः कथावस्तु ही कहानी का केन्द्रीय आधार होता है। अन्य सभी तत्व कथावस्तु के ही सहायक और पूरक होते है। वे कथावस्तु में निबद्ध घटनाओं को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए विविध सूत्र जुटाते हैं और कहानी को स्वरूपगत परिपूर्णता प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से कहानी की कथावस्तु विविध घटनात्मक विवरणों के आधार पर निर्मित होती है। कथा वस्तु के सफल और कलात्मक रूप में प्रस्तुतीकरण के लिए यह आवश्यक है कि उसमें घटना विन्यास सम्बन्धी कतिपय विशेषताओं का समावेश हो । सामान्य रूप से कहानी की कथावस्तु को संक्षिप्त होना चाहिए, क्योंकि आकारगत सीमा के कारण उसमें बहुसूत्री कथा के लिए स्थान नही होता । उसमें मौलिकता भी अपेक्षित है, जो कहानीकार की प्रतिभा शक्ति की परिचायक होती है। रोचकता भी कथावस्तु का एक ऐसा गुण है, जिसके अभाव में श्रेष्ठ कहानी भी असफल हो जाती है । कथावस्तु में प्रस्तुत विभिन्न घटनाओं में क्रमवद्धता का होना भी आवश्यक है, क्योंकि इससे कहानी में प्रवाहशीलता बनी रहती है। इसके साथ ही कथावस्तु में विश्वसनीयता का गुण भी होना आवश्यक है।

यह कहानी की यथार्थपरकता का बोध कराता है। कहानी के आरम्भ से लेकर अन्त तक पाठक के हृदय में कौतूहल अथवा उत्सुकता भी बनी रहनी आवश्यक है क्योंकि अन्ततः कहानी के माध्यम से पाठक की अद्भुत रस की तृप्ति भी होती है। एक सफल कहानी में यह गुण स्वाभाविक रूप से समाविष्ट मिलता है, इसके लिए नाटकीय सूत्रों की आयोजना नही की जाती। शिल्पगत नवीनता भी कहानी की कथावस्तु का एक विशेष गुण है। प्राचीन कथा साहित्य में कथावस्तु के उपरान्त इसी तत्व को महत्व दिया जाता था । आधुनिक कहानी में यद्यपि चरित्र-चित्रण का तात्विक महत्व बढ़ गया है, परन्तु फिर भी शिल्प वैशिष्ट्य को प्राथमिकता दी जाती है। कहानी की कथावस्तु की एक अन्य विशेषता उसकी प्रभावात्मक एकता है, जिसका आधार उसका सुनियोजित प्रस्तुतीकरण है। सामान्य रूप से कहानी की कथावस्तु की सफलता का आधार ये ही विशेषताए है।

1. संक्षिप्तता
2. मौलिकता
3. रोचकता
4. क्रमबद्धता
5. विश्वसनीयता
6. उत्सुकता
7. शिल्पगत नवीनता
8. प्रभावात्मक एकता

1. संक्षिप्तता -

कहानी की कथा योजना का सर्वप्रथम गुण उसकी संक्षिप्तता है। कहानी की आकारगत सीमाओं के कारण उसकी कथा वस्तु में अनेकसूत्री घटनाओं के संग्रथन को औचित्यपूर्ण नहीं माना जाता । हिन्दी कहानी में आरम्भिक काल से लेकर वर्तमान समय तक कथावस्तु का आधार प्रायः कोई एक महत्वपूर्ण घटना होती है, जिसकी प्रभावात्मकता में वृद्धि के लिए कुछ सहायक सूत्र नियोजित किये जाते है। इसी प्रकार से एक कहानी में सामान्य रूप से किसी एक ही प्रधान चरित्र की सृष्टि की जाती है और इसके साथ कतिपय सहायक चरित्रों की आयोजना भी की जाती है। कहानी के कलात्मक रूप के विकास के साथ-साथ उसमें कथातत्व का ह्रास भी होता मिलता है। सब मिलाकर एक सूक्ष्म अनुभूति भी कहानी की कथावस्तु का रचनात्मक आधार हो सकती है। इससे यह स्पष्ट है कि कथावस्तु का यह गुण हिन्दी कहानी में प्रायः सदैव ही विद्यमान रहा है। इस कथन के अपवाद रूप में कुछ कहानियाँ ऐसी अवश्य मिल सकती है, जिनकी कथावस्तु में बहुसूत्री घटनाएँ और उन्ही के अनुरूप चरित्र बाहुल्य मिलता है। प्राचीन भारतीय लोककथा साहित्य में, विशेष रूप से पंचतंत्र, 'जातक' तथा 'हितोपदेश' में जिस प्रकार की बहुसूत्री कथावस्तु मिलती है, वैसी आधुनिक कहानी में अभाव देखा जा सकता है। आज वर्तमान

समकालीन कहानी में एक सूत्र में से दूसरे सूत्र को निकालते हुए एक के बाद दूसरी कथा का वर्णन नही मिलता है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा–साहित्य में कथा–नियोजना का पहला गुण संक्षिप्तता है। कहानी संग्रहों में संक्षिप्तता कई रूपों में देखने को मिलती है। कथानक का स्वरूप संक्षिप्त रूप में देखने को मिलता है और संवाद योजना भी अति संक्षिप्त रूप में उभर कर सामने आती है। कथा नियोजना की संक्षिप्तता उनके निम्न कहानी संग्रहों में देखने को मिलती है 'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में सभी कहानियों की कथा–नियोजना संक्षिप्त रूप में उभर कर पाठक के सामने प्रस्तुत होती है । 'सहमा हुआ कल' कहानी की कथा नियोजना इस प्रकार है –

"यह कहानी है एक छोटी सी लड़की की । उस लड़की की, जो तमाम घटनाचक्रों बातों, प्रभावों और परिणामों से उठे सवालों से घिर जाती है और हर किसी से जानना चाहती है, मगर सब उसको छोटा समझकर झिड़क देते है। तब अपने अन्दर पनप रही, दहशत और सवालों के जवाब तलाशती है वह पत्रों में ... कविताओं में ... चित्रों में .... उसकी अन्तर्मुखी जिज्ञासाओं, चिन्ताओं और व्यथाओं का जबाब फिर भी कहीं नहीं मिल पाता है? ..... "(1)

---

1. 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 9

'प्रतिरोध' कहानी की कथा योजना भी संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत है –

"साहिबा बीमार है । हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया है।" (1)

बस पूरी कहानी इस वातावरण के इर्द–गिर्द घूमती रहती है।

'बाबा ! मम्मी को रोको' कहानी में कथा की नियोजना आज के वातावरण के अनुसार है –

"ये सनी इतना बिगड़ गया है कि एक बात नहीं मानता । अभी से चटर–पटर जबाब देने लगा है। हर बात आकर पूछेगा, हर बात सुनेगा कान लगाकर । अब इसे क्या मतलब इन बातों से । अभी ये हाल है तो बड़े होने पर न जाने क्या होगा । "(2)

इस कहानी मे आज के युवाओं को केन्द्रित भाव मानकर कथा नियोजना की गई है। 'शून्य' कहानी में वर्तमान समाज को कथा सूत्र बनाया गया है जिस वातावरण में आज का समाज ढल रहा है उसका यथार्थ चित्रण डॉ0शिरीष अति संक्षिप्त रूप में करती है –

"दस साल का समय कम नहीं होता प्रशान्त ! अब मैं और इन्तजार नहीं कर सकती हूँ । सोचो तो प्रशान्त कब करेंगे हम शादी ? कब बसायेंगे घर ?

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'प्रतिरोध' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 28
2. 'सहमा हुआ कल' 'बाबा ! मम्मी को रोको' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 62

अट्ठाइस वर्ष तो यूँ ही गुजर गये हैं। जिस बात का विरोध होना है उसका तो होगा ही, यह तय बात है। फिर हम किस बात का इन्तजार कर रहे है और क्यूँ ? किसके लिए ? किसने किया हमारे लिए इन्तजार ?" (1)

शून्य कहानी से एक संदेश जाता है हमारी युवा पीढ़ियों के लिए जो करना है वह कार्य समय पर करना चाहिए ।

'मौलिकता' गुण डॉ0 शिरीष की कहानियों का मुख्य विषय है जिसमें कुछ उद्धरण द्रष्टव्य हैं – धर्म–अधर्म कहानी संग्रह में 'अथ भागवत कथा' शीर्षक कहानी में ब्राह्म्णवादी समाज का बड़ी यथार्थ और मौलिकता के साथ चित्रण डॉ0 शिरीष ने किया है –

"ब्राह्म्ण तो एकदम ही बहिष्कार कर देंगे । वैसे भले ही बाहर खाना खाते हो मगर यहाँ तो ये जजमान के रूप में ..... पूज्य बने बैठें हैं। स्वर्ग व पुण्य दिलाने वाले माध्यम । उनकी तो पूजा की जाएगी फिर उन्हें नाराज कैसे किया जा सकता है।" (2)

वर्तमान समाज में जरूरी नही है कि धार्मिक पूजा – पाठ का उल्लघंन करने वाले दलित ही हैं, वह तो कोई भी प्राणी हो सकता है । कुछ पंक्तियाँ 'अथ भागवत कथा' से द्रष्टव्य है –

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 76
2. 'धर्म–अधर्म' 'अथ भागवत कथा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 35

"किसी के पास पैसा न हो तो धार्मिक अनुष्ठान कहाँ से कराएगा । मन में तो सबकी इच्छा हो सकती है।" (1)

डॉ0 उर्मिला शिरीष ने नारी की संवेदना को बहुत गहराई से छुआ है जिसमें वह प्रत्येक कहानी में अपनी मौलिकता को उभारती हैं – 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'टोहनी' शीर्षक कहानी में अन्ध विश्वासों के कारण नारी किस कीचड़ में फँस जाती है जिसको सभी लोग बच्चों को खाने वाली बताते है सभी एक स्वर में कहते हैं –

"वो रही डायन । इसे मारो । भगाओ । अब बच्चों को फिर से खा जायेगी।"(2)

2. मौलिकता :-

कहानी की कथायोजना की विशेषता मौलिकता भी है । यह विशेषता वास्तव में कहानीकार की प्रतिभा शक्ति की द्योतक होती हैं। क्योंकि कहानी की कथावस्तु में जितनी अधिक मौलिकता होती है, उसकी सफलता की सम्भावनाएं भी उतनी ही बढ़ जाती है । इस दृष्टि से मौलिकता कहानी की कथावस्तु का एक अनिवार्य गुण है । एक कहानीकार जीवन के विविध क्षेत्रों मे से जिस प्रकार की कथा वस्तु की आयोजना अपनी कहानी के लिए करता है । वह इस तथ्य की भी द्योतक होती है,

---

1. 'धर्म – अधर्म' 'अथ भागवत कथा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 33
2. 'पुनरागमन' 'टोहनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 91

कि उस क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित मूलभूत समस्याओं तथा तथ्यों का उसने किस सीमा तक और किस रुप में साक्षात्कार किया है। सामान्य रुप से मौलिकता का गुण कहानी की कथा वस्तु में तभी आ सकता है, जब कहानी लेखक में मौलिक अनुभूतियों के सूक्ष्म तथा विस्तृत अंकन की समर्थता होती है। विषय वस्तु के अनुसार यदि आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य का वर्गीकरण किया जाय, तो इस तथ्य की अवगति होगी कि उसका क्षेत्र विस्तार बहुत अधिक है। मनुष्य का जीवन अपनी संपूर्ण विराटता के साथ विविध विषयक कहानियों में अभिव्यंजित हुआ है। कहानीकार की कल्पना ने उसके प्रत्येक क्षेत्र को प्रस्तुत किया है। परन्तु फिर भी कुछ कहानियाँ ऐसी होती हैं। जो समकालीन प्रवृत्तियों से भिन्न सर्वथा मौलिक भावभूमि पर लिखी जाती हैं। इसी कोटि की रचनाएँ कहानीकार डॉ0 उर्मिला शिरीष की हैं। निर्वासन, धर्म–अधर्म, रंगमंच, पुनरागमन आदि संग्रहों की कहानियाँ मौलिक है इनमें आज के वातावरण व परिवेश का चित्रण देखने को मिलता है। 'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में सभी कहानियों का कथानक मौलिक है और उनका मुख्य उद्देश्य नारी चेतना को उजागर करना है। वर्तमान समाज में सर्व–समाज का नारा गूँज रहा है जिस पर डॉ0 शिरीष महाराज के माध्यम से कहती है –

"हमारे साथ अब भेदभाव काहे का । अब तो सब जात के लोग सब काम

कर रहे है, हमारे बच्चों को लगे कि उनके बाप-दादों के साथ जो हुआ सो हुआ । उनके साथ वह सब नहीं होगा ।"(1)

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में कहानियों की अपनी अलग ही मौलिकता है जो एक सभ्य समाज पर व्यंग्य करती है परमाणु युद्ध पर चिन्ता व्यक्त करती हुई बंटी कहती है -

"क्यों होगा परमाणु युद्ध ? क्यों नही मानते सब एक दूसरे की बात । सब देशों के आदमी एक जैसे होते हैं ..... फिर क्यों मारना चाहते हैं।" (2)

4. क्रमबद्धता -

कथावस्तु को घटनाओं का आलेख भी कहा जा सकता है, क्योंकि उसमें विविध घटनाओं की क्रमबद्धता नियोजित की जाती है। सामान्य रूप से हमारे दैनिक जीवन में प्रायः दो प्रकार का घटनाक्रम रहता है। एक तो वह जिसका सम्बन्ध सांसारिक यथार्थ अथवा व्यावहारिकता से होता है और दूसरा वह जो हमारे मानस में चक्र रूप में चलता रहता है । जिस प्रकार से एक घटना के पश्चात दूसरी घटना घटित होती है, उसी प्रकार से हमारे मस्तिष्क में भी एक विचार के पश्चात दूसरा विचार आता है। ये दोनों घटनाक्रम वस्तुतः अन्योन्याश्रित रूप से पारस्परिक सम्बद्धता रखते हैं, क्योंकि जिस प्रकार से कोई घटना वास्तविक रूप में घटित होकर हमारे

---

1. 'धर्म – अधर्म' 'अथ भागवत कथा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 35
2. 'सहमा हुआ कल' 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 13

मस्तिष्क में किसी विचार को जन्म दे सकती है उसी प्रकार से हमारे मस्तिष्क से उत्पन्न हुआ कोई विचार किसी घटना का मूल कारण हो सकता है । इसलिए घटना और विचार का महत्व निर्धारण उसके बाह्य रूप से न किया जाकर उसकी गहराई के आधार पर किया जाना चाहिए । आन्तरिक अनुभूति का चित्रण करने वाली कहानी इसी कारण से घटनाप्रधान कहानियों की तुलना में उत्कृष्ट होती है। इस दृष्टि से भी कहानी की कथावस्तु में क्रमबद्धता के गुण का समाविष्ट होना वांछनीय है। बहुसूत्री कथावस्तु पर आधारित कहानियों में तो इस गुण की और भी अधिक अपेक्षा होती है।

डॉ0 शिरीष के कथा – साहित्य में कथानक क्रम से चलता है जिससे पाठकों में रूचि बनी रहे और वह पढ़ने के लिए लालायित बना रहे । 'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में 'लौटकर जाना कहाँ है' शीर्षक कहानी में प्रेमी, प्रेमिका को जबाब देता हुआ कहता है –

"तुम क्या जानो प्यार क्या होता है ? जब किसी से प्यार करोगी तब जानोगी कि हृदय की धड़कन और देख न पाने से कैसी तड़प उठती है।"(1)

'लौटकर जाना कहाँ है' कहानी में क्रम बद्धता अन्त तक बनी रहती है। जब तक कि उनका मिलना नहीं होता है।

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'लौटकर जाना कहाँ है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 79

'केंचुली' कहानी संग्रह में 'साझेदारी' शीर्षक कहानी में विजया को सन्तान पैदा नहीं होती है तो वह लक्ष्मी का सहारा लेती है केवल बच्चा पैदा करने के लिए पूरी कहानी क्रम से चलती है लक्ष्मी बच्चे के बारे में सोचती है –

"है माँ दुर्गा मेरे मन को बाँधकर रखो । मेरे मन में ऐसा पाप पैदा मत होने दो । यह बच्चा मेरा नहीं है। पर पैदा तो मैं ही करूँगी । प्रसव – पीड़ा तो मैं ही भोगूँगी । कैसे भूल सकूँगी इसे मैं? कैसे छोड़ सकूँगी मैं अपने बच्चे को ? नहीं यह अन्याय मुझसे न होगा ।" (1)

5. विश्वसनीयता –

कहानी की कथावस्तु के विशेष रूप से विश्वसनीयता का होना आवश्यक है। एक कहानी लेखक की कहानी में जो कथावस्तु प्रस्तुत होती है, उसका आधार चाहे जितना अधिक यथार्थपरक हो, परन्तु उसमें कल्पना तत्व का न्यूनाधिक रूप में योग अवश्य रहता है – 'डॉ० श्याम सुन्दर दास' के विचार से –

"बौद्धिक वृत्ति जागरूक रहने के कारण आख्यायिका का पाठ्क उसके लेखक से बहुत अधिक विवेक की अपेक्षा रखता है । लेखक को भी तदनुसार ही अधिक कौशलपूर्वक अपना कार्य करना पड़ता है। वह अपनी आख्यायिका में कही भी अविश्वसनीय अंश न आने देगा, ऐसा अंश जो पाठ्क की कल्पना को कुछ भी

1. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ० उर्मिला शिरीष पृ० 21

खटके। वह आख्यान को अधिक स्थायी प्रभावकारक बनाने के आशय से वस्तुओं के रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि का सूक्ष्म वर्णन करेगा । और उसकी स्मृति को दृढ़ करती है।'' (1)

प्रायः ऐसा भी होता है कि कथावस्तु पूर्णतः कल्पित होती हुई भी यथार्थता की सम्भावनाओं को प्रस्तुत करती है और विश्वसनीयता प्रतीत होती है। यही स्थिति उसकी कलात्मक सफलता की द्योतक होती है। वास्तव में एक कहानीकार अपनी रचना में व्यवहारतः यह चित्रित करने की चेष्टा करता है कि विभिन्न परिस्थितियों में मानव चरित्र की क्या प्रतिक्रियात्मक सम्भावनाएँ हो सकती है। इस अभिव्यक्तिकरण को प्रभावशाली और विश्वसनीय बनाने के लिए ही वह कल्पना का आश्रय लेता है। इस दृष्टि से ये कल्पनातत्व कथावस्तु को यथार्थपरक रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहानी में समाविष्ट किये जाते हैं। इसीलिए इस कोटि की कल्पना सृष्टि के पीछे कहानी लेखक का यह उद्देश्य होता है कि वह अपनी रचना के माध्यम से समाज के उस यथार्थ स्वरूप को उद्घाटित कर सके, जो वास्तव में विश्वसनीय हो, क्योंकि इस गुण के अभाव में कोई भी कहानी प्रभावाभिव्यंजना की दृष्टि से सफल नहीं कही जा सकती । डॉ0 उर्मिला शिरीष की लिखी हुई सभी कहानियों में विश्वसनीयता दृष्टव्य है। 'टोहनी' कहानी में ठाकुर एक दलित को डाँटते है जो दलितों की स्थिति थी उसे यथार्थ शब्दों में ठाकुर कहता है –

---

1. 'साहित्यलोचन' डॉ0 श्याम सुन्दर दास पृ0 190–191

"पंच बनकर शेरनी बन गयी है । काहें की रपट लिखवाने गई थी .... बलात्कार की । पिटाई की । सती बनती है रांड ।" (1)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में 'जुड़े हुए हाथ' शीर्षक कहानी में एक स्त्री कभी नही चाहती है कि वह अगर दलदल में फँसी है तो उसकी सन्ताने भी उसी कीचड़ में फँसे । तो वह कहती है जहाँ उसके शब्दों में आज की परिस्थिति के अनुरूप विश्वसनीयता झलकती है –

"मैं अपने दिल पर पत्थर रखे रहती हूँ । कभी नहीं बताया आपको । पहले वाले आदमी ने घर से निकाल दिया था । दोनों बच्चों को छीन लिया था । बाद में इस आदमी से यह लड़की हुई तो इसके हक के लिए लड़ना पड़ा मुझे । इसके लड़कों के बीच मेरी लड़की क्या थी । मैं नही चाहती कि मेरी लड़की मेरा जीवन जीए ।" (2)

कथा–वस्तु वैशिष्ट्य कहानी के प्रमुख अंग है। भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने विभिन्न दृष्टियों से कहानी के स्वरूप पर विचार करते हुए कथा–वस्तु को ही प्रधानता दी है। यों तो कहानी की रचना में उसके सभी तत्वों का योग होता है परन्तु कथावस्तु वैशिस्ट्य के अभाव में उसकी संभावना नही होती । सामान्य रूप से कथा योजना का आपेक्षिक महत्व इस तथ्य से निर्धारित होता है कि उसमें वर्णित जीवन

---

1. 'पुनरागमन' 'टोहनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 81
2. 'निर्वासन' 'जुड़े हुए हाथ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 49

खंड का कहानीकार को कितना प्रखर अनुभव है। आरम्भिक युगीन हिन्दी कहानी में कलात्मक का अभाव होने का एक मुख्य कारण यह भी था कि उसकी कथा वस्तु का क्षेत्र अत्यन्त सीमित था । केवल मनोरंजन के उद्देश्य से लिखी जाने वाली इन कहानियों में कथा – योजना का आधार केवल कल्पनाजन्य चमत्कारिक धटनाएँ ही होती थी । उनमें कहानीकार की यथार्थ दृष्टि का समावेश नहीं होता था । परन्तु परवर्ती कहानी में वैचारिक परिपक्वता आने का एक कारण कथा – योजना का क्षेत्रीय विस्तार भी है। समकालीन कहानीकार अलौकिक, चमत्कारिक काल्पनिक तथा नाटकीय तत्वों की सहायता से अपनी कहानी की योजना का निर्माण नहीं करता, वरन् ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, पौराणिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक विषयों का तात्विक आधार ग्रहण करके कथावस्तु का सूत्र चयन करता है। हिन्दी कहानी का विकास युगीन इतिहास इस तथ्य का द्योतक है कि कहानी के स्वरूपगत परिष्कार का एक कारण कथावस्तु में क्षेत्रीय सन्तुलन भी है। इस दृष्टि से उसका क्षेत्रगत विस्तार का आधार कथा–योजना का वैशिष्ट्य माना जा सकता है।

सहायक ग्रन्थ - सूची

1. हिन्दी कहानी कला लेखक डॉ0 प्रतापनारायण टंडन पृष्ठ 234
2. कहानी दर्शन लेखक डॉ0 भालचन्द्र गोस्वामी प्रखर पृष्ठ 159
3. कहानी का रचना विधान लेखक डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा पृष्ठ 141
4. धर्म-अधर्म लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष (भूमिका व अनुक्रमाणिका)
5. 'पुनरागमन' लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष (क्रम)
6. यशपाल व्यक्तित्व और कृतित्व लेखिका डॉ0 भूलिका त्रिवेदी पृष्ठ 172
7. 'ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर में दि ओरीजिन ऑफ दि फेविल' लेखक - ए0 बौरीडेल कीथ पृष्ठ 242
8. आधुनिक साहित्य लेखक श्री नन्द दुलारे वाजपेयी पृष्ठ 190
9. निर्वासन लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 50
10. 'काव्य के रूप' लेखक डॉ0 गुलाब राय पृष्ठ 221
11. 'रंगमंच' लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 14
12. 'साहित्यालोचन' लेखक डॉ0 श्याम सुन्दर दास पृष्ठ 190
13. 'धर्म-अधर्म' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 34
14. 'मुआवजा' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 116
15. 'शहर में अकेली लड़की' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 11
16. हिन्दी कहानियाँ लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ 14

17. 'केंचुली' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 37

18. 'सहमा हुआ कल' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 16

19. 'साहित्य का उद्देश्य' लेखक मुंशी प्रेमचन्द पृष्ठ 2

20. 'दि शार्ट स्टोरी' (भूमिका) लेखक श्री एस0ओ0 फाउलेन पृष्ठ 12

21. 'वे कौन थे' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 25

22. 'साहित्यालोचन' लेखक डॉ0 श्यामसुन्दर दास पृष्ठ 185

23. 'इक्कीस कहानियाँ' लेखक श्री राम कृष्णदास आमुख पृष्ठ 5

24. शार्ट स्टोरी स्टडी : ए क्रिटिकल एथालोजी, प्राक्कथन लेखक श्री ए0जी0स्मिथ तथा श्री डब्लू एच0मैसन पृष्ठ 3

25. बीसवी शती की हिन्दी कहानी का समाज : मनोवैज्ञानिक अध्ययन लेखक डॉ0 महेश चन्द्र दिवाकर पृष्ठ 187

26. 'निर्वासन' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 61

चतुर्थ अध्याय

कथा साहित्य की पात्र योजना और चरित्रांकन शिल्प

(क) पात्र–योजना और लेखिका के विचार :-

कहानी के प्रमुख तत्वों में कथावस्तु के उपरान्त पात्र योजना अथवा चरित्र-चित्रण को ही स्थान दिया जाता है। एक कहानीकार अपनी रचना में जो कथावस्तु अथवा पात्र-योजना प्रस्तुत करता है, उसका मूल आधार मानव जीवन के विविध पक्ष होते हैं। विभिन्न पात्रों की योजना करके कहानी लेखक विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य के चरित्र की प्रतिक्रियात्मक सम्भावनाओं का निर्देशन करता है। कहानी में चरित्र चित्रण का महत्व इस कारण से भी अपेक्षाकृत अधिक हो जाता है, क्योंकि अपनी रचना में नियोजित पात्रों के माध्यम से कहानीकार मानवता का बहुपक्षीय रूप प्रस्तुत करता है। वह यह संकेत भी प्रस्तुत करता है कि मनुष्य का चरित्र और व्यक्तित्व किस प्रकार से निर्मित और किन परिस्थितियों में प्रभावित और परिवर्तित होता है । मनुष्य के अंतः करण और उसके बाह्य रूपात्मक कार्यकलाप में सामंजस्य और विभेदीकरण करने की दृष्टि से भी कहानीकार इसी तत्व का आश्रय लेता है।

व्यवहारिक दृष्टिकोण से किसी भी समाज में रहने वाला मनुष्य अपनी

समकालीन परिस्थितियों और निकटवर्ती वातावरण से प्रभावित होता है। युगीन परिस्थितियाँ ही कभी-कभी उसके संपूर्ण आचार व्यवहार और क्रिया-कलाप को प्रभावित और नियंत्रित करती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि युगीन जीवन की पृष्ठभूमि में ही विविध क्षेत्रीय गुणों - अवगुणों की निमिति, विकास, परिवर्तन तथा ह्रास होता है। एक कहानीकार अपनी कथावस्तु में नियोजित घटनाओं के अनुकूल पात्रों की सृष्टि करके उनके चरित्र चित्रण के माध्यम से मनुष्य के चारित्रिक विकास की इस प्रक्रिया का परिचय देता है। उसके पात्र विभिन्न परिस्थितियों में अपने स्वभाव तथा व्यक्तित्व के अनुसार आचरण करके उसके अभीष्ट की पूर्ति करते हैं यदि कोई कहानीकार अपनी रचना में इस प्रकार के सशक्त और प्रभावशाली पात्रों की चारित्रिक विकृति नहीं कर पाता, तो उसकी रचना की सफलता संदिग्ध हो जाती है। इसके विपरीत यदि वह उन पात्रों का सम्यक् चित्रांकन करने में सफल हो जाता है, तो उसकी रचना पाठक को अवश्य प्रभावित करती है। कहानी में पात्र योजना और चरित्र चित्रण के विषय में विविध विद्वानों ने अपने मत अभिव्यक्त किये हैं। 'डॉ0 श्यामसुन्दर दास' ने कहानी में चरित्र चित्रण का महत्व प्रतिपादित करते हुए लिखा है -

"यदि लेखक में शुद्ध तथा स्पष्ट अभिव्यक्ति करने की प्रवृति है, यदि उसके लिए घटना का महत्व चरित्र के महत्व से न्यून है, यदि वह ऐसी संगठित रचनाएं

करने में पटु है जिनमें एक भी वाक्य अनावश्यक या व्यर्थ नहीं, तो समझना चाहिए कि उक्त लेखक आख्यायिका के क्षेत्र में कार्य करने और यशस्वी होने के लिए ही उत्पन्न हुआ है।'' (1)

'डॉ0 गुलाबराय' ने कहानी में चरित्र चित्रण तत्व के आनुपातिक महत्व का निदर्शन करते हुए बताया है –

''आजकल कथानक को उतना महत्व नही दिया जाता है, जितना कि चरित्र चित्रण और भावाभिव्यक्ति को । चरित्र चित्रण का सम्बन्ध पात्रों से है। कहानी में पात्रों की संख्या न्यूनातिन्यून होती है। कहानी में पात्रों के चरित्र का पूर्ण विकास क्रम नही दिखाया जाता है, वरन् प्रायः बने बनाये चरित्र के ऐसे अंश पर प्रकाश डाला जाता है, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व झलक उठे ।'' (2)

'डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा' के विचार से – ''यहाँ चरित्र के चित्रण के विषय में मुख्यतः ध्यान देने की बात यह होती है कि चरित्र की विशेषताओं को क्रमशः घनीभूत और प्रभावमय बनाया गया है कि नहीं । चरित्र के विषय में कहानीकार का जो कथन हो उसे सब एक ही स्थल और समय में नहीं कह देना चाहिए । चरित्र विकास की सारी दौड़ कहानी के कथानक में आघंत फैली रहनी चाहिए, अन्यथा कहानी का सौन्दर्यवाहक संतुलन बिगड़ जाएगा । पात्र की मूलवृत्ति और उससे संबद्व विषय, आनुषंगिक उतार चढ़ाव की बातें अत्यन्त क्षिप्र, पर क्रमागत रूप में उपस्थित की जानी चाहिए ।'' (3)

---

1. 'साहित्यालोचन' डॉ0 श्यामसुन्दर दास पृष्ठ 191–192
2. 'काव्य के रूप' डॉ0 गुलाब राय पृष्ठ 221
3. 'कहानी का रचना विधान' डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा पृष्ठ 94

पाश्चात्य विचारकों के अनुसार पात्र योजना इस प्रकार है ।

'एब्बट' के अनुसार–

"चरित्र वही होता है, जो कि मनुष्य स्वयं होता है।" (1)

'लाओये एग्री' के अनुसार –

"चरित्र वास्तव में मनुष्य की अन्तः प्रकृति होता है । उसकी सम्यक् व्याख्या करना इसीलिए कठिन है, क्योंकि उसे सामान्य रूप से जाना नहीं जा सकता ।"(2)

'विलियम आर्कर' के अनुसार –

"चरित्र चित्रण बौद्धिक, भावुक तथा हताश आदतों का सम्मिश्रण है।" (3)

'डॉ0 रोवेक' ने चरित्र की व्याख्या करते समय मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का आश्रय लिया है। उनकी यह धारणा है –

"चरित्र एक प्रकार का अटूट रूप से जागरूकता पूर्ण मनोवैज्ञानिक, सुझाव है और उसका आधार भिन्न सिद्धान्त है। उनके विचार से चरित्र की विशेषता मनुष्य की मूलभूत और नैसर्गिक उत्तेजनाओं का निग्रह नहीं है। वस्तुतः उसका आधार नीति शास्त्रीय होता है।'(4)

'मैक्सशान' के अनुसार –

"चरित्र वस्तुतः मनुष्य का वह आत्मत्व होता है, जो अनिवार्य रूप से सामाजिक माध्यम से विकासशील अथवा क्रियाशील रहता है।" (5)

---

1. 'राइटर्स न्यू इंटरनेशनल डिक्सनरी ऑफ इंग्लिश लैग्वेंज' 'एब्बट' पृष्ठ 461
2. 'करैक्टर ऐंड इनहिबीटीशन' डॉ0 रोबेक, पृष्ठ 118
3. 'करेक्टर ऐंड इनहिबीटीशन' डॉ0 रोबेक पृष्ठ 119
4. 'हयूमन नेचर इन दि मेकिंग' मैक्सशान पृष्ठ 159

<u>'स्काट मेरेडिथ'</u> के विचार से चरित्र चित्रण –

"चरित्र चित्रण पात्रों की वैयक्तिक तथा विशिष्ट विशेषताओं के पारस्परिक वैभिन्य का स्पष्टीकरण करने वाली एक प्रणाली है।" (1)

<u>'एम0एल0 राविंसन'</u> के विचार से चरित्र चित्रण का यह आशय है

"किसी कथा के पात्रों का अंकन कुछ इस प्रकार की स्वाभाविकता के साथ किया जाय कि वे निर्जीव पुस्तक के पृष्ठों से परे मूर्त होकर जीवन्त वैयक्तिकता ग्रहण कर ले ।" (2)

कहानी के चरित्र चित्रण के तात्विक स्वरूप के विषय में उपर्युक्त मन्तव्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह आधुनिक कहानी का सर्वाधिक वैशिष्ट्यपूर्ण उपकरण है। कहानी में इसी तत्व के माध्यम से लेखक मानव चरित्र का विविध पक्षीय निरूपण करता है। हिन्दी कहानी में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के व्यावाहारिक आरोपण के विकास के साथ इस तत्व के क्षेत्र मे न केवल यथार्थता और विश्वसनीयता की वृद्धि हुई है, वरन् उसकी प्रभावात्मकता भी बढ़ गई है। आधुनिक कहानीकार अपनी रचना में विविध पात्रों की योजना करके उनके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गो की विशेषताओं का परिचय देता है। कहानी मे नियोजित पात्र सामान्य रूप से कल्पित होते हुए भी यथार्थ समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे अपनी आन्तरिक विशेषताओं तथा बाह्य गुणों से पाठक को कुछ इस रूप में प्रभावित करते है।

---

1. 'स्टाकिंग दि हालो मैन' करैक्टराइजेशन, राइटिंग टु सेल्फ, स्काट मेरेडिथ, पृष्ठ 62
2. 'राइटिंग फार यंग पीपुल' एम0एल0 रांविसन पृष्ठ 11

एक सफल कहानीकार अपनी कहानी में जिन पात्रों की आयोजना करता है, वे समाज के स्वतंत्र वर्गों का विविध रूप में पृथक-पृथक प्रतिनिधित्व करते हैं। इस रूप में ये पात्र अपने - अपने वर्गों का दृष्टिकोण और विचारधारा प्रस्तुत करते हैं, जो प्रायः परस्पर विरोधी भी होती हैं। पात्रों का वर्गीकरण इस प्रकार है।

1. प्रमुख पात्र
2. सहायक पात्र
3. पुरूष पात्र
4. स्त्री पात्र
5. खल पात्र
6. आदर्शवाद पात्र
7. यथार्थवादी पात्र
8. व्यक्तिवादी पात्र
9. मनोवैज्ञानिक पात्र
10. सामाजिक पात्र
11. राजनीतिक पात्र
12. प्रतीकात्मक पात्र
13. ऐतिहासिक पात्र
14. पौराणिक पात्र
15. बौद्धिक पात्र

एक साक्षात्कार में 'डॉ0 शिरीष' कहती है -

"मेरी रचना का आधार आसपास की मनोभूमि है। कई बार कोई पात्र पीछे लग जाता है । बार-बार दस्तक देता है। बात करता है। जबाब माँगता है।" (1)

डॉ0 शिरीष की कहानियों में अधिकतर पात्र वास्तविक जीवन से आते हैं, वे काल्पनिक पात्रों को लेकर कम कहानियाँ लिखती हैं। उनकी कहानियों में यथार्थता

---

1. 'कला संस्कृति' 'जागरण' में प्रकाशित 2 फरवरी 2003

प्राण है जिससे उनकी कहानियाँ एक अपना स्थान बनाती है। डॉ0 शिरीष की मनीषा शर्मा से बातचीत के अनुसार पात्रों का वर्गीकरण –

"यह अनायास ही हो जाता है कि मेरी कहानियों मे वृद्ध पात्र कही न कही से आ ही जाते है। मैं मूलतः उनके जीवन संघर्षो, उनकी परिवार में स्थिति तथा उनके अस्तित्व को लेकर हमेशा ही अवसादग्रस्त हो जाती हूँ । भौतिकवादी जीवन पद्धति ने हमें कितना संवेदनहीन बना दिया है कि हमारे अपने ही हमारे लिए बोझ बन जाते हैं। "(1)

नारी पात्रों के बारे में वे लिखतीं हैं –

"मैंने ऐसे नारी पात्रों को देखा है जो आज के इस पढ़े – लिखे सुशिक्षित समाज में मानसिक यातनाओं के भीषण दौर से गुजर रही हैं न उन्हें ससुराल में हक प्राप्त है, न मायके में कानून न्याय उनके लिए क्या दे पाता ।" (2)

---

1. 'मेरे पात्र' मनीषा शर्मा (साक्षात्कार) प्रकाशित राष्ट्रीय सहारा दिल्ली मार्च 2004
2. 'गीताजंली' 'सरोवर' नई दिल्ली मार्च (द्वितीय) 2003 (प्रकाशित साक्षात्कार)

(ख) पात्रों की प्रकृति :-

साहित्य की अन्य विधाओं की भाँति ही कहानी का विषय भी मानव जीवन है। एक कहानीकार अपनी कहानी में जिन पात्रों की नियोजना करता है, वे समाज के स्वतंत्र वर्गो का विविधात्मक रूप में पृथक-पृथक प्रतिनिधित्व करते हैं । इस रूप में ये पात्र अपने वर्गो का दृष्टिकोण और विचारधारा प्रस्तुत करते हैं, जो प्रायः परस्पर विरोधी भी होती है। इस कोटि के पात्र सामान्य रूप से वैयक्तिकता की तुलना में वर्गगत चारित्रिक विशेषताएँ ही रखते हैं। वे जिस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसी के अनुसार उनका स्वरूप निर्धारण होता है । इसके अतिरिक्त एक दूसरी कोटि के पात्र होते है जो वर्गगत भिन्नता के होते हुए भी वैचारिकता की दृष्टि से समानता रखते है । पात्रों का यह भेद उनकी एक स्वतंत्र श्रेणी कर देता है जिसके अन्तर्गत बौद्धिक वर्ग के पात्र आते हैं। व्यावहारिक दृष्टिकोण से विविध विकासशील हिन्दी कहानी के क्षेत्र में महाजन, सेठ, साहूकार, राजा महाराज, धर्म सुधारक, धर्म प्रचारक, समाज सुधारक, राजनीतिक नेता, साधु-असाधु, चोर, डाकू, सैनिक, पुलिस अधिकारी वकील, डाक्टर, श्रमिक, कृषक, क्लर्क, प्रोफेसर, विधार्थी, विद्वान, मूर्ख वेश्या, सती, ढेंगी, पेटू, जज, हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, मैनेजर, दीवान, भिखारी, राजकुमार, जिप्सी, औरत, मर्द, कवि, लेखक, पंडित, मौलबी, मंत्री, राजदरबारी

आदि के रूप में समग्र समाज की इकाइयों का नियोजन कर पात्र–योजना होती है। पात्रों की प्रकृति के अनुसार पात्र कई प्रकार के होते हैं । जिनमें निम्नलिखित इस प्रकार हैं।

1. **प्रमुख पात्र –**

प्रत्येक कहानी में एक न एक प्रमुख पात्र अथवा पात्री का चित्रांकन अवश्य किया जाता है। यह कहानी में सर्वाधिक महत्व रखता है। इस पात्र की विशेषता यह होती है कि वह संपूर्ण कहानी का आधारभूत चरित्र होता है। उसी में कहानी का मूल अभिप्राय केन्द्रित होता है और वही कहानी की गति का स्त्रोत भी होता है। इस पात्र के चरित्र को प्रभावपूर्ण एवं अपेक्षाकृत जीवन्त बनाने के लिए कहानीकार को कुछ सहायक पात्रों की भी सृष्टि करनी पड़ती है, जो इसके पूरक होते है। यद्यपि व्यावहारिक से एक कहानी में नियोजित पात्रों की संख्या अधिक नही होनी चाहिए, परन्तु प्रमुख पात्र के चरित्र को प्रभावात्मक बनाने के लिए कुछ सहायक पात्रों की सृष्टि आवश्यक हो जाती है। कहानीकार अनेक पात्रों से युक्त कहानी में भी प्रधानतः अपना ध्यान नायक (प्रमुख पात्र) पर ही केन्द्रित रखता है। अन्य पात्रों की तुलना में वह इसी प्रधान पात्र के चरित्रांकन पर विशेष बल देता है। वह इस पात्र के चरित्र को विशेष रूप से उभारकर स्पष्ट करने के लिए विभिन्न जटिल परिस्थितियों की आयोजना करता है इस रूप में वह प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताओं और

प्रतिक्रियाओं का सूक्ष्म दृष्टि से चित्रण करने का अवसर निकाल लेता है। जिससे इन पात्रों के व्यक्तित्व का समग्र रूपात्मक प्रभाव पाठक के हृदय पर पड़ सके । परन्तु ऐसा करते समय उसे इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि इस घटना – नियोजन के फलस्वरूप प्रमुख पात्र का चरित्र पुष्ट ही हो , अशक्त न बन सके । कहानी के आरम्भ से लेकर अन्त तक उसक चारित्रिक विकास में विशेष प्रकार की गतिशीलता होनी चाहिए । डॉ0 शिरीष के कहानी संग्रहों के प्रमुख पात्र इस प्रकार हैं।

'डॉ0 उर्मिला शिरीष' के कथा – साहित्य में प्रमुख पात्रों में नारी पात्र व पुरुष पात्र दोनों ही उभर कर सामने आते हैं – प्रायः सभी कहानी संग्रहों में पात्रों की संख्या सीमित है और पूरी कहानी मुख्य पात्रों के इर्द – गिर्द घूमती रहती है। 'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में प्रमुख पात्र – गुरु महाराज, काका, बच्ची, आदि प्रमुख पात्र 'माया महाठगनी' कहानी सें नियोजित हैं। 'कब तक' कहानी में प्रमुख पात्र – दीपक, विनीता आदि । 'चमगादड़' कहानी में प्रमुख पात्र रश्मि, कुसुम, नीला, विधायक आदि । 'सुपारी' कहानी में प्रमुख पात्र – आयुश, रोम्पी, माता–पिता आदि । 'रामकन्या के हसीन सपने' कहानी में प्रमुख पात्र रामकन्या, आंटी, आदि । 'प्रेमदीवानी' कहानी में प्रमुख पात्र – सुधा, 'धर्म–अधर्म' कहानी में प्रमुख पात्र – अजीत शर्मा 'बिन सुर ताल' कहानी के प्रमुख पात्र –

अध्यापक, 'कंबल' कहानी के प्रमुख पात्र – डॉ0 निर्भय , केशव, रामकुँवारी, 'धूप अभी शेष है।' कहानी के प्रमुख पात्र – साहनी 'पुनरागमन' कहानी के प्रमुख पात्र – श्रीराम महाराज, 'गिरगिट' कहानी के प्रमुख पात्र – राकेश, 'चपेटे' कहानी में प्रमुख पात्र – रामबती । 'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में संकलित कहानियों में 'शहर में अकेली लड़की' कहानी में प्रमुख पात्र – दो बहनें। 'झूलाघर' कहानी के प्रमुख पात्र – विमला, 'वानप्रस्थ' कहानी के प्रमुख पात्र – अम्मा । 'चौथी पगडन्डी' कहानी के प्रमुख पात्र – राहुल, अंजू, ऋचा, 'अन्तिम यात्रा से पहले' कहानी के प्रमुख पात्र – धीरज, 'न बंद करो द्वार' कहानी के प्रमुख पात्र – विमला, धीरज 'दाखिला' कहानी के प्रमुख पात्र – मीरा 'लौटकर जाना कहाँ है' कहानी के प्रमुख पात्र – संजीव वर्मा, तनु 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में संकलित कहानी के प्रमुख पात्र – डॉ0 काचरू, मीनू, प्रियतमा, विन्ना, रामबती आदि ।

2. सहायक पात्र :–

एक नायक प्रमुख पात्र अथवा पात्री के अतिरिक्त कहानी में सहायक पात्रों अथवा पात्रियों की भी सृष्टि की जाती है। इन सहायक पात्रों का द्वितीयक महत्व होता है। इनकी चारित्रिक नियोजना का उद्देश्य मूल कथासूत्र का विकास करना होता है। साथ ही ये मुख्य पात्र के चरित्र के पूरक भी होते हैं। इस दृष्टि से इनका कार्य

ऐसी परिस्थितयों को उत्पन्न करना होता है, जिनमें मुख्य पात्र का चारित्रिक विकास सम्भाव्य है। व्यावहारिक दृष्टि से कहानी में सहायक पात्रों की संख्या सीमित ही होनी चाहिए, क्योंकि इनकी बहुलता होने से प्रधान पात्र का चरित्रांकन भली प्रकार नही हो पाता है। यदि सहायक पात्र कम संख्या में होते है, तो कथावस्तु में नियोजित घटना व्यापारों के सन्दर्भ में वे एक केन्द्रीय प्रभाव की सृष्टि मे सहायक होते हैं कुछ कहानियों में सहायक चरित्र भी विशेष महत्व के होते है, विशेष रूप से यदि उनके माध्यम से विशिष्ट कथा सूत्रों का नियमन कराया जाता हो । इसके अतिरिक्त एक श्रेष्ठ और प्रतिभा सम्पन्न कथाकार अपनी दृष्टि से सहायक पात्रों का चरित्रांकन भी प्रभावशाली ढ्ंग से करके उन्हें सजीव बना देता है। डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों में सहायक पात्र – वकील, अंकू, डाक्टर, अम्बिका, सीमा, जयन्त, चित्रा, संतोष, अनिल, प्रिया, चानी, लतिका, सलिल, विटिया, अंजुम, रवि, बंटी, नीरज, श्रीमती ठाकुर सनी आदि । सहायक पात्र डॉ0 शिरीष के कथा साहित्य में अपना योगदान देते है। 'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में सहायक पात्र भी अपना योगदान देते है और अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। कुछ सहायक पात्र निम्नलिखित है। 'सहमा हुआ कल' शीर्षक की कहानी में सहायक पात्र – बंटी, बबली, बेबी, आदि । प्रतिरोध कहानी में सहायक पात्र – सुनील, आशीष, रोशनी आदि । 'कोशिश' कहानी में सहायक पात्र –रवि, डाक्टर, माया, अम्मा, 'बाबा ! मम्मी को रोको' कहानी में सहायक पात्र –शेखर, रामा, आदि । 'वे कौन थे'

कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियों में सहायक पात्र सभी कहानियों में शिरकत करते है – 'यह सच है' शीर्षक कहानी में – मम्मी – पापा, कपूर, राज मामा, डॉक्टर आदि । 'दलाल' कहानी में सहायक पात्र – रतन, सौम्या, अम्मा आदि । 'अपने लिए' कहानी में सहायक पात्र – सुलेमान, नीना, रमानाथ आदि । 'रंगमंच' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में सहायक पात्र भी महत्वपूर्ण हैं 'समुन्दर' शीर्षक की कहानी में सहायक पात्र –अंकू, मम्मी–पापा, प्रतीक्षा आदि । 'भाग्य विधाता' कहानी में सहायक पात्र – पाती के लोग, कैमरे वाले, प्रेस वाले आदि । 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियों में सहायक पात्र प्रमुख भूमिका का निर्वाह करते है – 'प्रत्यारोपण' कहानी में सहायक पात्र –डॉ0 तिवारी, जी0डी0, अभिमन्यू, अश्वत्थामा आदि । 'धर्म – अधर्म' कहानी संग्रह में भी सहायक पात्र कहानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते है । 'कंबल' कहानी में सहायक पात्र – सरपंच, मरीज, केशव आदि ।

3. पुरूष पात्र –

कथा साहित्य के क्षेत्र में परम्परागत दृष्टिकोण के अनुसार कहानी का नायक कोई पुरूष पात्र ही होना चाहिए । अन्य रचनात्मक साहित्यिक विद्याओं में भी प्रायः नायक के रूप में किसी पुरूष पात्र की ही चारित्रिक नियोजना की जाती है। यदि किसी कहानी में नायक और नायिका दोनों की अवधारणा समान महत्व से युक्त होती

है, तो भी उनमें आपेक्षिक प्रधानता पुरूष पात्र को ही दी जाती है । भारतेन्दु युगीन समाज में पुरूष का स्थान नारी की तुलना में श्रेष्ठतर समझे जाने के कारण ही इस धारणा का विकास होता रहा है। पुरूष पात्र प्रधानता के ही अनुसार अनेक कहानियों के शीर्षक नायकों के नाम पर रखा जाता है। उदाहरण – प्रेमचन्द लिखित 'मैकू' 'मेउर' 'सुजान भगत' आदि ।

इस कोटि की कहानियों में अन्य पात्र – पात्रियों की भी चारित्रिक योजना की जाती है, परन्तु प्रधानता नायक की ही होती है। और उसी का व्यक्तित्व कहानी की कथा के केन्द्र में विधमान रहता है। कुछ कहानियों में पुरूष पात्रों की योजना नारी पात्रों के ही समान स्तर पर नायक–नायिका के रूप में की जाती है। इस कोटि की रचनाओं में डॉ0 उर्मिला शिरीष एक हस्ताक्षर के रूप में उभर कर साहित्य जगत में अपना स्थान बनाती हुई नजर आती है। और पुरूष पात्रों की स्त्री पात्रों जैसा स्थान प्रदान करती है । उनकी सभी कहानियों में पुरूष पात्र यथार्थ रूप में प्रकट होते हैं जो सजीवता व जीवन्तता के प्रतीक है डॉ0 शिरीष के कथा साहित्य में पुरूष पात्र –

'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह के प्रमुख पुरूष पात्र – कटारे महाराज, काका, पंडित जी, श्याम, दीपक, मंत्री जी, आयुश, डॉक्टर, वकील, सरपंच, साहनी, प्रोफेसर, कम्पाउण्डर बाबू, खुमान आदि ।

'रंगमंच' कहानी संग्रह के प्रमुख पुरूष पात्र –जयन्त, पप्पू, जयन्त के पापा, आदि । 'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में प्रमुख पुरूष पात्र – अशोक, अशोक के पिताजी, राहुल, डॉक्टर, धीरज, राहुल के पिताजी, संजीव वर्मा, आदि । 'निर्वासन' कहानी संग्रह में प्रमुख पुरूष पात्र –बाबा, राजा भइया , दादाजी, अनुराधा के पापा, आदि । 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में प्रमुख पुरूष पात्र – राजेश, डॉ0 तिवारी, अभिमन्यु, जी0डी0 दीवान, चौकीदार, डी0जे0 शर्मा, पुजारी जी, आदि। 'वे कौन थे' कहानी संग्रह के प्रमुख पुरूष पात्र – निमी के मामा जी, हरिनारायण, पप्पू, रमानाथ, नसीर, पण्डित जी, जगन, ठाकुर साहब, परदीप, दाऊ साहब, आनन्द आदि । 'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह के प्रमुख पुरूष पात्र –बंटी, नीरज, सुनील, आशीष, चपरासी, डॉक्टर, सनी, शेखर, नीलेश, आदि । 'मुआवजा' कहानी संग्रह में पुरूष पात्र – एल0पी0, कोमल, रवि, सलिल, शरद, डॉक्टर, शशांक आदि । 'केंचुली',कहानी संग्रह के प्रमुख पुरूष पात्र – संतोष, प्रशान्त, प्रदीप आदि।

4. स्त्री पात्र –

पूर्ववर्ती युगों में स्त्री पात्र प्रधान कहानियाँ प्रायः नही मिलती हैं। आधुनिक काल में नारी के समान अधिकारों की माँग और नारी – समाज में चेतना के जागरण के साथ ही कहानियों में नारी का चित्रण भी प्रमुख पात्र के रूप में किया जाने लगा है। स्त्री पात्रों की योजना कहानी में या तो सहायक चरित्रों के रूप में की जाती

है और या पुरूषों के समान महत्व वाले चरित्रों में । लेकिन डॉ0 उर्मिला शिरीष ने नारी पात्रों को अपने कथा – साहित्य में प्रमुखता प्रदान की है। डॉ0 शिरीष की कहानियों में स्त्री पात्र 'केंचुली' कहानी संग्रह में स्त्री पात्र – विजया, लक्ष्मी, विन्दु, मंजू, निरुपमा, चाची, चानी, प्रिया, भाभी, लतिका आदि । 'मुआवजा' कहानी संग्रह में नारी पात्र – चंदा, रूना, क्षमा, रमिया, पाती आदि । 'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में स्त्री पात्र –बंटी, कामिनी शर्मा, राशि, निरूपमा, चित्रा, अनीता, चानी आदि। 'वे कौन थे' कहानी संग्रह में स्त्री पात्र – निमी, सौमया, शोभा, नीना, शिवा, रामेश्वरी, गंगावाई, हरबतिया, रीता, विनी दीदी, गरिमा, बिन्ना आदि । 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में स्त्री पात्र –डॉ0 काचरू, नानी, सोनू, प्रियतमा, सुमित्रा, सिल्विया, रामबती, सरिता, बिन्ना आदि । 'निर्वासन' कहानी संग्रह में नारी पात्र – नानी, पारू, ललिता, शैला, अम्मा, विभा, विनीता, वृन्दा, अनुराधा आदि । 'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में नारी पात्र – विनी, विनी की दीदी, शिल्पा, अम्मा (शिल्पा की सास), ऋचा, अंजू, विमला आदि । 'रंगमंच' कहानी संग्रह में नारी पात्र – कुसुम, साधना, अम्बिका, सीमा, संगीता सहगल आदि । 'धर्म अधर्म' कहानी संग्रह में स्त्री पात्र –दीपक की भाभी, रश्मि, कुसुम, रामकन्या, सुधा, पिंकी, रामबती आदि ।

5. खल पात्र –

प्राचीन कथा साहित्य में खलनायक अथवा खल पात्रों की भी चारित्रिक योजना, अनिवार्य रूप से की जाती थी । आधुनिक साहित्य में खलनायकों अथवा खलपात्रों की नियोजना तो मिलती है, परन्तु उसका स्वरूप प्राचीन खलचरित्रों से विभिन्नता रखता है । इस स्वरूपगत विभिन्नता का मुख्य कारण यह है कि नीति–अनीति, सत्–असत, पाप – पुण्य तथा धर्म–अधर्म आदि से सम्बन्धित आधुनिक धारणाएं अपेक्षाकृत जटिलता युक्त हैं । प्राचीन साहित्य में खलनायक अथवा खलपात्र सामान्य रूप से अनीति, असत्, पाप और अधर्म का मूर्तिमान प्रतीक होता था, जबकि नायक को एक सत्पात्र के रूप में चित्रित किया जाता था । यही नही सांकेतिक रूप में नायक की विजय और खलनायक की पराजय वास्तव में उन मूल्यों की जय – पराजय होती थी । जिनके वे प्रतीक होते थे ।

आधुनिक समकालीन कहानी साहित्य में मनोवैज्ञानिक तत्वों के समावेश और यथार्थपरक दृष्टिकोण के समावेश के फलस्वरूप सत् और असत् सम्बन्धी धारणाओं का रूढ़ रूप अधिक व्यावहारिक न बना रह सका । यही नही सत् की पोषक आदर्शवादी एवं उदान्तपरक धारणाएं भी पुरानी पड़ने लगी, क्योंकि ये अधिकांशतः कल्पना पर ही आधारित होती थी । इन पात्रों द्वारा जन्मी बुराईयाँ रूढ़ रूप में

खलनायक का स्वरूप नहीं व्यक्त करती है। आधुनिक कथाकारों ने इन बुराइयों का निराकरण करके प्रायः इस कोटि के पात्रों का हृदय परिवर्तन भी चित्रित करता है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा - साहित्य में खल - पात्र योजना बनाई गयी है लेकिन कुछ ही कहानियों में स्पष्ट होती है - डॉ0 उर्मिला शिरीष के कहानी संग्रहों में खल पात्र - 'धर्म अधर्म' कहानी संग्रह में खल पात्र पंडित जी, 'रंगमंच' कहानी संग्रह में पप्पू कुछ खल प्रवृत्ति का है। 'पुनरागमन' में पुजारी जी, 'वे कौन थे' कहानी संग्रह में रमानाथ ।

5. आदर्शवादी पात्र -

प्राचीन कथा साहित्य में आदर्शपरक उदान्तवादी दृष्टिकोण के प्रतीक के रूप में प्रायः काल्पनिक कोटि के पात्रों की सृष्टि अपेक्षाकृत अधिक मिलती थी । इन पात्रों के माध्यम से लेखक या तो अपना सुधारपकर दृष्टिकोण प्रस्तुत करता था । और या किसी सात्विक आदर्श की स्थापना करता था । हिन्दी कहानी के अविर्भाव काल से लेकर वर्तमान युग तक इस कोटि के पात्रों का चित्रण अनेक कहानीकारों द्वारा किया जाता रहा है। भारतेन्दु युग में 'रामचन्द्र शुक्ल' द्वारा लिखित 'ग्यारह वर्ष का समय' शीर्षक कहानी इसी प्रकार के पवित्र प्रेम के आदर्श को उपस्थित करती है।

समकालीन कहानीकारों में डॉ0 शिरीष की कहानियों में भी आदर्शपात्रों की प्रवृत्ति देखने को मिलती है – 'वे कौन थे' कहानी संग्रह में आदर्शवादी पात्र निमी, प्रतिभा, राज मामा, गुप्ता जी आदि । 'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह मे आदर्शवादी पात्र बंटी, चपरासी, दादा, चित्रा, प्रिया आदि । 'मुआवजा' कहानी संग्रह में रूना के पिताजी, बाऊ साब 'ढहते कगार' में आदर्श रूप में कहते हैं –

"हमारे रूपैया दो साल से लिए सो कुछ नही" (1)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में आदर्शवादी पात्र डॉ0 तिवारी, प्रियतमा, आदित्य आदि । 'रंगमंच' कहानी संग्रह में आदर्शवादी पात्र – डाक्टर, सीमा, अम्बिका, पप्पू आदि ।

6. यथार्थवादी पात्र –

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में यथार्थवादी पात्रों की सृष्टि मुख्यतः प्रेमचन्द युग से आरम्भ हुई । स्वयं 'प्रेमचन्द' की अनेक कहानियों में यथार्थवादी पात्रों की योजना प्रभावशाली रूप से मिलती है। 'प्रेमचन्द' के काल से ही हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवादी विचारधारा का व्यापक रूप से प्रचार आरम्भ हो गया इस विचारान्दोलन का प्रभाव कहानी पर भी पड़ा । यह दृष्टिकोण मुख्यतः सामाजिक यथार्थ और

---

1. 'मुआवजा' 'ठहते कगार' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 51

वैज्ञानिक यथातथ्यता पर विशेष बल देता है। डॉ0 शिरीष ने भी अपनी रचनाओं में यथार्थवादी पात्रों की चारित्रिक सृष्टि को प्रधानता दी है। डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों में अधिकतर यथार्थवादी पात्र समाहित हैं। 'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में यथार्थवादी पात्र – मिसेज जैन, दो बहनें, विनी, राहुल, चित्रा, विमला, आदि । 'निर्वासन' कहानी संग्रह में यथार्थवादी पात्र – सुनीता, ललिता, डाक्टर की पत्नी, दादाजी, शैला, विभा, वृन्दा, अनुराधा आदि । 'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में यथार्थवादी पात्र – गुरुमाता, बच्ची, दीपक की भाभी, दीपक, रश्मि, नीला, रोम्पी, रामकन्या, सुधा आदि । 'रंगमंच' कहानी संग्रह में यथार्थवादी पात्र – डाक्टर साहब, अंकू, अंकू के माता–पिता, मंत्री, सीमा आदि 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में यथार्थवादी पात्र – सौम्य्या, राजीव, राजीव के माता–पिता, तनु, सुमित्रा आदि ।

7. बौद्धिक पात्र –

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में आधुनिक युग में जो कहानी की रचना हुई, उसमें चित्रित पात्रों का एक वर्ग बौद्धिक कोटि का भी है। इस श्रेणी के पात्रों की योजना बौद्धिक, दार्शनिक, प्रतीकात्मक तथा वैचारिक कोटि की कहानियों में अपेक्षाकृत अधिक हुई है। पत्रकार, सम्पादक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, शिक्षक तथा राजनीतिक

नेताओं आदि के रूप में बौद्धिक पात्र विभिन्न कहानीकारों द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं।

समकालीन युग में अनेक प्रकार की विभिन्न क्षेत्रीय चिन्तन धाराओं के प्रभावस्वरूप कहानी साहित्य में वैचारिक तत्वों का समावेश हुआ है। डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों में इस वर्ग के पात्रों की आयोजना मिलती है, जो वैचारिकता की दृष्टि से उल्लेखनीय है। डॉ0 शिरीष की कहानियों में अधिकतर पढ़े – लिखे पात्र ही शिरकत करते है जो हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेजी बोलते है – 'वे कौन थे' कहानी संग्रह में बौद्धिक पात्र – हरिनारायण, निमी, शशि, नीना आदि 'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में बौद्धिक पात्र – बंटी, कामनी, राशि, माया दीदी, आशीष, रवि आदि। 'मुआवजा' कहानी संग्रह में राकेश, रूना, रमिया, पाती, सलिल, शशांक राय आदि । 'केंचुली' कहानी संग्रह में बौद्धिक पात्र की योजना – विजया, विजया के पति, लक्ष्मी, अनिल, निरुपमा, प्रशान्त आदि ।

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में मानव जीवन और मानव समाज के प्रायः सभी वर्गो का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र नियोजित हुए हैं। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से कहानी में पात्रों की संख्या अधिक नहीं होनी चाहिए । एक या दो प्रमुख पात्र अथवा सहायक पात्र ही यदि कहानी में मनोवैज्ञानिकता प्रभावपूर्णता के साथ चित्रित किये जाएँ, तो

भी कहानी एक हृदयस्पर्शी रचना बन सकती है। अधिक पात्रों की योजना कहानी की सफलता की सम्भावनाओं को सीमित कर देती है। कहानी में प्रमुख पात्र के ही जीवन की किसी एक महत्वपूर्ण घटना का चित्रण प्रभावशाली रूप में होना चाहिए । एक से अधिक पात्रों के जीवन का विविध पक्षीय और व्यापक स्तरीय चित्रांकन कहानी के लघु परिवेश में सम्भव नहीं होता । यदि कहानी में एक प्रधान पात्र की प्रकृति अन्य पात्रों की प्रकृति से मिलती है तो उनका उत्तम चारित्रिक विकास होना संभव है। डॉ0 शिरीष के कथा साहित्य में पात्रों की प्रकृति की वातावरण के अनुसार नियोजना की गई है। डॉ0 शिरीष एक साक्षात्कार में कहती हैं-

"कई बार कोई पात्र पीछे लग जाता है। बार-बार दस्तक देता है। बात करता है जबाब माँगता है।"(1)

---

1. कला संस्कृति (दैनिक जागरण) मार्च 2004

(ग) प्रमुख नारी पात्र :-

1. निमी :-

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'यह सच है' में निमी प्रमुख पात्र के रूप में उभरकर पाठक वर्ग के सामने आती है। निमी होस्टल में रहती है। जब पिताजी उसे छोड़ने गये तो वह समझाते हुए कहते हैं -

"पागल, रोती क्यों हो! इतनी लड़कियाँ रहती है कितने दूर-दूर की, राजस्थान, कोटा, कानपुर, तुम तो कितने पास हो, यह भोपाल और वह छतरपुर सबके साथ रहकर मन लग जायेगा ।"(1)

निमी की पंसद उसकी सहेली जाहिर करती है -

"गुलाबी रंग निमी को बहुत पसंद है।" (2)

निमी की मानसिक स्थिति बहुत अच्छी थी वह अपने बारे में घण्टों सोचती थी ।

"वह घंटों शाम को अकेली बैठी आसमान को देखा करती थी । पक्षियों को दूर-दूर तक उड़ते देखना उसे बेहद पसन्द था .... ।"(3)

निमी का विवाह बचपन में हो गया था लेकिन आन्तरिक कारणों से वह ससुराल नहीं गयी लेकिन उसे याद आती है -

---

1. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 9
2. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 10
3. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 11

"निमी के अंतर्मन में जैसे गाँव, खेत, सास-ससुर, निवेश .... फिर जिंदा हो उठे थे । सोच-सोचकर वह उदास हो जाती थी।" (1)

निमी की साहित्यिक रूचि एक उद्धरण से स्पष्ट होती है - "ये कविताएँ पढ़ना, नाटक का पूरा सेट मंगाया था मैने । कीट्स, शैली, बच्चन और भवानी प्रसाद की कविताएँ तथा शेक्सपियर के नाटक को पढ़कर निमी को जीवन में कुछ आभास हुआ था ..... फिर तो उपन्यास, ऐसे कितने उपन्यास दिया करता था जिन्हे वह रात-रात भर जागकर पढ़ा करती .... गुनाहों का देवता, देवदास और कोरेल तो निमी ने छः-छः दफै पढ़ डाले थे ।" (2)

कपूर निमी से कहता है जिससे उसे उत्साह मिलता है -

"निमी तुम्हें गाना चाहिए, आवाज बहुत अच्छी है तुम्हारी" (3)

2. <u>सौमय्या</u> :-

<u>'वे कौन थे'</u> कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'दलाल' में सौमय्या प्रमुख स्त्री पात्र है जो निडर स्त्री के रूप में उभर कर पाठक वर्ग के सामने आती है अपनी माँ से कहती है -

"तो क्या दबूँगी ... तो क्या गूँगी हो जाऊँ ..... आज कहीं नहीं जाऊँगी ।"(4)

---

1. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 14
2. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 15
3. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 18
4. 'वे कौन थे' दलाल' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 27

अपनी सगाई के बारे में माँ से कहती है कि मुझे तो जिन्दगी गुजारनी है–

"तूने तो मेरा जी जिदंगी भर के लिए जला दिया न उस लंगड़े बुढ्ऊ के साथ बाँधकर ।" (1)

सौमय्या की माँ जब उसे वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करती है और कहती है कि तेरे खाने के लिए मेवा ला दूँगी तो तुझे कुछ नही होगा तो सौमय्या जबाव देती हुई कहती है – "जहर क्यों नहीं ला देती ।" (2)

आत्म विश्वास के साथ वह कहती है कि मैं दिन भर मजूरी करती हूँ मुझे अपनी मेहनत का पइसा चाहिए –

"कमाती हूँ किसी का मुफ्त का दिया हुआ है । .... तू गरीबी का और लाचारी का फायदा उठाता है।"(3)

रात में वह रतन के चंगुल से भागने में सफल हो जाती है आकर माँ को फटकारते हुए कहती है जिसमें उसका स्त्रीत्व झलकता है –

"ले खा ले पैसे । मेरी कमाई। मुझे बेच । मेरा सौदा कर । मुझे जहर दे दे । उस कुत्ते के पास भेज देती है, आग लगा दे इस झोपड़ी में तेल डालकर, क्यों बनवायी थी तूने उससे ।" (4)

---

1. 'वे कौन थे' दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 28
2. 'वे कौन थे' दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 28
3. 'वे कौन थे' दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 32
4. 'वे कौन थे' दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 33

माँ सौमय्या को और दूसरी वेश्याएँ का उदाहरण देती है सौमय्या जबाव देती हुई कहती है –

"सैकड़ों औरतें सड़क पर नंगी सो जाती ..... नंगी नहाती ... तो क्या मैं भी वही करूँ तेरी यही मंशा रह गयी ।" (1)

3. <u>शोभा</u> :–

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'अपने लिए' की मुख्य स्त्री पात्र '<u>शोभा</u>' है। शोभा का परिचय निम्नलिखित पंक्तियों से मिलता है –

"शोभा प्रायः चुप ही रहती .... कभी वह भी लड़ झगड़कर हर बात का विरोध किया करती थी पर जब से वह त्रासद और कटु–वाकया घट गया तब से वह एकदम चुपा गई ।" (2)

गरीबी के कारण शोभा के परिवार की हालत दयनीय है वह अच्छे कपड़े नही पहनती और न ही कोई सोन्दर्य प्रशाधन का प्रयोग करती है वह एक साधारण लडकी है अपनी पुरानी बातें याद करके सोचती है और साथ ही उसकी पारिवारिक स्थिति का भी दृश्य उभर कर सामने आता है – "अम्मा ने उस दिन इसी बात पर कितना डांटा था पिताजी ने उस लड़के को कितना मारा था..... बेचारा मकान छोड़कर चला गया था .... तभी से दोनों बहिनों का छत पर आना–जाना बन्द हो गया था..

---

1. 'वे कौन थे' 'दलाल' अपने लिए' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 34
2. 'वे कौन थे' 'अपने लिए' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 46

पड़ोस में नहीं जाती। किसी के समारोह में नहीं जाती दरवाजे से बाहर नहीं निकलती महीनों तक पुराने मटमैले कपडों से ढका जवान शरीर..........शर्म-हया के कारण अम्मा कैसे निकलने दें ..... अपनी बेटियों का यह पाक कुंआरापन वह कैसे नापाक होने से बचाकर कैसे ढो रही है यह तो उनका हृदय ही जानता है। (1)

4. शिवा -

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'कन्या' शीर्षक की कहानी में प्रमुख स्त्री पात्र 'शिवा' है। शिवा धूर्त पण्डितों और पुरोहितों से चिढ़ती है उसने रामाधार महाराज का नाम सुनते ही प्रतिक्रिया व्यक्त की - "शिवा के कानों में जैसे एक साथ सैकड़ों सुईयां चुभ गई हों, रामाधार पण्डित! वह बूढ़ा, वो भूरे बालों वाला थू...... थू..... शिवा ने पास में थूक दिया और एक गाली देकर अन्दर चली गयी।"(2)

शिवा आठ कक्षा तक पढ़ी-लिखी थी "आठ दर्जा तक शिवा ने गांव में पढ़ लिया था इसलिए थोड़ा पढ़ना लिखना भी आता था उसे" (3)

शिवा का चरित्र कुछ पंक्तियों से स्पष्ट होता है - "शिवा निर्दोष, निर्मल और सरल हृदय बालिका थी ।" (4)

शिवा पंडित जी की हरकतों का विरोध करती हुई कहती है -

"कन्या......कन्या क्या होती है, कन्या तो मेरे जैसी सब कन्याएं है.......... और सब कन्याओं के साथ बूढें आदमी ऐसा ही करते है " (5)

---

1. 'वे कौन थे' 'अपने लिए' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 46
2. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 67-68
3. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 68
4. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 69
5. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 71

शिवा पंडित जी को आखिर त्रस्त होकर फटकारती है –

"पंड़ित जी ने हाथ लगाया तो मैं सिर फोड़ दूंगी, घड़ा पटक दूंगी....... सबसे कह दूंगी..... घिना..... ढोंगीं। पापी कथा बांचने आता है साब! क्या कहने ! छोटी–छोटी लड़कियों के साथ ऐसी हरकत करता है..... धूर्त.......कहीं का बूढ़ा..... ।"(1)

5 **रामेश्वरी** –

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'बाकी सब ठीक है' शीर्षक कहानी में मुख्य नारी पात्र 'रामेश्वरी' है। रामेश्वरी सरल, आत्मीय नारी है – "रामेश्वरी भी चुप थी परन्तु उसकी चाल में तेजी, शरीर में फुर्ती, बातों में सफाई और आवाज में गजब की आत्मीयता थी।" (2)

रामेश्वरी ग्रामीण परिवेश की है जब उसकी अपनी बिटिया जाती है तो वह रस्मों–रिवाज पूरी करती है –

"रामेश्वरी ने सेंमई, दालें, बड़ियां और न जाने क्या–क्या बांधकर दे दिया।" (3)

6 **गंगाबाई** – '

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'सपनों की बारात' शीर्षक कहानी में मुख्य नारी पात्र 'गंगाबाई' के रूप में उभरकर पाठक वर्ग के सामने आती है। गंगा बाई गरीबी की हालत में अपनी बच्ची का भी इलाज नही करा पाती, कहती है – "कल पैसा मिलेगा तब ले आऊँगी ।" (4)

---

1. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 75
2. 'वे कौन थे' 'बाकी सब ठी है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 90
3. 'वे कौन थे' 'बाकी सब ठी है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 92
4. 'वे कौन थे' ''सपनों की बारात' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 98

गंगाबाई अपनी बच्ची की पिटाई करती है फिर फफककर रो पड़ती है और कहती है – ''क्या बतायें यह बेबी के साथ खेलती है उसके घर आती जाती है उसी का देख देख कर रट लगायें रहती किताबें ला दो , ड्रेस ला दो, मौजा जूता ला दो हमें भी स्कूल जाना है .... हमें भी रंग, ब्रुश चाहिए..... वैसी ही कपड़े चाहिए..... ये चीज चाहिए.... वो चीज चाहिए आप ही सोचो कहाँ वे बड़े आदमी और कहाँ हम गरीब मजदूर इतना सब कहाँ से ला सकते हैं।'' (1)

7 गरिमा –

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'सफर जारी है' शीर्षक की कहानी में मुख्य नारी पात्र गरिमा है। गरिमा का परिचय कुछ पंक्तियों से होता है – ''शुभा की तीसरी बहन। सबसे छोटी गरिमा। उसका पति एक पत्रिका में सह–सम्पादक है और वह भी कभी–कभार छोटे–मोटे लेख, लघुकथा या परिचर्चाएं लिखती रहती है।'' (2)

गरिमा अपनी दीदी को अपने संसार का परिचय देती है – ''गरिमा अपनी लाइब्रेरी की किताबें दिखाती रही। अपने लेख–पत्र, प्रशंसायें....... पति की कहानियां. ..... सब कुछ बताती रही उसका उत्साह, उसका प्रेम छलका–छलका पड़ रहा था। कितना संतोष और सुख है गरिमा को।'' (3)

---

1. 'वे कौन थे' 'सपनों की बारात' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 100
2. 'वे कौन थे' 'सफर जारी है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 118
3. 'वे कौन थे' 'सपनों की बारात' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 119

8 <u>बिन्ना</u> –

वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'लौट आओं प्यार' में मुख्य नारी पात्र बिन्ना है जो भोपाल से गांव जाती है तो ग्रामीण परिवेश से बहुत प्रभावित होती है और पूछती है – "इतनी गागरें एक साथ कैसे लाती हो ?" (1)

गांव की लड़की बिन्ना की सुन्दरता को निहारती हुई कहती है

"तुम कितनी सुन्दर हो" (2)

बिन्ना गांव की लड़की को ग्रामीण परिवेश और शहरी परिवेश में समानता बताती हुई कहती है – "जैसे तुम्हारा सिर गागरों से नही दुखता वैसे ही हमारा पढ़ने से नही दुखता ।" (3)

9 <u>रूना</u> –

'मुआवजा' कहानी संग्रह में 'सवाल' शीर्षक की कहानी में रूना प्रमुख नारी पात्र है। रूना वर्मा परिवार की बड़ी बहू है – "रूना उनकी बड़ी बहू है। शायद वही समझती है उन्हें इसलिए वे रूना को कुछ ज्यादा चाहते है।" (4)

रूना के ससुर किताबों का बंदोबस्त करते थे लेकिन सास भन्नाती हुई कहती है – "तुमने बहू को इतना सर पर चढ़ा रखा है। दिन भर किताबों को लिए बैठी रहती है। ये क्या करेगी पढ़कर ? अच्छे अच्छे तो सर्विस नहीं कर पाते है।" (5)

1. 'वे कौन थे' 'लौट आओ प्यार' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 124
2. 'वे कौन थे' 'लौट आओ प्यार' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 126
3. 'वे कौन थे' 'लौट आओ प्यार' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 128
4. 'मुआवजा' 'सवाल' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 27
5. 'मुआवजा' 'सवाल' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 32

ससुर को रूना की डायरी मिलती है उन्हें पता चलता है हमारी बहू कविताऐं लिखती है, तो वे सोचते हैं – "मैं उसे पूरा मौका दूंगा, उससे कहूंगा बेटा........ तुम खूब कविताएं लिखा करो.........खूब .... पढ़ों संघर्षो और बंधनों से जूझकर ही व्यक्ति की प्रतिभा जन्मती है, विकसित होती है.... मैं तुम्हें एक ख्याति प्राप्त कवियित्री के रूप में देखना चाहता हूं मेरी बेटी............मेरी बहू।" (1)

10 क्षमा –

'मुआवजा' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'पलकों पर ठहरी जिंदगी' में प्रमुख नारी पात्र 'क्षमा' है जो दयामय पात्र है जिसके चरित्र को कुछ पंक्तियां उद्‌घाटित करती हैं। – "क्षमा ने उसके आंसू पोछें। नाक साफ की और छाती से चिपटा नन्हें शिशु की तरह.........दुलार करने लगी ।" (2)

क्षमा उस बालक के बारे में कहती है जिसके हृदय में छेद है वह कभी भी मर सकता है। जिसकी जिन्दगी कभी भी फुर्र हो जाए और उस एहसास को व्यक्त करती है – "दूसरे का दर्द और चिंता हमारे हृदय पर बूंद की तरह ठहर सकता है, झील की तरह नहीं। " (3)

11 रमिया –

'मुआवजा' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'ढहते कगार' में 'रमिया' प्रमुख

---

1. 'मुआवजा' 'सवाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 35
2. 'मुआवजा' 'पलकों पर ठहरी जिंदगी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 40
3. 'मुआवजा' 'पलकों पर ठहरी जिंदगी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 41

नारी पात्र है। जो अपने पूरे घर का खान–पान चलाती है और पूरी व्यवस्था बनाकर रखती है ''रमिया घर का काम करके कभी किसी के यहां लीपा–पोती कर आती या कभी दाल–चना फट्क आती। इसके एवज में उसे गेहूं, ज्वार, जौ, चना, बाजरा या ऐसे ही अनाज मजूरी मेहनतानें में मिल जाते हैं। जिससे घर का काम चल जाता था और साल भर के लिए दाल चना रखकर निखट्की हो जाती थी।'' (1)

रमिया निडर थी जो कहना होता था वह कह देती थी – '''रमिया हाथ भर का घूंघट अलबत्ता डालती थी मगर उसे जो कहना होता था वह घूंघट में से ही कह देती थी, एकदम स्पष्ट रूप से। '' (2)

महीना भर काम कर लेने के बाद उसके पति को पैसा नही मिलता है तो वह अपने पति से कहती है – ''हमाए का पेट नहिंया, हमें का भूख नही लगती , वो तो चलफिरके मैं जुगाड़ कर लेत, नातर भूखों मरने पड़े । कित्ते साल से मेला नहीं देखों, शिवरात्रि को नहीं जाने दिया। अब रंगपंचमी का भी छूटों जात। महिना भर से कह रही थी। '' (3)

1 2 पाती –

'मुआवजा' कहानी संग्रह में संग्रहित कहानी 'मुआवजा' में 'पाती' प्रमुख नारी पात्र के रूप में स्थान पाती है। पाती का विवाह हो गया है लेकिन अभी गौना नही हुआ तो वह जाने को तैयार होती है तो वह देखने लायक थी –

---

1. 'मुआवजा' 'ढहते कगार' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 51
2. 'मुआवजा' 'ढहते कगार' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 51
3. 'मुआवजा' 'ढहते कगार' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 52–53

"ढेर से गहने .... गोरे पाँवो में लगा महावर, माँग में भरा सिंदूर .... एक सम्पूर्ण श्रृंगार । सुबह जब पाती तैयार हुई तो देखने लायक थी । .... सिलवार – कुर्ता ..... हाथों भरी चूड़िया, माथे पर बड़ी सी बिन्दी .... होठों पर लाली ..... एक अनिवार्य विधान की पूर्णता ।" (1)

कुछ ही दिन स्कूल गयी थी कि अचानक उस पर कहर टूट पड़ा –

"पाती का पति एक्सपायर हो गया । उसके मामा आये थे । मना कर गये थे अब वह नही पढ़ेगी वह । बेचारी ! दुर्भाग्य ! क्या उम्र है अभी उसकी और शादी को अभी तीन माह ही तो हुए थे ।" (2)

13. <u>विजया</u> –

<u>'केंचुली'</u> कहानी संग्रह में संग्रहित कहानी साझेदारी' में विजया प्रमुख नारी पात्र है जो संतान के लिए आखिरी क्षणों तक संघर्ष करती है –

"विजया ने कितनी बार प्राणघातक कष्ट उठाये हैं पर कभी हार नहीं मानी है। हर बार ..... एडमिट हुई .... खून की बोतलें चढ़ी, डॉक्टरों ने मना किया . ... परन्तु तब भी न मानी और इस बार जब चौथी बार विजया एवार्शन की जानलेवा पीड़ा भोग रही हैं ..... तब भी उसका मोह ममत्व कम नही हुआ है।" (3)

पति विजया को समझाते हैं तो विजया कहती है –

---

1. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 62
2. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 63
3. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 10

"क्या होगा हमारे जीवन का ? झूठी दिलासा क्यों देते हो आप ? आपकी ये उम्र ! हृदय की बीमारी । एक बार तो हार्ट अटैक हो चुका है तिस पर मेरी भी यह हालत है।" (1)

डॉ0 शिरीष विजया के चरित्र को उद्घाटित करती है –

"विजया ...... जीवट है, उत्साही है, बुद्धिमान है पर एक सुन्दर घर – बगीचा, दो – चार बच्चे और घूमना – फिरना .... उसकी प्रकृति में भी शुमार थे । पर उनके भाग्य में बच्चों को छोड़कर सब – कुछ था । "(2)

14. लक्ष्मी :-

'केंचुली' कहानी संग्रह में संग्रहीत कहानी 'साझेदारी' की दो नायिकाओं में 'लक्ष्मी' भी एक है जिनकी एक सन्तान के प्रति साझेदारी होती है लक्ष्मी पहले निष्पक्ष रहती है लेकिन उसका ममत्व उसे धिक्कारता है –

"हे माँ दुर्गा मेरे मन को बाँधकर रखो । मेरे मन में ऐसा पाप पैदा मत होने दों । यह बच्चा मेरा नहीं है। पर पैदा तो मैं ही करूँगी । प्रसव – पीड़ा तो मैं ही भोगूँगी । कैसे भूल सकूँगी इसे मैं ? कैसे छोड़ सकूँगी मैं अपने बच्चे को ? नहीं यह अन्याय मुझसे न होगा ।" (3)

आखिर में लक्ष्मी भाग जाती है और सोचती है –

---

1. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 11
2. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 15
3. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 21

"मैं कमजोर पड़ गयी हूँ क्योकिं माँ का हृदय सब कुछ सह सकता है पर अपनी आँखों के सामने बच्चे को दूसरी माँ का नाम देकर ममत्व की हत्या होते नहीं देख सकती है।" (1)

15. बिन्दु –

'केंचुली' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'हिसाब' में 'बिन्दु' प्रमुख नारी पात्र है और संतोष उसका भाई है जिसकी शादी राशि से तय हो गयी है तब बिन्दु अपने भाई को समझाती और चिढ़ाती हुई कहती है –

"लड़कियाँ चालाक होती हैं भइया । बचकर रहना, आप तो अभी से उनके प्रभाव में आ गये है।" (2)

शादी के बाद संतोष अपनी बीबी राशि के कहने में चलता है तो फिर भी वह समझाने की कोशिश करती है इससे उसकी सद्प्रकृति उभर कर सामने आती है –

"इतना सिर चढ़ा लिया है। एक थप्पड़ मार देते । खून का रिश्ता बड़ा होता है या पत्नी का भइया ।"(3)

बिन्दु अपना पूरा जीवन परिवार के प्रति बलिदान कर देती है भइया – भाभी का सम्बन्ध टूटने पर वह कहती है – "भइया ! आप इतने उदास क्यों रहते हैं? कितनी बार समझाया कि मस्त रहा करो ।" (4)

---

1. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 23
2. 'केंचुली' 'हिसाब डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 26
3. 'केंचुली' 'हिसाब डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 35
4. 'केंचुली' 'हिसाब डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 41

16. मंजू -

'केंचुली' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'हिसाब' में दूसरी मुख्य नारी पात्र मंजू भी है जो बिन्दु की ही भाभी है और संतोष की पत्नी जब पहली बार संतोष देखने गया था तो बिन्दु पूछती है कैसी लगी भाभी तो संतोष कहता है -

"बहुत सुसंस्कृत और विनम्र है । गजब का आकर्षण है उसमें । घमण्ड तो है ही नही" (1)

संतोष पिक्चर देखने साथ में जाता है और कहता है -

"क्या रूतबा डालूँ उस पर ? वह तो समुद्र की तरह विशाल है, गम्भीर है। कितनी समझ है उसकी बातों में ।" (2)

इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि मंजू एक पढ़ी लिखी और सुशील लड़की है । पहले मिलन पर संतोष उदास हो गया क्योंकि उसके पास देने के लिए कोई उपहार नही था और कहता है मेरे पास कुछ भी नही है देने को तो मंजू बड़े प्यार भरे शब्दों में कहती है -

"क्या मैं परायी हूँ ? जब तुम्हारे पास अपना पैसा आ जायेगा तब मैं तुमसे एक - एक चीज लूँगी ।" (3)

---

1. 'केंचुली' 'हिसाब डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 25
2. 'केंचुली' 'हिसाब डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 26
3. 'केंचुली' 'हिसाब डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 28

17. निरूपमा –

'केंचुली' कहानी संग्रह में 'शून्य' शीर्षक कहानी में निरूपमा मुख्य नारी पात्र है। अपने बारे में वह स्वंय कहती है –

"मैं उन लड़कियों में से नही हूँ प्रशान्त जो प्यार के नाम पर रोती है, कलपती है और जहाँ दूसरा कोई मिला वही प्यार को भुला देती है। इतने वर्षो के दरम्यान तुमने देखा होगा कि मैं अपनी बात से, भावना और दृढ़ता से रंचमात्र भी डिगी नही हूँ ।" (1)

प्रशान्त उसका प्रेमी और दोस्त भी है तो प्रशान्त शादी के लिए तैयार हो जाता है तो वह कहती है

"मैं भाग्य शाली हूँ कि मुझे तुम्हारा निःस्वार्थ और असीम प्यार मिला है। वो दिन मेरे जीवन का सबसे महान और सुखद दिन होगा जिस दिन मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगी ।"(2)

अपने पति प्रशान्त को प्रोत्साहित करती हुई कहती है –

"तुम ओवर टाइम काम करना बन्द कर दो, टूर भी कम किया करो अब। इतना वक्त अपनी पढ़ाई को दोगे तो बहुत अच्छी तैयारी कर सकोगे । .... हर आदमी में स्वाभिमान की भावना होनी चाहिए। तभी आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।"(3)

---

1. 'केंचुली' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 43
2. 'केंचुली' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 43
3. 'केंचुली' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 56–57

18. चानी की पत्नी (प्रिया) :-

'केंचुली' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'सिगरेट' में प्रमुख नारी पात्र चानी की पत्नी है। पति सिगरेट पीने का आदी है जिसका वह डॉटती है कि सिगरेट हानिकारक है –

"पी लो, आज के बाद हम कभी मना नही करेगे । तुम्हे ठीक नही रहना तो मत रहो ! तुम्हारी आदतों से हम तंग आ चुके है। " (1)

प्रिया का परिचय – कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

"प्रिया नौकरी करती है बैंक में जितने पैसे मिलते सब चानी पर खर्च कर देती है।" (2)

प्रिया को कोई सन्तान नही है तो वह अपने आपको कोसती है –

"भाग्यशाली के ही बच्चे होते है। पिछले जन्म में पाप किये होगें तभी तो नही हो रहे हैं।" (3)

19. लतिका :-

'केंचुली' कहानी संग्रह में 'केंचुली' शीर्षक कहानी में 'लतिका' प्रमुख नारी पात्र है। जो अभी छात्रा है –

---

1. 'केंचुली' 'सिगरेट' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 70
2. 'केंचुली' 'सिगरेट' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 74
3. 'केंचुली' 'सिगरेट' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 81

"वह अपने व्यवहार में बहुत ज्यादा शिष्ट तथा विनम्र थी ! कितने ही प्रश्न पूछा करती थी । तमाम प्रतियोगिता में भाग लेती थी । और सबसे बड़ी बात कि अभी – अभी उसका मेडिकल में सिलेक्शन हो गया था । इतना ही नही, वह मैरिट में प्रथम स्थान पर थी" (1)

मेडिकल में सिलेक्शन होने के बाद वह कहती है –

"मैं अपनी डिग्रियों को सिर्फ डिग्री न मानूँ, बल्कि मानव सेवा के लिए संकल्प पत्र समझूँ, मै अपने लक्ष्य में सफल हो सकूँ ।"(2)

लतिका की मेहनत और भी गहरा रंग लाती है –

"मैं फर्स्ट आयी हूँ आल इंडिया यूथ कम्पटीशन में ।" (3)

मेडिकल कॉलेज में अपनी मेहनत से धूम मचा दी –

"श्रेष्ठ वक्ता, श्रेष्ठ छात्रा .... आलराउण्डर का खिताब पाने वाली लतिका ने हर साल रिकार्ड बनाया था अपने रिजल्ट द्वारा ।" (4)

लतिका के सामाजिक विचार डॉक्टर होने के बाद –

"मैं .... चाहती हूँ, मम्मी कि मैं भी डॉक्टरों की तरह ज्यादा फीस न लूँ । सप्ताह का एक दिन मैं किसी गरीब बस्ती में बैठूँगी ।" (5)

---

1. 'कंचुली' 'केचुली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 119
2. 'कंचुली' कंचुली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 119
3. 'कंचुली' 'कंचुली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 120
4. 'कंचुली' 'कंचुली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 121
5. 'कंचुली' 'कंचुली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 124

20. बबली :-

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'सहमा हुआ कल' की प्रमुख नारी पात्र बबली है। कहानी के शुरू में ही परिचय मिलता है -

"यह कहानी है एक छोटी से लड़की की । उस लड़की की, जो तमाम घटनाचक्रों, बातों, प्रभावों और परिणामों से उठे सवालों से घिर जाती है और हर किसी से जानना चाहती है।" (1)

अपने शिक्षक से पूछती है -

"सर, परमाणु बम क्या होता है।" (2)

बबली की सोच बैज्ञानिक है -

"बबली इस वक्त लकड़ी की सीकों का रोबोट बना रही है।" (3)

21. कामिनी शर्मा :-

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में 'प्रतिरोध' शीर्षक कहानी में कामिनी शर्मा प्रमुख नारी पात्र है। जो बहुत ही बुद्धिमान और आकर्षक है - "कामिनी शर्मा कल शाम को ही हॉस्पिटल से लौटी थी । एक हफ्ते तक भर्ती रही । हिट लिस्ट में अपना नाम देखकर बेहोश हो गयी थी । गहरा सदमा लगा था ।"(4)

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 9
2. 'सहमा हुआ कल' 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 15
3. 'सहमा हुआ कल' 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 18
4. 'सहमा हुआ कल' 'प्रतिरोध' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 31

कॉलेज में कुछ महीने हुए थे कामिनी शर्मा को कि उनकी छवि बहुत अच्छी थी ।

"दो माह पूर्व ट्रांसफर हुआ था कामिनी शर्मा का इस कॉलेज में । पहले वह गर्ल्स कॉलेज में थी । उस कॉलेज की लोकप्रिय, सम्मानित और इंटेलिजेण्ट टीचर मानी जाती थी । सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा अन्य गतिविधियों का संचालन करती थी । छात्राएं तथा स्टाफ के सदस्य उनकी तारीफ करते थकते न थे । छात्राएँ तो उनकी हर बात की कायल थी ।"(1)

कामिनी शर्मा बहुत ही मेहनती शिक्षिका थीं –

"वह भी कितनी मेहनत करती थीं । हर काम छोड़कर लेक्चर तैयार करती थी । नोट्स बनाती थी ।"(2)

22. राशि :–

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'कोशिश' में प्रमुख नारी पात्र राशि है। राशि निःसंतान है, बच्चों को देखकर उसका ममत्व छलकने लगता है।–

" बच्चों को देखकर बेकाबू हो जाती हूँ, बहुत चाहती हूँ कि सामान्य रहूँ . ... मगर..... ।" (3)

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'प्रतिरोध' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 32
2. 'सहमा हुआ कल' 'प्रतिरोध' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 32
3. 'सहमा हुआ कल' 'कोशिश' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 43

राशि सोचती है क्या बच्चे ही सब कुछ होते हैं और दुनिया की सारी चीजे व्यर्थ हैं क्या ? "क्या संतान ही जीवन का पहला और अंतिम लक्ष्य होता है? इसके इसके अलावा भी तो चीजें हैं ..... प्रकृति .... फूल .... पंछी ..... जानवर ..... समाज ... उसकी समस्याएँ... तमाम कलाएँ और अभिव्यक्ति के साधन .... संगीत सीखा जा सकता है ..... फोटो ग्राफी सीखी जा सकती है ..... व्यस्त रखा जा सकता है स्वयं को ..... दूसरों के लिए काम किये जा सकते हैं।"(1)

23. विनी :-

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'शहर में अकेली लड़की' में विनी प्रमुख नारी पात्र है। जो अपनी पारिवारिक समस्याओं से जूझती है उसकी दीदी कहती है। तुम्हें अपनी उम्र का ख्याल नहीं है अब अपनी शादी कर डालो इस पर वह उत्तर देती हुई कहती है -

"है, दीदी, मैं भी शादी करना चाहती हूँ । पर ऐसे चक्रवात में सबको छोड़कर नहीं । मम्मी-पापा को कहाँ छोड़ दूँ । किसके भरोसे ! भईया कब लौटेंगे नहीं मालूम । हम भी उन्हे भाग्य के हवाले कर दें । जहाँ में रहूँगी, आसपास रख लूँगी ताकि मेरे सामने रहें ।"(2)

विनी अपनी दीदी का एक सहारा थी जो दीदी के बहाने वह स्वयं अपनी जिन्दगी को व्यक्त कर रही है -

---

3. 'सहमा हुआ कल' 'कोशिश' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 47
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'शहर में अकेली लड़की', डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 11

"दीदी उसको समझाती और वह अपने ही दर्द में तड़पती होती । प्रेम, विछोह, सन्देश और इन्तजार की आकुलता में डूबी वह जैसे स्वयं से ही संघर्ष कर रही थी।"(1)

वह अपना पति एक युवक को स्वीकारती है तो दीदी विरोध करती है तो विनी कहती है –

"क्या बुराई है दीदी ! मेरे विचार उससे मिलते है। मेरी समस्याओं और उलझनों को समझता है। सवाल आकर्षण – अनाकर्षण का नहीं है, सवाल उसके पुरूष होने का है, उसके विचारों और सोच का है। क्या इतना ही काफी नही है। कि वह सज्जन, संवेदनशील और भावुक इंसान है ?" (2)

24. शिल्पा :–

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'वानप्रस्थ' में प्रमुख नारी पात्र शिल्पा है। जो एक शहरी परिवेश के अनुरूप रहना पसन्द करती है उसकी सास आती है जो उसके पति अशोक की माँ है जिसके पैर में एक्जिमा की बीमारी है तो वह पैर भी नही छूती है मात्र दिखावा करती है जो एक रहीसी खानदान से है –

"शिल्पा के पास अनगिनत स्वेटर, शॉल तथा कोट है।" (3)

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'शहर में अकेली लड़की' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 13
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'शहर में अकेली लड़की' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 15
3. 'शहर में अकेली लड़की' 'वानप्रस्थ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 27

डिंगी एक कुतिया है जिसके खान-पान, दवाई सारी व्यवस्था शिल्पा करती है वह अशोक से कहती है -

"डिंगी बीमार पड़ गयी तो क्या फेंक दूँ, एक मासूम जानवर के पीछे हाथ धोकर पड़ गये हो।" (1)

25. अंजू :-

'शहर में अकेली लड़की' कहानी में 'चौथी पगडण्डी' शीर्षक कहानी में अंजू प्रमुख नारी पात्र है। जिसका पति राहुल है। जिसकी शादी को कुछ दिन ही हुए है और वह खत लिखती और सोचती है । जिससे अंजू की मनोवृति का पता चलता है -

"मेरे पति ! वह खत लिखने बैठ गई ......प्यारे-प्यारे संबोधन ...मधुर-मधुर अनुभूतियाँ और विरह में डूबे अपने जज्बात । खत निर्धारित स्थान व दिन को पहुँचते रहे" (2)

वह अपनी बड़कपन जाहिर करती है -

"मेरी जैसी छोटी चित्रकार को .... क्या ऐसे बनते हैं, चित्र ? कला साधना माँगती है यूँ समय को नष्ट नहीं करते सच्चे कलाकार.... मेरी उँगलियाँ कोई चमत्कार दिखा सकें .... मेरी प्रदर्शनी लगे .... लोग देखे .... सराहें.... ।"(3)

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'वानप्रस्थ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 30
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'चौथी पगडण्डी' डॉ उर्मिला शिरीष पृष्ठ 32
3. 'शहर में अकेली लड़की' 'चौथी पगडण्डी' डॉ उर्मिला शिरीष पृष्ठ 35

26. सीमा :-

'रंगमंच' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'पत्ते झड़ रहे हैं' में मुख्य स्त्री पात्र सीमा है । सीमा का चारित्रिक परिचय अम्बिका देती हुई कहती है –

"सीमा बहुत प्यारी लड़की है । मेरा बेहद ख्याल रखती है जबकि कमिश्नर की लड़की है। पढ़ने में भी अच्छी है। जे0एन0यू0 में एडमिशन हो गया था ।"(1)

सीमा बहुत आकर्षण स्वभाव वाली लड़की है – "सीमा के चेहरे पर बिखरी लटों के बीच उनका रंग चाँदी सा चमक रहा है। कैसी स्वप्न में डूबी सी स्वच्छ आँखे ।"(2)

सीमा नये नये वस्त्र धारण करती है । यह उसकी पसन्द और रूचियाँ है जो उस पर बहुत अच्छे लगते हैं –

"उसने नये डिजाइन की पलाश के फूलो के रंग की शर्ट पहनी हुई थी । इस शर्ट में उसका यौवन सौन्दर्य ताजे फूल की तरह खिला लग रहा था।" (3)

सीमा साहित्यिक लड़की है जो जयन्त के प्रेम में पगी है तो उसका विचार है–

"प्रेम और सौन्दर्य की कविताएँ तो अब लिखी जायेगीं क्योंकि उसके बिना जीवन अधूरा होता है। मुझे तो वही साहित्य पसन्द आता है, जिसमें प्रेम की भावनाओं और जीवन का द्वन्द्व हो ।" (4)

---

1. 'रंगमंच' 'पत्ते झड़ रहे है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 62
2. 'रंगमंच' 'पत्ते झड़ रहे है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 63
3. 'रंगमंच' 'पत्ते झड़ रहे है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 63
4. 'रंगमंच' 'पत्ते झड़ रहे है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 70

27. <u>लतिका</u> :-

'निर्वासन' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'जुड़े हुए हाथ' में प्रमुख नारी पात्र 'लतिका' है जो बहुत ही शील स्वभाव वाली लड़की है

"वह पत्थर की तरह कठोर और भीतर से स्वच्छ है।"(1)

लतिका के माँ-वाप गरीब जाति के है और गरीब भी है लतिका सोचती है कि वह पढ़-लिखकर नौकरी करे तो सब कुछ संभल जाऐगा ।

"लतिका को भी अपनी कामनाओं और सपनो पर पाला गिरता नजर आने लगा था । कहाँ बाहर का खुला मस्त माहौल .... कॉलेज में घूमना, मस्ती करना और कहाँ तंग - गलियों से पहुँचने वाले घर में घुसकर रहना । हर वक्त ताँक-झाँक। टोका - टाकी ।"(2)

28. <u>शैला</u> :-

<u>'निर्वासन'</u> कहानी संग्रह में 'पत्थर की लकीर' शीर्षक कहानी में शैला प्रमुख नारी पात्र है । सोच-विचार की तुलना बड़ों से करती है शैला की माँ -

"बित्ते भर की लड़की और बातें बुजुर्गों जैसी करती है।" (3)

शैला की बुआ की शादी के बाद शैला अकेली हो गई थी

"शैला एकदम अकेली हो गयी थी, उनका कमरा कब शैला का कमरा हो गया था । उनके दहेज का बचा सामान, जेवर अब शैला के दहेज में रख दिया गया था । वे उस पीढ़ी की बड़ी लड़की थी, शैला इस पीढ़ी की ।" (4)

1. 'निर्वासन' 'जुड़े हुये हाथ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 45
2. 'निर्वासन' 'जुड़े हुये हाथ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 45
3. 'निर्वासन' 'पत्थर की लकीर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 87
4. 'निर्वासन' 'पत्थर की लकीर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 89

शैला को लगता है कि बुआ परेशान और मुश्किल में है तो वह अपनी मम्मी से कहती है क्योंकि वह सभी को एक समान देखना चाहती है –

"क्यों नहीं होता ! क्यों नहीं हो सकता । यहाँ इतना पैसा है, बुआ को कुछ करवा दो । उनके नाम एक फ्लैट खरीद दो पैसा आएगा तो जी सकेंगी ।"(1)

29. <u>वृन्दा</u> :–

<u>'निर्वासन'</u> कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'उसका अपना रास्ता' में प्रमुख नारी पात्र वृन्दा है । वृन्दा आज वर्तमान परिवेश की लड़की है उसके विचार नये हैं –

"वृन्दा ने अपनी देह को लम्बे शीशे में निहारते हुए पोज बनाया । अँगड़ाई लेकर देह को लचकाया । फिर कैट्वॉक करते हुए बोली और अब आ रही है हुस्न की मलिका" (2)

वह मॉडलिंग भी करती है तो वह कहती है –

"वह दुनिया इस घर के संस्कारों की हमारी दुनिया से एकदम अलग है। वहाँ तरह-तरह के लोग आते हैं । फब्तियाँ कसते हैं, सीटियाँ बजाते हैं।"(3)

उसके आसपास का वातावरण परिवेश की परिस्थिति के अनुरूप है –

"उसकी आदर्श उसकी टीचर नहीं थी .... हालीबुड .. वालीबुड की अभिनेत्रियाँ ही उसका आदर्श थी ।"(4)

---

1. 'निर्वासन' 'पत्थर की लकीर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 90
2. 'निर्वासन' 'उसका अपना रास्ता' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 113
3. 'निर्वासन' 'उसका अपना रास्ता' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 114
4. 'निर्वासन' 'उसका अपना रास्ता' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 115

30. रश्मि :-

'धर्म-अधर्म' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'चमगादड़' में प्रमुख नारी पात्र है। जो कॉलेज में पढ़ाती है और सभी शिक्षकों के बीच लोकप्रिय है ट्रॉंसफर होने से खलबली मच जाती है -

"रश्मि रिलीव होकर पुनः ज्वाइन नहीं कर लेती तब तक हरेक की आँखो में निश्चिंतता की नींद कहाँ ?" (1)

रश्मि बड़ी चतुर और स्वाभिमानी नारी है

"ईमानदारी से ड्यूटी निभाकर । और निभाओ ड्यूटी । बनो ईमानदार ।"(2)

अपने विचारों का आदान-प्रदान करती है -

"अब वो जमाना नही रहा लाजवंती बनकर रहने का कि पुरूष को देखा और सिमट गए पल्लू में । जान - पहचान बनाने में क्या बुराई है ?" (3)

31. रामकन्या :-

'धर्म - अधर्म' कहानी संग्रह में 'रामकन्या के हसीन सपने' शीर्षक कहानी में प्रमुख नारी पात्र 'रामकन्या' है रामकन्या का कायाकल्प इस प्रकार है -

"दो कसकर बँधी चोटियाँ, उन पर खिले लाल रिबन के फूल । आड़ी-तिरछी माँग । चमकते हुए सीधे लंबे दाँत । इस बीच उसके काले होंठ और ज्यादा मोटे हो गए थे और चेहरा कुल - मिलाकर आकर्षक लग रहा था । यह उम्र ही खूबसूरत

---

1. 'धर्म-अधर्म' 'चमगादड़' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 48
2. 'धर्म-अधर्म' 'चमगादड़' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 59
3. 'धर्म-अधर्म' 'चमगादड़' डॉ० उर्मिला शिरीष पृष्ठ 61

होती है । गर्दन में उसने नकली माला.... लंबी देह में दस्तक होती है, इठलाता बल खाता यौवन'' (1)

गरीब बालिका के सपने कुछ इस प्रकार हैं –

''जैसे दूसरे स्कूलों में होता है न अंग्रेजी बोलना, मिस बनना मन करता है मैं अपनी गंदी बस्ती से निकलकर हॉस्टल में रहूँ । साइकिल चलाऊँ । बाजार में घूमूँ । खूब सामान खरीदूँ । सिनेमा जाऊँ .... और ....।''(2)

''रामकन्या की बातों में मुझे एक नई रंगीन दुनिया जन्म लेती नजर आ रही थी ।''(3)

32. रामबती :–

'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में 'चपेटे' शीर्षक की कहानी में मुख्य नारी पात्र 'रामबती' है। रामबती में कुशल नेतृत्व के गुण विधमान थे –

''विद्रोह और नेतृत्व के गुण उसमें बचपन से ही थे ।''(4)

रामबती कर्तव्य निष्ठ भी थी –

''परिश्रम के द्वारा ही वह अपनी शक्ति और सत्ता स्थापित किए हुए थी । भुनसारे उठकर चक्की पर गेंहूँ पीसना, फिर जानवरों की सार साफ करना, कंडे थापना ... सूर्योदय से पहले खारे और मीठे पानी की दस–बारह खेप पानी भर लेना । घर से दूर गलियारे तक झाडू लगाना अंत में कक्का और भैया के लिए

---

1. 'धर्म–अधर्म' 'राम कन्या के हसीन सपने' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 72
2. 'धर्म–अधर्म' 'राम कन्या के हसीन सपने' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 73
3. 'धर्म–अधर्म' 'राम कन्या के हसीन सपने' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 74
4. 'धर्म–अधर्म' 'चपेटे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 180

कलेवा पहुँचाना । खेत – खलिहान का काम हो या छत पर पहरेदारी करना – रामबती कमर कसकर खड़ी रहती है ।" (1)

रामबती पढ़ी – लिखी नही थी लेकिन आत्मविश्वास की पक्की थी –

"'रामबती ने यूँ स्कूल का मुँह नही देखा था । किताब क्या वह रामायण तक बाँचना नहीं जानती थी पर अपने भतीजे को डॉक्टर साब बनाने की महत्वाकांक्षा उसके भीतर कूट–कूटकर भरी थी ।" (2)

33. प्रियतमा –

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'सखा' शीर्षक कहानी में प्रमुख नारी पात्र प्रियतमा है। प्रियतमा का प्रेमी कहता है जिसकी प्रियतमा एक आदर्श नारी के रूप में उभरती है –

"मेरी पथ – प्रदर्शिका, कहो किमैं कैसे उलीचूँ अपने भीतर के गंदे पानी को"(3)

प्रियतमा का प्रेम जेल में सजा काट रहा है लेकिन कई उम्मीदों को लेकर जी रहा है सोचता है –

"मैं भी अपनी सखा के उसी विराट स्वरूप को देखने की कामना में घड़ियाँ गिन रहा हूँ ..... ताकि इस कारागार से निकलकर शेष जीवन सत्य को स्वीकार कर तुम्हारे साथ जी सकूँ । क्या तुम मुझे क्षमा कर सकोगी ।" (4)

---

1. 'धर्म–अधर्म' 'चपेटे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 180
2. 'धर्म–अधर्म' 'चपेटे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 181
3. 'पुनरागमन' 'सखा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 56
4. 'पुनरागमन' 'सखा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 57

34. डॉ0 काचरू –

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में संकलित 'सहसा एक बूँद उछली' में प्रमुख स्त्री पात्र डॉ0 काचरू है। जो डॉक्टर होते हुए भी बीमार और परेशान रहती है –

"डॉ0 काचरू उठी । आँखे पोंछी । चेहरा पानी से धोया । अपनी भारी देह को संतुलित करती हुई चलने की कोशिश करने लगी । लगा पाँवों में ताकत ही न हो ..... फिर लगा चक्कर आ रहे है । पर्स से ब्लड प्रेशर की गोली निकालकर खाई। " (1)

डॉ0 काचरू बहुत ही प्रतिभावान और बुद्दि सम्पन्न डॉक्टर है। जो सम्मानित नामी गिरामी मेडिकल टीचर्स है –

"शहर के इकलौते मेडिकल कॉलेज की नामी – गिरामी मेडिकल टीचर्स में से एक है वे । उनके व्यक्तित्व की भव्यता, ज्ञान की गहनता तथा व्यवहारिकता से अभिभूत होना ही पड़ता है। कश्मीरी पंडित की लड़की । अपने जमाने में बेइंतिहा खूबसूरत लगती थी ।" (2)

दुनिया देखी थी डॉ0 काचरू ने वे कभी निराश नही होती थी –

"दुनिया देखी थी डॉ0 काचरू ने । हजारों लड़कों को पढ़ाया था । समझ गई थी कि पढ़ाई के अलावा जीवन के अन्य कामों में भी वे हताश होगी ।" (3)

वे अपनी बेबी को देखकर बहुत खुश रहती थी – उसी में अपना पूरा संसार समाहित रखती थी –

---

1. 'पुनरागमन' 'सहसा एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 1
2. 'पुनरागमन' 'सहसा एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 2
3. 'पुनरागमन' 'सहसा एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 3

"डॉ0 काचरू पर बुढ़ापे का रंग और गाढ़ा हो गया और बेबी सुंदर किशोरी के रूप में बढ़ने लगी ... डॉ0 काचरू सब कुछ कैद कर सकती थी ..... मगर इन चीजों को तथा रंगो को कैद न कर सकी ।" (1)

डॉ0 काचरू का जीवन धन्य जब हुआ जब उसके घर में बेबी जन्म लेता है।

"बेबी घर मे हंसी – खुशी और उल्लास लेकर आया था । डॉ0 काचरू ने कुदरत पर विजय पा ली थी ।" (2)

---

1. 'पुनरागमन' 'सहसा एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 11
2. 'पुनरागमन' 'सहसा एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 14

(घ) प्रमुख पुरूष पात्र :-

1. हरनारायण :-

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'यह सच है' मुख्य पुरूष पात्र हरनारायण है -

"हरनारायण हेडमास्टर थे" (1) और एक अच्छे अनुशासन प्रिय अध्यापक थे वे हमेशा छात्रों के भविष्य की फिक्र किया करते थे निमी कहती है -

"पापा अच्छा पढ़ाते थे। उनकी औकात भी ऊँची थी"(2)

उनकी बेटी निमी बहुत दुखी थी क्योंकि ससुराल पक्ष से निमी बहुत चिन्तित थी और हरनारायण अपनी बच्ची को बिलखते देख वे भी चिन्तित हो उठते थे -

"हरनारायण खुद निमी के प्रति दुखी थे । चितिंत थे और सचेत भी पर वे बात नहीं करते थे ।"(3)

निमी अपने पापा को बहुत चाहती है इसलिए वह खत के माध्यम से लिखती है - हरनारायण लोकप्रिय, सज्जन पुरूष है -

"एक दिन जरूर ऐसा आयेगा जब पापा को अपने आपको गफलतों से निवारना होगा तब सही रूप से पहचानना होगा और अंततोगत्वा यही हुआ।" (4)

2. रतन :-

'वे कौन थे' कहानी संग्रह की संकलित कहानी में प्रमुख पुरूष पात्र रतन है

---

1. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 12
2. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 12
3. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 14
4. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 28

जो अपनी प्रेमिका के लिए कुछ भी कर सकता है उसके लिए झुग्गी बना कर दी और कहता है –

"सोच लूँगा अपनी ही बनायी है । जिदंगी में किसी के लिए इतना भी न करूँ तो साला यह जीवन ही किस काम का ।"(1)

उसकी प्रेमिका सौमय्या कन्हैया का नाम लेती है तो वह जल कर लाल हो जाता है और कहता है –

"उस पर मरती है क्या ? उस लंफगे के पास है भी क्या जो तू लार टपकाती है । मेरे पास अभी तीन महीना का ठेका है ।"(2)

सौमय्या पर अपना एहसान दिखाता है –

"तीन सौ में झुग्गी डलवायी वो का मुफ्त में डलवायी ।"(3)

अन्त में वह कहता है मेरी नियत साफ है जो मेरे ठेके में लग कर काम करेगा झुग्गी उसी के वास्ते है ।

3. रमानाथ :–

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'अपने लिए' में प्रमुख पुरूष पात्र रमानाथ है। रमानाथ का उद्‌भव एक खल पात्र के रूप में होता है जो शराबी ... जुआड़ी होने के साथ–साथ सट्‌टा भी लगाता है –

"जुआ .... शराब ...... सट्‌टा पूरा घर बर्बाद हो गया पर आदतें नही छूट रहीं ।" (4)

1. 'वे कौन थे' 'दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 29
2. 'वे कौन थे' 'दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 31
3. 'वे कौन थे' 'दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 32
4. 'वे कौन थे' 'अपने लिए' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 43

परिवार वाले भी त्रस्त रहते थे वे कहते थे –

"जुआ, शराब, सट्टा क्या इनसे कभी घर बसे हैं – आदमी सुखी रहा है . ... कभी एकाध नंबर निकल आया तो क्या हुआ ? जरूरी तो नहीं हर बार नंबर निकले ही ...... हर बार जुआ में जीते ही कितनी बदनामी होती है।" (1)

जब रमानाथ का जुआ पकड़ जाता है तब अपने परिवार को सांत्वना देते हुए कहते हैं –

"क्या हो गया है तुम सबको ..... भूखों तो मर नहीं रहे ..... ब्याह की ऐसी जल्दी क्या पड़ी है .... हो जायेंगे .... एकाद साल में किसी धंधे का ठिकाना लगा जाता है ...... तुम्हें चिन्ता करने की क्या पड़ी है।" (2)

अन्त में पुलिस पकड़ लेती है और जेल हो जाती है।

4. **रामाधार पण्डित** :–

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'कन्या' शीर्षक में रामाधार पण्डित प्रमुख पुरूष पात्र है लेकिन उसकी मानसिक प्रवृत्ति रसिया मिजाज की है उसका नाम सुनते है कुछ ऐसी प्रतिक्रिया होने लगती है –

"रामाधार पण्डित । वह बूढ़ा , वो भूरे बालों वाला थू ... थू... ।"(3)

शिवा लड़की कोई दस–बारह वर्ष की होगी उसके साथ कुछ अभद्रता करते हैं–

"पण्डित जी उसे पकड़कर हठात् गोदी में बिठा कर खिला देते .... और इस हठात्पन में उनकी भूरी मूँछे उसके कोमल चेहरे को छू जाती तो शिवा अजीब सी अंजानी वेदना से सिहर उठती .... बस पण्डित जी का चेहरा ताकती रह जाती थी"(4)

1. 'वे कौन थे' 'अपने लिए' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 44
2. 'वे कौन थे' 'अपने लिए' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 45
3. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 68
4. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 69

अन्त में शिवा उनका सिर फोड़ देती है और वे उस गाँव से चुपचाप चले जाते है –

"पण्डित जी ने माथा टटोला ख़ून बह रहा था" (1)

5. <u>हरबतिया</u> –

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'कदमों के आगे' शीर्षक की कहानी में हरबतिया प्रमुख पुरूष पात्र है । हरबतिया किसान है जो पशुओं की देख–भाल करता है –

"हरबतिया पशुओ को चराकर घर लौट जाता था इसीलिए वह तीन बजे से पहले ही उठ आया था कि एकाध घंटा चराकर बाँध देंगे ... जमीन का यही एक टुकड़ा दो एकड़ का बचा है जो कि गेंहूँ की बोउनी के लिए छोड़ दिया था हरबतिया ने" (2)

हरबतिया का दाऊ साब से बैर था दाऊ के शिकायत करने पर हरबतियां को बेइज्जती झेलनी पड़ती है –

"हरबतिया को गिरफ्तार कर लिया गया था और मुकदमा दायर कर दिया था । हालांकि हरबतिया जमानत पर रिहा हो गया था पर वह भूखे शेर की तरह छ्टपटाता रहा था" (3)

हरबतिया के कई विवाद जमीनी भी थे जिसमें दबंगई दिखाता है और कहता है –

---

1. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 79
2. 'वे कौन थे' 'कदमों के आगे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 102
3. 'वे कौन थे' 'कदमों के आगे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 104

"हरबतिया की घूरती क्रूर निगाहें इन्हीं मासूम पौधों पर गड़कर रह गयी थी। इन्हें मैं मिटाकर ही रहूँगा, देखता हूँ यह बनता या मैं । मेरी जमीन दबा ली । मुकदमा जीत लिया, उजाड़कर रख दूँगा" (1)

अन्त में स्वीकार करते हुए कहता है –

"मर रहा दाऊसाहब, खुद बर्बाद हुआ, दूसरों को किया ।"(2)

6. एल0पी0 :–

'मुआवजा' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'उसका अपनापन' में प्रमुख पुरूष पात्र एल0पी0 ही है। जो अपने पुराने नौकर को समझाते हुए कहते हैं। जिससे उनकी मनोवृत्ति का पता चलता है –

"मैं यहाँ पढ़ाने आया करूँगा ...... उस बीच न तो मुझसे मिलना न बात करना, न किसी से कहना वरना मैं हड्डियाँ तोड़ दूँगा ।" (3)

नौकर चाय देने आया उसको डाँटा –

"एल0पी0 ने नाक फुलाकर इतनी बुरी तरह से आँखे तरेरीं कि वह काँप गया।" (4)

एल0पी0 अपने परिवार से भी कुछ कटा–कटा रहता है –

"मैं कितनी बार कह चुका हूँ कि तुम लोगों से मेरा कोई संबंध नहीं है, फिर भी पीछे पड़े रहते हो।"(5)

---

1. 'वे कौन थे' 'कदमों के आगे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 105
2. 'वे कौन थे' 'कदमों के आगे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 107
3. 'वे कौन थे' 'उसका अपनापन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 13
4. 'वे कौन थे' 'उसका अपनापन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 14
5. 'वे कौन थे' 'उसका अपनापन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 15

7. <u>सलिल</u> :-

<u>'मुआवजा'</u> कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'मुआवजा' में प्रमुख पुरूष पात्र 'सलिल' है । जो पढ़ा-लिखा युवक है और पाती को सलाह देता है जिससे उसकी मानसिकता का पता चलता है -

"तुम एम0ए0 कर लो फिर पी0एच0डी0 कर लेना" (1)

सलिल पाती को प्यार करता है जिसकी आवाज का असर पाती पर होता है-

"सलिल की आवाज ने उसके पाँव रोक दिये ।"(2)

पाती को आगे पढ़कर कुछ करना चाहिए वह दुनिया से तुलना करता हुआ कहता है -

"पीछे मुड़कर देखना किसी भी इंसान के लिए उस सूरत में माकूल रहता है जिसमें कि उसे कुछ अच्छा मिला हो। ..... तुम्हें तो आगे देखना है। दुनिया को देखो अब हम छोटे नही रहे .... बीत गये वो दिन ..... समझी ।"(3)

8. <u>शंशाक</u> :-

<u>'मुआवजा'</u> कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'मुआवजा' मे प्रमुख पात्र शंशाक है पाती का मित्र भी है शंशाक वह पाती से कहता है -

"उल्टा - सीधा ही सोचेगी .... फालतू का रोना - धोना मुझे पसन्द नही।"(4)

पाती शंशाक को कोसती है -

---

1. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 78
2. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 79
3. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 79
4. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 121

"तुम्हें सौ–सौ पाप लगेगे शशांक । देख लेना जिंदगी भर तड़पोगे ...पापी ! दुष्ट ! निर्दयी । " (1)

पत्र के माध्यम से शंशाक पाती को सहानुभूति देता हुआ लिखता है –

"भगवान की कृपा से हम राजी खुशी से हैं आप भी ठीक होगीं भगवान से प्रार्थना है।" (2)

9. संतोष :–

'केंचुली' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'हिसाब' में प्रमुख पुरूष पात्र संतोष है । जो अभी अविवाहित है और एक कुशल कर्मचारी है जो अपने लिए लड़की देखने जाता और सोचता है –

"मैं कुछ कहना चाहता था, इसलिए नही कि वह मेरी होने वाली पत्नी थी, इसलिए भी नही कि उससे मुझे प्रेम हो गया था बल्कि इसलिए कि मेरे बारे में क्या सोचेगी ।"(3)

संतोष की बहिन पूछ्ती है कि भाभी कैसी लगी तो वह कहता है –

"बहुत सुसंस्कृत और विनम्र है । गजब का आकर्षण है उसमें । घमण्ड तो है ही नहीं ।" (4)

संतोष अपने दोस्तों से कहता है –

"पिक्चर तो महज बहाना था मैं तो उससे बातें करना चाहता था । उसे भी

---

1. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 122
2. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 123
3. 'केंचुली' 'हिसाब' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 24–25
4. 'केंचुली' 'हिसाब' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 25

कुछ बातों से, स्थितियों से अवगत करा देना चाहता था । अपने भविष्य के बारे में बातें करना चाहता था ।" (1)

10. प्रशान्त :-

'केचुली' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'शून्य' में प्रमुख पात्र प्रशान्त है जो निरूपमा से प्यार करता है और शादी भी निरूपमा से कर लेता है। प्रशान्त की मानसिक स्थिति धन के अभाव में कुछ बिगड़ जाती है –

"प्रशान्त के पास पैसे थे नही । छः – सात माह पूर्व उसने पैसे जोड़कर स्कूटर खरीद लिया था बाकी पैसे हनीमून में खर्च हो गये थे ।" (2)

निरूपमा प्रशान्त को समझाती है क्यों आई0ए0एस0 की तैयार नहीं करते फिर प्रशान्त सोचता है –

प्रशान्त सोचता, निरूपमा ठीक ही कहती है । पूरी जिन्दगी को इस तरह की अभावमयी खीचतान भरी, बेबस इच्छाओं की सतहों पर नहीं झेला जा सकता है। क्यों न एक बार मेहनत कर ली जाये ।" आखिर आई0ए0एस0 पढ़ पास कर प्रशान्त अच्छी नौकरी करता है।

11. चानी :-

'कें‍चुली' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'सिगरेट' में प्रमुख पात्र चानी है। चानी हमेशा सिगरेट पीता रहता है और प्रिया से कहता है –

---

1. 'कें‍चुली' 'हिसाब' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 26
2. 'कें‍चुली' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 53

"तुम्हीं तो कहती थी कि सिगरेट पीते हुए मैं बहुत स्मार्ट लगता हूँ, सिगरेट की गंध पसन्द है ।" (1)

चानी एक कवि भी है लेकिन एक घटना के बाद उन्होंने लिखना बन्द कर दिया था -

"चानी किसी लड़की को प्यार करते थे । वो लड़की एक एक्सीडेंट मे मारी गयी थी, तभी से उन्होंने कविताएँ लिखनी बन्द कर दी थी ... वे उसके गम में इतने अधिक बेहाल हो गये थे कि ..... एक ... एक दिन में चालीस – चालीस सिगरेट पी जाया करते थे।"(2)

चानी उम्र के साथ-साथ संघर्ष भी झेल रहे हैं -

"चानी अब भी मेहनत किये जा रहे हैं। प्रतिदिन सिर में दर्द होता है। सीने का दर्द बढ़ता जा रहा है।" (3)

अखिर में स्वीकारते हुए कहते हैं

"नहीं हम कोई नही हैं ... । कुछ नहीं हैं हम ...... बस एक सिगरेट की तरह जलते मर रहे है ... जिसका एक सिरा चानी के होठों पर रहा है ... और दूसरी ओर सिरे पर .... सिर्फ राख बनते हम ।" (4)

12. <u>बंटी</u> :-

<u>'सहमा हुआ कल'</u> कहानी संग्रह में 'सहमा हुआ कल' शीर्षक की कहानी में

---

1. 'केंचुली' 'सिगरेट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 70
2. 'केंचुली' 'सिगरेट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 72–73
3. 'केंचुली' 'सिगरेट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 94
4. 'केंचुली' 'सिगरेट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 98

बंटी प्रमुख पुरूष पात्र है। बंटी से खत के माध्यम से दीदी कहती है –

"बंटी, अगर बम गिरा तो ये फूल ... यानी, जहाँ-तहाँ फूल होंगे , जानवर होगें, पंछी होगें ... सब खत्म हो जाएगें ।" (1)

बंटी की दीदी बंटी से पत्र के माध्यम से पूछती है –

"बंटी, जिन्दगी क्या होती है, भगवान कहाँ होते हैं, भगवान मिलेगें तो क्या माँगेगें ।"(2)

बंटी की चिठ्ठी आती है वह सभी की कुशल मंगल जानना चाहता है –

"बंटी की चिठ्ठी आई? .... टिंकू और स्वीटी कैसे हैं ? .... शैली और प्रिया ... कहाँ पर हैं ? हम कविताएँ लिखेगे ।" (3)

13. अशोक :-

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'वानप्रस्थ' में प्रमुख पुरूष पात्र अशोक है। जिसकी माताजी शहर रहने के लिए आ रही है तो वह अपनी माताजी को बड़े सहज हृदय से स्टेशन लेने जाता है लेकिन उसकी पत्नी शहरी परिवेश की है जिसे ग्रामीण परिवेश से नफरत है

"ये सब क्या है । ..... कैसी हिकारत भरी आवाजें हैं ? ये घर अजनबी क्यों है ? जबकि बीस साल पहले उन्होंने ही बनवाया था ये मकान ।" (4)

अशोक की बीबी अशोक को अम्मा के बारे मे जलीकटी सुनाती है। जिस पर

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 12
2. 'सहमा हुआ कल' 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 22
3. 'सहमा हुआ कल' 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 27
4. 'शहर में अकेली लड़की' 'वानप्रस्थ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 29

अम्मा को सहन नहीं होता तो अशोक अम्मा को समझाता हुआ कहता है –

"अम्मा, आपको बुरा नही मानना चाहिए । यह आपका ही घर है। आपका अधिकार है। आपका बच्चों पर, शिल्पा पर कोई अधिकार हो न हो पर मेरे ऊपर तो है न ।"(1)

14. राहुल :-

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'चौथी पगडण्डी' में प्रमुख पुरूष पात्र राहुल है। राहुल सभी दोस्तों से मिलकर चलता है वह व्यवहारिक व्यक्ति है –

"राहुल तैयार होते – होते सोचते .... दोस्तों को पार्टी देनी है। सबसे मिलना है ।"(2)

शादी होने के बाद राहुल से दोस्त पार्टी माँगते हैं तो वह पत्नी से कहता है–

"दोस्त मिल गये थे । बैठ गये बस । हर कोई पीछे पड़ा रहता है कि शादी की पार्टी दो ।" (3)

राहुल से उसकी पत्नी स्टेशन चलने के लिए कहती है कि सहेली आ रही है तो राहुल की प्रतिक्रिया होती है जिससे उसका स्वभाव सामने आता है –

"कौन सी सहेली ? वही जो लहँगा पहनकर आई थी शादी में, गजब की खूबसूरत है। जैसे दुगना उत्साह आ गया ।" (4)

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'वानप्रस्थ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 30
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'चौथी पगडण्डी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 32
3. 'शहर में अकेली लड़की' 'चौथी पगडण्डी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 35
4. 'शहर में अकेली लड़की' 'चौथी पगडण्डी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 43

15. संजीव वर्मा :-

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'लौटकर जाना कहाँ है' शीर्षक की कहानी में प्रमुख पात्र संजीव वर्मा है । जो वर्तमान युग का संघर्षशील युवक है जो अपनी प्रेमिका से बहुत अधिक प्यार करता है -

"मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ जानना चाहता हूँ । तुम्हारे बारे में दो दिन से बैचेन हूँ सो नहीं पाया । क्या किया तुमने अपने साथ" (1)

'वन्या' को प्यार का मतलब समझाता है -

"तुम क्या जानो प्यार क्या होता है ? जब किसी से प्यार करोगी तब जानोगी कि हृदय की धड़कन और देख न पाने से कैसी तड़प उठती है।" (2)

संजीव वन्या को धैर्य दिलाता है कि हमारी नौकरी लगने वाली है तब तक तुम सब्र से काम लो -

"थोड़ा और इंतजार करो । मेरी नियुक्ति होने ही वाली हैं । हो सकता है अपना धैर्य देखकर वे लोग मान जाये लेकिन इन लोगो को समझना चाहिए कि मैं कोई सड़कछाप मंजनू नहीं हूँ और इस तरह की हरकतें मेरे साथ न करें ।" (3)

16. जयन्त :-

'रंगमंच' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'पत्ते झड़ रहे हैं' में प्रमुख पुरुष पात्र जयन्त है। शारीरिक गठन जयन्त का एक सुशील युवक की तरह है "युवक को,

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'लौटकर जाना कहाँ है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 77
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'लौटकर जाना कहाँ है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 79
3. 'शहर में अकेली लड़की' 'लौटकर जाना कहाँ है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 83

जिसका चन्दन के समान गोरे रंग का आकर्षक चेहरा है । घने सिलकी बाल । आँखो में निश्छल गहराई । कसरती खूबसूरत बदन जिस पर सामान्य से कपड़े आकर्षक लग रहे थे । पाँवों में जूतों की तरह चमड़े की चप्पलें थी । " (1)

सीमा को देखकर प्रतिक्रिया करता है जिससे उसकी मानसिकता उभर कर सामने आती है –

"कवियों ने ऐसी ही अनुपम सुन्दरता को देखकर उपमान गढ़े होंगे ।" (2)

जयन्त की भाषा में शब्दों का चयन एक अदभुत है जिसकी तारीफ सीमा करती हुई कहती है –

"आपकी भाषा भी अद्भूत है।" (3)

17. <u>पप्पू</u> :–

<u>'रंगमंच'</u> कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु !' में प्रमुख पात्र पप्पू है । जो एक सजग और ईमानदार पात्र है पापा को समझाता है क्योंकि वे वसीयत में कुछ ऐसा न लिख दे जिससे समाज उन्हें धोखेबाज समझे–

"पापा तुम भी क्या बुढ़ापे में ये सब झमेले पाल कर बैठे हो । माँ को पता चलेगा तो । इतने वर्षो से सेवा तो वही कर रही हैं। .... फिर आखिरी समय अपनी बेइज्जती करवाना चाहते हो ।" (4)

पप्पू आखिरी तक पापा का साथ देता । उनकी अस्थियाँ नर्मदा नदी में

---

1. 'रंगमंच' 'पत्ते झड़ रहे है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 61
2. 'रंगमंच' 'पत्ते झड़ रहे है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 61
3. 'रंगमंच' 'पत्ते झड़ रहे है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 63
4. 'रंगमंच' 'बाँधो न नाव इस ठाँ, बन्धु!' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 87

विसर्जित करवा दी । और तेरहवी की जिम्मेदारी भी पूरी की इसके बाद वह अपनी दुनिया में ही खो जाता है।

"आँखो के सामने एक उड़ती हुई आकृति है जिसे वह पकड़ नही पा रहा था। "(1)

18. <u>बाबा</u> :-

'<u>निर्वासन</u>' कहानी संग्रह में 'निर्वासन' शीर्षक की कहानी में बाबा ही प्रमुख पात्र है । कहानी शुरू में ही रहस्यमय जान पड़ती है कुछ शब्द इस प्रकार है -

"ऐ भाई, चार पैसे दे दो । बूढ़ा भूखा है, खाना खाएगा। ऐ बाई साहब पैसे दे दो, बूढ़ा खाना खाएगा, भूखा है । ऐ बहन जी पैसा दे दो ।" (2)

शरीर भी बुढ़ापे के अनुरूप हो गया था

"पिचके गालों वाला धूप मे रंगा तॉवई रंग का चेहरा । उम्र की ही तरह सिकुड़े होंठ और उन आँखों के खोलों से जाती हुई ट्रेन को देखती प्रतिक्षारत आँखें । "(3)

बाबा को पुरानी घटना याद आती है -

"दस वर्ष से ज्यादा हो गये हैं उस घटना को जब वह घर छोड़कर चले गये थे । आत्म निर्वासन, नही था वह, निर्वासन था । मोहभंग था अथाह वेदना रही होगी या उससे भी ज्यादा मन को पराजित करने वाली यन्त्रणा ।" (4)

---

1. 'रंगमंच' 'बाँधो न नाव इस ठाँ, बन्धु!' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 98
2. 'निर्वासन' 'निर्वासन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 65
3. 'निर्वासन' 'निर्वासन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 67
4. 'निर्वासन' 'निर्वासन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 69

19. कटारे महाराज :-

'धर्म-अधर्म' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'माया महाठगिनी' में प्रमुख पात्र 'कटारे महाराज' है। सारे संसार के प्राणी एक समान हैं इस पर जोर देते हैं-

"इस संसार में हर प्राणी को अपना मार्ग चुनने का अधिकार है।" (1)

सत्यता पर जोर देते हैं । महाराज -

"सत्य बड़ा है - या जीवन, सत्यम्, शिवम, सुन्दरम यही तो जीवन का मूल तत्व है, किस बात का मोह बाँधता है तुम्हें! किस सत्य की तलाश में हो तुम ।"(2)

महाराज पर बड़ी श्रद्धा रखने वाले भक्त हैं -

"गुरू पूर्णिमा के दिन गुरू महाराज को पंचामृत से स्नान करवाकर उसे भक्तों में बाँटा जा रहा था ।" (3)

20. दीपक :-

'धर्म-अधर्म' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'कब तक' में प्रमुख पुरुष पात्र दीपक है। दीपक के चरित्र का विस्तार कुछ पंक्तियों में उद्भव होता है -

"दीपक सुबह से लेकर देर रात घूमता रहता था । निश्चित ही वह व्यवहार कुशल लड़का था, बाप की अपेक्षा विनम्र और सज्जन । राजनीति में अपना भविष्य खोजता, पाँव जमाता, कोई पद पाने के लिए इंतजार करता, नेताओं की खुशामद में लगा रहता है।"(4)

---

1. 'धर्म-अधर्म' 'माया महाठगिनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 11
2. 'धर्म-अधर्म' 'माया महाठगिनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 11
3. 'धर्म-अधर्म' 'माया महाठगिनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 18
4. 'धर्म-अधर्म' 'कब तक' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 41

लेकिन दीपक पर पारिवारिक नियंत्रण कायम है –

"दीपक छटपटाता .... पापा की गालियाँ और पाबंदियाँ ।"(1)

अपनी भाभी को डाँटता है क्योंकि वह नहीं चाहता कि उसका परिवार बिखर जाए –

"क्या तुम्हें इतनी बात करनी नहीं आती ! जानती हो न ।" (2)

21. सरपंच :–

'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'कंबल' में मुख्य पुरुष पात्र सरपंच है।

"सरपंच उत्साही था, मिलनसार भी । आगे चुनाव में विधायक के टिकिट का दावेदार भी, इसलिए कोई भी अवसर जिसमें उसका नाम आए, वह खोना नहीं चाहता था।" (3)

सरपंच डॉक्टर की भाषा को समझता है –

"युवा सरपंच डॉक्टर के अंतस्संघर्ष को समझ चुका था । उसने उन्हें समझाया कि दो साल पहले जब मुख्यमंत्री पहुँचे ..... तो आफिसरों ने ..... कैसे गमलों सहित पौधों को जमीन में गाड़ दिया था" (4)

सरपंच बहुत चतुर पुरुष था सरकारी योजनाओं को वह कैसे हजम कर जाता था –

---

1. 'धर्म–अधर्म' 'कब तक' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 43
2. 'धर्म–अधर्म' 'कब तक' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 44
3. 'धर्म–अधर्म' 'कंबल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 119
4. 'धर्म–अधर्म' 'कंबल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 130

"अंततः दो बूढ़ों को सरपंच पकड़कर ले आए .... कुछ बोलना नहीं, चुपचाप खड़े हो जाना और सिर्फ हाँ में जबाब देना ... तुमको कम दिखता है न .. इसलिए मुफ्त में बिना ऑपरेशन के चश्मा दिलवा रहे हैं .... ।" (1)

22. डॉ0 तिवारी :-

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'प्रत्यारोपण' में प्रमुख पुरूष पात्र डॉ0 मिवारी है। जो पेशे से डॉक्टर है जो आज की वैज्ञानिकता को चुनौती देते हुए कहते हैं -

"नश्वरता को चुनौती देता हुआ मेडिकल साइंस बहुत तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है । सर्जरी तो अपनी चरम पराकाष्ठा की ओर है। वैज्ञानिकों ने जीवन के रंगों को पकड़ लिया है । वे उसकी संरचना को हू-ब-हू तैयार कर रहे हैं । डॉ0 तिवारी ने कहा ।" (2)

डॉ0 तिवारी क्लोन की जानकारी देते हुए कहते हैं -

"मैं तो मजाक कर रहा था । क्या आप इस बात को लेकर गंभीर हो गये है? हाँ, हाँ जानकारी दे दूँगा । उसका लिटरेचर भी मिल जायेगा - आप चाहें तो इंटरनेट पर भी देख सकते हैं।" (3)

23. राकेश :-

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'गिरगिट' में मुख्य पुरूष पात्र

---

1. 'धर्म-अधर्म' 'कंबल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 130
2. 'धर्म-अधर्म' 'प्रत्यारोपण' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 15
3. 'धर्म-अधर्म' 'प्रत्यारोपण' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 19

राकेश है । जो घरों में नौकरी करता है उसका परिचय एक उद्‌बोधन के माध्यम से मिलता है –

"ऐ राकेश, सामने की सीट से सामान उठा ।" (1)

मैडम का सच्चा सेवक है जो अपनी मैडम को कोई कष्ट नहीं होने देता है।

"मैडम, आप लोग तो आराम से चाय पीजिए । कोई जल्दी नही है।" (2)

वर्तमान युग में राकेश एक ऐसा सेवक है कि उसकी तुलना कोई अन्य सेवक में नहीं की जा सकती है।

"मैडम, आप आराम से बैठ जाइए । पाँव पसार लीजिए । एकदम गिड़गिड़ाते हुए बोला ..... ।" (3)

---

1. 'पुनरागमन' 'गिरगिट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 161
2. 'पुनरागमन' 'गिरगिट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 165
3. 'पुनरागमन' 'गिरगिट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 164

(ड़) चरित्रांकन शिल्प :-

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से कहानी के प्रमुख तत्वों में चरित्र – चित्रण का ही महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए कहानी के सभी उपकरणों में पात्र–योजना का द्वितीय महत्व होता है। पात्र–योजना अथवा चरित्र–चित्रण की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उसमें कतिपय गुणों का समावेश हो । इनके कारण इस तत्व की व्यावहारिक सफलता की सम्भावनाओं में वृद्धि हो जाती है। यदि चरित्र – चित्रण में इनका अभाव होता है। तो वह न केवल कलात्मक बन पाता वरन् प्रभावात्मकता की दृष्टि से भी असफल रहता है। साथ ही पात्र योजना अथवा चरित्र–चित्रण के क्षेत्र में हिन्दी कहानी के विविध विकास युगों में विभिन्न प्रकार की शैलियों और विधियों का प्रयोग होता रहा है। सैद्धान्तिक विचार से यदि एक ओर चरित्र – चित्रण की ये शैलियाँ कहानी की कलात्मकता का आधार होती है, तो व्यवहारिक दृष्टिकोण से दूसरी ओर युगीन प्रवृत्तियों की ओर भी संकेत करती है। चरित्र–चित्रण का आधुनिक स्वरूप इन आधुनिकतम विधियों पर आधारित होने के कारण युगानुकूलता का भी घोत्न करता है। इसके अतिरिक्त कहानी के अन्य सभी तत्वों में भी पात्र योजना अथवा चरित्र चित्रण का संबध प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से न्यूनाधिक रूप में रहता है । इसलिए भी कहानी में चरित्र चित्रण में सम्यक्ता के लिए कुछ गुणों का निहित होना आवश्यक होता है।

कथाकार को चाहिए कि वह अपनी रचना में पात्र योजना और चरित्र सृष्टि करते समय कल्पनात्मकता से अवश्य काम ले, परन्तु उनका स्वरूप अस्वाभाविक अथवा अव्यावहारिक नहीं होना चाहिए । उनमें मानवीयता होनी चाहिए । उनके कार्य, कलाप, अचार व्यवहार, क्रिया कलाप तथा प्रतिक्रियात्मकता में भी स्वाभाविकता अपेक्षित है। वस्तुतः मानव जीवन और उसकी विविध क्षेत्रीय सम्भावनाएँ इतनी विशाल और व्यापक हैं कि विभिन्न मनुष्यों की सुख–दुख विषयक धारणाएँ पृथक होती है । व्यक्ति का भावात्मक और बौद्धिक विकास भी इन्हीं पर निर्भर करता है। यथार्थ जीवन का प्रत्यक्ष संघर्ष मनुष्य की सबलता और निर्बलता के घोतक अनेक पक्षों को स्पष्ट करता है। परन्तु इनका चित्रण भी स्वाभाविक और विश्वसनीय रूप से होने पर ही पात्रों में संजीवता प्रतीत होती है।

चरित्रांकन शिल्प के प्रमुख घटक :-

1. कथात्मक अनुकूलता
2. मौलिकता
3. स्वाभाविकता
4. संजीवता
5. यथार्थता
6. सहृदयता
7. अन्तर्द्वन्द्वात्मकता
8. बौद्धिकता
9. कलापूर्णता

1. <u>कथात्मक अनुकूलता</u> :-

कहानी में चरित्रांकन शिल्प का गुण पात्रों की कथात्मक अनुकूलता है। कहानी

में कथाकार जिस युग की कथा और जिस प्रकार के वातावरण की सृष्टि करता है, पात्रों की भी आयोजना उसी युग और वातावरण के अनुसार होनी चाहिए । यदि कहानी की कथावस्तु और पात्र योजना में इस दृष्टिकोण से प्रतिकूलता होती है तो इस प्रकार की विरोधाभास की सी स्थिति उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि तब कथावस्तु और पात्रों दोनों का झुकाव परस्पर विरोधी दिशाओं में होता है। इसका व्यावहारिक परिणाम यह होता है कि कहानी की कथावस्तु तो नीरस हो ही जाती है साथ ही चरित्रांकन की दृष्टि से भी उसमें प्रभावहीनता आ जाती है। किसी कहानी की कथा वस्तु जिस युग की किसी ऐतिहासिक घटना अथवा सूत्र पर आधारित होती है, तो उसके पात्रों की योजना भी इतिहास के उसी युग की पृष्ठभूमि पर होनी चाहिए । 'निर्वासन' कहानी संग्रह में संकलित 'दहलीज पर' शीर्षक की कहानी के वातावरण के अनुसार पात्र योजना की गई है । जो कथन के अनुसार परिस्थिति को भी प्रकट करता है जो एक मात्र सोलह वर्ष की लड़की जो विधवा हो जाती है कुछ पंक्ति द्रष्टव्य है –

"शादी करना भी मजबूरी थी। मात्र सोलह वर्ष की आयु में विधवा हो गयी थी उसकी माँ । इतने वर्षो तक विधवा रहकर जीवन गुजारना कोई मामूली बात नहीं थी । फिर वह एक सामान्य सी महिला थी जो पति के साथ रहने, खाने-पीने, जीने, सोने मे अपने जीवन का सुख तथा मोक्ष ढूँढ़ती थी । यहाँ की कैद तथा सूनेपन ने उसे एक तरह से मनोरोगी बना दिया था ।" (1)

---

1. 'निर्वासन' 'दहलीज' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 17

'रंगमंच' में 'चाँदी की वरक' शीर्षक की कहानी में डॉक्टर की मनःस्थिति वातावरण के अनुरूप प्रकट की गई है -

"मेधावी छात्र के रूप में गोल्ड मैडल जीतने वाला आज वह इसलिए पीछे धकेल दिया गया ..... क्योंकि वह सत्य बोल रहा था ।" (1)

2. <u>मौलिकता</u> :-

कहानी में चरित्रांकन शिल्प की एक विशेषता पात्रों की मौलिकता भी है। यह एक ऐसा तत्व है, जिसके अभाव में अन्य अनेक विशेषताओं से युक्त पात्र भी सर्वथा प्रभावहीन होकर पिष्टप्रेषण मात्र प्रतीत होते हैं । इसलिए कहानी के पात्रों के रूप में लेखक को ऐसे चरित्रों की सृष्टि करनी चाहिए, जो अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ पाठक को मौलिकता प्रतीत हो। कहानी के पात्रों में मौलिकता का निहित होना कथाकार से सामान्यतः अधिक पौढ़ता और कलात्मकता की अपेक्षा रखती है। इसका कारण यह है कि प्रायः सभी कहानीकार अपनी रचनाओं के लिए युग और समाज के ही आधार पर पात्रों का चयन करते हैं तथा बहुधा ये पात्र आधारभूत एकात्मकता के कारण एक दूसरे से पर्याय साम्य रखने वाले होते हैं । बहुधा सामाजिक कहानियों में समान समस्याओं पर एक सी प्रतिक्रिया करने वाले पात्र भी मौलिक नही लगते। <u>'पुनरागमन'</u> कहानी संग्रह में संकलित 'प्रत्यारोपण' कहानी में मौलिकता के स्वर गूँजते है। 'जी0डी0' एक मुख्य पात्र है जो कहते हैं -

"आदमी तो फसल की तरह पैदा होता है, पककर गिर जाता है और पुनः

---

1. 'रंगमंच' 'चाँदी की वरक' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 45

पैदा होता है यहाँ क्या स्थिर है ......? सचमुच ही यहाँ कुछ भी स्थिर नहीं है। कुछ नहीं, नहीं .... अब वह सत्य के सहारे जीवन की घड़िया गिन रहे थे ।'' (1)

'धर्म-अधर्म' कहानी संग्रह में 'माया महाठगिनी' शीर्षक की कहानी में एक लड़की सोचती है -

''चल उड़ चल । त्याग दे इस घर को । इस घर में क्या रखा है .... सिवा भेड़-बकरियों की तरह पैदा होते, पलते, रोते, लड़ते, बच्चों की टट्टी - पेशाब साफ करने के । चौबीस घण्टे काम में लगे रहने के ।'' (2)

3. स्वाभाविकता :-

कहानी में पात्र योजना अथवा चरित्र चित्रण का शिल्पमत गुण पात्रों की व्यवाहारिक स्वाभाविकता है । यह चरित्र चित्रण का एक विशिष्ट गुण है, क्योंकि इसके अभाव में पात्रों का व्यवहार कृत्रिम ओर नाटकीय प्रतीत होने लगता हैं । सामान्य रूप से यदि कहानी के पात्रों के व्यवहार में स्वाभाविकता होती है तो पाठक के हृदय में उनके प्रति संवेदना और सहानुभूति उपजती है, और वह उनके सुख-दुखः से प्रभावित भी होता है । 'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में इसी शीर्षक की कहानी में अपनी बहन की आपबीती कथा सुनाती है। और अपनी आत्मा की संवेदना प्रकट करती हुई कहती है -

''मैं क्या करू, मेरी चेतना, मेरी अन्तरात्मा, मेरा वजूद सभी कुछ उस वेदना से सना हुआ है। आठ वर्ष का इतिहास मेरी आँखो में भयावह यातनादायी साये की तरह खड़ा है। रक्तपिपासु समय ! रक्तपिपासु पुरुष! सोचकर सिहरन होने लगती

---

1. 'पुनरागमन' 'प्रत्यारोपण' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 25
2. 'धर्म-अधर्म' 'माया महाठगिनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 17

है कि लोग अपने स्वभाव, अपनी आदतों, वासनाओं के कारण किसी की भी जिन्दगी कितनी आसानी के साथ निर्ममतापूर्वक कुचल डालते हैं। मेरा मन चीखता रहता है कि क्यों हमारे सपनों और खुशियों को यूँ नेस्तनाबूँद किया गया है। पूरा इतिहास पढ़ डाला । हर युग में, हर काल में जाकर ढूँढ़ आई हूँ अपने आपको? भटक रही हूँ मैं? ।''(1)

'केंचुली' कहानी संग्रह में 'शून्य' शीर्षक की कहानी में दो प्रेमियों की कहानी है निरूपमा, प्रशान्त से कहती है –

''दस साल का समय कम नहीं होता है प्रशान्त । अब मैं और इन्तजार नहीं कर सकती हूँ । सोचो तो प्रशान्त, कब करेंगे शादी ? कब बसायेंगे घर ? अट्ठाईस वर्ष यूँ ही गुजर गये हैं।'' (2)

4. सजीवता :–

कहानी में शिल्पगत गुण पात्रों की चारित्रिक संप्राणता अथवा संजीवता है। पात्रों के चरित्र में यह गुण उनके व्यक्तिगत की प्रभावयुक्तता के फलस्वरूप समाविष्ट होता है। यदि किसी कहानी के पात्रों के कथात्मक अनुकूलता तथा व्यावहारिक स्वाभाविकता मिलती है, तो उनमें संप्राणता भी संभाव्य होती है। इसका कारण यह है कि पात्रों के चरित्र में यह गुण उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के आधार पर ही समाविष्ट होता है और पाठक के हृदय पर उसका प्रभाव तभी संयुक्त रूप में पड़ता है। यदि

---

1. 'शहर मे अकेली लड़की' 'शहर मे अकेली लड़की' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 9
2. 'केंचुली' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 42

किसी कहानी के पात्र विभिन्न परिस्थितियों में स्वाभाविक प्रतिक्रियात्मकता का परिचय देते हैं और उनका व्यवहार उनके समग्र व्यक्तित्व के अनुरूप होता है, तभी वे पाठक को सँप्राण प्रतीत होते हैं। पूर्णरूप से काल्पनिक कोटि की घटना प्रधान कहानियों के पात्रों में इस गुण की सम्भावनाएँ अपेक्षाकृत कम होती हैं।

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में 'अतीत जीवी' शीर्षक की कहानी में सभी पात्र प्रायः सजीव हो उठते है नीलेश, चित्रा से कहता है –

"मैंने कहा न कि मैं दुनिया में किसी की परवाह नहीं करता । बहुत छोटी है मेरी जिन्दगी । मैं अपने हिसाब से जीना चाहता हूँ । देखो न इंसान की हस्ती होती भी कितनी सी है।" (1)

'मुआवजा' कहानी संग्रह में भी पात्रों की सजीवता प्रकट होती है कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

"मुझे मदर टेरेसा बनना होगा ...... मदर टेरेसा की तरह विशाल शांत ... सहृदय .... मानवीय करूणामयी जी मरते हुओं को ..... जिन्दा करने की कोशिश करती है क्योंकि ....जीवन एक बार मिलता है सिर्फ एक बार ...... ।" (2)

5. **यथार्थता :–**

कहानी में चरित्रांकन शिल्प की पांचवी विशेषता पात्रों की आधारिक यथार्थता है। इसके अनुसार कहानी के पात्र आधारभूत रूप से यथार्थ जीवन के ही

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'अतीत जीवी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 114
2. 'मुआवजा' 'पलको पर ठहरी जिदंगी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 44

प्रतिनिधि होने चाहिए । यथार्थता और कल्पनात्मकता का प्रश्न कहानी की कथावस्तु के संदर्भ में जितना जटिल है, उतना ही कहानी के पात्रों के सन्दर्भ में भी । डॉ0 शिरीष अपनी कहानी की रचना के लिए कथावस्तु का चयन जीवन के किसी एक क्षेत्र विशेष से करती है। उनके पात्र समाज के व्याप्त पात्रों का प्रतिनिधित्व करते नजर आते है। और यदि कहानी में नियोजित पात्रों का आधार यथार्थपरक है, तो पाठक उनके व्यक्तिगत से अवश्य प्रवाहित होता है। 'वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'यह सच है' में ग्रामीण जीवन को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है -

"गाँव का वह घर बरसात में गिर गया था । भूरी गैया को पापा ने बेच दिया था और जमीन भी बेच दी थी । मुकदमा को उन्होंने अपनी तरफ से खत्म कर दिया था ।"(1)

'धर्म-अधर्म' कहानी संग्रह में 'माया महाठगिनी' शीर्षक की कहानी में नारी की यथार्थ स्थिति का वर्णन किया गया है। बच्ची काका को जबाव देती हुई कहती है -

"सिर्फ चरण पखारे होते तब भी कोई बात नहीं थी । मैं छू लेती मगर जिससे शरीर को धुलाया गया हो । .. उसके बात समाप्त करने के पहले ही काका ने चरणामृत माथे से लगाकर गुटक लिया ।"(2)

---

1. 'पुनरागमन' 'चपेटे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 31
2. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 13

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'चपेटे' शीर्षक की कहानी में एक संघर्षशील महिला को बिन्ना कहती है –

"पर तुम जैसी महिलाओं को जरूर आना चाहिए । राजनीति और समाज सेवा में ।" (1)

6. **सहृदयता** –

कहानी में चरित्रांकन शिल्प की एक विशेषता पात्रों की भावनात्मक सहृदयता होती है। कथाकार जिन पात्रों की आयोजना करता है, वे अधिकांश मानवीय चरित्र होते हैं। यदि किसी कहानी में मानवेतर कोटि के पात्रों की भी सृष्टि होती है, तब भी वे मानवीय सन्दर्भ में अर्थपूर्ण होते हैं। इस दृष्टिकोण से कहानी के पात्रों में मानवीयता तथा सहृदयता के गुण आवश्यक रूप से विधमान होने चाहिए । कहानी में विभिन्न पात्रों की आयोजना इसी उद्देश्य से की जाती है कि उनके माध्यम से विविध परिस्थितियों में मानवीय चरित्र की विविध क्षेत्रीय प्रतिक्रियात्मक सम्भावनाओं का निदर्शन हो सके । इसीलिए कथाकार अपनी रचनाओं मे जिन पात्रों की नियोजना करता है, वे मानवीय सुख–दुख और संवेदना, सहानुभूति के कारण सहृदय प्रतीत होते हैं। 'रंगमंच' कहानी संग्रह पाठक वर्ग के हृदय में गहरी संवेदना प्रकट करता है जिसमें नारी जीवन से जुड़ी समस्याओं को उठाया गया है । 'रंगमंच' शीर्षक की कहानी में कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं –

---

1. 'धर्म – अधर्म' 'माया महाठगिनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 18

"वह उत्साहित हो हाथ जोड़ता हुआ खड़ा हो गया । इस समय वह धूर्त भेड़िये की तरह लग रहा था, जो अपने शिकार को येन-केन-प्रकारेण फाँसने में या शिकार स्थल तक ले जाने में कामयाब हो जाता है।"(1)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में प्रतीक्षा शीर्षक की कहानी में पति अपनी पत्नी से सहृदय भावना प्रकट करता है -

"अब तुम्हें मेरी क्या जरूरत है । रात-दिन बच्चों की सेवा में लगी रहती हो। पहले तो मेरे बिना नींद नही आती थी । तुम्हें मालूम है जब तक तुम माथे पर उँगलिया नही फेरती थी नींद नहीं आती थी ।"(2)

7. **अन्तर्द्वन्द्वात्मकता :-**

कहानी में चित्रित पात्रों के चरित्र में अन्तर्द्वन्द्वात्मकता भी होनी चाहिए । यह विशेषता उन कहानियों के पात्रों मे विशेष रूप से विधमान मिलती है, जिनका आधार कोई विशिष्ट नैतिक अथवा सामाजिक समस्या होती है। इसके विपरीत घट्ना प्रधान कहानियों के पात्रों में इस गुण का पूर्ण रूप से अभाव होता है। घट्ना प्रधान कहानियों में कथावस्तु की प्रधानता होने के कारण नाट्कीय एवं चमत्कारिक सूत्र बहुलता से समाविष्ट रहते है। इन कहानियों में पात्रों की नियोजना में प्रायः ये ही तत्व विधमान रहते हैं। इसलिए इस कोटि की रचनाओं में नियोजित पात्रों के चरित्र में अन्तर्द्वन्द्वात्मकता का समावेश नहीं होता । आधुनिक युग में जो समस्या

---

1. 'रंगमंच' 'रंगमंच' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 15
2. 'निर्वासन' 'प्रतीक्षा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 62

प्रधान कहानियाँ लिखी जाती है, उनमें चारित्रिक अन्तर्द्वन्द्वात्मकता विशेष रूप से मिलती है। 'मुआवजा' कहानी संग्रह में 'मुआवजा' ही शीर्षक की कहानी में पाती के शरीर में अन्तर्द्वन्द्व चलता है वह सोचती है –

"तो क्या घटना का घटित होना उतना भयानक कुरूप और दुखद नहीं होता जितना कि उस घटना की तफसीलों का प्रभाव लगातार खिंचते जाना ... सूत की तरह ... उस घटना से जुड़े संस्कारों का व्यक्ति के साथ चलना .....।"(1)

'सहमा हुआ कल' में 'प्रतिरोध' शीर्षक की कहानी में अध्यापिका के प्रति अन्तर्द्वन्द्व चलता है । अन्त में कामिनी शर्मा सोचती है –

"सच वह कितनी मेहनत करती थी । हर काम छोड़कर लेक्चर तैयार करती थी । नोट्स बनाती थी । साल में वह शायद ही कभी छुट्टी लेती हो । .... लड़किया उनके लिए स्वयं रास्ता छोड़ देतीं ।"(2)

8. **बौद्धिकता** :–

आधुनिक कहानी में चरित्र चित्रण की दृष्टि से पात्रों में बौद्धिकता का समावेश भी सामान्य रूप से मिलता है। चरित्र चित्रण की यह विशेषता शिल्पगत होती है जो विचार प्रधान होती है। भारतेन्दु के परवर्ती युग से हिन्दी कहानी के क्षेत्र में विभिन्न वैचारिक दर्शनों का सैद्धान्तिक आरोपण बहुलता से होने लगा है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से इस कोटि की कहानियों की समकालीन युगीन आवश्यकता है। जिसे कथाकार डॉ0 उर्मिला शिरीष ने पूरा करने का एक अथक और सार्थक प्रयास किया

---

1. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 70
2. 'सहमा हुआ कल' 'प्रतिरोध' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 32

है। 'केंचुली' कहानी सग्रह में हिसाब शीर्षक की कहानी में संतोष अपनी होने वाली पत्नी से मिलने का बहाना ढूढ़ता है वह बाद में अपनी बौद्धिकता का परिचय देते हुये कहता है –

"पिक्चर तो महज बहाना था । मैं तो उससे बातें करना चाहता था । उसे भी कुछ बातों से, स्थितियों से अवगत करा देना चाहता था । अपने भविष्य के बारे में बातें करना चाहता था ।" (1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में संकलित 'वानप्रस्थ' कहानी में मुख्य पात्र अपनी माता से कहता है जिसमें उसकी बौद्धिकता प्रकट होती है –

"बुढ़ापा है । कई तरह की तकलीफें हैं । बताती तो समय पर इलाज हो जाता। अकेली पड़ रही अम्मा । यहीं रहती तो सब्र न होता । ऐसे मे वहाँ कुछ हो गया तो लोग क्या कहेगें ।"(2)

9. कला–पूर्णता :–

कहानी में चरित्रांकन शिल्प की एक विशेषता पात्रों की कला–पूर्णता भी है। कहानी एक साहित्यिक विधा है और इस रूप में इनके माध्यम से लेखक अपनी कलात्मक प्रतिभा का परिचय प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार से कथा वस्तुक्षेत्रीय कलात्मकता कहानी की सफलता का आधार होती है, उसी प्रकार से पात्रों के सफल चरित्र चित्रण में इस गुण की अपेक्षा होती है। नाटकीय एवं चमत्कारिक तत्वों से युक्त

---

1. 'केंचुली' 'हिसाब' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 26
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'वानप्रस्थ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 25

घटनाप्रधान कहानी में आयोजित पात्रों के चरित्र में इस विशेषता की सम्भावनाएँ अपेक्षाकृत कम होती है। घटनाप्रधान कहानी की तुलना में चरित्रांकन शिल्प, कहानी पात्रों का चरित्र चित्रण अधिक कलात्मक हो । वास्तव में यह कहानीकार की चित्रांकन क्षमता और प्रतिभा पर निर्भर करता है। 'वे कौन थे' कहानी संग्रह में संकलित सभी कहानियाँ कलात्मक हैं 'अपने लिए' कहानी में नीना अपनी पारिवारिक स्थिति को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करती है –

"पिताजी ने घर को कैसा तबाह कर दिया है । अम्मा ने कभी जंजीर दी है कभी अंगूठी कभी कानों के टॉप्स को कभी कुछ, सारे गहने बिक गये ...... मायके में क्या ठसक है...... अकूता पैसा है पर कभी कहने माँगने नहीं जाती"(1)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में संकलित 'प्रतीक्षा' कहानी में आज के परिवेश व वातावरण को बड़े कला पूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है –

"आजकल के बच्चे अपना पहले देखते है। अपना कैरियर, अपनी गृहस्थी । अपने बच्चों व बीबी का आराम । बीबी के चेहरे पर झुर्रिया दिख जाएँ तो साहब जादों का ब्लडप्रेशर बढ़ जाता है।" (2)

कहानी के पात्रों के चरित्राकंन शिल्प की दृष्टि से उल्लिखित गुणों का विशेष महत्व होता है। इनके समावेश से चरित्र चित्रण की सफलता की संभावनाएँ बढ़ जाती है। यदि कहानी के पात्र कथा के अनुकूल होते हैं, तो उनका विकास समानान्तर रूप

---

1. 'वे कौन थे' 'अपेन लिए' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 48
2. 'निर्वासन' 'प्रतीक्षा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 61

से होता है। व्यावहारिक दृष्टि से स्वाभाविक होने पर पात्र पाठ्कों को कृत्रिम नही प्रतीत होते हैं। चारित्रिक सप्राणता के गुण से युक्त होने पर वे जीवन्त रूप में पाठ्क को प्रभावित करते हैं। यदि पात्रों की योजना आधारभूत दृष्टि से यथार्थपरक होती है, तो वे यथार्थ जीवन और समाज के वास्तविक प्रतिनिधि प्रतीत होते है। भावनात्मक सहृदयता के गुण से युक्त पात्र पाठ्क की संवेदना और सहानुभूति प्राप्त करने में सफल होते है। इसके साथ ही कहानी के पात्रों में रचनात्मक मौलिकता का गुण भी समाविष्ट होना चाहिए, इससे उनकी आयोजना अधिक प्रभावपूर्ण आभासित होती है। अन्तर्द्वन्द्वात्मकता, बौद्धिकता तथा कलात्मक आदि के गुणों से युक्त पात्र कहानी को चरित्र चित्रण व शिल्प की दृष्टि से सफल बना देते हैं।

सहायक ग्रन्थ - सूची

1. साहित्यलोचन लेखक डॉ0 श्याम सुन्दर दास पृष्ठ 191

2. 'काव्य के रूप' लेखक डा0 गुलाब राय पृष्ठ 221

3. 'कहानी का रचना विधान' डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा पृष्ठ 94

4. राइटर्स न्यू इंटरनेशनल डिक्सनरी ऑफ इंग्लिश लैग्वेंज लेखक एरबट पृष्ठ 461

5. करैक्टर एंड इनहिबीटीशन लेखक डॉ0 रोबेक पृष्ठ 118

6. हयूमन नेचर इन दि मेकिगं, लेखक मौक्सशान पृष्ठ 159

7. 'स्टफिंग द हालौ मैन' करेक्टराइजेशन, लेखक स्कॉट मेरे डिथ पृष्ठ 62

8. राइटिंग फार यंग पीपुल्स लेखक एम0एल0 राबिसंन पृष्ठ 11

9. 'मुआवजा' लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 51

10. 'वे कौन थे' लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 9

11. 'मुआवजा' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 27

12. 'केंचुली' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 10

13. 'सहमा हुआ कल' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 15

14. 'शहर में अकेली लड़की' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 30

15. 'रंगमंच' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 63

16. 'निर्वासन' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 45

17. 'निर्वासन' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 59

18. 'धर्म–अधर्म' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 72

19. 'पुनरागमन' (कहानी संग्रह) लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष पृष्ठ 56

पंचम अध्याय

कथा साहित्य का शिल्प सौष्ठव

(क) कथा साहित्य की भाषा :-

सामान्य रूप से भाषा ही भावाभिव्यंजना का माध्यम है। एक कहानी में लेखक के अभीष्ट भाषा के व्यक्तीकरण के लिए भाषा का उपयुक्त होना आवश्यक है। कहानी एक हल्की साहित्यिक विधा है। इसलिए कहानी की भाषा का दुरूह होना उसकी भावात्मक प्रवाहशीलता में बाधा उत्पन्न कर देता है। सरल, सहज मुहावरों और कहावतों से युक्त भाषा कहानी को व्यवहारिक विश्वसनीयता प्रदान करती है क्लिष्ट भाषा न केवल कहानी को नीरस बना देती है बल्कि उससे कहानी की प्रभावात्मकता भी नष्ट हो जाती है। निरर्थक शब्द योजना, अकलात्मक शब्दाडम्बर, दुरूह वाक्य-जाल आदि की कहानी को भाषा तत्व की दृष्टि से हीन बना देते हैं। हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों में एक 'मुंशी प्रेमचन्द' ने कहानी में भाषा का आशय प्रकट करते हुए लिखा है और कमलेश्वर ने समकालीन कहानी पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा है -

"नयी कहानी भारतीय मूल्यों से संरक्षण और जीवन शक्ति के प्ररिप्रेषण की दिशा में यत्नशील है।" (1)

मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार - "भाषा साधन है, साध्य नहीं, अब हमारी भाषा ने वह रूप प्राप्त कर लिया है कि हम भाषा में आगे बढ़कर भाव की ओर ध्यान

---

1. 'नयी कहानी की भूमिका' कमलेश्वर पृ0 70

दें और इस पर विचार करें कि जिस उद्देश्य से यह निर्माण कार्य आरम्भ किया गया था, वह क्योंकर पूरा हो । वही भाषा जिसमें आरम्भ में 'बागोवहार' और 'बेताल पचीसी' की रचना ही सबसे बड़ी साहित्य सेवा थी, अब इस योग्य हो गयी है कि उसमें शास्त्र और विज्ञान के प्रश्नों की भी विवेचना की जा सके ।" (1)

इससे स्पष्ट है कि हिन्दी कहानी में भाषा के क्षेत्र में निरंतर विकासशीलता लक्षित होती है। प्रथम विकास युगीन कहानी में कथावस्तु के अन्य तत्वों की तुलना में विशेष महत्व के कारण यह तत्व अवश्य कुछ उपेक्षित रहा, परन्तु परवर्ती कहानी में इसको सम्यक् महत्व प्रदान किया गया । आगे चलकर कहानी – कारों को भाषा के व्यावहारिक तथा व्यापक अर्थ का बोध हुआ और तब उन्होंने उसके क्षेत्र में अपेक्षाकृत सजगता का परिचय दिया । इसके अतिरिक्त कहानी में भाषा तत्व का इसीलिए भी विशेष महत्व है क्योंकि कहानी का मूल विषय जीवन का चित्रण करता है, और भाषा भी मूलतः मानव समाज की ही एक रचना है । कहानी में जीवन और समाज के विशद चित्रण का आधार पात्र योजना है, जिसकी भावाभिव्यक्ति का आधार भी भाषा ही है।

भाषा का व्याकरणिक पक्ष :–

व्याकरणिक दृष्टिकोण से भाषा की शुद्धता पर विशेष बल दिया जाता है । बहुधा उत्कृष्ट कोटि के कहानीकारों की भाषा का व्याकरण सम्मत प्रयोग नहीं करते

---

1. 'साहित्य का उद्देश्य' मुंशी प्रेमचन्द पृ0 2

और ऐसी भाषा का व्यवहार करते है जो उनके द्वारा सृर्जित नवीन शब्द-योजना से युक्त होती है । यह शब्द योजना जहाँ एक ओर उन लेखकों की इस क्षेत्र विशेष में रचनात्मक सामर्थ्य की द्योतक होती । वहाँ दूसरी ओर शास्त्रीय नियमों के अनुकूल नहीं होती । ऐसी स्थिति में भाषा के सैद्धान्तिक स्वरूप और उसकी व्यावहारिक योजना में प्रायः विरोध भी लक्षित होता है। व्याकरण सम्मत भाषा के प्रयोग पर बल देने वाले विचारक इस प्रकार की भाषा की आलोचना करते हैं; क्योंकि उनके विचार से शास्त्रीय नियमों के अनुसार और व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग श्रेष्ठ साहित्य का प्राथमिक लक्षण है। इसके विपरीत उच्च कोटि के सर्जनात्मक लेखक स्वयं को इस नियम का अपवाद मानते हैं । कभी - कभी स्थानीय प्रयोगों का परिचय देने के आग्रह विशेष के कारण भी प्रायः व्याकरणिक दृष्टि से अमान्य भाषा का प्रयोग हो जाता है । लेकिन श्रेष्ठ कहानीकार अपनी भाषा दृष्टि सजग रखते हैं डॉ0 उर्मिला शिरीष ने अपने कहानी संग्रह 'सहमा हुआ कल' में कहानियों के माध्यम से भाषा के व्यवहारिक पक्ष को व्यक्त किया है -

"अब तो बादल, पेड़-पौधे, देखकर लगता है, सब बेकार है । लगता है, बम गिरा तो मानसून नहीं आएगा । मानसून नहीं आयेगा तो पानी नहीं बरसेगा।" (1)

भाषा का सैद्धान्तिक पक्ष :-

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से कहानी की भाषा में सम्यक संतुलन होना आवश्यक है। इस रूप में सफल भाषा वही कही जायेगी, जो कहानी की आधारभूत कथावस्तु,

---

1. 'सहमा हुआ कल' कहानी 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 13

पात्र योजना, शैली तथा वातावरण आदि के अनुरूप हो । एक कथात्मक माध्यम होने के कारण कहानी की भाषा में सरलता और स्वाभाविकता होनी चाहिए, अन्यथा वह कृत्रिम प्रतीत होगी। जिस प्रदेश को आधार बनाकर कहानी की कथावस्तु का संयोजन किया जाय, उसमें प्रचलित लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग से भी भाषा में प्रवाहशीलता और सजीवता आती है। कहानी में छोटे वाक्य, सरल शब्द एवं संक्षिप्त वर्णन होने चाहिए । पात्रों और प्रसंगों के अनुसार भाषा के स्वरूप में भी परिवर्तन होने से उसकी स्वाभाविकता में वृद्धि हो जाती है।

भाषागत व्यावहारिक समस्याएं :-

व्यावहारिक दृष्टिकोण से कहानी के क्षेत्र में भाषागत कतिपय व्यवहारिक समस्याएँ विद्यमान हैं। वस्तुतः भाषा मनुष्य की मनोभावनाओं की अभिव्यंजना का एक मानसिक साधन हैं। कहानी में आयोजित पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने के साथ - साथ कहानी में अन्य तत्वों के प्रस्तुतीकरण के लिए भी भाषा ही एक मात्र माध्यम है, क्योंकि कहानी में अभिन्यात्मक माध्यमों की भाँति संकेत अथवा प्रदर्शन के द्वारा भावाभिव्यंजना सम्भव नहीं है। डॉ0 शिरीष धर्म-अधर्म की भूमिका में लिखती हैं -

"मौन भाषा से आत्मा को स्पंदित करता है। पर मौन ही मेरी कहानियों की ताकत है - प्रेरणा है ... उनसे रुबरु होने की अनुभूति है।" (1)

---

1. 'धर्म – अधर्म' भूमिका डॉ0 उर्मिला शिरीष

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से एक कहानीकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह व्याकरण शास्त्र की दृष्टि से शुद्ध और निर्दोष भाषा का प्रयोग करेगा । व्यावहारिक दृष्टिकोण से उसके सामने तब कठिनाई उपस्थित हो जाती है जब वह किसी पात्र की चारित्रिक विकृति के सन्दर्भ में अपेक्षाकृत भिन्न भाषा का प्रयोग करता है। यह भाषा नियम तथा प्रयोग की दृष्टि से प्रायः अशुद्ध भी होती है। इसके अतिरिक्त भाषा प्रयोग के क्षेत्र में व्यावहारिक दृष्टिकोण से एक अन्य कठिनाई तब उपस्थित होती है, जब कहानीकार एक ही रचना में विविध वर्गीय, विभिन्न भाषा–भाषी पात्रों का नियोजन करता है । तब भी भाषा की एक रूपात्मकता के निर्वाह में बाधा आती है। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा पौराणिक विषय वस्तु पर आधारित कहानियों में भी विविध तत्वों के क्षेत्र में भाषा की दृष्टि से व्यावहारिक समस्या उपस्थित रहती है। हिन्दी में प्रेमचन्द ही सम्भवतः एक मात्र ऐसे कहानी लेखक कहे जा सकते हैं, जिन्होंने कथा वस्तु तथा पात्र योजना के बहुरूपी होते हुए भी भाषा के क्षेत्र में सफल संयोजना का परिचय दिया है। डॉ0 शिरीष भूमिका में लिखती हैं –

"समाज में हर जाति के लोग रहते हैं तो स्वाभाविक है कि भाईचारा तो होगा ही, पर आज इस भाईचारे को कुछ शब्दों तथा नारो के द्वारा याद दिलाना पड़ता है । साहित्य में भी मूल्यों और मानवता की ये तस्वीरें और अवाजें लुप्त होती जा रही हैं।" (1)

---

1. 'खूशबू' भूमिका डॉ0 उर्मिला शिरीष द्वारा सम्पादित कहानी संग्रह

<u>कहानी की भाषा का विविध रूप :-</u>

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में विभिन्न युगों के अन्तर्गत भाषा के स्वरूप का पर्यविक्षण करने पर इस तथ्य की अवगति होती है, कि उसमें पर्याप्त वैविध्य है। भाषा के अनेक रूपों का प्रयोग कहानीकारों द्वारा किया गया है। जो भाषा क्षेत्रीय विस्तार का भी द्योतक है। विभिन्न ऐतिहासिक युगों में पृथक-पृथक, भाषा बोलने वाली जातियों द्वारा हमारे देश पर शासन होने के फलस्वरूप उनकी शब्दावली का बाहुल्य हिन्दी में स्वाभाविक है। उर्दू, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी तथा पुर्तगाली आदि भाषाओं के शब्दों का हिन्दी में प्रयोग होने का मुख्य कारण उपर्युक्त ही है। इसी प्रकार से भारत की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में शब्द समन्वय होता है। मुंशी प्रेमचन्द ने हिन्दी भाषा के मिश्रित स्वरूप पर विचार करते हुये हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के चौथे अधिवेशन में सभापति पद से दिए गये अपने भाषण में कहा था कि -

"इसे हिन्दी कहिए, हिन्दुस्तानी कहिए, उर्दू कहिए - चीज एक है। नाम से हमारी कोई बहस नहीं । जीवित देश की तरह भाषा बराबर बनती रहती है। शुद्ध हिन्दी तो निरर्थक शब्द है। भारत शुद्ध हिन्दू होता तो उसकी भाषा भी शुद्ध हिन्दी होती। यहाँ तो हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, फारसी, अफगानी सभी जातियाँ मौजूद है। हमारी भाषा व्यापक रहेगी । बेशक हमें ऐसे ग्रामीण शब्दों को दूर रखना होगा, जो किसी इलाके में बोले जाते है। हमारा आदर्श यह होना चाहिए कि हमारी भाषा अधिक से अधिक आदमी समझ सकें और सभी का कर्तव्य है कि हम राष्ट्र भाषा

को इसी तरह सर्वांगपूर्ण बनाये, जैसे अन्य राष्ट्रों की सबल भाषाएं है। हमें राष्ट्र भाषा का कोश बढ़ाते रहना चाहिए । वे संस्कृत, अरबी और फारसी के शब्द जिन्हें देखकर आज हम भयभीत हो रहे हैं, जब अभ्यास में आ जाएंगें तो उनका हौवापन जाता रहेगा । भाषा विस्तार की यह क्रिया धीरे-धीरे होगी ''(1)

हिन्दी कहानी क्षेत्र में उपलब्ध भाषा के विविध रूपों का संक्षिप्त परिचय –

1. व्यावहारिक भाषा :-

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में उपलब्ध भाषा का एक रूप व्यावहारिक भी है। सामान्यतः साहित्यिक भाषा व्यावहारिक रूप से कुछ क्लिष्ट, कृत्रिम और अस्वाभाविक सी लगती है, परन्तु विविध प्रसंगो और पात्रों के अनुसार सजग शब्दावली के चयन से बोलचाल के प्रयोग में सामान्य भाषा का प्रयोग भी किया जा सकता है। डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में यह विशेषता देखी जा सकती है।

''क्या यथार्थ में कुछ भी नहीं है करने के लिए ? यह हमारी कमजोरी है कि जनता हम पर विश्वास नहीं करती ।'' (2)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में 'धरोहर' शीर्षक कहानी में व्यवहारिक भाषा देखी जा सकती है –

''पहले मैं भी यही सोचा करता था कि मातृभूमि के लिए प्राण न्योछावार करने

---

1. 'कुछ विचार' मुंशी प्रेमचन्द पृ0 119–120
2. 'रंगमंच' 'भाग्यविधाता' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 29

का सौभाग्य कितनों को मिलता है । पर अब लगता है, सैनिक तो हँसते – हँसते कुरबान हो जाते हैं, पीछे छूट जाती है गहन विभीषिका ।'' (1)

''क्या देखना है दीदी! धूल, झाड़ी झंकाड़ ! आप भी क्या ? आपने सोना-बोना पहना हो तो उतारकर रख लो, रास्ता एकदम सुनसान है।'' (2)

2. <u>संस्कृत प्रधान भाषा</u> :-

प्रथम विकास काल से ही हिन्दी कहानी के क्षेत्र में संस्कृत प्रधान भाषा का प्रयोग भी मिलता है। इस प्रकार की भाषा मुख्यतः भावात्मक स्थलों पर प्रयुक्त होती है। प्रकृति के विभिन्न रूपों के चित्रांकन में भी इसका प्रयोग यत्र-तत्र मिलता है।

''हम दोनों नक्षत्रों को देखते रहते ..। ऊपर मौन आकाश होता नीचे खामोश धरती । अंधेरे में लिपटा सारा गाँव ।'' (3)

3. <u>उर्दू प्रधान भाषा</u> :-

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में प्रयुक्त भाषा का एक रूप उर्दू भी है। यह भाषा प्रेमचन्द युग से अधिक प्रयोग में लायी गयी है। सामान्य रूप से कहानी में आयोजित मुसलमान अथवा उर्दू भाषी पात्रों के माध्यम से ही इस प्रकार की भाषा का प्रयोग मिलता है। प्रमुख कहानीकार – प्रेमचन्द, अश्क आदि ।

''गाय का रँभाना, गाँव के बाहर लड़ईयों का रोना.... टिटहरी का चीखना, और कुत्तों का भौंकना हमेशा खतरों का संकेत ।'' (4)

---

1. 'निर्वासन' कहानी संग्रह 'धरोहर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 98
2. 'धर्म–अधर्म' अथ भागवत कथा डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 29
3. 'पुनरागमन' 'चपेटे' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 125
4. 'धर्म–अधर्म' 'पुनरागमन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 147

4. **लोक भाषा :–**

हिन्दी कहानी के इतिहास में प्रेमचन्द युग से लोक भाषा का प्रयोग भी बाहुलता से मिलता है। लोक भाषा के अन्तर्गत भाषा का वह रूप मिलता है, जिसका आधार ग्राम्य शब्दावली से है। इस भाषा का प्रयोग ग्रामीण कथावस्तु और पात्रों के माध्यम से किया जाता है। डॉ0 शिरीष के कथा साहित्य में यत्र–तत्र लोक भाषा उपलब्ध है – 'शहर में' अकेली लड़की' कहानी संग्रह में 'लौटकर जाना कहाँ है' शीर्षक कहानी में लोक तत्व युक्त भाषा द्रष्टव्य है –

"पापा कभी नही चाहेंगें कि वे ब्राह्मण होकर अपने से छोटी जाति वालों के पाँव पूजें" (1)

5. **क्लिष्ट भाषा :–**

प्रेमचन्द तथा उनके परवर्ती काल में हिन्दी भाषा में प्रयुक्त भाषा का एक रूप क्लिष्टता एवं दुरुहता लिये हुये भी मिलता है। डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में कहीं–कहीं भाषा की क्लिष्टता भी देखने को मिलती है – 'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में 'बिन सुर–ताल' शीर्षक कहानी में –

" सामूहिक शब्दहीन रूदन का वो दृश्य सबकी आत्माओं में उतरता गया था ... जहाँ संरक्षण का दावा किया जाता हो ... जहाँ लाखों रूपए उन्हीं के नाम पर मिलते हो... जहाँ सेवा के नाम पर बड़े–बड़े प्रशंसा–पत्र समेटे जाते हैं। ... उसी आंगन

---

1. शहर में अकेली लड़की (कहानी संग्रह) 'लौटकर जाना कहाँ है' (कहानी) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 79

में बैठे.... वे सब अन्याय के प्रतिरोध की सजा भोग रहे थे । घृणा और निर्ममता के नीचे रौदें जा रहे थे ।'' (1)

6. <u>समन्वित भाषा</u> –

विविध विकास युगीन हिन्दी कहानी के क्षेत्र में भाषा का जो स्वरूप प्रमुख रूप से दृष्टिगत होता है, उसे समन्वित भाषा कहा जा सकता है। व्यावहारिक दृष्टि से हिन्दी कहानी के प्रत्येक विकास-काल में भाषागत नवीनता अवश्य मिलती है, परन्तु उसका प्रतिनिधि स्वरूप समन्वयात्मक ही है। हिन्दी के अधिकांश कहानीकारों ने इसी भाषा का प्रयोग किया हैं जिनमें से एक डॉ0 उर्मिला शिरीष हैं जिन्होंने समन्वित भाषा का प्रयोग बड़ी सजगता से किया है।

''बड़ा बेटा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट के व्यवसाय के साथ कई फैक्टिरियों का मैनेजिंग डायरेक्टर हो गया था'' (2)

इस प्रकार से हिन्दी कहानी के क्षेत्र में लगभग एक शताब्दी के विकास काल में भाषागत तत्वों में पर्याप्त वैविध्य लक्षित होता है। व्यावहारिक भाषा का प्रयोग प्रायः सभी युगों में कहानीकारों द्वारा किया गया है।

''शताब्दी से चलकर झाँसी पहुँची । स्टेशन के बाहर गाड़ी खड़ी थी । ड्राइवर भी । रोमांचित थी वह। भावुक भी ।'' (3)

कहानी में भाषा का महत्व :–

कहानी के विविध मूल उपकरणों में भाषा तत्व के क्षेत्र में जो वैविध्य मिलता है तथा विभिन्न कालों में इसका जो विकास हुआ है, वह इसके आनुपातिक महत्व का द्योतक है, वर्तमान युग के पूर्व भाषा तत्व की गम्भीरता का उतना अधिक आभास

---

1. 'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह 'बिन सुर–ताल' (कहानी) डॉ0 उर्मिला शिरीष पु0 108
2. 'धर्म–अधर्म' 'अथभागवत कथा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पु0 27
3. 'धर्म–अधर्म' 'अथभागवत कथा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पु0 29

लोगों को नहीं था और इसलिये इसके प्रति न्यूनाधिक उदासीनता भी लक्षित होती है। आजका कहानीकार भाषा के प्रयोग में उतना ही सजग रहता है, जितना कि कथा वस्तु तथा पात्र योजना आदि तत्वों के संयोजन में ।

भाषा के क्षेत्र में दृष्टिगत होने वाली प्रयोगशीलता का मूल कारण भी एक गम्भीर तत्व के रूप में उसकी स्वीकृति है। दार्शनिक एवं प्रतीकवादी कहानियों के विकास के साथ भाषा के अपेक्षाकृत भिन्न रूप सामने आये । वैज्ञानिक और तकनीकि विषयों पर लिखी गयी कहानियों में भी भाषागत नवीनता दृष्टव्य है। आधुनिक कहानी पर मनोविज्ञान के बढ़ते हुए प्रभाव ने जहाँ एक ओर कहानी के अन्य तत्वों के क्षेत्र में नवीन सम्भावनाएँ प्रस्तुत की है, वहीं दूसरी ओर भाषा तत्व के विकास को भी नवीन दिशा प्रदान की है। उत्तर भारतेन्दु काल से लेकर वर्तमान युग तक के भाषा तात्विक विकास में मनोविज्ञान का विशेष योगदान रहा है। भारतेन्दु युगीन कहानी में विषयगत सीमाओं के कारण उर्दू प्रधान तथा क्लिष्ट भाषा आदि का रूप नहीं मिलते हैं । परन्तु इसके उपरान्त कहानी के विषय क्षेत्र में व्यापक रूप से विस्तार होने के कारण भाषा के रूपों में भी परिवर्तन शीलता लक्षित होती है। प्रेमचन्द तथा उनके परवर्ती युग के यथार्थवादी कहानीकारों ने अपनी रचनाओं में कृत्रिम भाषा को छोड़कर सामान्य व्यवहार की भाषा का स्वाभाविक रूप में प्रयोग किया है। स्वातंत्रयोत्तर कालीन कहानी में आँचलिक वर्ग की रचनाओं में लोक भाषा अथवा ग्रामीण भाषा का सफल प्रयोग हुआ है। स्थानीय प्रभावों से युक्त यह भाषा तत्वगत विशेषताओं को सजीव रूप से उभारती है समकालीन कहानीकारों के लिए डॉ0 शिरीष लिखतीं हैं –

"कहानी तो विभिन्न वर्गों में बँटी ही है, कहानीकारों को भी बाँट दिया है। जो समर्थ है, वह निर्दोष है ।" (1)

भाषा के गुण

कहानी एक गद्य साहित्यिक माध्यम है। इसलिए इसकी भाषा में सैद्धान्तिक रूप से उन गुणों के समावेश पर बल नहीं दिया जाता, जिन पर पद्यात्मक माध्यमों में दिया जाता है। परन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से कहानी की भाषा में भी प्रवाहात्मकता, भावात्मकता, अंलकारिकता तथा चित्रात्मकता आदि गुण विद्यमान मिलतें हैं । काव्य की भाँति ही कहानी में भी विभिन्न प्रसंगों के अनुसार कोमल अनुभूतियों, मधुर भावनाओं एवं विशुद्ध सौन्दर्य के मानवीय तथा प्रकृति - चित्रण भाषाबद्ध किये जाते है। इसलिए कहानी की भाषा में भी ये विशेषताएँ समाविष्ट हो जाती हैं। जिसमें प्रवाहात्मकता, आलंकारिकता, चित्रात्मकता, प्रतीकात्मकता, व्यंग्यात्मकता, नाट्कीयता तथा भावात्मकता प्रमुख है।

1. प्रवाहात्मकता -

कहानी की भाषा का एक गुण उसकी प्रवाहात्मकता भी है। यह गुण उन कहानियों में अपेक्षाकृत अधिक मिलता है, जो वर्णनात्मक शैली में लिखी जाती हैं। किसी प्रसंग, घटना अथवा दृश्य के वर्णन में भी भाषागत यह विशेषता दृष्टिगत होती है। डॉ0 उर्मिला शिरीष के कहानी संग्रह 'निर्वासन' में 'जुड़े हुए हाथ' शीर्षक कहानी

---

1. धूप की स्याही (भूमिका) डॉ0 उर्मिला शिरीष द्वारा सम्पादित कहानी संग्रह

में प्रवाहात्मकता का प्रयोग हुआ है –

"विजया ... जीवट है, उत्साही है, बुद्धिमान है पर एक सुन्दर घर .... बगीचा, दो चार बच्चे और घूमना – फिरना ... उसकी प्रवृत्ति में भी शुमार थे । "(1)

"आपके लिए डेढ़ सौ रूपये मायने नहीं रखते । आपके बच्चे इतने रूपयों की आइसक्रीम खा लेते हैं। पर मेरी लड़की के लिए एक महीने की फीस का सवाल है। कर्ज लेकर अब तक मैंने उसकी पढ़ाई करवायी है। मैं कपड़े नहीं धोऊँगी, तो फीस कहाँ से भरूँगी? हमारे पास कहाँ से पैसा आता है? आपके गेहूँ साफ करती हूँ तो साल में एक नयी साड़ी ले लेती हूँ ।" (2)

2. <u>अलंकारिकता</u> :–

भाषा का एक गुण अलंकारिकता भी है। इस गुण से भाषा का प्रयोग भारतेन्दु युग में ही मिलता है। वर्तमान युगीन कहानियों में यह भाषा रूप अधिकता से नही मिलता हैं <u>'निर्वासन'</u> कहानी संग्रह में डॉ0 शिरीष की कुछ कोशिश दिखाई पड़ती है।

"उन्होंने स्मरण करने की कोशिश की कि उन्होंने अपनी भागती दौड़ती दिनचर्या में कभी अनजाने में कोई ऐसा शब्द तो नहीं बोल दिया जो उसके हृदय में काँटे की तरह चुभ रहा हो ।" (3)

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'अपने लिए' शीर्षक की कहानी में दृष्टव्य है–

---

1. 'केंचुली' साझेदारी डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 15
2. 'निर्वासन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 49
3. 'निर्वासन', 'जुड़े हुए हाथ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 37

"मैं भी इसी तरह सब कुछ स्वीकार करती जाऊँगी ... तब यह प्यास... वह जिस्म की तपिस ... यह रूह की भटकन में..... शैख.....तसल्बुरात.... यह चाहें... यह आक्रोश... बुझ जायेगा.... बर्फ हो जायेगा ।" (1)

'रंगमंच' कहानी संगह में समुन्दर कहानी में समुद्र के पानी के माध्यम से अंलकारिता व्यक्त की गई है -

"समुन्दर का पानी स्थिर था या .... उसने लहरों को पी लिया था मैं स्तब्ध सा उनका चेहरा देखता रह गया जिस पर सफेद कुम्हलायें फूलों की रंगत विछी थी।" (2)

3. चित्रात्मकता -

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से कहानी की भाषा का एक गुण उसकी चित्रात्मकता भी है । यह गुण प्रायः प्राकृतिक दृश्यों अथवा अनुमूल्यात्मक प्रंसगों के सन्दर्भ में विशेष रूप से भाषा में समाविष्ट होता है। 'मुआवजा' कहानी संग्रह में 'सवाल' नामक शीर्षक की कहानी में एक गर्मी के वातावरण का चित्र बनाया गया है -

"इतनी तेज हवा! भभकती सी तेज हवा ! गरम लू ! अंधड़ की तरह जिसमें दुनिया भर का कचरा (हल्का-हल्का) आँखो में आकर लग रहा था।" (3)

'धर्म-अधर्म' कहानी संग्रह में 'माया महाठगिनी' कहानी में एक आश्रम चित्र उभर कर सामने आता है - '

---

1. 'वे कौन थे' अपने लिए डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 45
2. 'रंगमंच' समुन्दर डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 23
3. 'मुआवजा' सवाल डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 22

'गुरू पूर्णिमा के दिन अच्छी खासीभीड़ थी । रौनक थी । कुछ नएं जोड़े आए थे । दूर – दूर तक आश्रम का प्रांगण फैला था । हरे – भरे खेत ..... फलों से लदे लंबे – चौड़े वृक्ष । सैकड़ों स्वस्थ सुंदर गायें, उनकी सेवा करने के लिए – अनगिनत शिष्य'' (1)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'सखा' शीर्षक की कहानी में एक सच्चे प्रेमी का चित्र उभर कर पाठक के सामने आता है –

''मैं किसी की बात नही सुनता था न ही मानता था । घर में गाली–गलौज। बाहर अंहकार । परदा डालकर रखता था कि मेरा काम चल रहा है। दिल में धधकती आग कि मुझे दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंका बगैर यह सोचे कि मैं कहाँ जाऊँगा ।'' (2)

4. प्रतीकात्मक :–

कहानी की भाषा का एक गुण उसकी प्रतीकात्मकता भी है। यह गुण स्वातंत्र्योत्तर युगीन कहानी की भाषा में अपेक्षाकृत अधिकता से समाविष्ट हुआ है। इस काल में कहानी के क्षेत्र में बौद्धिकता की प्रवृत्ति के विकास के साथ ही उसकी भाषा में 'प्रतीकात्मकता' भी निहित है। डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियाँ प्रतीकात्मकता से भरी पड़ी है कहानी संग्रह 'शहर में अकेली लड़की' 'अन्तिम यात्रा से पहले' शीर्षक की कहानी में आँसुओं का प्रतीक आर्दता – ''आँखों में आर्दता तक

---

1. 'धर्म – अधर्म' 'माया महाठगिनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 17
2. पुनरागमन 'सखा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 51
3. 'शहर मे अकेली लड़की' 'अन्तिम यात्रा से पहले' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 49

न थी, जैसे सब कुछ सामान्य हो ।" (3)

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में 'कोशिश' शीर्षक की कहानी में राशि अपने पति की नामर्दगी को जाहिर करती है, बच्चे को प्रतीक के रूप में लेती है –

"तीन साल से ज्यादा हो गये है शादी को । बच्चे को लेकर सारी आशाएं और सपने एक – एक करके टूटते – विखरते जा रहे हैं ।" (2)

5. **व्यंग्यात्मकता :-**

कहानी की भाषा का एक गुण उसकी व्यंग्यात्मकता भी है। यह गुण प्रायः उन कहानियों की भाषा से मिलता है जो हास्य – व्यंग्य प्रधान होती हैं । केंचुली कहानी संग्रह में 'सिगरेट' कहानी में प्राचीन मान्यताओं पर व्यंग्य करती हुई 'चानी' कहती है –

"देखो हमने विवेकानन्द का साहित्य .... भगवद्गीता – रामायण और अच्छा साहित्य खरीदकर इसीलिए अब तक नही पढ़ा था कि ये सभी हम नौ महीने के बीच में पढ़ेगे । कहते हैं न कि इसका प्रभाव बहुत पड़ता है बच्चे पर ।" (3)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी में डॉ0 शिरीष के पात्र व्यंग्य की भाषा में कहते हैं वर्तमान समय की स्थिति को व्यक्त करती हुई नारी पात्र विनी कहती है –

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'कोशिश', डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 42
2. 'केंचुली' सिगरेट डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 78

"फिल्मों में दिखाये गये चरित्र गलत थोड़ी न होते है .... यह तो उनसे भी बदतर है। " (1)

झूलाघर कहानी में आज के विद्यार्थियों पर व्यंग्यात्मक लहजे मे विमला अपने बच्चे को समझाती है –

"स्वयं पढ़ने की आदत डालो । क्या और बच्चों के माँ – बाप नौकरी नहीं करते ? वे भी तो क्लास में अच्छी रैंक लाते हैं । वे कैसे पढ़ते है ? बात मानते है । अनुशासन में रहते है । अपना काम स्वयं करते है।" (2)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'सहसा एक बूँद उछली' शीर्षक की कहानी में नानी अपनी बेटी को व्यंग्यात्मक लहजे में समझाती हुई कहती है –

" जीवन में कभी – कभी दुर्भाग्य के क्षण अभिशाप बनकर आते है और अपना असर जीवन भर के लिए छोड़कर चले जाते हैं।" (3)

6. नाटकीयता –

कहानी की भाषा का एक गुण उसकी नाटकीयता भी है। इस प्रकार की भाषा भी हिन्दी कहानी के सभी विकास युगों में मिलती है। आधुनिक युग में मनोविज्ञान तथा दर्शन आदि का आधार ग्रहण करके जो कहानियाँ लिखी गयी है, उनमें भी इसी प्रकार की भाषा दृष्टिगत होती है। धर्म–अधर्म कहानी संग्रह में 'माया महाठगिनी' शीर्षक वाली कहानी में नाटकीय तत्व विध्मान है कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 13
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'झूलाघर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 21
3. 'पुनरागमन' 'सहसा एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 13

"एक बार फिर धर्म को धारण करना चाहती हूँ । ध्यान और योग करना चाहती हूँ, भटकते हुए वर्षो हो गए है। अश्वत्थामा की तरह अभिशप्त होकर भटक रही हूँ ।" (1)

मुआवजा' कहानी संग्रह में वर्तमान मानव की परिस्थिति को डॉ0 शिरीष ने व्यक्त किया और भाषा में नाट्कीय तत्व विघमान हैं –

"सामाजिक स्थिति और देश को लेकर तो कोई बात तक नहीं करता सिर्फ झगड़ा करना आता है सबको । सबकी जिंदगी उदासी में डूबती जा रही है। अधूरी पढ़ाई सड़े – गले बासी फल .... सा जीवन .... कितना घटिया जीवन जी रहे हैं हम ।" (2)

'रंगमंच' कहानी संग्रह में रंगमंच शीर्षक की कहानी में वर्तमान युग के वकीलों को लेकर भाषा में नाट्कीय तत्व मिलाया है कुछ पंक्तियां दृष्टव्य है –

"वकील सचमुच अनुभवी था, तेज था । उसका नाम बिकता था । जिन्दगियों को लूटने वालों, जिन्दा जलाने वालों, कत्ल करने वालों के साथ उसकी कोई नैतिक जबाब देही न थी । समाज के प्रति उसका कोई कर्तव्य न था ।" (3)

7. भावात्मकता –

कहानी की भाषा का एक गुण उसकी भावात्मकता भी है। इस गुण से युक्त भाषा का प्रयोग करूणाजनक प्रसंगो के सन्दर्भ में अपेक्षाकृत अधिक मिलता है।

---

1. 'धर्म – अधर्म' 'माया महाठगिनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 11
2. 'मुआवजा' 'सवाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 36
3. 'रंगमंच' रंगमंच डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 17

'वे कौन थे' कहानी संग्रह 'दलाल' शीर्षक की कहानी में माँ अपनी बेटी के प्रति भावनात्मक प्रेरणा देती हुई समझाती और कहती है –

"ये रखी थाली में खिचड़ी । बासन भाड़े तक न थे घर में । वो तो रचना ने काम दे दिया तो दो जून की रोटी मिलने लगी । कप में चाय और कागज में भजिया रखे यह खाले । जिद न कर बेटा खाले । कल भी कुछ नहीं खाया था तूने, आज भी सुबह की भूखी हैं भूखी रहेगी तो बीमार न पड़ जायेगी ? तू ही तो आसरा है । मेरा पेट का दर्द न बढ़ा होता और पांव में तकलीफ न होती तो का मैं तुझे काम पर भेजती उठ, जी न जला कल तूने कुछ न खाया था तो मैं भी कुछ न खा सकी थी ।" (1)

'निवार्सन' कहानी संग्रह में 'जुड़े हुए हाथ' शीर्षक की कहानी में एक मॉडल जो खूबसूरत है उसके माध्यम से भावात्मकता प्रकट हुई है –

"खुशी तथा उत्साह की जगह उसका मन गहरी निराशा में डूबने लगा । वेदना – भरा हृदय लेकर उखड़े मन से वह लकड़ी के पटे पर बैठी जरुर, लेकिन उसे लग रहा था कि उसके पंजे उखड़े जा रहे हों ।" (2)

---

1. 'वे कौन थे' 'दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 37
2. 'निर्वासन' 'जुड़े हुए हाथ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 43

(ख) कथा साहित्य की शैली :-

वर्तमान हिन्दी कहानी में शैली तत्व को विशिष्ट महत्व प्रदान किया जाता है, यद्यपि पूर्ववर्ती कहानी में इसकी उपेक्षा हुई है। आरम्भिक कालीन हिन्दी कहानी में प्रायः परम्परागत रूप में वर्णनात्मक शैली का ही प्रयोग हुआ है, जिसमें कथा का प्रस्तुतीकरण तृतीय पुरूष के रूप में किया जाता है । इस कथन के अपवाद के रूप में केवल कुछ ही कहानियाँ ऐसी उपलब्ध होती है, जो प्रथम पुरूष के रूप में आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी हैं। प्राचीन भारतीय कथा साहित्य के अन्तर्गत 'पंचतंत्र' तथा 'हितोपदेश' में जो शैलीगत जटिल रूपात्मकता मिलती है, उसका प्रभाव हिन्दी कहानी की तुलना में हिन्दी उपन्यास पर अधिक पड़ा । भारतेन्दु युग में वर्णनात्मक तथा आत्मकथात्मक शैलियों के अतिरिक्त अन्य शैलियों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया । प्रेमचन्द काल से पत्र शैली तथा उसके उपरान्त डायरी शैली आदि का प्रयोग हुआ । इस दृष्टिकोण से शैली तत्व के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रयोग स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में ही मिलते हैं। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से यदि कहानी की विभिन्न शैलियों के स्वरूप पर विचार किया जाए तो यह तथ्य अवगत होगा कि शैलीगत नवीनता कहानी के प्रभाव की वृद्धि की दृष्टि से उपयोगी होती है। सामान्य रूप से कहानी की कथावस्तु का प्रस्तुतीकरण किसी भी शैली में किया जा सकता है। सभी शैलियों की अपनी पृथक सीमाएं व विशेषताएं है, जो कहानी में अभिव्यंजित होती हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी कहानी में किसी ऐतिहासिक घटना का विवरण प्रस्तुत करना लेखक को अभीष्ट है, तो वह उसे अनेक शैलियों में कर सकता है ।

इसके लिए सबसे अधिक सामान्य शैली वर्णनात्मक होगी । परन्तु यदि कहानीकार उसी घटना को किसी पात्र की आत्मकथा, पत्र, डायरी अथवा संस्मरण के रूप में प्रस्तुत करेगा, तो उसकी रचना में विशेष रूप से कलात्मकता और प्रभावात्मकता आ जाएगी । हिन्दी कहानी में जो शैलियाँ आरम्भ से वर्तमान काल तक विकसित होती रही हैं वे एक ओर अपने सैद्धान्तिक स्वरूप की परिपक्वता का द्योतन करती है, तथा दूसरी ओर उनसे कहानी के कलात्मक परिष्कार का भी परिचय मिलता है।

कहानी की शैली का विवेचन करते हुए डॉ0 गुलाबराय ने उसके समग्र स्वरूप को स्पष्ट किया है। उनके विचार से –

"शैली का सम्बन्ध कहानी के किसी एक तत्व से नही वरन् सब तत्वों से है और उसकी अच्छाई या बुराई का प्रभाव पूरी कहानी पर पड़ता है। कला की प्रेषणीयता अर्थात दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति शैली पर ही निर्भर करती है। किसी बात के कहने या लिखने के विशेष प्रकार को शैली कहते है । इसका सम्बन्ध केवल शब्दों से ही नहीं है, वरन् विचार और भावों से भी है। " (1)

'श्री गिरधारी लाल शर्मा' गर्ग के विचार से –

"रचना के मानी भाव, तत्व और विषय एवं उसे अभिव्यक्त करने का ढंग ही तो है। यानी इनका सम्मिश्रण ही रचना है। जहाँ उत्कृष्ट शैली का अभाव है वहाँ तत्व और भावों के रहते हुये भी रचना का अंग अपूर्ण रहता है, और जहाँ केवल

---

1. 'काव्य के रूप' डॉ गुलाव राय पृ0 225

शब्द योजना, पद विन्यास, प्रसंग गर्भत्व आदि का अच्छा निर्वाह है, लेकिन भाव और तत्व की कमी है, तो भी कहानी निर्जीव ही रह जाती है। कहने का तात्पर्य है कि रचना से शैली और भाव, विषय दोनों ही का बोध होता है।" (1)

पाश्चात्य विचारक 'एस0 ओ0 फाउलेन' ने बताया है कि –

"कहानी का शिल्प विधान उसकी घटनात्मक संरचना का आधार होता है।" (2)

इस प्रकार के उद्धरणों से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि कहानी की शैली सम्बन्धी परम्परागत सिद्धान्तों की सीमाओं से आगे वर्तमान कहानी अपने अभिनव शिल्प रूपों के क्षेत्र में प्रयोगात्मकता की प्रवृत्ति से युक्त मिलती है । वर्तमान कहानी में सामान्य वर्णनात्मक शैली से पृथक, अनुभूति, संवेदना अथवा समस्या के अनुरूप वैविध्यपूर्ण शैली का प्रयोग होता है, जो इस क्षेत्र में रचनात्मकता का द्योतक है।

सामान्य रूप से शैली प्रधान कहानी उस रचना को कहा जाता है, जिसमें अन्य तत्वों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है। नयी कहानी में जो कथ्य और शिल्प की नवीनता है वह स्वातंत्र्योत्तर भारत की गतिविधियों का परिणाम है। 'राजेन्द्र यादव' ने ठीक ही लिखा है –

"वस्तुतः स्वतन्त्रता के पश्चात के कथाकार का एक संसार वह है, जो उसके आसपास फैला हुआ है, जिससे उसे घृणा भी है, लेकिन उसकी मजबूरी यह है कि

---

1. 'कहानी एक कला' श्री गिरिधारी लाल शर्मा गर्ग, पृ0 93
2. 'दि शार्ट स्टोरी' एस0ओ0 फाउलेन पृ0 12

वह उसमें रहने, टूटने और घुटने व समझौता करने के अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं देख पाता है । दूसरी दुनियाँ वह है जिसे उसने अपने भीतर से निकाल कर बाहर फैंक दिया है। इसका निर्माण उसने खुद किया है। कथाकार अपने टूटने, घुटने और घिसटने की तस्वीर पूर्ण पराजय और हताशा के साथ व्यक्त करता है। यही उसकी नियति है।'' (1)

आधुनिक कहानी के शैली तत्व के क्षेत्र में मनो विश्लेषण का भी व्यापक प्रभाव पड़ा है । मानवीय चेतना के विभिन्न स्तरों के विश्लेषण की दृष्टि से सामान्य रूप में परम्परागत कथा शैलियों अनुपयुक्त प्रतीत होती हैं इसीलिए नवीन शिल्प रूपों के आविर्भाव और विकास में इस प्रकार की विचार धाराओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

---

1. 'एक दुनियाँ समानांतर' राजेन्द्र यादव, पृ0 19

डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियाँ एवं शैलीगत विशेषताएँ

कहानी में शैली तत्व के समुचित नियोजन के लिए उसमें कतिपय गुणों का समावेश आवश्यक होता है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से कहानी की शैली यदि आकर्षक और कलात्मक होती है, तो उसकी सफलता की सम्भावनाओं में वृद्धि हो जाती है। भले ही उसके अन्य तत्वों का आनुपातिक समावेश और सन्तुलन न हो । भावभिव्यंजना के चमत्कारिक प्रस्तुतीकरण के रूप में ही शैली का महत्व है । यह कहानी का एक ऐसा तत्व है, जो उसके अन्य सभी तत्वों में पारस्परिक संतुलन और सामंजस्य स्थापित करता है। यदि कहानी के अन्य तत्व न्यूनाधिक रूप में शिथिल होते हैं, तो भी कला पूर्ण शैली कहानी को निर्दोष बना सकती है। कथावस्तु, पात्र, संवाद, भाषा, वातावरण तथा उद्देश्य आदि तत्व चाहे जितने कलायुक्त हो, परन्तु जब तक कहानी की शैली कलात्मक नहीं होगी, तब तक कहानी प्रभावहीन बनी रहेगी । सामान्य रूप से कहानी की शैली में अलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, रोचकता, भावात्मकता , आंचलिकता तथा व्यंग्यात्मक आदि गुणों का समावेश रचना को कलात्मक परिपूर्णता प्रदान करता है। शैली के इन गुणों की संक्षिप्त परिचयात्मक व्याख्या यहाँ सोदाहरण प्रस्तुत की जा रही है।

1. आलंकारिकता –

कहानी की शैली का एक गुण उसकी आलंकारिकता भी है। यह गुण प्रायः भावात्मक और काव्यात्मक शैली प्रधान कहानियों में निहित रहता है। इस गुण के समावेश से कहानी के कलात्मक सौन्दर्य में अभिवृद्धि हो जाती है। आधुनिक समकालीन कहानियों की शैली में इसका समावेश बहुलता से नहीं मिलता है। 'निर्वासन' कहानी संग्रह में कहानी 'उसका अपना रास्ता' में कुछ गुण आलंकारिकता के देखे जा सकते हैं –

"कभी वह सुभद्राकुमारी चौहान, प्रसाद, पन्त और निराला की कविताएँ याद करती थी, लेकिन अब याद करती है । ब्यूटी के टिप्स । दिल थामकर सुनती है उनके अवास्तविक स्टेटमेण्ट्स । दुनिया की परिक्रमा, सांस्कृतिक दूत, कई देशों की विशिष्ट अतिथि, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, से मिलने का गौरव, ढ़ेरो इनाम और अपार धनराशि।" (1)

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में पिता अपने पुत्र को समझाते हुए कहते है –

"बहु इतनी बुरी नहीं है बेटा । हमने गुण–सौम्यता, बुद्धिमानी और खानदान देखकर शादी की है। वह इतनी सीधी–सरल हृदय वाली लड़की है कि तुम जैसा चाहोगे वैसा ही करेगी ।" (2)

---

1. 'निर्वासन' उसका अपना रास्ता' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 119
2. 'सहमा हुआ कल' अतीत जीवी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 118

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में ' यह सच है' शीर्षक की कहानी में पूरा वातावरण काव्यमय हो गया है –

"कीट्स, शैली, बच्चन और भवानी प्रसाद की कविताएं तथा शेक्सपियर के नाटक को पढ़कर निमी को जीवन में कुछ आभास हुआ था ।" (1)

2. प्रतीकात्मकता –

कहानी की शैली का एक गुण उसकी प्रतीकात्मकता भी है। यह गुण प्रायः बौद्धिकता प्रधान कहानियों की शैली में मिलता है। इसका समावेश प्रायः सांकेतिक प्रसंगो में अधिकता से होता है। आधुनिक कहानी साहित्य के क्षेत्र में प्रतीकात्मक की विशेषता से युक्त शैली का प्रयोग स्वातंत्र्योत्तर युगीन रचनाओं में बहुलता से हुआ है । इस गुण से युक्त शैली के सफल प्रयोग की दृष्टि से डॉ0 शिरीष की कहानियाँ दृष्टव्य है – *'रंगमंच'* कहानी संग्रह रंगमंच शीर्षक की कहानी में मृत शरीर का प्रतीक हड्डियों का ढाँचा मात्र है –

"हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गया ।" (2)

धूर्त भेड़िये को प्रतीक मानकर व्यक्ति की कुटिलता स्पष्ट झलकती है –

"वह उत्साहित हो हाथ जोड़ता हुआ खड़ा हो गया । इस समय वह धूर्त भेड़िये

---

1. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 15
2. 'रंगमंच' रंगमंच डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 15

की तरह लग रहा था, जो अपने शिकार को येन-केन प्रकारेण फाँसने में या शिकार स्थल तक ले जाने में कामयाब हो जाता है'' (1)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'सहसा एक बूंद उछली' शीर्षक की कहानी में प्रकृति को ईश्वर का प्रतीक माना है जिसके सामने संसार के सारे प्राणी पराजित हो जाते हैं -

''ऐसे बच्चों का कोई इलाज नहीं है। अगर है भी तो बहुत लंबा और ... न्यूनतम प्रभावकारी । यहीं आकर मनुष्य प्रकृति के सामने पराजित हो जाता है।''(2)

3. प्रवाहात्मकता -

कहानी की शैली का एक गुण उसकी प्रवाहात्मकता भी है। इस गुण से युक्त शैली नीरस नहीं होने पाती एवं उसकी सजीवता बनी रहती है। इस प्रकार की शैली का प्रयोग प्रायः सभी विषयों की कहानियों में हो सकता है। हिन्दी कहानी के विकास के आरम्भिक युग से ही प्रवाहात्मक शैली दृष्टिगत होती है। आधुनिक समकालीन कहानी में इस शैली का समावेश हुआ है। 'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में इसी शीर्षक कहानी में लड़की का परिचय प्रवाहात्मकता रूप में झलकता है -

''वह अकेली रहती है इस शहर में, इस शहर की बड़ी कॉलोनी के एक फ्लैट में । इस खूबसूरत शहर के आधुनिक लोगों की मानसिकता, स्वभाव, आदतों तथा

---

1. 'रंगमंच' , 'रंगमंच', डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 15
2. 'पुनरागमन' सहसा एक बूँद उछली डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 5

कल्चर के बीच वह स्वयं को अलग-थलग पाती है इसलिए सबके बीच रहकर भी वह नितान्त अकेली होती है। न कोई दोस्त । न कोई रिश्तेदार । अजनबी । कौतूहल का विषय बनी । उसके लिए कौतूहल तथा आकर्षण दोनों ही हैं।" (1)

<u>'निर्वासन'</u> कहानी संग्रह में 'जुड़े हुये लोग' शीर्षक की कहानी में प्रवाह दिखाई देता है –

" आपके लिए डेढ़ सौ रूपये कोई मायने नहीं रखते । आपके बच्चे इतने रूपयों की आइसक्रीम खा लेते है। पर मेरी लड़की के लिए एक महीने की फीस का सवाल है।" (2)

4. <u>भावात्मकता –</u>

कहानी की शैली का एक गुण उसकी भावात्मकता भी है। इस गुण के समावेश से कहानी की शैली में विश्वसनीयता आ जाती है। और चरित्रांकन भी सजीव हो जाता है। कहानी की शैली में यह गुण स्थल विशेष पर विभिन्न पात्रों की मनः स्थिति के अनुरूप समाविष्ट होता है । अनुभूतिपरक कहानियों में यह गुण अपेक्षाकृत अधिक मिलता है। भाव प्रधान कहानियों की शैली में भी यह गुण स्वाभाविक रूप से समाविष्ट मिलता है। <u>'वे कौन थे'</u> कहानी संग्रह में 'यह सच है' कहानी में <u>'निमी'</u> अपनी भावनाओं को प्रकट करती हुई कहती है –

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' डॉ० उर्मिला शिरीष पृ० 7
2. 'निर्वासन' जुड़े हुए हाथ' डॉ० उर्मिला शिरीष पृ० 49

"मैं गा सकती हूँ, मैं नाच सकती हूँ, ड्रामे खेल सकती हूँ, मैं कविताएँ लिख सकती हूँ पर मुझे कोई कुछ करने नहीं देता ।" (1)

'मुआवजा' कहानी संग्रह में मुआवजा शीर्षक की कहानी में पाती अपनी आन्तरिक भावों को प्रकट करती हुई सोचती है जिसमें उसकी भावनाएँ निहित है।

"मैं पहले की तरह गांव जाना चाहती हूँ ... यह कैसा भाग्य है मेरा" (2)

'केंचुली' कहानी संग्रह में शून्य शीर्षक की कहानी में निरूपमा अपनी चाची से बहस करती है उस बहस में भावनाएँ निकल कर सामने आती हैं –

"मै निराधार की बातें व धारणाएँ नही मानती हूँ । उच्च जाति का है, खानदानी है, इतना पढ़ा लिखा है, स्मार्ट है और क्या चाहिए मुझे" (3)

5. रोचकता –

कहानी की शैली का एक गुण उसकी रोचकता होता है। यह गुण न केवल शैली को सफल बनाने में सहायक होता है, वरन् उसकी सामान्य दोषों को भी दूर कर देता है। इसका समावेश प्रायः उन कहानियों में अधिक होता है जो हास्य–व्यंग्य प्रधान होती है। अन्य प्रसंगो और विषयों की कहानियों में भी प्रसंगानुसार यह गुण कहानियों मे निहित मिलता है। रोचकता युक्त शैली के उद्धरण प्रस्तुत हैं 'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में 'शून्य' शीर्षक की कहानी में प्रशान्त और निरूपमा के जीवन

---

1. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 18
2. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 77
3. 'केंचुली' शून्य है डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 47

संघर्ष में रोचकता झलकती है उनकी प्रतिदिन की क्रिया कलाप में रोचकता आ जाती है -

"प्रशान्त के पास पैसे थे नहीं । छः - सात माह पूर्व उसने पैसे जोड़कर स्कूटर खरीद लिया था, बाकी पैसे हनीमून में खर्च हो गये थे । निरूपमा के पैसों से कुछ बहुत जरूरी सामान आ गया था ।" (1)

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में कन्या शीर्षक की कहानी में जब रोचकता बढ़ जाती है जब पंडित जी अपनी शिष्या दीप्ति के साथ गलत व्यवहार करते हैं तो दीप्ति पंडित जी से कहती है और कहानी में उस जगह से रोचकता बढ़ जाती है कि अब आगे कहानी कौन सा मोड़ लेगी ।

"पंडित जी ने हाथ लगाया तो मै सिर फोड़ दूँगी, घड़ा पटक दूँगी ... सबसे कह दूँगी ... घिना .... ढोंगी पापी कथा बाँचने आता है । साब । क्या कहने। छोटी - छोटी लड़कियों के साथ ऐसी हरकत करता है ..... धूर्त ... कहीं का बूढा... ।"(2)

6. व्यंग्यात्मकता -

हिन्दी कहानी के प्रायः सभी विकास युगों में शैली तत्व के अन्तर्गत यह विशेषता मिलती है। 'प्रेमचन्द' के अनुसार -

" कहानी की शैली का एक गुण उसकी व्यंग्यात्मकता भी है। यह विशेषता

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 47
2. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 75

प्रायः हास्य–व्यंग्य वाली कहानियों की शैली में अपेक्षाकृत अधिक मिलती है।'' (1)

इसके समावेश से कहानी की शैली अधिक सजीव हो जाती है। 'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में 'माया महाठगिनी' शीर्षक की कहानी में 'महामृत्युंजय जाप' करवाने पर पंडित रूपये पैसे ले जाते हैं उनका वही मात्र कमाई का एक साधन होता है। जो पूजा – पाठ करवाकर कमाते हैं। उस स्थिति पर व्यंग्य करती हुई दीक्षा कहती है –

''बच्चों को खाना मिले न मिले .... महामृत्युंजय जाप जरूर करवाया जाता ताकि दुष्टात्माओं से रक्षा हो सके । मजे की बात यह है कि दुष्टात्मायें तो अपना प्रकोप यथावत् बरसाती, पंडित सोना, चाँदी, रूपयों के साथ थैले भर–भरकर सामान ले जाते ।'' (2)

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'यह सच है' शीर्षक की कहानी में कपूर निमी पर व्यंग्य करता हुआ कहता है –

''निमी तुम्हें गाना चाहिए, आवाज बहुत अच्छी है तुम्हारी ।'' (3)

7. **आंचलिकता –**

कहानी लेखन की शैली का एक गुण आंचलिकता भी है । यह मुख्यतः स्वातंत्र्योत्तर युगीन हिन्दी कहानी में ही विशेष रूप से मिलता है। इस युग के पूर्व

---

1. 'मान सरोवर भाग – 5' मुंशी प्रेमचन्द पृ0 242–243
2. 'धर्म–अधर्म' 'माया महाठगिनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 15
3. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 18

यह शैली अपने भिन्न रूप में उपलब्ध होती है। जो लोककथात्मक शैली के स्वरूप के अनुसार निकटता रखती है। इस शैली से इसमें मुख्य अन्तर यह होता है कि इसमें कथात्मक के स्थान पर वातावरण चित्रण पर अधिक बल दिया जाता है । किसी प्रदेश अथवा स्थान विशेष की क्षेत्रीय परिस्थितियों का स्थानीय रंगों से युक्त चित्रण इसी के अन्तर्गत किया जाता है । यह चित्रण जितना ही अधिक सरल, सहज और विश्वसनीय होता है, कहानी भी उतनी ही अधिक प्रभावात्मक हो जाती है। लोक कथात्मक पृष्ठभूमि में लिखी गयी कहानियों की शैली में आंचलिकता का गुण अपेक्षाकृत अधिकता से समाविष्ट हुआ है। रंगमंच कहानी संग्रह में 'भाग्य विधाता' शीर्षक की कहानी में नेता जी के स्वर्गवास होने पर एक जो विशेष वातावरण राजनीति अंचल का बनता है वह उभरकर सामने आता है –

"कैमरावालों, प्रेस वालों तथा टी0वी0 चैनलों का जमघट बढ़ता जा रहा है। जिस किसी नेता को देखते दौड़कर पहुँच जाते । गमगीन चेहरे, उन पर उड़ती हवाइयाँ। क्या खुद के लिए डरे हुए हैं या नाटक कर रहे हैं। ठहरा हुआ अवसादमय वातावरण ।" (1)

इस प्रकार से, उपर्युक्त कतिपय गुणों के समावेश से कहानी की शैली का स्वरूप कलात्मक हो जाता है। अलंकारिता से युक्त शैली का कहानी के सौन्दर्य में वृद्धि कर देती है । यह गुण हिन्दी कहानी के प्रायः सभी विकास युगों में प्रयुक्त शैलियों में समाविष्ट हुआ है। प्रतीकात्मकता से युक्त शैली हिन्दी कहानी के परिष्कृत

---

1. 'रंगमंच' भाग्यविधाता' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 34

और वैचारिक स्वरूप का द्योतक है। इसका समावेश उत्तर प्रेमचन्द काल की कहानियों में अपेक्षाकृत अधिकता से मिलता है। रोचकता कहानी की शैली का आवश्यक गुण है, जिसके प्रभाव से सम्पूर्ण कहानी प्रभावहीन और नीरस हो जाती है। भावात्मकता युक्त शैली कहानी की पात्र योजना को सजीव बना देती है तथा उसकी यथार्थता को भी विश्वसनीय रूप प्रदान करती है। आंचलिकता से युक्त शैली लोक कथात्मक शैली का ही वैचारिक परिपक्वता और कलात्मक सौष्ठव से युक्त रूप है। अपने नवीन रूप में इसका प्रयोग स्वातंत्र्योत्तर कालीन कहानी में ही मिलता है। इसके पूर्व यह स्थानीय रंगो के चित्रण तक ही सीमित थी । व्यंग्यात्मकता के गुण से युक्त शैली भी प्रथम विकास काल से हिन्दी कहानी के क्षेत्र में प्रयुक्त हुई है। समस्या प्रधान कहानियों में भी इसका प्रयोग विविध कहानी लेखकों द्वारा किया गया है। जिसमें प्रमुख कहानीकार के रूप में डॉ0 उर्मिला शिरीष भी हैं।

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में अनेक शैलियों का प्रचार है । ये शैलियाँ अपने स्वरूपगत वैविध्य के माध्यम से जहाँ एक ओर कहानी की कलात्मक परिपक्वता का उद्घाटन करती है वहाँ दूसरी ओर इनसे समकालीन प्रवृत्तियों का भी परिचय मिलता है। वर्णनात्मक शैली हिन्दी कहानी के परम्परागत स्वरूप की ओर इंगित करती है, जबकि मनोविश्लोषणात्मक शैली उसके वर्तमान स्वरूप की परिचायक है।

डॉ0 रामकुमार ने कहानी लेखक की वर्णनात्मक शैली को ही सुविधाजनक बताया है। उनके विचार से –

"इसमें विचार बहुत विशद रूप से प्रकाशित किये जा सकते है और घटनाओं का वर्णन बड़े स्वतंत्र रूप से हो सकता है । कहानियों में जीवनी और पत्रों का ढंग रोचकता बढ़ाकर पाठकों की सहानुभूति अपनी ओर कर लेता है। ऐसी रचना पाठकों के हृदय को अपने आप आकर पकड़ लेती है और पाठकों का मन बड़ी तेजी के साथ पात्रों और घटनाओं की ओर आकर्षित हो जाता है।" (1)

यहाँ हिन्दी कहानी के विविध विकास युगों में प्रयुक्त प्रमुख शैलियों की सोदाहरण व्याख्या संक्षेप में की जा रही है। डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में अधिकांश सभी शैलियों का समावेश हुआ है।

1. **वर्णनात्मक शैली :-**

कहानी लिखने की यह शैली ही सर्वाधिक प्रचलित हैं । इस शैली में जो कहानियाँ लिखी जाती है, वे कहानी कला के परिपक्व स्वरूप का समग्रता और सम्यक्ता से परिचय देती है। इस शैली में कहानी के सभी मूल उपकरणों के विकास की सम्भावनाएं विधमान रहती है। इसमें कथावस्तु में संग्रथित घटनाओं के प्रभावाभिव्यंजक रूप में वर्णित होने के लिए भी यह उपयुक्त है, कथोपकथन अथवा

---

1. 'साहित्य समालोचन' डॉ0 रामकुमार वर्मा पृ0 54

संवादतत्व का भी आनुपातिक समावेश इसमें हो सकता है । देश – काल अथवा वातावरण के चित्रण के लिए भी इस शैली में उचित स्थान रहता है । उद्देश्य तत्व की भी पूर्ति के विचार से इसी शैली में लिखी गयी कहानी उत्कृष्ट सिद्ध होती है।

'रंगमच' कहानी संग्रह में 'समुन्दर' शीर्षक की कहानी में कथा नायक अपने मित्र की मृत्यु की दशा का वर्णन करता है –

"रात को ड्यूटी से लौट रहा था । दो दिन कोमा में पड़ा रहा । दिमाग के क्षत – विक्षत हो जाने पर तीसरे दिन वह बिना देखे, बिना कुछ कहे महाप्रस्थान पर चला गया था ।" (1)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'सहसा' एक बूँद उछली' शीर्षक की कहानी में बेबी की मानसिक व शारीरिक स्थिति का वर्णन डॉ0 शिरीष इस प्रकार करती है–

"बेबी सुंदर किशोरी के रूप में बढ़ने लगी । उसकी देहयष्टि ने एक खूबसूरत युवती का रूप धारण करना शुरू कर दिया था ।" पलाश सा दहकता यौवन उसकी आँखों मे लहराता वासंती रंग ।" (2)

2. विश्लेषणात्मक शैली :–

कहानी लेखन की एक शैली विश्लेषणात्मक भी होती है। यह शैली विवेचना अथवा तर्क प्रधान होती है। इस शैली में कहानी में प्रस्तुत घटना, पात्र, सवांद अथवा वातावरण का सम्यक् स्वरूप वैचारिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया जाता है । आधुनिक युग में इसी शैली का एक रूप मनोवैज्ञानिकता का आधार लेकर भी विकसित हुआ है।'इलाचन्द्र जोशी'आदि कहानीकारों की रचनाओं में इसका यही रूप मिलता है।

---

1. 'रंगमंच' समुन्दर डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 22
2. 'पुनरागमन' 'सेहाना एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 11

बौद्धिक आधार पर इसका नियोजन अज्ञेय की कहानियों में तथा दार्शनिक आधार पर जैनेन्द्र कुमार की रचनाओं में हुआ तथा सामान्य रूप से डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों में इस शैली के उद्धरण इस प्रकार हैं –

धर्म–अधर्म कहानी संग्रह में 'अथ भागवत कथा' शीर्षक की कहानी में एक कथावाचिका देवी की बढ़ाई करते हुए पंडित जी विश्लेषण करते हुए कहते हैं –

"चमत्कार हो गया ! हर आदमी उनकी छवि से आलोकित था । अभिभूत था । उनके निकट खिंचा चला आ रहा था पूजा करते समय वही होती । हवन करते समय वही होती । आरती करते समय वही होती । इतना बड़ा पद । " (1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में 'शहर में अकेली लड़की' शीर्षक की कहानी में लड़की अपनी दीदी के जीवन संघर्ष का विश्लेषण करती हुई कहती है –

"पुरूष से अलग होने का अनुभव कितना कड़वा, यातनादायी और हताशा देने वाला होता है। एक खालीपन का दौर चल रहा था । सब कुछ अपनी गति से चल रहा था लेकिन दीदी का जीवन तिराहे पर खड़ा था । उन्हें अकेलेपन से डर लगता है ।" (2)

---

1. 'धर्म–अधर्म' अथ भागवत कथा डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 32
2. 'शहर में अकेली लड़की' शहर में अकेली लड़की डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 14

3. **आत्मकथात्मक शैली –**

आत्मकथात्मक शैली में जो कहानियाँ लिखी जाती है वे अन्य शैलियों में लिखी गयी कहानियों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक मर्मस्पर्शी होती है। इसमें कहानीकार आत्मचरित्र अथवा आत्मकथा की भाँति प्रथम पुरूष के रूप में कथा का वर्णन करता है। कहानी का कोई प्रमुख अथवा सहायक पात्र ही मानो लेखक का स्थान ग्रहण कर लेता है और वह पाठ्कों को प्रत्यक्ष रूप में सम्बोधित करता हुआ उनसे सीधा सम्पर्क स्थापित करता है । परन्तु इस प्रकार की कहानी अपनी इसी शैलीगत सीमा के कारण सम्यक् स्वरूप नहीं ग्रहण कर पाती । केवल एक ही पात्र विशेष का पर्यवेक्षक क्षेत्र सीमित होता है। फलतः कहानी के अनेक पक्ष अविकसित और कभी–कभी अवर्णित रह जाते है। इसके अतिरिक्त प्रत्यक्ष वर्णन प्रणाली के कारण कभी–कभी यह अतिशय रूप से नाट्कीय और कृत्रिम भी प्रतीत होने लगती है । आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी कहानी में घट्नाक्रम चित्रण की सीमाएँ भी स्पष्ट है । इस कोटि की कहानियों में सभी प्रकार की घट्नाओं का चित्रण केवल एक पात्र विशेष के माध्यम से होता है । वह पात्र किसी भी दशा में स्वयं कहानीकार की भाँति सर्वदशी नहीं हो सकता है । इसलिए वह केवल अपने द्वारा देखी हुई और स्वयं ही अनुभव की गई घट्नाओं और बातों का वर्णन कर सकता है।

इसका परिणाम यह होता है कि इस शैली में लिखी गई कहानियों में उस

प्रधान अथवा सहायक पात्र का चित्रांकन तो प्रभावशाली बन जाता है, जो स्वंय अपनी ओर से कथा का वर्णन करता है परन्तु शेष पात्रों का चरित्र – चित्रण कलात्मक नहीं बन पाता । साथ ही उन पात्र–पात्रियों से सम्बन्धित घटनाएँ भी कहानी में समाविष्ट नहीं हो पाती । इसलिए इस शैली में लिखी गयी कहानी सम्यकता और समग्रता का बोध कराने में असफल रहती है। हिन्दी कहानी के प्रथम विकास काल से ही इस शैली का प्रयोग होता रहा है और आधुनिक समकालीन साहित्य में डॉ शिरीष की कहानियों में शैली को देखा जा सकता है। 'निर्वासन' कहानी संग्रह में निर्वासन शीर्षक की कहानी में एक युवक अपनी बचपन की कहानी अपने शब्दों में कहता है –

"मैं पेशाब कर दिया करता था तो वह चुपचाप बिस्तर तथा कपड़े बदल दिया करते थे । जब मै पापा की डॉट खाकर बाहर अपना मुँह घुट्नों में छिपाकर बैठ जाता था तब वह चुपचाप आकर हाथ पकड़कर अपनी गोदी में छिपा लेते थे ।" (1)

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में ' यह सच है' शीर्षक की कहानी में मैडम अपनी आत्मकथा शशि को खत के माध्यम से लिखती है –

"मैं जिन्दा हूँ या मर गयी लेकिन मै वहाँ से पराजित लड़की के रूप में आयी वहाँ से आकर महीनों बीमार पड़ी रही, अस्पताल में पड़े–पड़े मुझे जिन्दगी का अहसास इन बातों से हुआ कि कैसे – कैसे लोग जिजीविषा के लिए जूझते और

---

1. 'निर्वासन' निर्वासन डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 73

जीते हैं, संघर्ष करते हैं, यातना भोगते हैं और सब कुछ सहन कर अपने को खड़ा कर लेते है।" (1)

4. संवादात्मक शैली –

कहानी लेखन की इस शैली में नाटकीयता की सम्भावनाएं अपेक्षाकृत अधिक होती है । जैसा कि संवाद अथवा कथोपकथन मूलतः नाटक का तत्व है, परन्तु कथात्मक विधाओं के क्षेत्र में भी इसका आधुनिक स्वरूप महत्वपूर्ण है। हिन्दी में कथोपकथन का आंशिक रूप में समावेश तो प्रायः सभी कहानियों में मिलता है, परन्तु कुछ कहानियाँ ऐसी भी मिलती है, जो आरम्भ से अन्त तक केवल कथोपकथन में लिखी गयी है। जिनमें कथावस्तु का आरम्भ, मध्य और अन्त दो चरित्रों के वार्तालाप से ही होता है। इसके माध्यम से कथा में नियोजित पात्रों का भी चरित्राकंन हुआ है। परन्तु कहानी लिखने की कथोपकथनात्मक अथवा संवादात्मक शैली की सीमाएँ भी स्पष्ट हैं इसमें कहानी के अन्य तत्वों की सफलता की सम्भावनाएँ कम हो जाती है। केवल कथोपकथन अथवा संवाद तत्व का सुविकसित और परिपक्व रूप ही इस शैली में लिखी गई कहानियों में मिलता है, अन्यथा शेष तत्वों का अनुपातिक और संतुलित रूप इसमें नहीं मिलता है। इसके अतिरिक्त केवल कथोपकथन प्रधान होने के कारण इस कोटि की कहानी में नाटकीयता का अतिशय रूप में समावेश हो जाता है । पात्रों के चरित्राकंन की दृष्टि से ऐसी कहानियाँ अवश्य प्रभावपूर्ण हो जाती

---

1. 'वे कौन थे', 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 25

है क्योंकि सैद्धान्तिक रूप से कथोपकथन का उद्देश्य कहानी में घटनात्मक विकास तथा लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट करने के साथ-साथ पात्रों का चरित्र – चित्रण करना भी है परन्तु ऐसा तभी होता है जब कहानी के संवाद, रोचक स्वाभाविक और प्रभावपूर्ण हों । इस शैली का सफल निर्वाह 'डॉ0 उर्मिला शिरीष' के कहानी संग्रहों में मिलता है। इसके उद्धरण दृष्टव्य है –

'मुआवजा' कहानी संग्रह में मुआवजा शीर्षक कहानी में डॉ0 अपनी पत्नी से संवादों के माध्यम से अपने विचार व उद्देश्य (प्यार) प्रकट करते हैं –

"छोड़िये अब जायेगे ।

रूको न

झूठ बोलकर आये हैं। सब नाराज होंगें ।

अच्छा तो जाओ ।

नाराज हो गये ।

नहीं ।

सच ?

सच ।" (1)

'केंचुली' कहानी संग्रह में 'शून्य' कहानी में प्रशांत और निरूपमा आपस में संवाद करते है –

---

1. 'मुआवजा' मुआवजा डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 119

" आज शाम को बाजार चलोगे ?

क्यों ।

जाना है बस ।

तुम्हीं चली जाना ।

तुम्हारे साथ ही जाना है मुझे ।

क्यों ! बहुत जरूरी काम है क्या ?

हाँ ।

ऐसा जरूरी काम क्या है भला ?" (2)

5. नाट्कीय शैली :-

कहानी की नाट्कीय शैली स्वरूपगत साम्य की दृष्टि से भावात्मक शैली के पर्याप्त निकट है अन्य शैलियों की भाँति यह भी प्रायः दो रूपों में हिन्दी कहानी के क्षेत्र में उपलब्ध होती है। एक तो पूर्णात्मक रूप में जहाँ कहानी में इसका प्रयोग आरम्भ से लेकर अन्त तक किया जाता है, और दूसरे आंशिक रूप में, जहाँ यह एक पूरक अथवा सहायक शैली के रूप में प्रयुक्त होती है । ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस शैली का प्रयोग हिन्दी कहानी के प्रथम विकास काल से लेकर वर्तमान युग तक मिलता है । इसका एक रूप अभिनयात्मक आधार पर विकसित हुआ है, जिसमें कोई पात्र किसी अन्य प्रस्तुत अथवा अप्रस्तुत पात्र को सम्बोधित करके अपने उद्‌गार व्यक्त करता है।

---

1. 'केंचुली' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 68

इस शैली का एक रूप प्रथम पुरुष के रूप में स्वगत कथन के रूप में भी मिलता है जिसका आधार कहानी के किसी पात्र की स्मृतियों और अतीत जीवन की घटनाएँ है। इसका विकास मनोवैज्ञानिक आधार भूमि पर हुआ है। 'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में प्रतिरोध शीर्षक की कहानी में मैडम कुछ नाटकीय ढंग से चिठ्ठी खोलती हैं –

"उसने चिट्ठी खोली । पढ़कर चेहरा पीला पड़ गया । शरीर काँपने लगा । वही भाषा, वही शब्द, जो पहले चिठ्ठी में थे ।" (1)

'रंगमंच' कहानी संग्रह में समुन्दर शीर्षक की कहानी में कहानी नायक कुछ नाटकीय ढंग से प्रस्तुत होता हुआ दिखाई पड़ता है। –

"मै अवाक् सा उनका चेहरा देखता रह गया .... जिस पर बिजली की कौंध आकर ठहर गयी थी । मुझे लगा, समुन्दर की उत्ताल लहरें को उन्होंने अपने भीतर समेट लिया है। मैं उठा और फाइल लेकर बाहर निकल गया ।" (2)

6. डायरी शैली –

डायरी शैली हिन्दी कहानी के अपेक्षाकृत परिपक्व और कलात्मक रूप की द्योतक है। आंरम्भिक युगीन कहानी में इस शैली का प्रयोग नहीं हुआ है। प्रेमचन्द के परवर्ती काल में यह शैली कहानीकारों द्वारा प्रयुक्त की गयी है। परन्तु इस शैली

---

1. 'सहमा हुआ कल' प्रतिरोध डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 38
2. 'रंगमंच' समुन्दर डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 23

को अन्य शैलियों के समान लोकप्रियता नहीं प्राप्त हुई । इस शैली में लिखी गई कहानियों में सम्पूर्ण कथा का प्रस्तुतीकरण प्रथम पुरूष के रूप में किया जाता है। कहानी के एक पात्र अथवा अधिक पात्रों की डायरी के रूप में कथावस्तु का विकास होता है। यह शैली आत्मकथात्मक तथा पत्र शैलियों से स्वरूप गत निकट्ता रखती है। इसीलिए इस शैली में लिखी गयी कहानियों में प्रभावात्मकता अधिक मिलती और कहानी के पात्र पाठ्क से अनुभूत्यात्मक बैकट्य के कारण उसकी सहुनभूति भी प्राप्त करने में सफल होते है। कथाकार डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों मे डायरी शैली यत्र-तत्र मिलती है। 'मुआवजा' कहानी संग्रह में 'सवाल' शीर्षक की कहानी में डायरी शैली मिलती हे। जिसमें 'रूना' के ससुर को डायरी हाथ लग जाती है जिस पर वे कहते हैं -

"छोटी सी डायरी । क्या रूना डायरी लिखती है? वे बैचेन हो उठै । डायरी लिखती है रूना तब तो उसने घर की परिस्थितियों का बखिया उधेड़कर रख दिया होगा । कविताएं और गीत भी । अंग्रेजी में । हिन्दी में । कविताएं वो भी दोनों भाषाओं में लिखती है रूना ।" (1)

'रूना' कहती है -

"आज उन्होंने मेरी डायरी पढ़ ली । देर तक चुप बैठे रहे फिर मेरा चेहरा देखते रहे ।" (2)

---

1. मुआवजा , 'सवाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 35
2. मुआवजा , 'सवाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 36

7. पत्र शैली –

पत्र शैली में लिखी गयी कहानियों में एक या अनेक पात्रों के एक या अधिक पत्रों के माध्यम से कहानी की सारी कथा प्रस्तुत की जाती है। इसमें पत्रों के माध्यम से ही कहानी के पात्रों और घटनाओं का क्रमबद्ध रूप में विकास दिखाया जाता है। सैद्धान्तिक रूप से कहानी लिखने की यह प्रणाली आत्मकथात्मक शैली से पर्याप्त साम्य रखती है। इसमें भी कहानी का कोई प्रधान या अप्रधान पात्र एक पत्र के रूप में प्रत्यक्ष संबोधन के द्वारा ही कहानी की कथावस्तु का प्रस्तुतीकरण करता है। इसमें भी अन्य पात्रों के चरित्रिक विकास के लिए अधिक संभावनायें नहीं रहती । इसके अतिरिक्त कथावस्तु में संग्रथित घटनाऐं भी अपनी संपूर्ण प्रभावात्मकता के साथ इस शैली में लिखी गयी कहानियों में नहीं आ पाती। इस शैली में लिखी गयी कहानी भी अपने सम्यक् और समग्र स्वरूप का बोध नहीं करा पाती।

'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में पुनरागमन कहानी में पत्रों के माध्यम से वार्तालाप होता है सीताराम हॉस्टल से पत्र भेजता है और उसमें लिखता है – "खुमान अपने बगीचे की पवित्र भूमि पर शराब की भट्टी लगाकर बैठा है। हमारे पुरखों का चबूतरा बना है वहाँ। अवैध धन्धा चल रहा है। अपने कुऐं की सफाई करवाई जाए तो उसमें पानी निकल सकता है। खेती हो जायेगी।" (1)

---

1. 'धर्म – अधर्म', पुनरागमन डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 157

'केंचुली' कहानी संग्रह में हिसाब शीर्षक की कहानी में मंजू अपने पति संतोष को पत्र लिखती है – "संतोष, तुम मेरे पति हो, यह सोचकर आश्चर्य होता है। तुम अपनी ही पत्नी के साथ ऐसी निर्ममता कर रहे हो। मैं जो, तुम्हारे साथ जीवन भर रहने वाली थी। हर कदम पर साथ देती थी, उसी पर इतना अविश्वास"(1)

8. काव्यात्मक शैली :-

कहानी की काव्यात्मक शैली के विषय में स्वरूपगत साम्य की दृष्टि से नाटकीय शैली से पर्याप्त निकटता रखती है। यह शैली भी हिन्दी कहानी के प्रथम विकास काल से ही कहानीकारों द्वारा प्रयुक्त की जाती रही है। भावना प्रधान कहानियों में इसका व्यवहार अपेक्षाकृत अधिक होता है। 'मुआवजा' कहानी संग्रह में 'सवाल' शीर्षक की कहानी में डॉ0 शिरीष एक काव्यात्मक वातावरण चित्रित करती है – "सब कुछ सह सकूँगी, लिख सकूँगी .... पढ़ सकूँगी और घूमूँगी। तमाम तरह की जातियों और लोगों के जीवन पर कहानियाँ लिखूँगी, कविताएँ लिखूँगी।"(2)

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में सहमा हुआ कल शीर्षक की कहानी में काव्यमय वातावरण देखने को मिलता है – "आज हमने पांच कविताऐं लिखी है। – 'युद्ध', 'बच्चे', 'फूल', 'सपना' और अन्धेरा। कल के दैनिक भास्कर में हमारी चार कवितायें छपी थी। फोटो और परिचय के साथ।" (3)

---

1. 'केंचुली' , 'हिसाब' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 40
2. 'मुआवजा' , 'सवाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 36
3. 'सहमा हुआ कल' श 'सहमा हुआ कल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 12

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'यह सच है' कहानी में कला को काव्यात्मक रूप प्रदान किया गया है जिसका स्वर प्राणी को सफल इंसान बना सकता है – "आर्ट एक महानता है, आर्ट एक पूजा है और तुम आर्टिस्ट बन सकती हो। ऐसे ही तो इंसान चेतता है और काव्य सृजन करता है।"(1)

9. लोक कथात्मक शैली :-

लोक कथात्मक शैली का प्रयोग हिन्दी कहानी में प्राचीन कथा साहित्य के प्रभाव स्वरूप मिलता है। इस शैली में प्रायः अनेक कथासूत्रों को अन्तः सम्बद्ध करके प्रस्तुत किया जाता है । इसका सफल प्रयोग कहानी की अपेक्षा उपन्यास में अधिकता से मिलता है। यह शैली कहानी के परम्परागत स्वरूप की द्योतक होने के कारण प्रायः ग्राम कथाओं का आधार लेकर विकसित हुई है। इस कोटि की रचनाओं में या तो किसी नैतिक उपदेश की प्रधानता मिलती है और या कथाक्षेत्र में प्रचलित किसी काल्पनिक मान्यता का निरूपम होता है। आधुनिक हिन्दी समकालीन कहानी में बौद्धिक आधार भूमि पर इसी शैली का एक रूप आंचलिक शैली के रूप में विकसित हुआ है। परम्परागत लोक कथात्मक शैली बालापयोगी कहानियों में भी प्रयुक्त की जाती हैं । डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में – 'धर्म – अधर्म' कहानी संग्रह 'अथ भागवत कथा' शीर्षक की कहानी में गाँव की लोक कथाएँ व प्रथाएँ झलकती हैं –

---

1. 'वे कौन थे' , 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 19

"कोऊ बता रहा था कि घर में छाईं है। पुरखे नाराज है ... सो उनके लिए भागवत करवा रहे हैं।"(1)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'अथ भागवत कथा' शीर्षक की कहानी में श्याम लोक जीवन सम्बन्ध के रिश्ते से गांव वालों से कहते हैं –

"भागवत कथा में नही दिखे तुम लोग । क्या बात है ? हमने तो पूरे गांव क्या, क्षेत्र के लिए कथा करवाई हैं निमंत्रण तो मिला होगा ... गलती किसी से भी हो सकती है । धार्मिक अनुष्ठान में यह सब क्यों । यहाँ हमारे पास अपने लोग हैं" (2)

10. स्मृतिपरक शैली –

कहानी की स्मृतिपरक शैली का प्रयोग मुख्यतः स्वातंत्र्योत्तर युगीन कहानीकारों ने किया है । यह शैली अधिकांश कहानियों में अंश रूप में समाविष्ट हुई है। इसमें कथावस्तु का चुनाव वर्तमान से आरम्भ किया जाता है, और फिर किसी पात्र की स्मृति को अतीत में लौटाकर विगत जीवन की कथा प्रस्तुत की जाती है । इस शैली में भावात्मकता अधिक होती है। इसमें पात्रों की वे प्रतिक्रियाएँ अभिव्यक्त की जाती हैं, जिनका सम्बन्ध पहले घट चुकी घटनाओं से होता है । फिर उसके वर्तमान भाग तक विकास को चित्रित करने के पश्चात् अन्त में कथा के भावी भाग का प्रस्तुतिकरण

---

1. 'धर्म–अधर्म' अथ भागवत कथा डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 28
2. 'पुनरागमन' अथ भागवत कथा डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 177

होता है । अनुभूति प्रधान होने के कारण यह शैली भी चमत्कारिता की सृष्टि करके पाठकों के हृदय पर प्रभाव डालने में सफल होती है । अपेक्षाकृत अभिनव शिल्प रूप की द्योतक होने के कारण इसके समावेश से कहानी की कलात्मकता में भी वृद्धि हो जाती है।

'धर्म – अधर्म' कहानी संग्रह में 'अथ भागवत कथा' कहानी में लेखिका अपनी पुरानी स्मृतियों में विचरण करने लगती है –

"बचपन में हम लोग कई बार पैदल जाते थे । इतना घना जंगल था कि डर लगता कहीं से कोई जंगली जानवर या डाकू न निकल आए । तेंदुआ तो कई बार बकरियों को उठाकर ले जाता था" (1)

'रंगमंच' कहानी संग्रह में 'उस रात का सपना' शीर्षक की कहानी में शहर की स्मृति करते हुए एक पात्र कहता है –

"गाँधी की मूर्ति ..... जिनका सिर्फ चेहरा ही रह गया है, धड़ तो गायब ही कर दिया है। सच भी है। आजकल हम सब धड़ विहीन ही तो हो गये हैं। और कितनी मूर्तिया याद करूँ।" (2)

11. स्वप्न शैली :–

कहानी की शैली स्वप्नपरक भी होती है। इसमें कहानी में नियोजित किसी

---

1. 'धर्म–अधर्म' अथ भागवत कथा, डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 29
2. 'रंगमंच' उस रात का सपना' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 51

पात्र की स्वप्नावस्था में घटनाओं का विकास दिखाया जा सकता है । यह शैली भी कहानी लेखन की अन्य प्रमुख शैलियों की भाँति मूलतः दो रूपों में मिलती है। एक तो पूर्णात्मक, जहाँ इसका प्रयोग कहानी के आरम्भ से लेकर अन्त तक मिलता है। और दूसरे आंशिक रूप में जहाँ इसका प्रयोग कहानी के प्रसंग विशेष में किया जाता है।

'रंगमंच' कहानी संग्रह में 'भाग्य विधाता' कहानी में कहानी का प्रमुख पात्र आँख बन्द करके स्वप्न देखता है जिसे वह व्यक्त करता है –

"बन्द आँखो से असीम आकाश को ताकता हुआ लेटा हूँ मैं पृथ्वी पर। आज महसूस हो रहा है कि पृथ्वी की गोद कितनी विराट है। कितनी कोमल । ... राष्ट्रीय ध्वज मे लिपटा मेरा शरीर ।" (1)

'बाँधो न नाव इस ठाँव, बन्धु !' कहानी में आत्म स्वप्न होता है 'पुष्पा' कहती है "इस देह में स्पन्दन नहीं है। यह प्राणविहीन देह है। यही तो है मृत्यु से साक्षात्कार जो दिखाई नहीं दी। दबे पांव आई थी।" (2)

'केंचुली' कहानी संग्रह में सिगरेट कहानी में 'प्रिया' स्वप्न में अपने पति से कहती है–

"देखो हमने विवेकानन्द का साहित्य भगवद्गीता, रामायण और अच्छा साहित्य खरीदकर इसीलिए नहीं पढ़ा था कि ये सभी हम नौ महीनों के बीच पढ़ेगें।"(3)

1. 'रंगमंच' , 'भाग्यविधाता', डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 24
2. 'रंगमंच' , 'भाग्यविधाता', डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 83
3. 'केंचुली' 'सिगरेट' ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 78

12. मनोविश्लेषणात्मक शैली :-

प्रेमचन्द्र युग से लेकर वर्तमान काल तक हिन्दी के क्षेत्र में जिन शैलियों का व्यवहार हुआ है।, उनमें एक प्रमुख शैली मनोविश्लेषणात्मक शैली भी है। आधुनिक साहित्य पर मनोविज्ञान का प्रभाव बढ़ाने के साथ ही साथ इस शैली का प्रयोग भी अधिकता से हुआ है।

मनोविश्लेषणात्मक शैली का एक अन्य रूप भी मिलता है, जिसमें लेखक अपनी कहानी में आयोजित पात्रों की विभिन्न मनःस्थितियों के परिचय के साथ-साथ उनकी स्वभावगत प्रतिक्रियात्मकता का भी विवेचन करता है, जो अन्ततः उसके मनोजगत के परिचालन सूत्रों का द्योतन करती है। 'धर्म-अधर्म' कहानी संग्रह में पुनरागमन शीर्ष की कहानी में वर्तमान परिवेश के आधार पर अपनी मन की स्थिति स्पष्ट करती हुई कहती है – "जवान लड़की को कहाँ छोड़ दें ? वहाँ कौन से साधु-सन्यासी होंगे ।" (1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में लौटकर जाना कहाँ है शीर्षक की कहानी में 'लता' अपनी मानसिक स्थिति को अपने शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत करती हुई कहती है –"मैं मन्दिर में शादी कर लूँगी। अपनी जाति, गोत्र और तथाकथित संस्कारवान् सभ्य होने का मुखौटा ओढ़े परिवारों में लड़कियों की क्या दुर्गति है ।

---

1. 'धर्म-अधर्म' पुनरागमन डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 164

मार खाती है। खाने को नहीं मिलता है। नौकरानी की तरह चौबीसों घण्टे काम में जुटी रहती हैं, प्रताड़ित होती रहती है। " (1)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में निर्वासन शीर्षक कहानी में एक पात्र जिसकी स्थिति बड़ी दयनीय थी बाबा उसे सहारा देते हैं तो वह अपने मनो विचार से कहता है –

" अब तो सारा संसार हमारा है । वे जो हमें नही जानते हैं वे ही हमारा पेट भरते हैं। हमे जिंदा रखे हुए हैं। वे हमारे रक्षक हैं वे पालक हैं परमात्मातुल्य हैं। " (2)

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' लौटकर जाना कहाँ है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 81
2. 'निर्वासन' निर्वासन डॉ उर्मिला शिरीष पृ0 81

(ग) कथा साहित्य का कथोपकथन शिल्प

कथोपकथन अथवा संवाद योजना कहानी का एक उपकरण है। सैद्धान्तिक दृष्टि से तो कहानी के प्रायः सभी तत्व परस्पर सम्बद्ध होते हैं, परन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से कथोपकथन का सम्बद्ध पात्रों से अधिक घनिष्ठ होता है। कहानी में नियोजित पात्रों के पारस्पारिक वार्तालाप के लिए ही इस तत्व का समावेश कहानी में किया जाता है। पात्रों तथा कहानी के अन्य तत्वों की भाँति ही कथोपकथन के क्षेत्र में भी पर्याप्त विविधता मिलती है। कहानी में कथोपकथन के माध्यम से घटनाओं में गतिशीलता आती है। 'डॉ0 श्यामसुन्दर दास' ने कहानी में संवाद तत्व का महत्व स्वीकारते हुए लिखा है –

"कथोपकथन का आख्यायिका के लिए बहुत बड़ा महत्व है। ..... कथोपकथन के द्वारा – यदि वह अत्यन्त मार्मिक तथा वास्तविक हो तो एक अनोखा चमत्कार उत्पन्न किया जा सकता है और पाठक स्वतः उससे अपना निष्कर्ष निकाल लेता है। .... आधुनिक कथोपकथन, जिसका प्रयोग नाटक तथा आख्यायिका में किया जाता है, अत्यन्त मार्मिक मनोवैज्ञानिक वस्तु है। इसका उपयोग उत्तम कोटि के कलाकार करते और उसमें बौद्धिक उत्कर्ष की पराकाष्ठा दिखा देते हैं। उनके हाथों में पड़कर कथोपकथन श्रेष्ठ ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति की प्रणाली बन जाता है।" (1)

---

1. 'साहित्य लोचन' डॉ0 श्याम सुन्दर दास पृ0 190

'डॉ0 गुलाब राय' ने कथोपकथन के स्वरूप का स्पष्टीकरण करते हुए बताया है कि –

" कथोपकथन या वार्तालाप द्वारा ही हम पात्रों के हृदयगत भावों को जान सकते है। यदि वार्तालाप पात्रों के चरित्र के अनुकूल न हो, तो हम उन के चरित्र का मूल्यांकन करने में भूल कर जायेगें । कहानीकार 'घर के मौतबिर नाई' की भाँति विश्वासपात्र अवश्य है किन्तु मार्मिक स्थलों पर पात्रों के वार्तालाप का ज्यों का त्यों उपस्थित कर देने में हमको दूसरे आदमी द्वारा बताई हुई बात की अपेक्षा परिस्थिति का ठीक अंदाज लग जाता है। कहानी में कथोपकथन का तिहरा काम रहता है। उसके द्वारा पात्रों के चरित्र का परिचय ही नही मिलता, वरन उसके सहारे कथानक भी अग्रसर होता है। और एक जी उबाने वाले प्रबन्ध कथन के भीतर आवश्यक सजीवता उत्पन्न हो जाती है।" (1)

कथोपकथन की व्याख्या करते हुए 'डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा' ने विभिन्न साहित्य रूपों में उसकी अनिवार्यता बताई है –

"यदि देश काल और संस्कृति विशेष का कोई प्राणी किसी से भी किसी प्रकार की बातचीत करता है, तो उसकी बातचीत की प्रांजलता और विदग्धता, शब्द और वाक्य के प्रयोग, भाषा और पदावली से हमें प्रत्यक्ष मालूम होता है कि व्यक्ति किस

---

1. 'काव्य के रूप' डॉ0 गुलाब राय पृ0 223

कोटि, वर्ग, देश और काल का है। संवाद से अन्य सभी तत्वों का सीधा सम्बन्ध होता है। संवाद जहाँ एक ओर कथा के प्रसार का मुख्य साधन होता है, वही चरित्र्योद्घाटन का भी, साथ ही देश-काल का भी पर्याप्त बोध करा देता है।" (1)

'आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी' के मतानुसार –

"कथोपकथन कहानी का छोटा, स्वाभाविक और प्रभविष्णु अंश होता है। उसका प्रत्येक शब्द सार्थक और सोद्देश्य होना चाहिए । बड़े संवादों के लिए कहानी में स्थान नहीं होता । कहानी के कथोपकथन ऐसे न होने चाहिए जो स्वतंत्र रूप से पाठक का ध्यान आकृष्ट कर उसे विलमाते चले या कथा के प्रवाह में किसी प्रकार का विक्षेप डाले ।" (2)

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि कथोपकथन कहानी का एक उपयोगी और अनिवार्य तत्व है, जो उसके अन्य तत्वों के विकास में भी योग देता है।

कथोपकथन के भेद :-

कहानी के विविध भेदात्मक स्वरूप के कारण कथोपकथन के भी अनेक भेद मिलते हैं। एक विशिष्ट विषय की कहानी में कथावस्तु के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में अलग-अलग प्रकार के कथोपकथन नियोजित किये जाते हैं। भावात्मक कथोपकथन की आयोजना वहाँ की जाती है, जहाँ कहानी में पात्रों के चरित्रांकन को प्रभावपूर्ण बनाने की आवश्यकता होती है और विविध परिस्थितियों में पात्रों की

---

1. 'कहानी का रचना विधान' डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा पृ0 121
2. 'हिन्दी कहानियाँ' आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी पृ0 14

अनुभूत्यात्मक गतिशीलता स्पष्ट करनी होती है। सांकेतिक कथोपकथन की आवश्यकता तब होती है जब कहानी के पात्र किसी परिस्थिति में अपने अभीष्ट मन्तव्य को विस्तार से व्यक्त नहीं कर सकते हैं।

नाटकीय कथोपकथन प्रायः आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई कहानियों में विशेष रूप से मिलते हैं। व्यंग्यात्मक कथोपकथनों की आयोजना हास्य प्रधान कहानी में अधिकता से मिलती है। मनोवैज्ञानिक कथोपकथन पाठकों के सूक्ष्म चित्रांकन में अपेक्षित होते हैं। उद्देश्यपूर्ण कथोपकथन कहानी को नीरस और प्रभावहीन होने से बचाते हैं ।

1. भावात्मक कथोपकथन
2. सांकेतिक कथोपकथन
3. नाटकीय कथोपकथन
4. मनोवैज्ञानिक कथोपकथन
5. उद्देश्यपूर्ण कथोपकथन

1. **भावात्मक कथोपकथन –**

कहानी में इस प्रकार के कथोपकथन में भावात्मकता के गुण का समावेश

पात्रों के चरित्रांकन को प्रभावपूर्ण बनाने की दृष्टि से आवश्यक होता है। विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में पात्रों का अनुभूत्यात्मक प्रवाह विशेष रूप से गतिशील हो उठता है। इसलिए ऐसे अवसरों पर उनके वार्तालाप में स्वाभाविक रूप से भावात्मकता निहित होती है। 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'सहसा एक बूँद उछली' शीर्षक कहानी में डॉ0 काचरू अपनी माँ से अपनी भावनाओं को प्रकट करती है –

"मम्मा, कहो वीरेन से कि वह इससे शादी करे वरना मैं उसे जिंदगी भर के लिए जेल में डलवा दूँगी"

"बेबी से शादी करके क्या दो जीवन बर्बाद नहीं होंगे, मिनी ?

मम्मा, आप वीरन के जीवन के बारे में सोच रही हैं ? आपको उससे घृणा नहीं हुई । उससे कहो वह तुरन्त शादी करे .... डॉ0 काचरू समझती है मिनी के भीतर लावा वह रहा है ...... लेकिन अपने भीतर पिघलती हुई बर्फ को वह किस दिखाये ...... ।" (1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में 'चौथी पगडण्डी' नामक कहानी में अंजू और ऋचा संवाद के माध्यम से आज की युवा पीढ़ी जो गर्त मे जा रही है। उसको स्पष्ट करती है –

"वह जानती नहीं होगी ।

---

1. 'पुनरागमन' सहसा एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 13

क्या इन दोनों की पट सकेगी ?

नहीं पटेगी तो तलाक ले लेंगे ।

इतनी आसानी से टूट सकते हैं सम्बन्ध ?

क्यों नहीं ? जब तक पटे, पटाओ । अन्यथा तलाक लेकर दूसरी शादी कर लो, लड़कों पर क्या फर्क पड़ता है । " (2)

2. सांकेतिक कथोपकथन –

कहानी में सांकेतिक कथोपकथन का भी आयोजन विषयानुसार किया जाता है । कहीं – कहीं पर परिस्थिति के अनुरुप कोई पात्र अपनी बात पूरी तौर से स्पष्ट न कहकर केवल उसका संकेत भर कर देता है। यह गुण भी कथोपकथन को प्रभावपूर्ण बनाता है। डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में सांकेतिक कथोपकथन विशेष रुप से उद्‌घाटित हुआ है। 'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में 'सुपारी' शीर्षक की कहानी में आज के युग में जो छेड़खानी होती है उसकी ओर संकेत करती हुई सीना संवाद के माध्यम से व्यक्त करती है –

"सीना – अब क्या होगा ?

कहाँ रहते हैं वे लड़के लोग

पुलिस को बताना चाहिए ।

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'चौथी पगडण्डी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 38

अमन – वो लोग बहुत खतरनाक होते हैं । पता नही चलेगा मारकर किस नाले में डाल दिया ।'' (1)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में 'निर्वासन' शीर्षक कहानी में एक रेलयात्री की मनोदशा का संकेत करती हुई डॉ0 शिरीष लिखती हैं –

''उसका मन छटपटा रहा था । ट्रेन आगे जा रही थी और मन पीछे । ट्रेन गतिशील थी तो मन गतिहीन ।

ट्रेन उसके शरीर को लिये पेड़ – पौधों, नदी – नालों को पार करते हुए, छोड़ते हुए भाग रही थी और मन स्टेशन पर रुक गया था।'' (2)

3. **नाटकीय कथोपकथन –**

कथोपकथन का एक भेद नाटकीयता प्रधान भी होता है। पीछे इस तथ्य की ओर संकेत किया जा चुका है कि आत्मकथात्मक पद्धति में प्रस्तुत वार्तालाप विशेष रूप से प्रभाव की सृष्टि कर सकता है। नाटकीयता का गुण प्रायः इसी कोटि की रचनाओं में विशेष रूप से समाविष्ट मिलता है । परन्तु डॉ0 शिरीष की कहानियों में भी कहीं–कहीं यह गुण सफलतापूर्वक निहित मिलता है। 'रंगमंच' कहानी संग्रह में 'भाग्यविधाता' शीर्षक की कहानी में संवादों में नाटकीय तत्व की झलक मिलती है –

---

1. 'धर्म–अधर्म' 'सुपारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 68
2. 'निर्वासन', निर्वासन डॉ उर्मिला शिरीष पृ0 69

"राजनीति में यह सब करना पड़ता है । अपने दुश्मनों को भी दोस्त मानना पड़ता है और दोस्तों पर भी यकीन नहीं करना चाहिए । कठोर तो होना पड़ेगा। यहाँ सारे सम्बन्ध बनते ही है, सुविधाओं और फायदों के सिद्धान्तों पर ।

सत्य और नीति, सिद्धान्त और मूल्य, इनसे कोई सरोकार नहीं रखना चाहिए।

कहाँ है सिद्धान्त ? किसके सिद्धान्त ? दुनिया में जब कोई चीज स्थिर नहीं है, शाश्वत नहीं है तो मूल्य और सिद्धान्त कैसे स्थिर हो सकते है ।" (1)

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'दलाल' शीर्षक कहानी में माँ बेटी के वार्तालाप में नाटकीय तत्व मौजूद हैं –

"तैयार हो जा वो आता होगा ।

आने दे ।

उसे यहाँ रूकना गवारा नहीं ।

न रूके

उससे वैर लेगी ।

तो क्या दबूँगी

जबान बौत चलाती है

तो क्या गूंगी हो जाऊँ ।" (2)

---

1. 'रंगमंच' भाग्य विद्याता डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 31
2. 'वे कौन थे' 'दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 27

4. <u>व्यंग्यात्मक कथोपकथन –</u>

कथोपकथन का एक भेद व्यंग्य प्रधान रूप में भी उपलब्ध होता है । इस प्रकार के कथोपकथन के समावेश से कहानी में सजीवता और विश्वसनीयता आ जाती है। सामान्य रूप से यह गुण उन कहानियों के संवादों में विशेष रूप से निहित मिलती है, जो हास्य प्रधान होती है । डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों में भी प्रसंगानुसार इस गुण का समावेश सफलतापूर्वक मिलता है।

<u>'मुआवजा'</u> कहानी संग्रह में 'ढहते कगार' शीर्षक कहानी में रमिया के संवाद में व्यंग्यात्मक शब्दों की झलक मिलती है –

"रमिया ने पूछा – तनखा मिली

नही परसों देंगे ।

मेला तो कल है ।

परसों ही देखें ।

परसों, परसों .... चार बार कह चुके, हमाय का पेट नहिंया, हमें का भूख नहीं लगती, वो तो चल फिरके में जुगाड़ कर लेत, नातर भूखों मरना पड़े, कित्ते साल से मेला नहीं देखो ।" (1)

---

1. 'मुआवजा' ढहते कगार, डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 52

<u>'सहमा हुआ कल'</u> कहानी संग्रह में 'कोशिश' शीर्षक कहानी में रवि और राशि के संवादों में व्यंग्यात्मकता झलकती है –

"क्या तुम मुझे खुश देखना चाहती हो ?

देखना चाहते हैं पर इसका मतलब

तुम माँ बनोगी तो क्या वह मेरा बच्चा न कहलायेगा ?

हम नहीं कर सकते .... मत कहो... मत विवश करो रवि ।

राशि ..... लोग मुझे नपुसंक कहें, सुन सकोगी ? देखा नहीं कैसी सहानुभूति जताते हैं कैसे – कैसे शक करते हैं ।" (1)

5. <u>मनोवैज्ञानिक कथोपकथन –</u>

आधुनिक युगीन कहानी पर मनोविज्ञान के व्यापक प्रभाव के कारण कथोपकथन का एक भेद मनोवैज्ञानिकता को आधार बनाकर भी विकसित हुआ है। इस विशेषता से युक्त कथोपकथन पात्रों को चरित्रिक सम्यक्ता प्रदान करता है। हिन्दी कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचन्द, जयंशकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, अज्ञेय, भगवतीचरण वर्मा, जैनेन्द्रकुमार, यशपाल, इलाचन्द्र जोशी, आदि की रचनाओं में मनोवैज्ञानिक संवादों की योजना विशेष रूप से सफल कही जा सकती है। डॉ0

---

1. 'सहमा हुआ कल' कोशिश डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 55

उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में मनोवैज्ञानिकता का पुट स्थान-स्थान पर पाठ्क को देखने को मिलता है।

'केंचुली' कहानी संग्रह में 'साझेदारी' शीर्षक कहानी में विजया की मानसिक स्थिति कुछ ठीक नहीं हैं क्योकि अस्पताल में एवार्शन के बाद बच्चा की ललक उसे पागल कर देती है वह कहती है और उसकी दीदी समझाती है -

"मुझे बच्चा चाहिए ।

खुद को मारकर? हालत देख रही हो ?

ठीक हो जाऊँगी ।

गोद ले लो एक बच्चा

नहीं मुझे अपना बच्चा चाहिए ।" (1)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में पुनरागमन शीर्षक की कहानी में कथनों में मनोवैज्ञानिकता झलकती हुई नजर आती है -

"अभी तो तुम जिंदा हो । तुमने क्या सोचा है, अमृत पीकर आए हो । कब तक रखवाली करोगे, तुम्हारे बाद क्या होगा, पढ़ने के लिए भेज दो । कुछ करने दो । उसे खुला जीवन चाहिए । 'इसी की चिंता तो घुन की तरह लगी है। हृदय कलपता है । कैद हैं हम तीनों । हे राम । सीताराम ।'" (2)

---

1. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 15
2. 'पुनरागमन' 'पुनरागमन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 146

6. उद्देश्यपूर्ण कथोपकथन –

कहानी में नियोजित कथोपकथन अथवा संवाद योजना सोद्देश्य होनी चाहिए। उद्देश्यहीन वार्तालाप कहानी में नीरसता उत्पन्न करते हैं। कथावस्तु के विकास, पात्रों के चरित्र – चित्रण, देश काल के परिचय तथा लेखक के उद्देश्य के स्पष्टीकरण में कोई न कोई कथोपकथन के माध्यम से अवश्य सिद्ध होना चाहिए । डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में उद्देश्य पूर्ण संवादों के माध्यम से कथा–क्रम को बढ़ाया गया है। 'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में दाखिला शीर्षक कहानी में आज के अंग्रेजी वातावरण और अपनी मातृभाषा हिन्दी की जरूरत पर जोर देकर संवाद में उद्देश्यपूर्ण झलक नजर आती है –

"फिर अपनी मातृभाषा कैसे सीखेगा ?

क्या जरूरत है ? खुद ही सीख जायेगा ।" (1)

'दाखिला' कहानी में ही माँ अपने बच्चे को बहुत होशियार कर देना चाहती है जो शाम सुबह उसको सिखाती हुई कहती है –

"गुड–मार्निंग बोलो । छत पर चलते हैं । पोएम याद है न सुनाओ ।

अभी नहीं सुनाता ।

प्लीज गुडब्यॉय .... हाँ बोलो।

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'दाखिला; डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 65

हम साइकिल चलायेंगे ।

नहीं अभी नहीं

पढ़ना नहीं है क्या ?" (1)

धर्म–अधर्म कहानी संग्रह में 'रामकन्या के हसीन सपने' शीर्षक कहानी में लड़की का कथन द्रष्टव्य है –

"मैंनें तो भइया काम छुड़वा दिया है। वह सब्जी का ठेला लगाता है। अब हम लोग ये गंदा काम नहीं करेंगे । कुछ नया काम करना चाहिए । पुश्तों से जो काम करते आ रहे हैं वही काम क्यों नहीं करें । मुझे तो घिन लगती है ।" (2)

कथोपकथन के गुण अथवा शिल्प

कहानी में कथोपकथन अथवा वार्तालाप के माध्यम से महत्वपूर्ण उद्देश्यों का प्रतिपादन होता है। इसलिए इस तत्व का सम्यक् रूप से समावेश कहानी की कलात्मकता में वृद्धि करता है। परन्तु ऐसा तभी संभव होता है, जब कथोपकथन कतिपय विशेषताओं से युक्त हों। सामान्य रूप से कथोपकथन शिल्प की विशेषताओं कथोपकथन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्ध रखती है। और उसे स्वरूपगत परिपूर्णता प्रदान करती है। कहानी की आकारगत सीमा के कारण उसमें नियोजित कथोपकथन संक्षिप्त होना चाहिए। स्वाभाविक कथोपकथन कथावस्तु को विश्वसनीय बनाते हैं।

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'दाखिला' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 67
2. 'धर्म–अधर्म' 'रामकन्या के हसीन सपने' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 73

कथोपकथन को कथावस्तु के प्रसंग विशेष के उपयुक्त होना चाहिए। कहानी के पात्रों के अनुकूल संवाद चारित्रिक प्रभावपूर्णता की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। प्रसंग एवं परिस्थिति के अनुसार विगत और आगत कथासूत्रों से उनकी सम्बद्धता भी आवश्यक है। अनुभूत्यात्मक व्यंजना की दृष्टि से कथोपकथन को भावात्मक भी होना चाहिए। आधुनिक युगीन कहानी में मनोवैज्ञानिकता भी कथोपकथन का एक अनिवार्य गुण माना जाता है। मार्मिक कथोपकथन कथावस्तु तथा पात्र योजना दोनों को ही प्रभावात्मक बना देते हैं। कहानी की पृष्ठभूमि, कथावस्तु तथा चरित्रांकन को सजीवता प्रदान करने में व्यंग्यात्मकता कथोपकथन में सहायक होते हैं। सांकेतिकता की विशेषता से युक्त कथोपकथन कलात्मक परिष्कृति के परिचायक होते हैं। यही गुण अच्छे कथोपकथन की विशेषता है। जो इस प्रकार के संक्षिप्त उद्दरण डॉ0 शिरीष के साहित्य में अथाह सागर में जल की भांति भरे पडें है।

1. <u>संक्षिप्तता</u> :-

कथोपकथन की एक विशेषता उसकी संक्षिप्तता भी है। कहानी की आकारगत सीमा को दृष्टि में रखते हुए भी संक्षिप्त संवादों की योजना औचित्यपूर्ण होती है। कहानी के लघु परिवेश में भी यदि उसके पात्र कई-कई पृष्ठों के नीरस भाषण देगें, तो उसका तत्वगत सन्तुलन नष्ट हो जायेगा। इसके अतिरिक्त लम्बे संवाद कहानी की प्रभावात्मकता को भी कम कर देते हैं , क्योंकि उनकी योजना से पाठक का

ध्यान मुख्य कथासूत्र से विकेन्द्रित हो जाता है। कहानी में संक्षिप्त कथोपकथन कथा के भावी अंश के प्रति पाठक की रूचि बनाये रखने में सफल होते हैं। डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों मे कथोपकथनों में संक्षिप्तता भी एक विशेष गुण है।

'रंगमंच' कहानी संग्रह में रंगमंच नामक कहानी में डॉ0 अपने संक्षिप्त कथन से पूरी सच्चाई को बयान करते हुए कहते हैं। –

"मैं एक डॉक्टर हूं, परमात्मा नहीं। उसका शरीर चिकित्सा की सीमा से निकल चुका था" (1)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में 'पत्थर की लकीर' शीर्षक कहानी में वर्तमान युग की आर्थिक व सामाजिक स्थिति पर बड़े संक्षिप्त रूप में परिचय मिलता है।

"कब तक परेशान होते रहोगे। राजकुमार भी तो राजकुमारी ही चाहेगा न स्मार्ट लड़के को स्मार्ट लड़की नहीं चाहिए।"

उसने कब कहा कि राजकुमार लड़का ढूंढों, मगर लड़का औसत तो हो। खाता-पीता परिवार तो हो।" (2)

---

1. 'रंगमंच' रंगमंच डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 12
2. 'निर्वासन' 'पत्थर की लकीन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 89

2 स्वाभाविकता :-

कथोपकथन का एक गुण उसकी स्वाभाविकता भी है। जिस पात्र के द्वारा जहां जो बात कहलायी जा रही है, वह सर्वथा स्वाभाविक होनी चाहिए। ऐसा होने पर ही वार्तालाप यथार्थपरक और विश्वसनीय प्रतीत होगा। डा0 शिरीष के कथा-साहित्य में स्वाभाविकता एक विशेष गुण के रूप में उभर कर पाठ्क के सामने आती है। 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'टोहनी' शीर्षक की कहानी में बच्चों की बीमारी को दैवीय प्रकोप से जोड़ना बच्चों का एक साथ बडी संख्या में मरना स्वाभाविक बात नहीं हैं

"जरूर उसी आत्मा का प्रकोप है। किसी तांत्रिक को बुलाकर पूछ तो ! इतने बच्चे तो कभी नहीं मरे। उल्टी-दस्त तो बच्चों को होता ही रहता है। ये कोई नई बात तो नहीं है।"

एक बूढ़ा समझाते हुए बोला - 'देवी का प्रकोप नहीं है। देवी अपनी संतानों के प्राण नहीं लेती" (1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में 'अन्तिम यात्रा से पहले' शीर्षक कहानी में पत्नी और पति के संवाद में स्वतः स्वाभाविकता आ जाती है -

---

1. 'पुनरागमन' 'टोहनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 89

"यदि मैं तुम्हें न जाने दूँ तो ?

क्यों। क्यों रोकना चाहते हो तुम मुझे ? किस अधिकार से ?

पति के अधिकार से ।

पति! पति के अधिकार! समाज की नजरों में तुम मेरे पति हो पर मेरी नजरों में तुमने अपना पतित्व स्वंय ही खत्म किया है" (1)

3. उपयुक्तता :-

कथोपकथन अथवा संवाद योजना का एक गुण उसकी उपयुक्तता है। इस गुण से युक्त कथोपकथन जहाँ एक ओर कहानी के किसी स्थल विशेष पर चमत्कारिकता की सृष्टि कर सकता है, तो दूसरी ओर इस गुण से रहित कथोपकथन कथावस्तु के विकास की स्वाभाविक गति में अवरोध भी उत्पन्न कर सकता है। इसलिए कथोपकथन का घटनात्मकता तथा परिस्थिति के उपयुक्त होना चाहिए।

'धर्म-अधर्म' कहानी संग्रह में 'कंबल' शीर्षक की कहानी में डॉक्टरों की बड़ी टीम आँखों के ऑपरेशन के लिए आती है जो गांव में वातावरण भी देखेंगे और उपयुक्त इलाज भी किया जायेगा।

"आप व्यर्थ परेशान हो रहे हैं।"

---

1. 'शहर में अकेली लडकी' 'अन्तिम यात्रा से पहले' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 47

इतनी बडी टीम आई है। डॉक्टर भी ऐसे ... कि ... क्या करेगें यहां आकर ?

'अरे साहब – वे भी आकर देखें कि गांव, देहात का जीवन उनकी दुनिया से कितना अलग है।''(1)

'वे कौन थे' कहानी संग्रह में 'कन्या; शीर्षक कहानी में पंडित जी कन्या के साथ दुर्व्यवहार करते हैं और कन्या के हाथ से लगी थाली से भोग लगाते हैं। तो कन्या (शिवा) जबाब देती हुई कहती है –

''कन्या कन्या क्या होती है, कन्या तो मेरे जैसी सब कन्याएं है । ...... और सब कन्याओं के साथ बूढे आदमी ऐसा ही करते हैं ...। अम्मा कन्या का होती है ?''(2)

4 अनुकूलता :–

कहानी में नियोजित सफल कथोपकथन की एक विशेषता उसकी अनुकूलता भी है। कथोपकथन की आयोजना कहानी में पात्रों के माध्यम से की जाती है। इसलिए उनके द्वारा जो संवाद कहलाये जायें, वे उनके स्वभाव और व्यक्तित्व के अनुकूल होने चाहिए। जो कथोपकथन इस गुण से युक्त होते हैं, वे पात्रों के व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाते हैं। डॉ0 उर्मिला शिरीष की कहानियों में पात्र अनुकूलता विशेष रूप से पायी जाती है।

---

1. 'धर्म–अधर्म' 'कंबल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 119
2. 'वे कौन थे' , 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 71

'मुआवजा' कहानी संग्रह में 'पलकों पर ठहरी जिन्दगी' शीर्षक की कहानी में बच्चा अपनी माँ से पूछता है क्योंकि और सब बच्चें उसे चिढ़ाते हैं –

"अम्मा मैं इतना काला क्यों हूं आप भी गोरी है पापा भी गोरे है फिर मैं ऐसा क्यों हूं मेरे होंठ मेरे तलबे मेरे हाथ ....! माँ की आंखों में आँसू तैर उठते"। (1)

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में प्रतिरोध शीर्षक की कहानी में दो शिक्षिकाएं आपस में संवाद करती हैं जिसमें अनुकूलता झलकती है। –

"लड़कियां बहुत तंग करती है। गुस्सा तो ऐसा आता है कि दो थप्पड़ मार दो। सच बहुत बदतमीज है।"

हँसेगी तो मुँह बन्द करके।

अच्छा।

क्या आपकी लड़कियाँ भी ऐसा करती हैं।

नहीं कोई लड़की लेक्चर के दरम्यान हंसी तो, बात करती हो, मैंने आज तक नहीं देखा" । (2)

1. 'मुआवजा', 'पलकों पर ठहरी जिन्दगी' डॉ० उर्मिला शिरीष पृ० 41
2. 'सहमा हुआ कल', 'प्रतिरोध' डॉ० उर्मिला शिरीष पृ० 33

5 <u>सम्बद्धता</u> :–

कहानी में नियोजित कथोपकथन का एक गुण उसकी सम्बद्धता भी है। जैसा कि कहानी में कथोपकथन के समावेश का एक उद्‌देश्य कथावस्तु के भावी विकास की सम्भावनाएँ उत्पन्न करना है। इस दृष्टि से उसे कहानी के पिछले और आगे आने वाले सूत्र से सम्बल होना चाहिए। साथ ही कहानी के पात्रों एवं उनकी पृष्ठभूमि में व्यक्त परिस्थितियों से भी उसे सम्बद्ध होना चाहिए । डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में निम्नलिखित कथोपकथनों में यह विशेषता समाविष्ट मिलती है। <u>'केंचुली'</u> कहानी संग्रह में 'साझेदारी' शीर्षक की कहानी में पति–पत्नी के संवादों में पूरी कहानी प्रत्येक घटना से सम्बद्ध नजर आती है – "मेरे जीवन की सबसे बड़ी ख़ुशी होगी वो । सबसे सुन्दर और महान सपना ।

पर कोई भी स्त्री क्यों तैयार होगी और कैसे ?

कोई तो हो ही जायेगी ।

कोई नहीं होगी ।

कोशिश तो की जा सकती है। " (1)

<u>'रंगमंच'</u> कहानी संग्रह में 'भाग्य विधाता' शीर्षक की कहानी में नेता जी का सम्बन्ध पूरी कहानी से है जो अपने भाषण में कहते हैं –

---

1. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 18

"यह मेरी व्यक्तिगत क्षति है। प्रदेश ने एक महान युवा नेता खो दिया है । अपराधियों को छोड़ा नहीं जाएगा । सम्बन्धित अधिकारियों को सस्पैण्ड कर दिया जाएगा .....।" (1)

6. <u>मार्मिकता –</u>

मार्मिकता कहानी के कथोपकथन का एक ऐसा गुण है, जो कहानी की कथावस्तु और पात्र–योजना दोनों को ही विशेष रूप से प्रभावपूर्ण बना देता है। मार्मिकता से कथोपकथन करुणोत्पादक भी बन जाते हैं।

<u>'धर्म–अधर्म'</u> कहानी संग्रह में 'कब तक' कहानी में दीपक अपनी भाभी को सबक सिखाता हुआ कहता है जिसमें मार्मिकता झलकती है –

"हमें सिखाएगी राजनीति ... तू...। क्या थी तू जानती है न । भूल गई अपनी औकात ..... सिखाया समझाया तो इसलिए कि ..... तू मेरे ही पर कतरने पर उतारू हो जाए .... ।" (2)

<u>'रंगमंच'</u> कहानी संग्रह में भाग्यविधाता कहानी में विजय शहीद हो जाता हे तो नेता जी भाषण देते हैं जिससे उनके संवादों में मार्मिकता झलकती है –

"शहीद स्मारक बनाया जाएगा ...... स्कूल खोला जाएगा पानी की कमी दूर करने लिए विजय जी की स्मृति में ट्यूबबेल, खुदाई की योजना बनाई जाएगी। उनके

---

1. 'रंगमंच' 'भाग्यविधाता' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 25
2. 'धर्म–अधर्म' कब तक डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 47

अधूरे कार्यो, योजनाओं तथा सपनों को हर हाल में पूरा किया जाएगा ।'' (1)

'निवार्सन' कहानी संग्रह में 'निर्वासन' शीर्षक कहानी में परिवार के दादा जी के त्याग भाव को देखकर बहू कहती है –

''भिक्षां देहि! । यह वाक्य उसके शादी में जनेऊ संस्कार के बाद सुना था या सुना था कि भगवान बुद्ध सहित ही कितने ही साधु – महात्मा, बाबा – बैरागी द्वार-द्वार जाकर भिक्षा माँगते थे । लेकिन दादा जी तो सन्यासी नहीं हैं या फिर वह मन से ही सच्चे सन्यासी हो चुके हैं।'' (2)

कथोपकथन का महत्व

कहानी के विविध उपकरणों में से कथावस्तु तथा पात्र-योजना तत्वों में पारस्परिक सन्तुलन की दृष्टि से कथोपकथन का विशेष महत्व होता है। देशकाल अथवा वातावरण एवं उद्देश्य तत्व की सफल संयोजना में भी कथोपकथन का योग होता है।

विभिन्न गुणों से युक्त कथोपकथन सम्पूर्ण कहानी को प्रभावात्मकता प्रदान कर सकता है। जैसा कि पीछे संकेत किया जा चुका है कि कथोपकथन मूल रूप से एक नाट्कीय तत्व है। इस दृष्टि से इसका शास्त्रीय आधार नाट्य सिद्धान्त ही माने जा सकते हैं। नाट्कों के साथ ही आधुनिक युग में एकांकी, रेडियो एकांकी तथा अन्य

---

1. 'रंगमंच' 'भाग्य विधाता' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 35
2. 'निर्वासन' निर्वासन डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 69

नाट्य रूपों के माध्यम से इसका विभिन्न रूपात्मक विकास लक्षित होता है। परन्तु नाट्य रूपों में प्रायः अभिनय के माध्यम से ही अनेक संकेत प्रस्तुत किये जा सकते हैं : जबकि कहानी आदि कथात्मक माध्यमों में वर्णात्मकता अथवा कथोपकथन के माध्यम से ही ऐसा सम्भव हो पाता है। आरम्भिक युगीन हिन्दी कहानी में जो कथोपकथन मिलते हैं। उनका आधार नाटकीयता तथा भावात्मकता आदि ही है, जिनका महत्व नाट्य शास्त्र के सन्दर्भ में अपेक्षाकृत अधिक है। द्वितीय विकास कालीन हिन्दी कहानी में यथार्थपरक तत्वों के अधिकता से समावेश के उपरान्त कथोपकथन तत्व के क्षेत्र में विकासशीलता लक्षित होती है। यथार्थवादी कहानियों में सामान्य व्यवहार की भाषा में जो वार्तालाप नियोजन हुआ है, वह ऐतिहासिक कहानियों में सर्वदा भिन्न है। डॉ0 उर्मिला शिरीष का कथा साहित्य कथोपकथन की दृष्टि से हिन्दी साहित्य जगत में विशेष स्थान रखता है।

(घ) कथा साहित्य के शिल्प वैशिष्ट्य :-

आधुनिक हिन्दी कहानी अपने लगभग एक शताब्दी के इतिहास में अनेक विचारधाराओं और अनेक स्वरूपात्मक आन्दोलनों को समाविष्ट किये हुए है। भारतेन्दु युग से आरम्भ होकर वर्तमान काल तक हिन्दी कहानी का जो विकास हुआ है, वह विविध कालीन प्रवृत्तियों से प्रभावित है। भारतेन्दु काल से ही हिन्दी कहानी के क्षेत्र में यथार्थपरक तत्वों का समावेश मिलने लगा था। स्वभावतः इस काल के कहानीकारों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और रूढ़ियों के निर्मूलन की दिशा में अपनी रचनाओं के माध्यम से सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। कथा साहित्य के शिल्प वैशिष्ट्य में कई घटक प्रमुख हैं जिनमें कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, भाषा, शैली, वातावरण आदि है। कथावस्तु कहानी में सुनिबद्ध घटनासूत्रों का संकलन कहा जा सकता है, जिसका समग्र रूप कहानी का मूल आधार होता है। 'माध्यम' में समीक्षा के अनुसार 'निर्वासन' कहानी संग्रह की समीक्षा में लिखा है। -

"निर्वासन की कहानियाँ इस अमानवीय समाज में जी रहे मनुष्य के 'एलेनियेशन' की कहानियाँ है। आदमी अपने ही परिवार में अपने को अकेला और उपेक्षित महसूस कर रहा है। किस तरह से मानवीय सम्बन्ध नष्ट हो रहे है।" (1)

कथावस्तु का आधार आज की स्थिति को केन्द्र मानकर डॉ0 शिरीष करती हैं जो

---

1. 'माध्यम' / अक्टूबर-दिसम्बर : 2004 पृ0 188

कथा, साहित्य का प्रमुख अंग होता है कथा अगर प्रभावशाली होगी तो पाठक को जरूर पढ़ने पर मजबूर करेगी।

पात्रों का निर्माण और उनका चरित्र यथार्थ के वहुस्तरीय रूपों को ध्यान में रखने के साथ ही मानव की सहज गुणात्मकता और ईर्ष्या, और कमजोरी आदि की स्थितियों की वास्तविकता के संदर्भ में ही विकसित और पर्यवसित होता है। प्रत्येक पात्र डॉ0 शिरीष के इस अनुभव को ही सिद्ध करते हैं कि सत्य की सदैव हत्या हुई है। आदर्श नैतिकता, चरित्रिकता आदि आस्था के सम्बलों की यथार्थ जीवन में निरर्थकता तथा धन तथा पद के कारण पैदा होने वाली टूट और हताशा का स्तर भी पात्रों के द्वारा उद्घाटित और प्रत्यक्ष होता है। पात्रों के चरित्र प्रतिरोधात्मक होते हुये भी मानवीय एवं सहज है। चरित्र को दृश्य की भाँति प्रस्तुत ही नहीं किया गया है, उसे तादाम्य के स्तर पर एक व्यक्ति के रूप में प्रस्तावित करके अनुभूति की प्रमाणिकता का आधार बनाया गया है। डॉ0 उर्मिला शिरीष एक लेख में लिखती हैं–

"मेरी कहानियों के पात्र वास्तविक जीवन से आते हैं। मैं काल्पनिक पात्रों को लेकर कभी कहानी नहीं लिखती। मेरी स्मृतियों में रचे बसे, आसपास के परिवेश से उठाये गये पात्र ही मेरी कहानियों के आधार होते हैं। इन पात्रों का जीवन, जीवन शैली तथा अपने लोगों से जुडाव का बोध मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है ।" (1)

---

1. राष्ट्रीय सहारा दिल्ली प्रस्तुति : मनीषा शर्मा 2004

कहानियों के पात्र निम्नलिखित है –

कहानी	पात्र
रेत	बालिका
वानप्रस्थ	माँ
बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु	पिता
निर्वासन	बाबा

किसी कहानी के कथोपकथन व संवादों के द्वारा उस कहानी की कथावस्तु का विस्तार होता है, उसमें रोचकता, स्वाभाविकता आती है और चरित्रों का विकास होता है। डॉ0 शिरीष द्वारा इन दोनों ही कार्यों, कथावस्तु का प्रसार व चरित्रों के विकास को अचूक कलात्मकता के साथ साधा गया है। कथावस्तु के प्रसार में कथोपकथन व संवादों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। संवादों के बिना कथावस्तु बोझिल, प्रवाह हीन व अपनी स्वाभाविकता से अलग हो जाती है, और फिर डॉ0 शिरीष के समस्त कथा संसार में ग्रामीण व शहरी पात्र बसे हैं सम्पूर्ण कथा का विकास ही संवादों, क्रियाओं प्रतिक्रियाओं और मनोविश्लेषण के सहारे होता हैं ऐसे में कथोपकथनों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि साहित्य में चरित्र के अन्तर्मन में होने वाले चेतना के प्रवाह की सूक्ष्म व संवेदनात्मक अभिव्यक्ति तो संवादों, स्वागत भाषण, आत्म विश्लेषण, क्रिया–प्रतिक्रिया, हाव–भाव, के सहारे ही होती है। किसी भी व्यक्ति के गुणों व अवगुणों का बहुत कुछ आभास उसकी वाणी से लग जाता है। अपने अथवा दूसरों के विषय में बहुत कुछ कहने सुनने की प्रवृत्ति मनुष्य की स्वाभाविक व संस्कारगत प्रवृत्ति है।

कथोपकथनों के द्वारा चरित्र अपने व्यक्तित्व का उद्घाटन ही नहीं करता बल्कि दूसरों की भी अनेक चारित्रिक दुर्बलताओं व विशेषताओं को जाने अन्जाने उद्घाटित करता है।

कहानी में वातावरण की सृष्टि आवश्यक होती है, अन्यथा वह वास्तविकता का स्पर्श नहीं कर पाता । कहानी पढ़ते समय पाठ्क को यह अनुभूति चाहिए कि वह कहानी के वातावरण में पहुँच गया है, तभी कहानी की वर्णित कथा वास्तविक बनकर पाठ्क को आनन्द विभोर करती है। इसके लिए कहानीकार को यह भी बताना पड़ता है कि सम्बन्धित घट्नाओं का देश और काल क्या है ?

डॉ0 उर्मिला शिरीष के समस्त कहानी संग्रहों में वर्तमान युग की नारी दशा और चेतना का चित्रण देखने को मिलता है। वातावरण को साकार करने में डॉ0 शिरीष ने कहीं भी कोताही नहीं बरती । स्थानों के वर्णन में उनके नाम और लोगों के नाम सहायक सिद्ध हुए हैं। लोगों की भाषा ने भी वातावरण बनाने में सहायता की है। वातावरण के सन्तुलित चित्रण से पाठ्क के समक्ष सजीव चित्रण उपस्थित हो जाता है।

डॉ0 शिरीष ने अपनी कहानियों का कथानक सदियों से चली आ रही नारी की दशा और नारी की परम्पराओं को बनाया है। इनका कथा क्षेत्र सम्पूर्ण संसार में नारी चेतना जिसमें नारी के कई रूप नजर आते हैं। संघर्षशील, राजनीतिज्ञ, सामाजिक आदि ।

स्वतंत्रता के बाद हिन्दी में जो उल्लेखनीय कहानियाँ लिखी गई, वे संकर हिन्दी में लिखी गई । संकरत्व में उर्जा भी होती है और जीवट भी । ताजगी भी । इसलिए डॉ0 शिरीष ने अंग्रेजी और हिन्दी मिश्रित भाषा का प्रयोग किया है । रंगमंच कहानी संग्रह में 'समुन्दर' शीर्षक की कहानी में मिश्रित भाषा का रूप मिलता है –

"मेरी मार्कशीट्स और सर्टीफिकेट्स ।" (1)

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में 'चौथी पगडण्डी' शीर्षक कहानी में भाषा का मिला-जुला रूप देखने को मिलता है –

"आप बनाइये न प्रोग्राम । अकेले में क्या घूमना ? मुझे तो बड़ी बोरियत होती है ।" (2)

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से यदि कहानी की विभिन्न शैलियों के स्वरूप पर विचार किया जाय, तो इस तथ्य की अवगति होगी कि शैलीगत अभिनवता कहानी के प्रभाव की वृद्धि की दृष्टि से उपयोगी होती है। सामान्य रूप से कहानी की कथावस्तु का प्रस्तुतीकरण किसी भी शैली में किया जा सकता है। सभी शैलियों की अपनी पृथक सीमाएँ व विशेषताएँ है, जो कहानी मे अभिव्यक्ति होती है। समकालीन कहानियों में सामान्य वर्णनात्मक शैली से पृथक अनुभूति संवेदना अथवा समस्या के अनुरूप वैविध्यपूर्ण शैली का प्रयोग होता है।

---

1. 'रंगमंच' 'समुन्दर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 22
2. शहर में अकेली लड़की' 'चौथी पगडण्डी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 36

सहायक ग्रन्थ – सूची

1. नई कहानी की भूमिका कमलेश्वर पृ0 70
2. 'साहित्य का उद्देश्य' मुंशी प्रेमचन्द्र पृ0 2
3. 'सहमा हुआ कल' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 13 ('सहमा हुआ कल' कहानी)
4. 'धर्म–अधर्म' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष भूमिका
5. 'खुशबू' (कहानी संग्रह) सम्पादिका डॉ0 उर्मिला शिरीष भूमिका
6. 'कुछ विचार' मुंशी प्रेमचन्द्र पृ0 119–120
7. 'रंगमंच' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 29 (भाग्य विद्याता कहानी)
8. 'निर्वासन' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 98 (धरोहर कहानी)
9. 'पुनरागमन' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 125 (चपेटे कहानी)
10. 'शहर में अकेली लड़की' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 79 (लौटकर जाना कहाँ है कहानी)
11. 'धूप की स्याही' (कहानी संग्रह) सम्पादिका डॉ0 उर्मिला शिरीष (भूमिका)
12. 'केंचुली' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 15 (साझेदारी कहानी)
13. 'वे कौन थे' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 45 (अपने लिए कहानी)
14. 'मुआवजा' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 22 (सवाल कहानी)
15. 'काव्य के रूप' डॉ0 गुलाब राय पृ0 225

16. कहानी एक कला श्री गिरिधारी लाल शर्मा पृ0 93

17. 'दि शार्ट स्टोरी' एस0ओ0 फाउलेन पृ0 12

18. 'एक दुनियाँ समानांतर' राजेन्द्र यादव पृ0 19

19. 'साहित्य समालोचन' डॉ0 रामकुमार वर्मा पृ0 54

20. मान सरोवर भाग – 5 मुंशी प्रेमचन्द्र पृ0 242–243

21. 'साहित्य लोचन' डॉ0 श्याम सुन्दर दास पृ0 190

22. 'कहानी का रचना विधान' डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा पृ0 121

23. 'हिन्दी कहानियाँ' आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी पृ0 14

अध्याय – षष्ठ

कथा साहित्य की मूल संवेदना और उद्देश्य

क. कथा साहित्य की मूल संवेदना :–

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य की मूल संवेदना नारी है जिसको उन्होंने अपने समस्त कहानी संग्रहों में उठाया है। प्रथम कहानी संग्रह 'वे कौन थे' में दस कहानियाँ संकलित हैं। जिनमें मूल संवेदना के रूप में नारी को लिया गया है। विघटित होते मूल्यों के संक्रमण से गुजरते संबधों के विद्रूपों पर बहुत जोर देते हुए डॉ0 शिरीष ने लिखा है । इन सभी कहानियों का केन्द्र बिन्दु संवेदनशील नारी है। कहीं वह अपने जीवन की कटुताओं और विद्रूप से विद्रोह करती है, तो कहीं गूँगी बनकर आपत्ति शून्य भाव से उन्हें ढोती चली जाती है, 'दलाल' कहानी में बेटी माँ की खुदगर्जियों को ढोती हुई अंततः विद्रोह करती है –

"मुझे चुप रहने को कहती है और वो कुछ भी कहता रहे सो कुछ नही कहती।

तूने तो मेरा जी जिंदगी भर के लिए जला दिया न उस लगड़े बुढ़ऊ के साथ बाँधकर। " (1)

'कन्या' कहानी में धूर्त ढोंगी पण्डित ठरकीपन से आहत होकर विद्रोह करती है। 'दलाल' कहानी में प्रकारोतर से माँ ही दलाल है जो स्वार्थवश खुद ही बेटी को

---

1. 'वे कौन थे' 'दलाल' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 27–28

जिस्मानी समझौते के लिए उकसाती है। 'कन्या' में कन्या के नाम पर हिन्दू समाज में पंडितों – पुरोहितों द्वारा किए जाने वाले यौन–शोषण का पर्दाफाश है। 'वे कौन थे' बेहद कमजोर कहानी है जिसमें प्रवासी हुए तीन युवकों की घरेलू चिंताओं , शहरी जीवन की विवशताओं अभिशापों को दिखाने की सतही कोशिश है। बनावटी यथार्थ को लेखिका ने इस कदर लपेट लिया है कि सब कुछ बेहद अप्रभावी बन कर रह गया है। 'यह सच है' में स्वार्थी पारिवारिक परिवेश की कटुताओं से आहत विधवा युवती के अस्पताल में पहुँच कर होने वाले नाट्कीय कायाकल्प, 'अपने लिए' मैं जुआरी शराबी पति व बेटियों की जवानी से जुड़ी चिंताओं के बीच घुलती माँ की व्यथा और 'लौट आओ प्यार' में दुखी प्रणायिनी ग्रामीण युवती के प्रति शहरी युवती की रूमानी सहानुभूति को व्यक्त किया गया है। लेकिन नारी के सामाजिक जीवन की त्रासदियों के नए, भाववोध का अभाव है। अभिव्यक्ति में महज खीझ का तत्व ज्यादा हो गया है। 'कन्या' कहानी में शिवा की संवेदना जागती है तो वह पंडित को लहुलुहान कर देती है –

"शिवा को लगा, इतनी विवशता क्यों ! इतनी कमजोरी क्यों ! भावा–वेश में आकर उसने पास पड़ी लकड़ी उठाकर मार दी – ढोंगी .... ! पापी.........! बुड्ढा ....!' (1)

डॉ0 उर्मिला शिरीष का दूसरा कहानी संग्रह 'मुआवजा' है वे अपनी लेखनी द्वारा मानव जीवन के विविध पक्षों व सामाजिक विसंगतियों को सजीवता से उभारने

---

1. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 78

में सफल रही है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से मानसिक – अन्तर्द्वन्द्वों, मनोद्वेगों और मानव–मन की विचित्रताओं का अत्यन्त स्वाभाविक अंकन हुआ है। वैसे तो संकलित प्रत्येक कहानी सरसता, रोचकता व उत्सुकता के रूपहले आवरण में लिपटती हुई है, लेकिन इनमें भी 'ढ्हते कगार' 'पलकों पर ठहरी जिदंगी' व 'मुआवजा' कुछ अधिक हृदय –स्पर्शी बन पड़ी है। 'ढ्हते कगार' रमिया नामक एक ऐसी दबंग मजदूरिन की कथा है जो हाँड़ – तोड़ मेहनत हो करना जानती है, पर किसी भी कीमत पर अत्याचार सहन करना नहीं । उसे पति का मालिक के आगे दब–दबकर रहना और अन्याय सहना बिल्कुल पसंद नहीं इसीलिए तो जब सुबह से शाम ढले तक काम करने के पश्चात अभी–अभी थककर सोये उसके पति काशी को मालिक तड़के ही जगाने आ जाता है यह उसे जगाने से स्पष्ट इंकार कर देती हैं। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि वह अपनी चाँदी की करधनी व कड़ा बेचकर कर्जा चुका देगी । मालिक नाराज होकर काम न दे तो न सही वे जहाँ भी मेहनत करेंगे, वहीं काम मिल जाएगा । यहाँ कहानी की मूल संवेदना व उद्देश्य आत्म विश्वास पर टिका है जो रमिया अपने आत्म विश्वास से ही तो परिस्थितियों से जूझने के लिए तैयार है। 'पलकों पर ठहरी जिन्दगी' एक उस गरीब आध्यापिका माँ की अंतर्व्यथा हैं जिसका इकलौता पुत्र हृदयगत जन्मजात विकार से पीड़ित है। उसका पति एक हायर सेकेण्डरी स्कूल में अध्यापक है और दोनों पति–पत्नी के पास कुछ इतना पैसा नहीं है कि पुत्र की चिकित्सा करा सकें । माँ किसी भी कीमत पर अपने लाड़ले को बचाना चाहती

है, पर कुछ भी न कर पाने की विवशता उसे मानस को मथ डालती है । अन्त में, उसे एक ही रास्ता नजर आता है कि वह लोगों से सहायतार्थ धन माँगे और इसके इसी निश्चय के साथ कथा का अन्त हो जाता है। इस कहानी में, आद्योपान्त बालक के अपनी शारीरिक अक्षमता से सम्बन्धित मासूम सवाल, उसकी मायूसी व माँ की अनकही पीड़ा पाठकों के हृदय में प्रसुप्त करूणा, दया व सहानुभूति को जगाती है।

कहानी 'मुआवजा' में डॉ0 शिरीष ने 'पाती' नामक ऐसी युवती के मनोभावों, व्यवहार और अन्तर्द्वन्द्व का जीवन्त चित्रण किया है, जो किशोरावस्था की दहलीज में कदम रखते ही विधवा हो जाती है । उम्र की परिपक्वता के साथ उसे एकाकीपन का अहसास बेहद कचोटता है । बचपन के साथी 'सलिल' द्वारा उसके समक्ष रखे गये विवाह प्रस्ताव को वह अतीत को न भूल सकने और समाज के भय के कारण ठुकरा देती है । उसकी जिन्दगी में आये दूसरे युवक शरद की अचानक एक्सीडेण्ट से मृत्यु हो जाती है जिससे उसे गहरा सदमा पहुँचता है । इसी अवधि में उनकी चिकित्सा कर रहे डॉ0 शशांक राय के प्रति वह तीव्र आर्कषण का भी अनुभव करती है, पर विवाहित शंशाक राय उसके प्रेम को नहीं स्वीकारते हैं। निराशा, अपमान व एकाकीपन से बेहद टूट जाती है एक बच्चे को गोद लेती है जिससे वह सुख का अनुभव करना चाहती है।

इस प्रकार पाती हमारे देश की ऐसी हजारों असमय विधवा हुई स्त्रियों का

प्रतिनिधित्व करती है, जिन्हें हमारे समाज की वर्जनाओं के कारण अपनी इच्छाओं को दमित कर तिल–तिल घुट्कर ही जीना है। यही उनकी नियति है और शायद वेवा होने की गलती का उन्हें यही मुआवजा भी चुकाना है जिन्दगी भर ।

'केंचुली' कहानी संग्रह की मूल संवेदना व उद्देश्य नारी जीवन और पारिवारिक सम्बन्धों को प्रस्तुत करती है । उनकी कहानियों का संसार निम्न मध्यवर्ग के अंतर्विरोधों से परिपूर्ण है, बहुआयामी और अत्यन्त विस्तृत फलक वाला है । पति – पत्नी की जिंदगी के इतने विविध स्तर और रूप यहाँ चित्रित है कि उनके द्वारा वर्तमान भारतीय समाज के निम्न मध्यवर्गीय परिवार को गहराई से समझा जा सकता है । 'केंचुली' संग्रह की पहली कहानी है 'साझेदारी' । इसमें एक ऐसी नारी की कहानी है जो आत्मिक प्यार की प्राप्ति के लिए तमाम विरोधों के बावजूद अपने से उन्नीस वर्ष अधिक उम्र के एक हार्ट पेशेंट पुरूष से विवाह करती है, किन्तु माँ बनने के लालच में तीन–तीन बार गर्भ धारण करती है और हर बार एर्बाशन हो जाता है । जब डॉक्टर स्पष्ट रूप से कह देता है कि अब वह माँ न बन सकती, तब वह गाँव की एक युवती को पैसे का लालच देकर अपने पति का गर्भ धारण करने पर राजी कर लेती है । पर त्रासदी यह कि बच्चा पैदा करने से पहले ही एक रात चुपके से वह युवती भी घर से भाग जाती है। अन्त में कहानी बहुत ही कारूणिक बन गई ।

डॉ0 शिरीष की नायिकाओं में भारतीय सद्गुण भरे पड़े है यही कारण है कि वह एक बार जिसका वरण कर लेती है, अंत तक उसका दामन नहीं छोड़ती है 'सिगरेट' कहानी में द्रष्टव्य है -

"क्या भरोसा, तुम इतना झूठ बोलते हो कि अगर सच भी बोलते हो तो यकीन नहीं होता । कितना नुकसान करती है सिगरेट .... ? फिर ...... तुम तो हार्टपेशेंट हो ।" (1)

'केंचुली' की सभी कहानियां नायिका प्रधान हैं, सभी नायिकाएँ पढ़ी - लिखी हैं । 'चौथी पगडण्डी' को छोड़ कर शेष कहानियों की नायिकाएँ नौकरी - पेशा हैं और इस बची कहानी की नायिका भी कलाकार है । अर्थात डॉ0 शिरीष ने शिष्ट समाज में या कह ले कि उच्च मध्यवर्गीय परिवार की नारी का चित्र खींचा है। इनमें केवल दो कहानियाँ 'साझेदारी' एवं 'केंचुली' उन समस्याओं को लेकर प्रस्तुत हुई है जिन पर समाचार-पत्रों पत्रिकाओं ने पीछे बहुत कुछ उगला है।

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में आज के संवेगो की अभिव्यक्ति का सबसे समर्थ माध्यम कहानी है। मनुष्य के अन्तः प्रदेश में भाव-अभावों का द्वन्द्व, संघर्ष चलता रहता है। भय, आक्रोश, राग-द्वेष, घृणा, प्रेम आदि मूल संवेदनाओं के साथ स्त्रोत हमारी सहज प्रवृतियाँ हैं ये प्रवृतियाँ कहानी की रीढ़ हैं, प्रेरक शक्ति हैं क्योंकि

---

1. 'केंचुली' 'सिगरेट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 71

ये ही चरित्र को उजागर करती हैं, जीवंतता प्रदान करती है और ये सभी तत्व उर्मिला शिरीष की कहानियों में मुखरित हुए हैं।

'शहर में अकेली लड़की' संग्रह कहानियों में जहाँ एक ओर विविधता, पठनीयता तथा जीवन के प्रति गहन अंतर्दृष्टि है, वहीं एक निश्चित उद्देश्य तथा संघर्षपूर्ण चेतना का स्वरूप भी विधमान है । इन कहानियों की मूल संवेदना तथा मूल स्वर आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री के विविध रूपों माँ, पत्नी तथा अन्य रूप को समग्रह यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में उनके व्यक्तित्व को साकार करना है। रिश्तों की मूल्यहीनता मानवीय मूल्यों की सार्थकता को किस तरह प्रभावित करती है, इसका यथार्थ रूप इनकी कहानियों में देखा जा सकता है । यह कहानियाँ औसत भारतीय मध्यवर्गीय घर–परिवार के दायरे की कहानियाँ है। यह कतई जरूरी नहीं कि अच्छी कहानी के लिए 'प्लाट' बाहर के ही हो । अच्छी कहानी घर अथवा बाहर से नही, अपनी अंतर्वस्तु और संवेदना से बनती है । उर्मिला शिरीष की कहानियों में शिल्पगत सजगता नहीं है न ही वे अपनी कहानियों में अपेक्षित संवेदनात्मक गहराई और सूक्ष्मता ला पाती हैं, साथ ही उस कलाबोध का भी अभाव है जो साधारण विषय वस्तु की कहानी को एक नयी संवेदना प्रदान कर देती है। परिणाम स्वरूप ये कहानियाँ हमारे समय में लिखी जा रही ढर्रे की कहानियाँ बनकर रह जाती हैं ।

'धर्म-अधर्म' की कहानियाँ जो गाँव-देहात से शुरू होकर महानगर तक की जीवनानुभूतियों को अभिव्यक्त करती है। छल-कपट, ऊँच-नीच, जातीय द्वेष, दलितों की स्थिति, स्वतंन्त्रता के बाद भारतीय जीवन की वास्तविक तस्वीर, अभावों के बीच जीता हुआ मनुष्य .... धधकता हुआ आक्रोश, चुप, तड़प, सपनों का टूटना - बिखरना, राजनीतिक व्यवस्थाओं के कुरूप चेहरे .....राजनीतिक प्रभाव से उपजी व्यक्ति सत्ता का खेल ..... । पुनरागमन का पूरा परिवेश .... तीन पीढ़ियों .... और लंबे अंतराल में आए परिवर्तन को रेखांकित करना ही कथा साहित्य की संवेदना व उद्देश्य का मूल तत्व है। एक तरफ बाहर के परिदृश्य में स्त्रियाँ भक्ति के रूप में उभरती दिखाई देती हैं, वहीं दूसरी ओर 'धर्म-अधर्म' की नायिका पारिवारिक हिंसा का, पति की प्रताड़ना का शिकार होती हैं । रिश्तों की खातिर, बच्चों की खातिर ये स्त्रियाँ संबंधों के टेढ़े - मेढ़े रास्तों से गुजरकर लहूलुहान होती हुई मन में संबध ों की डोर को थामे रहती हैं इस विश्वास के साथ कि मनुष्य की कठोरता तथा दुष्टता कभी तो करूणा का रूप धारण करेगी । जीवन की खूबसूरती को, सौंदर्य को मनुष्य अपनी कुंठाओं, स्वार्थों, अहंकार तथा क्रूरता के कारण खंडित कर देता है जबकि इन बातों को छोड़ दिया जाए तो कोई भी संबन्ध कितना खूबसूरत बनकर जिया जा सकता है। 'चपेटे' की रामबती का जीवन परत दरपरत कैसे खुलता गया और वह

एक वर्ग का प्रतिनिधि बनकर कहानी में उतर आई ।

'रंगमंच' कहानी संग्रह में एक नये तेवर, चिंतन तथा दृष्टि को गहराई से चित्रित करती इन कहानियों में करूणा, प्रेम की उदान्त एंव पवित्र भावना, राजनीतिक दाव -पेंच, व्यवस्थाओं के दबाव व तनाव, न्यायतंत्र के छुपे रूप, अकेले होते जा रहे मनुष्य की पीड़ा, स्थापित मान्यताओं को तोड़ती, वैचारिक दृष्टि, जीवन-मृत्यु से साक्षात्कार करते, चिरंतन सवालों तथा अध्यात्म एवं दर्शन के बीच हृदय को छू लेने वाली मानवीय भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति पाठ्कों के अंतर्मन को छू सकेगी।

संग्रह की इन कहानियों को लेकर गहराई से सोचें तो महसूस होता है कि मनुष्य स्वीकार और अस्वीकार अवसरवादिता की दृष्टि का मोहताज हो गया है। सुख और आनन्द में जो गहरा अंतर है वही हमारी चाहनाओं में भी समा गया है कि हम कहते कुछ और है जीते कुछ और तरह है। संग्रह की कहानियाँ स्वांग एवं तूफान भी नारी के संघर्ष और सामाजिक परिवेश पर आधारित कहानियाँ है अंतिम कहानी 'चीख' एक दमदार कहानी है, जिसमें बलात्कार से गुजरी लड़की के माँ-बाप मुँह चुराते है और भाई हथेली पर घूँसा मार अपाहिज क्रोध से घुलता जा रहा है। बाहर दुनिया चटखारे लेकर यातना को नकार मजा लेती रहती है। हर परामर्श लड़की को सुरक्षा के घेरे में बन्दी बनाना चाहता है । ऐसे में लड़की सोचती है कि स्वयं को

पराजित महसूस करने का अर्थ है अनाचारी पुरूष व्यवस्था की विजय वह अपने रास्ते पर पुनः चल देती है।

कहानियों में जहाँ नारी की विवशताएँ हैं वहीं कई नारी चरित्र अन्याय और विसंगति का स्पष्ट प्रतिकार करते दिखायी देते हैं। वस्तुतः स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में नारी मुक्ति की राहें आज भी आसान नहीं हैं और पुरूष - वर्चस्व वाली व्यवस्था के विरूद्ध नारी का प्रतिवाद अभी सामूहिक और एक जुट नहीं हो पाया है। 'रंगमंच' संग्रह की 'समुन्दर' 'पत्ते झड़ रहे हैं' 'रंगमंच' 'बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु' ! 'स्वांग' 'चीख' आदि में मुख्यतः नारी की नियति वर्णित है और एक दो अपवादों को छोड़ दें तो नारी सहमी - दबी असहाय मुद्रा में न होकर निर्णयात्मक तेवर से सम्पन्न है। जो कहानी सीधे नारी -जीवन से संबद्ध नहीं है, उनमें भी प्रतिवाद की ऊर्जा आश्वसत करती है। प्रस्तुत संग्रह की कहानी 'चाँदी की वरक' 'भाग्यविधाता' जैसी कहानियों में व्यवस्था का क्रूर चरित्र प्रतिबिम्बित है। एक युवा नेता की मौत पर जिस तरह राजनीति की जाती है, स्वार्थ की रोटियाँ सेंकी जाती है, वह वीभत्स और तकलीफदेह है। वस्तुतः 'मैं' की मौत 'संवेदनशीलता' की मृत्यु है इस कहानी में दो पद - 'सत्ता का गुड़' और 'सेडेटिव' खासे व्यंजक है। 'चाँदी की वरक' मे गरीबों के हित में एक सड़ी - गली व्यवस्था से लड़ते हुए डॉक्टर को खुद उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है इस कहानी में आया 'पावर शॉट' पद विडम्बना को मूर्त

करने के लिए पर्याप्त और सक्षम है । इन कहानियों को पढ़ते समय कई बातें एक साथ उभरती है। डॉ0 शिरीष की 'संवेदना' ही पूँजी है। उसे जनधर्मी सोच से संश्लिस्ट कर वे और भी स्थायी और मार्मिक बना देती हैं।

'निर्वासन' कहानी संग्रह की कहानियों में परिवेशगत और व्यवस्थागत विडंबना को बहुत असरदार ढंग से चित्रित किया गया है। इस संग्रह की एक छोटी सी कहानी 'हैसियत' ऊषा प्रियवंदा की अत्यन्त चर्चित कहानी 'वापसी' की याद दिलाती है यह एक वृद्ध की कहानी है जो चाहकर भी नई पीढ़ी से तालमेल नहीं बिठा पाता । उसके दुःख और समाधान की कोशिशों के द्वंद्व से कहानी की संवेदना और उद्देश्य स्पष्ट होता नजर आता है। 'निर्वासन' एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जिसे सफल दिनों में सबने सलाम किया लेकिन असफलता का दौर आते ही उसके अपने भी दुश्मनों से ज्यादा मुखर विरोध पर उतर आते हैं वह घर छोड़कर एक स्टेशन पर भीख माँग कर अपना और एक अनाथ बच्ची का पेट भरता है एक दिन उसका पौत्र उसे ढूँढ़ निकालता है और उसकी शर्तों पर उसे घर ले जाता है यह कहानी उस व्यवस्था पर चोट करती है, जो सफलता और सम्पन्नता को ही सब कुछ मान लेती है, यहाँ तक कि संबधों का ताप भी इन्हीं से नियंत्रित होने लगता है यह कहानी दिखाती है कि बाजार ने जीवन को किस स्तर पर चपेट में ले लिया है। 'उसका अपना रास्ता' यह कहानी स्त्री मुक्ति के प्रश्न पर एक अलग नजरिया प्रस्तुत करती है इसमें परम्परा

और बाजार के दुश्चक्र में फँसी हुयी भारतीय स्त्रियों के दुःख और संघर्ष को सही परिप्रेक्ष्य में रखा गया है इस कहानी में मेधावी नायिका पिता और परिवार की इच्छा के विरूद्ध परम्परागत प्रतीक 'चौखट' को लाँघती है। शहर की सौदर्य प्रतियोगिता में भाग लेती है। यह नये दौर की संवेदना है जिससे नारी बहुत प्रभावित हुई है।

(ख) कथा–साहित्य में उठायी गयी समस्याएँ :-

कहानी गद्य कथा साधारण जीवन को दर्शाने वाली एक विधा है। कहानियों के पात्र समाज के प्राणी ही होते है बस अन्तर इतना होता है कि उनके नाम काल्पनिक होते हैं । जीवन मनुष्य जीता है ? अकेला नहीं है दूसरों के साथ उसके जीवन में कई प्रकार की समस्यायें होती है । उनसे मनुष्य निकलने का प्रयास करता है और कई प्रकार की समस्याओं का समाधान ढूँढ़ता है – जिससे उसका जीवन सार्थक बन सके । वह दूसरों का सहयोग करता है और कभी असहयोग कभी उसकी संगति समाज से नहीं बैठ्ती और कभी अपने मन में अनेक उलझनों में फँसा रहता है जिससे जीवन में गतिरोध उत्पन्न हो जाता है। गतिरोध को दूर करने के लिए मनुष्य को विशेष गतिशील होना पड़ता है । कहानी मुख्यतः जीवन पक्ष एवं विपक्ष को उभारती है। डॉ0 शिरीष ने कहानियों में कई प्रकार की समस्याओं को उभारा है। जिनमें नारी की संवेदना व दशा को प्रमुख समस्या के रूप में पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में निम्नलिखित समस्याएँ उभर कर सामने आती हैं –

1. प्रेम विवाह
2. दहेज

3. विवाह के पूर्व एवं विवाह के पश्चात परिवार

4. व्यक्तिगत

5. नौकरी

6. बड़े – बड़ों की बीमारी और उनकी मानसिकता

7. परिवार के विघटन की कथा – व्यथा

8. सास – बहू की पारिवारिक समस्या

9. स्त्री के प्रति पुरूष का स्वाभाविक अविश्वास

10. स्त्री की सरल समर्पण मानसिकता

11. स्त्री की आर्थिक स्वाधीनता पराधीनता की समस्या

12. पुरुष का दुर्व्यवहार और निरर्थक प्रभुताजन्य अहंकार

13. आधुनिक नगरीय जीवन की समस्याएँ

14. पुरानी परम्पराओं में ग्रसित नारी संवेदना

15. धार्मिक – आडम्बरों से ग्रसित नारी : एक समस्या

सभी कहानी संग्रहों में समकालीन परिस्थितियों के अनुरुप डॉ0 शिरीष ने समाज का यथार्थ चित्रण अपने साहित्य के माध्यम से पाठक वर्ग के समक्ष प्रस्तुत किया है जिनमें प्रमुख कहानी संग्रह 'वे कौन थे' में भी नारी की समस्या को मुख्य केन्द्र बिन्दु बनाया गया है।

नारी की प्रत्येक समस्या पुरूष प्रधान समाज की देन है, इनके साहित्य में आर्थिक वंदिश के साथ-साथ उस 'खुले' माहौल पर भी बहस व चुनौती दी जाती है जहाँ औरत स्त्री-पुरुष संबधों या स्त्री की विशेष मानसिकता या कामुकता की बात करती हैं तो कई समस्याएँ स्वतः जन्म लेती है। डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में कहानी सग्रह 'वे कौन थे' में 'यह सच है' शीर्षक की कहानी में निमी को लगता है कि उसके माँ बाप ही उसका शोषण कर रहे हैं, वे जिस तरह उसकी सुरक्षा कर रहे, उसका शोषण हो रहा है आज की परिस्थिति के अनुसार नारी पर नियंत्रण उसकी एक समस्या बनकर उभरती है तो 'निमी' कहती है -

"एक घरेलू लड़की जिसकी न कोई आकाँक्षा, न व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, न कुछ कहने-कहाने - बताने की इच्छा । घर का काम करती रहो और जो हो पहनो, खाओ, सोओ, बस और कुछ नहीं । कोई चूँ-चपाट मत करो । जिन्दगी तो बस हँसी के लिए ।" (1)

'मुआवजा' कहानी संगह में 'पलकों पर ठहरी जिन्दगी' शीर्षक की कहानी में क्षमा एक स्त्री पात्र है जिसकी समस्या सामाजिक होने के नाते वह अपने बेटे के लिए समाज से जूझती है, क्योंकि उसके बेटे के हृदय में छेद है जो समाज के लोग अपशगुन मानते हैं -

"इसी दुख और अपमान के कारण उसने भी हर जगह जाना छोड़ दिया है। यहाँ तक कि बहिन की शादी तक में नहीं गयी थी । लोग क्या - क्या नहीं कहते

---

1. 'वे कौन थे' - 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 11

है मन ही मन । कितनी हिकारत और कटुता की नजर से देखते हैं और वह है कि बेटे के प्रति दिन-व-दिन स्नेहिल और आत्मीय होती जा रही है।" (1)

'केंचुली' कहानी की मुख्य पात्र 'लतिका' आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता की मुक्त मानसिकता से प्रभावित एम0बी0बी0एस0 छात्रा है, जो स्वतंत्र जीवन की पक्षधर है, दूसरी ओर उसके माँ-बाप भारतीय परम्परा के खानदान का निर्वाह करने के लिए सम्भ्रान्त परिवार के सिविल जज से उसका विवाह कर देते है माँ समझती है -

"लड़की को जिन्दगी का हर पक्ष लेकर चलना चाहिए, वही सबसे कामयाब और सन्तुष्ट औरत होती है जो घर ...... पति ....बच्चे...... रिश्ते सम्बन्ध निभाकर आगे बढ़ती है पूरी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से" (2)

'साझेदारी' कहानी में किराये की कोख में बच्चा पैदा करने की आधुनिक पद्वति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है कि बच्चों पर किसका ज्यादा अधिकार है? उस माँ का जिसने नौ माह दूसरे के बच्चे को अपने रक्त से सींचा अथवा उस माँ का जिसने बाह्य रूप से अपने ओवम को पति के स्पर्श से संयुक्त करवा कर दूसरी स्त्री की कोख में रोप दिया । विचारणीय है कि दोनों स्त्रियों की एक समस्या बनकर पाठक के समक्ष उभरती है । विजया अपने पति सिंह साहब से कहती है -

---

1. 'मुआवजा' – 'पलको पर ठहरी जिन्दगी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 47
2. 'केंचुली' 'केंचुली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 25

"वो बच्चा होगा तो तुम्हारा ही । मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी होगी वो। सबसे सुन्दर और महान सपना ।" (1)

'हिसाब' कहानी कमाऊ पत्नी के शोषण की कहानी है, जहाँ माँ-बाप अपने पुत्र को उसकी पत्नी के विरूद्ध भड़काते हैं। वे पत्नी को सदैव अपनी ग्रिप में रखने और उसके वेतन का इस्तेमाल परिवार के लिए करने की सलाह देते रहते हैं। बहू से उनकी नोंक-झोक चलती रहती है। संतोष के पिताजी समझाते हुए कहते हैं -

"हम तुम्हें भेज तो देते हैं, पर ध्यान रखना माँ-बाप, भाई-बहिनों को सदा सर्वोपरि मानकर चलना । दुनिया में बीबी तो कई मिल सकती है मगर माँ-बाप नहीं। वह पराये घर की लड़की है।" (2)

नारी पुरूष की प्रेरणा होती है, उसकी अदम्य शक्ति, जिससे प्रेरित होकर पुरूष महान सफलता प्राप्त कर सकता है इसी ओर संकेत करती है कहानी 'शून्य' में निरूपमा तथा प्रशान्त दस बर्षों की प्रतीक्षा और संघर्ष के बाद विवाह-सूत्र में बंधते हैं और फिर बड़े - बड़े सपने देखते हैं निरूपमा प्राध्यापकी और ट्यूशनें कर प्रशान्त को आई0ए0एस0 करने के लिए प्रेरित करती है, किन्तु आई0ए0एस0 पा लेने के बाद प्रशान्त को निरूपमा का नौकरी करना नहीं सुहाता है और पारिवारिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

"काश ! मेरा सिलेक्शन हो जाये .... तब मैं तुमको कितने आराम से रखूगाँ

1. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 18
2. 'केचुली' 'हिसाब' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 31

..... सच तुम तो नौकरी छोड़–छाड़ कर आराम से रहना । नौकरी मुझे बेहद प्रिय है प्रशान्त ! लाख रूपये आने लगे तब भी मैं नौकरी न छोडूँगी।'' (1)

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कहानी संग्रह 'शहर में अकेली लड़की' में संकलित अधिकतर कहानियों में अपने होने की तलाश में भटकती इसी नारी के विभिन्न रूप हैं इनमें 'शहर में अकेली लड़की' 'वानप्रस्थ' 'चौथी पगडंडी' 'अन्तिम यात्रा से पहले' 'लौटकर जाना कहाँ है' शीर्षक कहानियों में भी नारी चरित्र पितृसत्तात्मक समाज की विडम्बनाओं और अवमूल्यों से संतृप्त और उत्पीड़ित है। पति की कठोरता पुत्र की उपेक्षा और घर की वर्जनाओं में 'उनका दम घुट रहा है और वे मुक्ति के लिए छटपटा रही हैं। 'शहर में अकेली लड़की' शीर्षक की कहानी में अकेली लड़की अपनी दादी पर पति के जुल्म का विरोध करती है, अदालत का दरवाजा खटखटाती है। बहुत कठिनाइयों के बाद आतताई पति से मुक्ति मिलती है तो वह दीदी को पुनर्विवाह के लिए तैयार करती है इस पर वह जवाब देती हुई कहती है –

''मैं क्या करूँ, मेरी चेतना, मेरी अन्तरात्मा, मेरा वजूद सभी कुछ उस वेदना से सना हुआ है। आठ वर्ष का इतिहास मेरी आँखों में भयावह यातनादायी साये की तरह खड़ा है। रक्त पिपासु समय । रक्त पियासु पुरुष! सोचकर सिहरन होने लगती है कि लोग अपने स्वभाव, अपनी आदतों, अभीत्साओं, वासनाओं के कारण किसी की भी जिन्दगी कितनी आसानी के साथ निर्ममतापूर्वक कुचल डालते हैं । मेरा मन

---

1. 'केंचुली' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 61

चीखता रहता है कि क्यों हमारे सपनों और खुशियों को यूँ नेस्तनाबूँद किया गया है ।" (1)

माताओं – सासों की पीड़ा 'वानप्रस्थ' कहानी में केन्द्रस्थ है। इस कहानी की माँ असुविधाओं के बीच गाँव में रहना अपने सम्मान के अनुरूप मानती है और शहरी परिवेश में आकर अन्तिम शब्द कहती है जो पीड़ा का केन्द्र बिन्दु है –

"भानुमति भाग चलो । तुम्हारी हैसियत क्या है ? .... मरते हुए शरीर को अपमानित मत करो ।" (2)

'चौथी पगडंडी' कहानी में अंजू अपने पति की दुश्चरित्रता से प्राप्त दंश को चित्र बनाकर अपनी पीड़ा को व्यक्त करती है –

"मैरी जैसी छोटी चित्रकार को .... क्यों ऐसे बनते हैं चित्र ? कला साधना माँगती है, यूँ समय को नष्ट नहीं करते सच्चे कलाकार.... मेरी उंगलियाँ कोई चमत्कार दिखा सकती ...... मेरी....... प्रदर्शनी लगे ..... लोग देखे .... सराहें .... मैं सुबह से जरूर चित्र बनाऊँगी ..... देर तक खड़ी वह तमाम बातें सोचती रही . ... फिर ...... आकर बैठ गई । " (3)

'अंतिम यात्रा से पहले' की मीनाक्षी पत्नी के टूटने – बिखरने की पीड़ा को भोग चुकी है और बहुत बाद में इस नतीजे पर पहुँचती है कि एक पुरुष, किसी

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' शहर में अकेली लड़की डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 9
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'वानप्रस्थ' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 31
3. 'शहर में अकेली लड़की' 'चौथी पगडंडी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 35

नारी की जिन्दगी को बनाने बिगाड़ने का अधिकारी नहीं बन सकता है । मीनाक्षी अपने पति धीरज से कहती है –

''मेरी समझ में आया कि प्रेम तो कुछ होता ही नहीं है, असल में तो वह समझौता ही होता है, सो जो सामाजिक एवं नैतिक समझौते के बन्धन थे, वे मैंने निभाए है लेकिन अब मैं नहीं निभाऊँगी ।'' (1)

'पुनरागमन' कहानी संग्रह की सबसे महत्वपूर्ण कहानी प्रत्यारोपण, ज्ञान, विज्ञान और समाज के अंधेरे हिस्सों को गहराई से खंगालती है विज्ञान की अहम खोजें कैसे पैसे के हाथों में बिककर सार्वजनिक भलाई की जगह उपभोग का कारण बन गई है ? कुछ भी शाश्वत नहीं है । जब भी कोई अंग खराब होगा, क्लोन के सजीव अंग का प्रत्यारोपण वह करा लेगा, दीर्घायु हो सकेगा तब वह । मगर ऐसे में पत्नी ! पति से प्यार कर पाएगी या उसके क्लोन से । बकरी, भेड़ और फिर मानव क्लोन की तरफ बढ़ता विज्ञान विवादों से घिर गया है। पैसे की ताकत से गुलाम बने वैज्ञानिक और विज्ञान को प्रत्यारोपण एक आवाज देती कहानी है कि वैज्ञानिक उपलब्धियों को बाजार की दासता न सौपीं जाए अन्यथा नाखुदा इतना विशाल हो जाएगा कि जीने का हक सिर्फ सम्पन्न लोगों को रह जाएगा । 'पुनरागमन' कहानी संग्रह में 'सहसा एक बूँद उछली' कहानी में मिनी की मम्मी मिनी को शादी के लिए बाध्य करती है क्योंकि इतनी ज्यादा उम्र तक लड़की का विवाह न होना एक समस्या बन जाती है –

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'अन्तिम यात्रा के पहले' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 47

"क्योंकि उसमें सत्य होता है । उसमें जीवन का अनुभव रहता है .... और अंत में वह गलत नहीं होता । इसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं है सिर्फ तुम्हारी सुरक्षा और सुख है।" (1)

कहानी 'मुक्ति' में जीवन से मृत्यु सहज लगती है । जीवन एक सदमें में प्रतिरूप भर है। मगर उनके जीवन में सुखद स्मृतियाँ होती हैं। वे वीराने की बेचेनी में सहज जीवन जी लेते हैं। शायद स्मृतियाँ विकल्प होती हैं जीवंतता की । कहानी जीवन और मृत्यु की दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करती है । कहानी तत्व मगर दर्शन के बोझ से कुछ हल्का हो जाता है । और शाश्वत सत्य को उजागर करती हुई डॉ0 शिरीष के शब्दों में –

"बताओ काया भी कभी निरोगी, अमर होती है ? इस जगत में मृत्यु सहज धर्म है । ये तो यात्रा है, कोई जल्द जाकर समाप्त करता है और कोई धीमे–धीमे।" (2)

'माँ, बेटी और चिड़िया' .... वक्त की सबसे ज्वलंत समस्या को मानस दर्पण के सामने करने का सफल प्रयास है। संस्कारों का गीत गाता राष्ट्र । फिर परिवार क्यों टूट रहे हैं या छोटे हो रहे हैं? रिश्तों की डोर क्यों कमजोर हो गई है? माँ के दूध का मूल्य क्यों इतना गिर रहा है कि बेटा सिर्फ अपनी पत्नी और बच्चों की फिक्र में लगा रहता है ? और यदि परिवार की वह माँ जीवन में पति की उपेक्षा ही पाती रही हो, तो कितना अवसादमय हो जाता है, उसका भविष्य । कई समस्याएँ

---

1. 'पुनरागमन' 'सहसा एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 11
2. 'पुनरागमन' 'मुक्ति' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 29

आज के वातावरण के अनुरूप उभर कर सामने आती है एक भाई दूसरे भाई से कहता है –

"पापा को रहना चाहिए । उनकी जिम्मेदारी नहीं बनती कि माँ की देखभाल करे । इतना तो कर ही सकते हैं ..... ।" (1)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में कुल नौ कहानियाँ है। इन नौ कहानियों में 'किसका चेहरा', 'जुड़े हुए हाथ' और उसका अपना रास्ता इन तीनों कहानियों को छोड़कर शेष छः कहानियाँ विभिन्न पारिवारिक रिश्तों पर लिखी गयी है, और इन छः में से 'हैसियत' 'प्रतीक्षा' और 'निवार्सन' ये तीन कहानियाँ वृद्धों की विभिन्न पस्थितियों तथा समस्याओं से जुड़ी हैं। वृद्धावस्था किसी भी व्यक्ति के जीवन में शारीरिक, मानसिक आर्थिक और संवेदनात्मक स्तर पर सबसे दयनीय अवस्था होती है । लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष ने वृद्धों की इन समस्याओं को अपनी कहानी का विषय बनाया है । 'निर्वासन' एक ऐसे वृद्ध की कथा है जिसने अपना पूरा जीवन अपने बेटों के भविष्य संवारने में लगा दिया लेकिन उसके व्यापार के घाटे में जाते ही उसके बेटों ने स्वंय को उससे अलग कर लिया अब वही वृद्ध सड़क पर भीख माँगने पर मजबूर है –

"ऐ भाई, चार पैसे दे दो । बूढ़ा भूखा है, खाना खाएगा । ऐ बाई साहब, पैसे दे दो, बूढ़ा खाना खाएगा, भूखा है। ऐ बहन जी, पैसा दे दो ।" (2)

---

1. 'पुनरागमन' 'माँ, बेटी और चिड़िया' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 37
2. 'निर्वासन' – 'निर्वासन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 65

'प्रतीक्षा' एक ऐसे वृद्ध दम्पत्ति की कहानी है जिसके दोनो बेटे अपना कैरियर बनाने के चक्कर में अपने माँ–बाप को छोड़कर चले जाते हैं। और दोंनों में कोई भी माँ–बाप को नहीं रखना चाहते । वृद्ध की पीड़ा को फाख्ता पक्षी के माध्यम से डॉ0 शिरीष ने दिखाया है –

''वेशब्द जैसे दोनों ध्यान में लोन हों .... या भविष्य के बारे में सोच रहे हों या किसी चिन्ता में डूबे हों ।'' (1)

पीढ़ी अन्तराल की समस्या पर लिखी गयी 'हैसियत' नामक कहानी एक ऐसे वृद्ध की कहानी है जो नयी पीढ़ी के बीच अपनी प्रांसगिकता बनाए रखने की समस्या से ग्रस्त है। वह परिवार की प्रत्येक घटना, क्रियाकलापों से अपना सरोकार रखना चाहता है किन्तु नई पीढ़ी से तारतम्य बिठा पाने के कारण वह खुद समस्या बन जाता है वह खुद को परिवार की मुख्य धारा में रखना चाहता है। वह कहता है –

''ये लोग क्यों नहीं समझते कि हमें घर के भीतर जगह चाहिए । सबके बीच'' (2)

'धरोहर' कहानी में लेखिका ने शहीदों के सम्बन्धियों को सम्मानित करने के पीछे चलने वाली राजनीति और उनके धन्धे को उद्घाटित किया है। शहीद के माँ–बाप की मुख्य समस्या अपने जीवन के सहारे के छिन जाने की है और इसीलिए वे युद्धों के औचित्य को ही प्रश्न के घेरे में ले जाते हैं। क्योंकि प्रत्येक युद्ध हजारों के जीने का सहारा छीन लेते हैं। वह सम्मानित किये जाने की राजनीति को समझते हैं–

1. 'निर्वासन' 'प्रतीक्षा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 59
2. 'निर्वासन' 'हैसियत' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 57

"सम्मान और सहयोग के नाम पर ले जाकर बैठा देते हैं और बुला देते हैं सम्मानित करने के लिए उन्हें, जिनसे आपकी संस्था को लाभ मिलना होता है। व्यक्तिगत स्वार्थ तथा लाभ की भावना वहाँ भी नहीं छूटती ।" (1)

लड़की का भी समान अधिकार पिता की सम्पत्ति पर है – यह समस्या लेखिका डॉ0 शिरीष की कहानी 'पत्थर की लकीर' का विषय है। बड़ी विचित्र बात है कि प्रायः प्रत्येक औरत बुआ (पिता की बहन) होती है, लेकिन प्रत्येक परिवार में बुआ और सम्पत्ति को लेकर शंका की भावना होती है । शैला जो कहानी की मुख्य पात्र है, विपन्न स्थिति में जी रही अपनी बुआ की सहायता के लिए अपने घर को लड़ती है और प्रश्न उठाती है –

"यहाँ इतना पैसा है, बुआ को कुछ करवा दो । उसके नाम एक फ्लैट खरीद दो । पैसा आएगा तो जी सकेंगी । आपने सुना नहीं, उनको खाने पहनने तक को नहीं मिलता । इस घर की हैं वो फिर इतना अन्तर क्यों । बोलो मम्मी, इतना अन्तर क्यों ?"

'शैला' बुआ को कानून का सहारा लेकर अपने परिवार से सम्पत्ति हासिल कराती है।

अपने कहानी संग्रह 'निर्वासन' में लेखिका ने समाज के बदले हुए स्वरूप के

1. 'निर्वासन' 'धरोहर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 98
2. 'निर्वासन' – 'पत्थर की लकीर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 90

साथ रिश्तों के टूटने, संवेदनाओं के मरने की बात को बड़ी साफगोई से प्रस्तुत किया है ।

'रंगमंच' कहानी संग्रह में सभी कहानियाँ आज की चालाक और जोड़-तोड़ वाली संस्कृति का आइना है और जहाँ गवाह पुलिस, वकील और न्याय बिकाऊ हो गए हों । राजनीति एवं धर्म पथभ्रष्ट एंव जनविरोधी – ऐसे समाज में मानवीय मूल्यों के प्रति विश्वास बनाए रखना कितना कठिन काम हो सकता है । आज का समाज अभिजात वर्ग के कब्जे में है जिससे कई समस्यायें पैदा हुई है।

वे समस्याएँ अपनी जीवंतता ज्वलंता और प्रासंगिकता के साथ घटनाओं के माध्यम से उपस्थित होती है, न कि केवल स्थितियों और विवरणों के रूप में । लगभग सभी कहानियाँ शहरी मध्यवर्गीय जीवन से जुड़ी है, जिनमें से अधिकांश, व्यक्ति के ईमानदार होने की चाहत और ईमानदार बने रहने की समस्या को लेकर चलती है।

'रंगमंच' और 'चांदी की वरक' कहानी सजग और ईमानदार डॉक्टरों की संवेदनशीलता पर आधारित है। 'रंगमंच' कहानी संबधों का 'इस्तेमाल' करने वाले संवेदनहीन समाज से क्रूर और स्वांग के विरुद्ध सच्चाई के लिए संघर्ष की त्रासद परिणति को दर्शाती है। यह कहानी न्याय व्यवस्था के उस खोखलेपन को भी उद्घाटित करती है।

"सबसे ज्यादा व्यथा तो मेरी आत्मा पर तब छा गयी, जब मैंने मजिस्ट्रेट को न्याय की कुर्सी पर बैठे हुए देखा । यह अधबूढ़ा मजिस्ट्रेट क्या जाने कि जलने वालों को किस तरह की हृदय – विदारक पीड़ा होती है या उनका जीवन कितना कुरूप हो जाता है । कितने तरह के सबूत बनाए तथा मिटाए जाते हैं।" (1)

'चाँदी की वरक' सत्ता पद और अधिकार की बर्चस्ववादी मानसिकता के विरुद्ध एक डॉक्टर के प्रतिरोध की कहानी है, जो अस्पताल के जर्जर व्यवस्था – रोगियों की प्रमुख समस्या है। जिसका जिम्मेदार पूरा प्रशासन तंत्र होता है –

"बेटा,मेरे लड़के को बचा लो । उस पर दया करो जो कुछ था सब लग गया । पाई–पाई खरच हो गई। " (2)

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में सात कहानियाँ संग्रहीत है 'सहमा हुआ कल' शीर्षक की कहानी में सवालों के झंझावात में दफन एक छोटी सी, ग्यारह साल की लड़की की मानसिकता की यह कहानी है। वह दिशा – दृष्टि चाहती है कि कोई उसे उसके मस्तिष्क में उठते हुए तीव्र वेग को, सार्थक अंजाम दे सके । वह अनेक प्रश्नों के घेरे में बुरी तरह लिप्त हो जाती है। वह अपने को बड़ों के आगे जाकर दस्तक देती है, इस आशा में कि उसे एक उद्धारक मिल जाएगा जिसकी उसे गहरायी से तलाश है । उसकी इन जिज्ञासाओं का कोई पॉजिटिव मोड़ नहीं मिलता हैं उसकी यह सभी जिज्ञासाएँ पाठक वर्ग के सामने एक समस्या बनकर उभरती है।

---

1. 'रंगमचं' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 17
2. 'रंगमंच' – 'चाँदी की वरक" डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 39

उक्त संग्रह की कहानी 'शून्य' परिस्थितियों व खुद के सृजित जीवन समस्याओं से कमर कसकर जूझने की भरपूर शक्ति है और यही इस कहानी का कथ्य है। पहले प्रेमी–प्रेमिका , वाद में पति – पत्नी के मन या हृदयाकाश में उठते हुए तंरगों का बड़ा ही मार्मिक ओजपूर्ण, मनोवैज्ञानिक चित्रण है। घर, परिवार, समाज से एकदम कटी–कटी उपेक्षित, तिरस्कृत निरूपमा अपने को पद, प्रतिष्ठा मान्यताओं के तहत परिवार वालों के समकक्ष अपने को लाने हेतु अपने प्रखर, तेजस्वी पति प्रशान्त को हर तरह से प्रेरित कर और अपना भरपूर सहयोग दे आई0ए0एस0 की परीक्षा में बैठाती है। और उसका पति परीक्षा में उत्तीर्ण भी हो जाता है। और वह अपनी आर्थिक समस्या से जूझती हुई आगे बढ़ती है।

'सिगरेट' कहानी में चानी किसी लड़की को प्यार करता है, जिसकी मृत्यु एक्सीडेंट में हो जाती है । इस गम को भूल जाने के लिए वह सिगरेट का सहारा लेता है और वह हृदय रोग का शिकार हो जाता है और अपने परिवार से विमुख रहता है। आज वर्तमान युग की धूम्रपान सेवन एक समस्या का रूप लेती जा रही है। जो डॉ0 शिरीष ने अपनी कहानी के माध्यम से उजागर की है। चानी की स्थिति का वर्णन एक लड़की करती है –

"चानी न तो आजकल समय पर ऑफिस जाते हैं, न पढ़ते हैं, न लिखते हैं । रात में देर तक जागते रहते हैं। " (1)

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'सिगरेट' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 131

'धर्म–अधर्म' कहानी संग्रह में धार्मिक समस्याओं को उभारा गया है। जिसमें नारी की स्थिति बड़ी दयनीय है जो उस समय से स्वतंत्र होने के लिए झटपटा रही है। 'माया महाठगिनी' कहानी में बाप अपनी बच्ची को आश्रम में छोड़ने जाता है जहाँ बालिकाओं को साधुओं की सेवा करनी पड़ती, वहाँ उनका शोषण किया जाता है। गुरुमाता को पास देखकर बच्ची सहम उठी जो डॉ0 शिरीष अपने शब्दों में कहती है –

"वो .... उसका गला भर आया .... एक स्त्री को अपने इतने नजदीक पाकर .... उसका हृदय उमड़ पड़ा .... रूलाई फूटने लगी .... मगर ...... गुरुमाता की तरफ उसने देखा तो महसूस हुआ उनकी आँखो में दया .... ममता या प्रेम नहीं, ... भय पैदा करने वाली कोई छाया उतर आई है।" (1)

---

1. 'धर्म'–अधर्म' 'माया महाठगिनी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 23

(ग) समस्याओं का समाधान :-

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य में सामाजिक व राजनीतिक आर्थिक समस्याओं का समाधान भी उभर कर पाठक वर्ग से सामने प्रस्तुत होता है । नारी की समस्या को केन्द्र बनाकर कहानियों में समाधान भी किया है। जिनमें उनकी सभी कहानियों में दृष्टव्य है। पहला कहानी संग्रह 'वे कौन थे' 'यह सच है' शीर्षक कहानी में नारी की कुंठित भावनाओं को प्रमुखता दी गयी है । वहीं इसका समाधान भी प्रस्तुत किया गया है जो द्रष्टव्य है - शशि की सहेली शशि को खत के माध्यम से कहती है। -

"मैं दीन-हीन निर्धन तथा प्यार से हीन बच्चों को प्यार देकर उन्हें आगे लाना चाहती हूँ, क्योंकि विवशता की जो यातना मैंने भोगी है वैसी कोई न भोगे, मैं यही चाहती हूँ .... शशि, जिंदगी की बीहड़ता पीछे रह गयी है। अब तो लंबा रास्ता मेरे सामने है । मैं उसी पर कदम-दर-कदम बढ़ रही हूँ ।"(1)

'कन्या' विशेष रुप से सांकेतिक शैली में प्रस्तुत कहानी है जिसमें एक अबोध बालिका के साथ के ठेकेदार पण्डित जी के कुकृत्य को खुले रुप में लेखिका ने उभारा है साथ ही समाधान भी सुझाया है - पंडित जी जब हरकत करते है तो वह पंडित जी को पत्थर मार देती है । वह धमकाती है -

---

1. 'वे कौन थे' 'यह सच है' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 26

"कल गाँव वालों के सामने सब कुछ कहूँगी ...... शिवा ने देखा – मानव आकृति को जो अंधरे में गुम होती जा रही थी ....." (1)

'लौट आओ प्यार' कहानी में बाल विवाह समस्या को उठाया गया है। जो आज की समकालीन परिस्थिति के अनुसार समाज में एक भंयकर रूप ले चुकी है। जिसका समाधान भी डॉ0 शिरीष ने अपनी कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है । नायिका कहती है –

"मैं फिर प्रार्थना करने लगती हूँ ... जिन्दगी की एक चाह की भीख माँग रही है भगवन् ! डाल दो इसकी जीवन की झोली में ।" (2)

'मुआवजा' कहानी संग्रह में 'ढ़हते कगार' रमिया नामक एक ऐसी दबंग मजदूरिन की कथा है जो हाड़–तोड़ मेहनत तो करना जानती है, पर किसी भी कीमत पर अत्याचार सहन करना नहीं । उसे पति का मालिक के आगे दब–दबकर रहना और अन्याय सहना बिल्कुल पंसद नही । रमिया अपने पति को समझाती हुई कहती है और सामने मालिक भी खड़ा सुन रहा है –

"तुम डरत हो कर्जा से, हम ऐसे बंधक बनके नहीं रहे .... लो छै सौ रूपैया और ये दो चूरा (कंगन) चलो दे आओ । कर दो उनके घर खाली, हम मजूरी करते पर ऐसे दबके नहीं, रोटी न खा पाओ, नहा धो न पाओ, तीज त्यौहार न मना पाओ, कहीं आ–जा न पाओ, कछु कह न पाओ, हर घड़ी भागमभाग, का जानवर समझ लओ ।"(2)

---

1. 'वे कौन थे' 'कन्या' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 79
2. 'वे कौन थे' 'लौट आओ पयार' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 140
3. 'मुआवजा' 'ढहते कगार' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 59

इस प्रकार इसमें मजदूरों के संघर्षमय जीवन की समस्या को उठाया गया है।

'पलकों पर ठहरी जिन्दगी' कहानी में एक गरीब आध्यपिका माँ की अन्तर्व्यथा को अभिव्यक्त करती है, जिसका इकलौता पुत्र है जो पुत्र हृदयगत जन्मजात विकार से पीड़ित है । उसका पति एक हायर सेकेण्डरी स्कूल सें शिक्षक है और दोनों के पास इतना पैसा नहीं कि पुत्र की शल्य चिकित्सा करवा सकें । लेकिन किसी भगवान के चमत्कार से प्रेरित होकर इस समस्या का समाधान करते हुए कोई अजनबी कहता है -

"बैलूर या बम्बई .... करवा लो ऑपरेशन ! लो ये हैं पैसे .... जिंदगी से बढ़कर तो नहीं हैं पैसे ......" (1)

प्रमुख कहानी 'मुआवजा' में लेखिका ने पाती नामक ऐसी युवती के मनोभावों, व्यवहार और अन्तर्द्वन्द्व का जीवन्त चित्रण किया है, जो किशोरावस्था की दहलीज में कदम रखते ही विधवा हो जाती है । इस प्रकार पाती हमारे देश की ऐसी हजारों असमय विधवा हुई स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है, जिन्हें हमारे समाज की वर्जनाओं के कारण अपनी इच्छाओं को दमित कर तिल-तिल घुट्कर ही जीना है। इसका समाधान डॉ0 शिरीष ने कुछ हद तक किया है -

"अब तुम एक नयी जिंदगी शुरू करोगी उस बच्चे के साथ ..... उसको स्कूल भेजोगी न ...... उसका नाम क्या रखोगी .... सोचो?" (2)

---

1. 'मुआवजा' 'पलकों पर ठहरी जिदंगी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 48
2. 'मुआवजा' 'मुआवजा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 140

इस प्रकार 'पाती' के माध्यम से विधवाओं की समाज में दशा को देखकर पुर्नविवाह द्वारा इस समस्या का समाधान प्रस्तुत किया है।

'केंचुली' कहानी संग्रह में कई समस्याओं का समाधान मिलता है जो समकालीन वातावरण में समाहित एक विशेष परिवेश पैदा करती है जिसमें नई – नई समस्याएं उत्पन्न हुई है और सभी समस्याओं का समाधान भी खोज निकाला है । लेखिका ने 'केंचुली' कहानी को अपनी प्रिय कहानी बना दिया है। सभी कहानियाँ यथार्थपूर्ण हैं, जो आज के जीवन पर पड़े सफेद और काले परदे को हटाकर हमें वास्तविकता देखने पर बाध्य करती है । वर्तमान युग के परिवेश को 'साझेदारी' दर्शाती है जिसमें हर समस्या का समाधान होता है । पुत्र न होने पर दूसरी स्त्री के गर्भ से सन्तान पैदा करवा लेना । पीढ़ी को आगे बढ़ाने का समाधान है – लेकिन स्त्री जाति समस्या का तो समाधान है लेकिन उसका हृदय सदा उसे धिक्कारता है वह कहती है –

"दौलत की ताकत से ममता खरीद लो, बच्चा पैदा करवा लो औरत न हुई मशीन हो गयी । मैं इनकी दौलत को लात मार दूँगी । कोई नहीं खरीद सकता मेरी ममता को । मेरे प्यार को । मेरे बच्चे को ।" (1)

'हिसाब' कहानी कमाऊ पत्नी के शोषण की कहानी है, जहाँ माँ–बाप अपने पुत्र को पत्नी के विरूद्ध भड़काते है तो एक पारिवारिक समस्या उत्पन्न हो जाती है । जिसका समाधान डॉ0 शिरीष अपनी कहानी 'हिसाब' के माध्यम से करती हैं

---

1. 'केंचुली' 'साझेदारी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 22

मंजू जो प्रमुख पात्र अपने पति को पत्र के माध्यम से स्थिति सुनाती है तब सन्तोष को सच्चाई नजर आती है और वह अपनी पत्नी के बारे में सोचता है कि मेरी गलती है और तब एक पारिवारिक समस्या का समाधान होता है । संतोष कहता है –

"यह मैंने क्या किया? कितनी बड़ी गलती की है । बिना बात की इतनी बड़ी सजा । मैं क्यों उसे अलग करके देखता रहा हूँ । मैंने क्यों नहीं सोचा कि वह मेरी पत्नी है। जीवन संगिनी है, मेरी प्रियतमा है। मेरी दोस्त और सहयोगी है। निराशा के घोरतम क्षणों की साथी । मैंने आज तक उसके लिए किया ही क्या है ... ?"(1)

'शून्य' कहानी में निरूपमा और प्रशान्त दस वर्षो के बाद विवाह करते हैं और प्रशान्त आई0ए0एस0 हो जाता है तो वह नहीं चाहता कि पत्नी नौकरी करे तब निरूपमा को आघात पहुँचता है उसे अपने चारों ओर शून्य नजर आता है । जो एक समस्या का रूप ले चुकी है लेकिन डॉ0 शिरीष उसका भी समाधान निकालती है– प्रशान्त कहता है कि –

"कुछ पाने के लिए कुछ तो खोना ही पड़ता है" (2)

<u>'सहमा हुआ कल'</u> संग्रह में घर – परिवार, समाज से एकदम कटी–कटी, उपेक्षित, तिरस्कृत निरूपमा अपने पद, प्रतिष्ठा मान्यताओं के तहत परिवार वालों के समकक्ष अपने को लाने हेतु अपने प्रखर, तेजस्वी पति प्रशान्त को हर तरह से प्रेरित कर और अपना भरपूर सहयोग दे आई0ए0एस0 में बैठाती है और उसका पति

---

1. 'केंचुली' 'हिसाब' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 41
2. 'केंचुली' 'शून्य' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 68

परीक्षा में उत्तीर्ण भी हो जाता है । कहानी का अन्त–प्रशान्त के एक दंभपूर्ण अहम् से ठेस खाकर बुरी तरह आहत हो वह विचलित हो जाती है और वह मानसिक समस्या में उलझ जाती है। इसी प्रकार 'बाबा ! मम्मी को रोको' में उस बच्ची की संत्रास की कहानी है जिसके मम्मी और डैडी अल्ट्रामार्डन हैं। बराबर घर से बाहर ही रहते है। माता–पिता के प्रेम एवं स्नेह के लिए बच्ची तरस जाती रहती है। 'प्रतिरोध' भी मुख्यतः नारी की मानसिकता की कहानी है । 'प्रतिरोध' कहानी में पत्नी पति से कहती है – "कल सुबह मैं ड्यूटी करूँगी, नकल भी पकडूँगी, फार्म भी भरवाऊँगी । जो गलत हो रहा है उसे रोकूँगी ही । .... अगर मौसम लगातार खराब चल रहा तो इसका मतलब यह नहीं कि फूल खिलना बन्द कर देगें ।" (1)

'शहर में अकेली लड़की' संग्रह की 'दाखिला' या 'झूलाघर' जैसी कहानियों को छोड़ दे तो इन कहानियों में हमारे बदलते समय की आहट उस तरह से मौजूद नहीं है जो इधर की कहानियों में एक महत्वपूर्ण स्वर की तरह मिलता है। उर्मिला शिरीष की अधिकांश कहानियों का मूल विषय घर–परिवार और उनमें आते बदलाव हैं। इन कहानियों के जरिए वे हमारे बदलते संबंधों को दिखाने का प्रयास करती है, उनकी विसंगतियों को उभारती है। पढ़ी –लिखी महिलाओं की खासियत है, वे अब पति या सास या किसी अन्य के अत्याचारों को उस तरह से सहन नहीं कर सकती

---

1. 'सहमा हुआ कल' 'प्रतिशोध' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 41

जैसा कि इन कहानियों के पात्र । कहानी 'चौथी पगडण्डी' संग्रह की ऐसे ही कहानी है। कहानी की नायिका अंजू अपने पति के तमाम अन्यायों को दासी भाव से सहती हुई इस जमाने की स्त्री नहीं । पत्नी अपने पति के महिला मित्रों के लिए रसोई में रहे और पति उसे भूलकर अपने ऐश में लगा रहे । यहाँ पत्नी के भीतर आक्रोश नहीं दिखता और प्रत्येक समस्या का समाधान डॉ0 शिरीष बड़ी चतुराई से निकालती हैं - अंजू का पति सहानुभूति प्रकट करता हुआ कहता है -

"मैं चाहता तो उसकी प्रदर्शनी लगवा सकता था । सिर्फ मेरी मूर्खता तथा अवहेलना से एक प्रतिभा असमय कुंठित हो गई ।" (1)

'झूलाघर' आज के समाज की उपज है जहाँ पति - पत्नी कामकाजी होने के कारण अपने बच्चों को यहाँ चंद घंटों के लिए छोड़ जाते हैं। यह आज की जरूरत बन चुका है । कहानी में एक दंपत्ति की व्यथा कथा है । पत्नी के नौकरीपेशा होते ही घर का सारा अनुशासन बिगड़ने लगता है। बिटिया जिद्दी होने लगती है और बेटा कमजोर । बच्चे को एक झूलाघर में डाल देते हैं जहाँ की संचालिका विमला लालची और तंगदिल औरत है यह झूलाघरों की कलई खोलने वाली कहानी है । बच्चे की पीड़ा केवल माँ ही अच्छी तरह से समझ सकती है। जिसको वह स्वीकारती हुई कहती है -

"माँ होकर सब कुछ समझती हूँ । यही तो मेरे दुःख का कारण है।" (2)

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'चौथी पगडण्डी' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 46
2. 'शहर में अकेली लड़की' 'झूलाघर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 24

'दाखिला' भी मध्यवर्गीय परिवारों की और बच्चों की मौजूदा समस्या को उठाने वाली कहानी है जिसमें कहानी की समस्या का समाधान भी कहानी में किया गया है । माँ बच्चे की सफलता में ही तसल्ली करती हुई कहती है –

"लिस्ट में राहुल का नाम था । उसे अपनी आँखो पर विश्वास नहीं हुआ। कई बार देखा तब जाकर आश्वस्त हुई । आँखे छलक आई खुशी से । मेरी मेहनत सफल हुई बेचारे ने कर लिया । इटैलीजेंट है मेरा बेटा । चलो उसके लिए खिलौने खरीद देते है। ढेर से खिलौने मिठाई ।" (1)

'निर्वासन' कहानी संग्रह में मुख्य रूप से पश्चिम की 'यूज एण्ड थ्रो संस्कृति' ने जिस तेजी से हमारे देश में अपने पाँव फैलाये है उसने हमारे पूरे सामाजिक ढाँचे की जड़े हिला कर रख दी है। अब हम इस्तेमाल करने के बाद बेकार हो गई बस्तुओं को ही नहीं इन्सानी मूल्य–मान्यताओं, रिश्तों – नातों, एहसासों और जज्बातों का भी लाभ हासिल होने तक इस्तेमाल करते हैं और लाभ खत्म होने पर कूड़े के ढेर पर फेंक देते हैं। इस संस्कृति का सबसे अधिक खामियाजा बूढ़ों, बच्चों और स्त्रियों को उठाना पड़ रहा है। उर्मिला शिरीष के कहानी संग्रह निर्वासन में लेखिका की सारी चिन्ता इन्हीं तीनों को लेकर है। 'निर्वासन' कहानी के बूढ़े दादा व्यापार में घाटा जाने के कारण घर से भाग खड़े होते हैं –

"वह सिर से पाँव तक कर्ज में डूबे चले गये थे । जितना मूल था उतना ही ब्याज । महीनों क्या सालों तक अकेले अपने बूते पर संघर्ष करते रहे थे। किसी को कुछ नहीं बताते घर में । जब स्थिति अत्यन्त विस्फोटक हो गयी तो कोई संभालने

---

1. 'शहर में अकेली लड़की' 'दाखिला' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 71

वाला नहीं था । जिनसे वह उम्मीद करके बैठे थे, वे गुस्से से भर गये थे । सब स्तब्ध रह गये थे । कोई जमीन छीनने की धमकी दे रहा था तो कोई प्लाट, तो कोई मकान" (1)

'हैसियत' कहानी के बूढ़े पिता घर की आर्थिक सत्ता बेटों को सौंपने के बाद खुद को उपेक्षित और ठगा हुआ महसूस करते हैं और घर छोड़े देते हैं ।

"अनायास ही उनके पाँव स्टेशन की तरफ मुड़ गये । हाथ में एक थैला है और मन में अथाह बोझ । विषाद और क्षोभ की भावना । कितनी तरह की आवाजें मस्तिष्क में टकरा रही हैं परस्पर – चलो । चलो । दूर । यहाँ से दूर। कभी नही लौटेंगें ... अपना कोई नही है यहाँ पर । सब पराये हैं।" (2)

'प्रतीक्षा' कहानी की विधवा माँ अपने दोनो बेटों द्वारा दूसरे शहरों में अपना घर परिवार बसा लेने के कारण खुद को बेहद खाली और अकेला महसूस करने लगती है।

"शादी के बाद उन दोनों ने दो कमरे का मकान बनवाया था । उनका मानना था कि मकान भले ही छोटा हो पर हो अपना उसमें रहने का आनन्द ही कुछ और होता है सन्तुष्टि मिलती है।" (3)

'धरोहर' कहानी युद्ध में शहीद हुए युवा बेटे के दुख और अखबार, सरकार और सामाजिक संस्थानों द्वारा की जा रही शहीद बेटे के यशोगान की नौटंगी से त्रस्त दो ऐसे बूढ़े माँ–बाप की कहानी है। जिन्हें गर्व नहीं आर्थिक सम्बल चाहिए।

"अन्दर से एक बुजुर्ग – से व्यक्ति आते दिखे, जो काफी कमजोर लग रहे

---

1. 'निर्वासन' 'निर्वासन' डॉ० उर्मिला शिरीष पृ० 85
2. 'निर्वासन' 'हैसियत' डॉ० उर्मिला शिरीष पृ० 58
3. 'निर्वासन' 'प्रतीक्षा' डॉ० उर्मिला शिरीष पृ० 65

थे, पर उनके गोरे रंग के चमक विहीन चेहरे पर हिम-शिलाओं – सी दृढ़ता का भाव चिपका हुआ था । ” (1)

'निर्वासन' की सभी कहानियों में समस्या के साथ समाधान भी सुझाया गया है। वैवाहिक जीवन अगर पति-पत्नी के बीच सफल नहीं होता तो तलाक देकर दूसरा विवाह रचाया जाता है। क्योंकि इससे पारिवारिक समस्या का समाधान होता नजर आता है "ठीक साढ़े छह बजे नये पापा आ गये। मामी ने उन्हें चाय-नाश्ता करवाया"(2)

हैसियत कहानी में पिता-पुत्र की समकालीन समस्या का भी समाधान पूर्व होता दिखाई देता है। कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

"हमारे प्राण निकाल दिये तुमने। बिना बताये चले गये। क्या हो गया था ? सब कुछ तुम्हारा नहीं है क्या? चलो क्या लिख दें तुम्हारे नाम! बोलो। ऐसी बात तुम्हारे दिल में आयी कैसे ? कुछ कह सुन लिया तो बुरा माना जाता है।" (3)
'प्रतीक्षा' कहानी में फाख्ता पक्षी के माध्यम से समस्या प्रस्तुत की जाती और फाख्ता को प्रतीक बनाकर समस्या का समाधान किया है। –

"सचमुच ही उन्होंने उस शाम देखा कि एक फाख्ता वहां अकेली चुपचाप बैठी है उनकी आंखों में प्रतीक्षा के रंग घुलने लगें ।" (4)
'निर्वासन' कहानी में अन्त में पुत्र अपने बूढ़े मां-बाप से कहता है –
"मेरे साथ चलिये! मैं भी अब आपको छोड़कर रह नहीं सकता।" (5)

---

1. 'निर्वासन' 'धरोहर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 97
2. 'निर्वासन' 'दहलीज पर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 20
3. 'निर्वासन' 'हैसियत' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 57
4. 'निर्वासन' 'प्रतीक्षा' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 64
5. 'निर्वासन' 'निर्वासन' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 84

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष ने आज के क्रूर होते समय के तात्कालिक आघातों से क्षुब्ध होकर मनुष्य जीवन की त्रासदी के विविध पहलुओं को बेबाकी से खोला है। झूठ, मक्कारी, स्वार्थ, लालच, निर्लज्जता और चरम स्थितियों में मृत्यु जैसे सवालों से टकराती लेखिका धैर्यपूर्वक कहानी का प्रतिपाठ तैयार करती है। इंसानी रिश्तों के श्वेत-श्याम चित्रों की भीतरी तहों में छिपाए गए कांइयापन की धुंध को चुपके से साफ करते हुए वे मनुष्य होने व बने रहने जैसे बुनियादी सवालों से सीधे मुठभेड़ करते हुए रचतीं है। कुछेक स्मरणीय कहानियाँ 'चपेटे' 'गिरगिट' 'अथ भागवत कथा' और 'मरीचिका' जैसी कहानियाँ मौजूद दौर की विसंगतियों और चरमराते जीवन मूल्यों के दौर में छीजती मनुष्यता के बीच चुकती आस्थाओं की निरायास अभिव्यक्तियाँ है, जहाँ स्वार्थ की भयावह दुरभिसंधियों के बीच मनुष्य के अस्तित्व पर ही खतरा मंडराता जा रहा है।

'सहसा एक बूंद उछली' कहानी में जीवन से हारी विकलांग बच्ची की बेवसी व असहनीय यातना पर संवेदना का कोमल फाहा रखते हुए लेखिका पुरूषों के मानसिक दिवालियेपन की बखिया उधेड़तीं हैं। मौजूदा परिस्थितियों में लड़की होने की विवशता होती, जीने की जद्दोजहद में संघर्षरत पात्र की बैचेनी पूरी संवेदनशीलता के साथ उकेरी गई है, इसी तरह माँ-बेटी और चिड़िया कहानी में एक तीखा सवाल उठाया गया है। "माँ आपने क्यों पैदा किया था हमें ?।

पापा तो लड़के ही लड़के चाहते होगें ,जो उनके कारोबार को हिन्दुस्तान भर में फैला दें। हम तो अनवांटेड सन्तानें है। 'पीली धातु' जैसी सशक्त कहानी हाशिये पर चले गए आदिवासी समाज की दस्तावेज है जिसमें यथार्थ की सूक्ष्म बारीकियों को जैसे चिमटी पकड़ कर दिखाया गया है। 'पॅपट शो' कहानी स्त्री जीवन की हकीकत को विस्तार से उद्घाटित करती हुई स्त्री विमर्श का प्रतिपक्ष तैयार करती है। सूक्ष्म मनोभावों का संस्पर्श करती कहानी 'मन न भये दस बीस' हमारे आसपास बिखरी विषमताओं के टुकड़ों को एक साथ जोड़ कर पठनीयता को संवर्धित करती है 'पुनरागमन' कहानी वही पुरानी थीम है – आज के भागदौड़ वाले जीवन से त्रस्त होकर पुरानी दुनिया की तरफ वापसी लेकिन शहरी समस्या को ही ध्यान कर पाती है। डॉ0 शिरीष की कहानियों में समस्या के साथ–साथ उन समस्याओं का उन्मूलन भी सुझाया गया है। 'सहसा एक बूँद उछली' में कुल मिलाकर समाधान ही किया गया है –

"डॉ0 काचरू ने कुदरत पर विजय पा ली थी । मिनी ने सामाजिक बन्धनों की पवित्रता को कायम रखा था ।" (1)

'प्रत्यारोपण' कहानी में जी0डी0 का एक मात्र पुत्र जिसकी मृत्यु हो जाती है तो जी0डी0 केवल भगवान का भरोसा मानते हैं और कहते हैं

"आदमी तो फसल की तरह पैदा होता है, पककर गिर जाता है और पुनः

---

1. 'पुनरागमन' 'सहसा एक बूँद उछली' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 14

पैदा होता है यहाँ क्या स्थिर है ... ? सचमुच ही यहाँ कुछ भी स्थिर नहीं है। कुछ नहीं, नहीं ...... अब वह इसी सत्य के सहारे जीवन की घड़िया गिन रहे थे ।'' (1)

'रंगमंच' कहानी संग्रह वैयक्तिक और सामाजिक यथार्थ से साक्षात्कार कराती है। इन कहानियों में अति संवेदनशीलता एवं नारी मन को अक्सर देखा जा सकता है । नारी मन की अनुभूतियाँ यहाँ जैसे जीवंत हो उठी है। इनमें एक किस्म की आत्मपरकता है जो झूठे पड़ते जा रहे सामाजिक संबन्धों और सरोकारों की वजह से है। इसके अलावा पाँव पसारता राजनैतिक विद्रूप चरमराती व्यवस्था, दम तोड़ते न्याय तंत्र और अर्थ तंत्र इसकी अन्य बजहें है। मानवीयता की बात इस परिदृश्य में बेमानी लगती है। इस परिदृश्य की बिडंबनाएँ और त्रासदियाँ इन कहानियों का विषय है। संग्रह की कहानी 'संमुंदर', 'आज रात का सपना' 'स्वांग' 'तूफान' और 'चीख' शीर्षक कहानियों में करुणा – संवेदना की प्रमाणिकता अभिव्यक्त हुई है। 'रंगमंच' शीर्षक कहानी में पात्रों से ज्यादा परिस्थितियों पर ध्यान दिया गया है । निस्संदेह 'रंगमंच' कहानी संग्रह आत्म विश्वास एवं जिजीविषा से दीप्त पात्रों की चित्र वीथिका है समुन्दर कहानी में बेटी अपने पिताजी से समझौता करते हुए कहती है –

''हमेशा कौन किसका साथ देता है ... ? किसका साथ रहता है ... ? सबको अकेले ही जीना पड़ता है .... । क्या आपके अब भी ये बात समझ में नही आ रही है ? पापा प्लीज, पेड़ तो कटकर गिर ही गया है । उसकी जड़ों को तो मत उखाड़ो।''(2)

---

1. 'पुनरागमन' 'प्रत्यारोपण' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 25
2. 'रंगमंच' 'समुन्दर' डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 23

(घ) कथा साहित्य का उद्देश्य :-

कहानी का मूल उपकरण उद्देश्य है। प्राचीन युगीन कथा साहित्य से लेकर वर्तमान कालीन कहानी तक उद्देश्य तत्व का स्वरूप भी परिवर्तित और विकसित होता रहा है। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से प्रत्येक कहानी की रचना का एक निहित उद्देश्य होता है। यह उद्देश्य पाठ्कों के मनोरंजन से लेकर गम्भीर समस्या का निरूपण तक हो सकता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यदि प्राचीन कथा साहित्य में उद्देश्य के तात्विक स्वरूप पर विचार किया जाय, तो यह ज्ञात होगा कि उसकी रचना मूलतः मनोरंजन तथा उपदेशात्मक की दृष्टि से की जाती थी । जो रचनाएँ मनोरंजन के उद्देश्य से लिखी जाती थी, वे प्रायः कल्पनात्मक होती थी । इनकी रचना का आधार उत्सुकता तथा कौतुहल की वृतियाँ होती थी । सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से कहानी में उत्सुकता का होना आवश्यक है, क्योंकि कहानी का कल्पनामय भाव-जगत पाठक के हृदय में निरन्तर आवेग उत्पन्न करता रहता है। कहानी की घट्नाएँ क्रमवद्ध रूप से परस्पर संघटित होते हुए भी एक चमत्कारिक शिल्प रूप में संयोजित होनी चाहिए, क्योंकि वैसा होने से पाठक के हृदय में निरन्तर कौतूहल की भावना बनी रहती है। कौतूहल सृष्टि के माध्यम से पाठ्कों का मनोरंजन करने की प्रवृत्ति किसी न किसी रूप में वर्तमान युग तक चली आ रही है। उपदेशात्मकता की वृत्ति प्राचीन नीति कथा साहित्य में मिलती हैं ये कथाएं प्रायः दार्शनिक अथवा धार्मिक सूत्रों को आधार बनाकर लिखी जाती थी । आधुनिक कहानी के आरम्भिक रचना काल से उद्देश्य तत्व

के क्षेत्र में विस्तार हुआ । अब विविध प्रकार की बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक कोटियों की समस्याओं का निदर्शन भी कहानी में किया जाने लगा ।

उद्देश्य तत्वगत क्षेत्र विस्तार के कारण ही आधुनिक कहानीकार इसके प्रति विशेष रूप से आग्रहशील दिखाई देता है । वह अपने अभीष्ट की व्यंजना प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में करके उसका वैशिष्ट्य निरूपित करता है ।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अनेक विचारों ने कहानी के उद्देश्य तत्व के स्वरूप के विषय में अपने विविध मत अभिव्यक्त किये है। 'डॉ0 श्यामसुन्दर दास' के अनुसार –

"कहानी एक निश्चित लक्ष्य को आधार बनाकर लिखी जाती है। तथा उसी की पूर्ति के लिए उसमें अन्य तत्वों की योजना होती है। यदि ये तत्व उस लक्ष्य की पूर्ति में सहायक नहीं होते और उनकी स्वतंत्र सत्ता होती है, तो कहानी सफल नहीं कही जा सकती । इस रूप में एक ही मुख्य लक्ष्य या भाव की अभिव्यक्ति करना, आख्यायिका कला की अनिवार्य और प्राथमिकता विशेषता है।" (1)

'डॉ0 गुलाव राय' के अनुसार –

"प्रत्येक कहानी में कोई उद्देश्य या लक्ष्य अवश्य रहता है । कहानी का ध्येय केवल मनोरंजन या लम्बी रातों को काटकर छोटा करना नहीं है, वरन जीवन

---

1. 'साहित्यलोचन' डॉ0 श्याम सुन्दर दास पृ0 195

सम्बन्धी कुछ तथ्य देना या मानव-मन का विकट परिचय कराना है। किन्तु वह उद्देश्य या तथ्य हितोपदेश या ईसा की कहानियों की भाँति व्यक्त नहीं किया जाता है। वह अधिकांश में व्यंजित ही रहता है। कहानी के अध्ययन में उसका उद्देश्य समझना एक आवश्यक बात होती है।'' (1)

'श्री रायकृष्ण दास' के अनुसार कहानी का उद्देश्य इस प्रकार है –

''आख्यायिका चाहे किसी लक्ष्य को सामने रखकर लिखी गई हो या लक्ष्य विहीन हो, मनोरंजन के साथ-साथ अवश्य किसी न किसी सत्य का उद्‌घाटन करती है। '' (2)

'प्रो0 देवमित्र' के विचार –

''कहानी के तत्वों में उद्देश्य तथा रस का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य के अन्य अंगो की तुलना में कहानी ही वह अकेला अंग है, जिसमें सोद्देश्यता स्वाभाविक ठहरायी जाती है। सबसे पहले हमें यह समझ लेना चाहिए कि सोद्देश्यता और उपदेशात्मकता में बहुत अन्तर है। सोद्देश्य होने का तात्पर्य इतना ही है कि उसका अपना कुछ लक्ष्य होता है, प्रयोजन होता है । यूँ तो साहित्य के प्रत्येक अंग का अपना कुछ प्रयोजन होता, किन्तु वह प्रयोजन कुछ इस तरह उसमें घुला मिला होता है कि उसको पृथक करके अलग नाम नहीं दिया जा सकता ।'' (3)

---

1. 'काव्य के रूप' डॉ0 गुलाब राय पृ0 224
2. 'इक्कीस कहानियाँ' श्री राय कृष्णदास पृ0 5
3. 'कहानी के रूप और तत्व' प्रो0 देवमित्र पृ0 6

पाश्चात्य साहित्य विचारकों ने भी कहानी में उद्देश्य तत्व के स्वरूप पर विभिन्न दृष्टियों से विचार किया है –

पाश्चात्य साहित्यकार 'फोर्ड एम0 व्हेफर' के अनुसार –

"कहानी का उद्देश्य केवल घटना व्यापार का चित्रण है। उसमें उपदेशात्मकता अथवा किसी प्रकार की शिक्षा का दिग्दर्शन और औचित्यपूर्ण नहीं है।" (1)

'सर ए0एम0सी0 क्लार्क' ने कहानी के उद्देश्य तत्व विचार करते हुए इस तथ्य की ओर संकेत किया है –

"कहानी में जीवन का जो रूप प्रस्तुत किया जाता है, उसमें यथार्थ के साथ उद्देश्य का भी योग होता है। लेखक मानव जीवन के किसी क्षेत्र विशेष का पर्यवेक्षण करता है और फिर उन्हीं को अपनी कल्पना की सहायता से एक ऐसा स्वरूप प्रदान करता है, जो उसका अभीष्ट होता है । इस दृष्टिकोण से क्लार्क ने इस मन्तव्य की स्थापना की है कि कहानी का आधारभूत उद्देश्य यथार्थ का चित्रण करना नहीं है।"(2)

'रोम्या रोलां' ने साहित्य के उद्देश्य तत्व के सम्बन्ध में सामान्य रूप से अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया है कि उसके माध्यम से जब तक लेखक अपनी जीविका नहीं अर्जित करेगा, तब तक उसे गम्भीरता नहीं प्रदान करेगा । उसने अपने इस मन्तव्य का प्रतिपादन किया है –

"यदि कोई लेखक जीविका की दृष्टि से किसी अन्य व्यवसाय पर आश्रित रहता है, और केवल शौक, व्यसन अथवा मनोरंजन के लिए साहित्य सृजन करता

---

1. 'स्टोरीज फ्राम गाई डी मोमासां, भूमिका' 'फोर्ड एम0 व्हेफर''
2. 'ए मैनुअल ऑफ शॉर्ट स्टोरी' 'ए0एम0सी0 क्लार्क'' पृ0 118

है, वह साहित्य का सच्चा आराधक नहीं है। सच्चे कलाकार के लिए कला ही उसका जीवन और आत्मा होती है । यह भावना तभी उसमें आ सकती है, जब वह पूर्ण रूप से उसी पर आश्रित हो । कहानी के उद्देश्य को उसका एक ऐसा तत्व निर्दिष्ट किया है, जो उसमें आदि से लेकर अन्त तक व्याप्त रहता है।'' (1)

'ए0जे0स्मिथ' तथा 'डब्लू0एच0मैसन' ने कहानी के परंपरागत उद्देश्य पर विचार करते हुए बताया है –

''आज का पाठ्क कहानी से मनोरंजन से अधिक कुछ और भी अपेक्षा करता है'' (2)

समकालीन कहानी के विविध तत्वों के क्षेत्र मे इतना विस्तार और व्यापकता मिलती है कि उसके रचना उद्देश्य का स्वरूपगत वैशिष्ट्य स्वतः स्पष्ट हो गया है। समकालीन जीवन की जटिलता ने भी कहानी तथा रचनात्मक साहित्य की अन्य विधाओं को उद्देश्यमूलक तत्व प्रदान किया है। अब कला या साहित्य की रूढ़िपरक धारणाएँ समाप्त हो गयी हैं और उनके स्थान पर इनकी गम्भीर उद्देश्य मूलकता मान्य हो गयी है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य का मुख्य उद्देश्य नारी चेतना को जाग्रत करना है, क्योंकि वर्तमान समाज में पाश्चात्य समाज की छाया पड़ गयी है और हमारी नारी शक्ति पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा है जो स्वतंत्र होने के लिए बन्द

---

1. 'क्रियेटिव टैक्नीक इन फिक्शन' फ्रासिंस विवयन, पृ0 62
2. 'शार्ट स्टोरी स्टडी' : ए क्रिटिकल एंथालॉजी, प्राक्कथन, ए0जी0स्मिथ तथा श्री डब्लू0एच0मैसन, पृ0 3

पक्षी की तरह फड़फड़ा रही है। जिसको शिरीष ने अपनी कहानियों के माध्यम से एक सीख दी है कि नारी प्राचीनकाल से ही सर्वोच्च रही है। और आज भी पुरूष वर्ग की प्रेरणा नारी है और भविष्य में भी रहेगी । 'डॉ0 विक्रम कुमार' लिखते हैं –

"कहानियाँ सिर्फ मन – बहलाने या खाली समय को पाटने के लिए नहीं होती, उनमें जीवन के ऐसे अबूझ प्रश्न छूटते हैं जिनके उत्तर संघर्ष तथा साहस के रूप में मिलते हैं।" (1)

एक साक्षात्कार में 'डॉ0 शिरीष' अपने लेखन का उद्देश्य स्पष्ट करती हुई कहती है –

"लेखन के बिना मेरा अपना अस्तित्व क्या है, मैं नही समझ पाती हूँ । मानसिक, आत्मिक कथा तथा मनुष्य समाज से जुड़े होने का बोध लेखन ही करवाता है, जीवन को इंसानों को समझने की दृष्टि देता है साहित्य । जैसे – जैसे साहित्य की दुनिया में उतरते हैं, विराट मानव समाज का साक्षात्कार होता है। समाज, देश की सीमाओं से परे विश्व समुदाय से जुड़ा हुआ पाते हैं । चाहे स्त्री – पुरूष हो या बच्चे वे भारतीय हो या विदेशी भावनाएँ तो सबकी कहीं न कहीं मिलती ही हैं।" (2)

कथाकार उर्मिला शिरीष और मनीषा गुरू की बातचीत जो प्रकाशित हो चुकी

---

1. नवभारत इन्दौर दिनांक 3 फरवरी 1985 (प्रकाशित)
2. गीतांजलि सरोवर नई दिल्ली मार्च (द्वितीय) 2003 (प्रकाशित)

है । उसके कुछ अंश कथा साहित्य का उद्देश्य प्रकट करते हैं –

"राजनीति है, भ्रष्टचार है, भूमंडलीकरण है, बाजारवाद है, मीडिया के प्रभावों के परिणाम है, सांस्कृतिक बदलाव तथा मानवीय संबंधों में आ रहे परिवर्तन की तस्वीर है, केन्द्र में यदि दोनों विषय है तो इसमें बुराई क्या है ? उपेक्षित चीजें जब मुख्यधारा में आती हैं तो वे केन्द्र में दिखाई देती है।" (1)

'चर्चित चेहरा' एक समीक्षक लिखते हैं कि –

"स्त्री विमर्श हो रहा है । वैसे भी ये वर्ष महिला सशक्तीकरण वर्ष है। महिलाओं के हर पहलुओं पर अध्ययन, विचार, चिंतन, मनन चल रहा है। महिला भी घरेलु जीवन के अलावा नये – नये क्षेत्रों में आगे आयी । साथ ही पुरूषों से एक कदम आगे बढ़ी हैं।" (2)

अपने लेखन के माध्यम से समाज को नयी दिशा प्रदान करना व एक उद्देश्य देना भी है।

"लेखन के लिए सबसे पहली प्राथमिकता लेखन ही होनी चाहिए । इनका समर्पण, इतना त्यागऔर चीजों को त्यागने की प्रवृत्ति यदि आ जाए तो काफी कुछ काम किया जा सकता है ।" (3)

डॉ0 शिरीष का उद्देश्य त्याग भावना में निहित है।

---

1. 'गीतांजलि सरोवर' नई दिल्ली मार्च (द्वितीय) 2003 (प्रकाशित साक्षात्कार)
2. दैनिक जागरण (प्रकाशित) 17 फरवरी 2003
3. कला संस्कृति / साहित्य दैनिक जागरण 23 फरवरी 2003

सन्दर्भ ग्रन्थ - सूची

1. 'वे कौन थे' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 27 - 28 (दलाल कहानी)
2. 'केंचुली' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 71 (सिगरेट कहानी)
3. 'मुआवजा' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 47 (पलकों पर ठहरी जिन्दगी कहानी)
4. 'शहर में अकेली लड़की' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 31 (वानप्रस्थ कहानी)
5. 'पुनरागमन' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 29 (मुक्ति कहानी)
6. 'निर्वासन' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 65 (निर्वासन कहानी)
7. 'रंगमंच' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 39 (चाँदी की वरक कहानी)
8. 'सहमा हुआ कल' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 131 (सिगरेट कहानी)
9. 'धर्म-अधर्म' (कहानी संग्रह) डॉ0 उर्मिला शिरीष पृ0 23 (माया महाठगिनी कहानी)
10. 'साहित्यलोचन' डॉ0 श्याम सुन्दर दास पृ0 195
11. 'काव्य के रूप' डॉ0 गुलाब राय पृ0 224
12. 'इक्कीस कहानियाँ' श्री रामकृष्ण दास पृ0 5
13. 'कहानी के रूप और तत्व' प्रो0 देवमित्र पृ0 6

14. 'स्टोरीज फ्राम गाई डी मीमांसा' (भूमिका) 'फोर्ड एम0 व्हेफर'

15. 'ए मैनुअल ऑफ शार्ट स्टोरी' ए0एम0सी0 क्लार्क पृ0 118

16. 'क्रियेटिव टैक्नीक इन फिक्शन' फ्रासिंस विवयन, पृ0 62

17. 'शार्ट स्टोरी स्टडी : ए क्रिटीकल एंथालॉजी प्राक्कथन' ए0जी0 स्मिथ तथा श्री डब्लू0एच0 मैसन, पृ03

पत्र–पत्रिकाएँ

1. नवभारत (इन्दौर) 3 फरवरी 1985

2. गीतांजलि सरोवर (नई दिल्ली) 2003

3. दैनिक जागरण 17 फरवरी 2003 (कला–संस्कृति/साहित्य)

अध्याय – सप्तम

उपसंहार

(क) डॉ0 उर्मिला शिरीष के समस्त कहानी संग्रहों की सारभूत आलोचना :–

डॉ0 उर्मिला शिरीष हिन्दी समकालीन लेखकों में अच्छी कहानी लेखिका व सम्पादिका हैं। डॉ0 उर्मिला शिरीष समकालीन प्रेमचन्द, प्रसाद, निराला भले ही हो जायें, पर वे महावीर प्रसाद द्विवेदी कभी नहीं हो सकती हैं, उनमें सृजकों को स्थापित करने और उभारने का प्रबल मोह था । उनकी धारणायें और मान्यताएँ थी, जो उन्होंने अपने श्रम के द्वारा शाश्वत साधना अर्जित की । डॉ0 शिरीष को अपने लेखन की वास्तविक ख्याति उनकी विभिन्न कहानियों से प्राप्त हुई । लेखिका डॉ0 शिरीष आत्म बल की धनी हैं इसलिए उन्हें वर्ग बलएकुनावा बलएजाति – सम्प्रदाय जैसे बलों की कोई आवश्यकता नहीं थी । उनकी कहानियों में मनुष्य की धरातलीय जिन्दगी झलकती है। नारी संवेदना उनकी कहानियों का मूल स्वर है। वे अपने आप में एक निर्भीक कहानीकार है। डॉ0 शिरीष के समस्त कहानियों में नारी की वेदना व संवेदना झलकती है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह इस प्रकार है –

वे कौन थे – 'वे कौन थे' कहानी संग्रह में दस कहानियों का संग्रह मिलता है जिनमें प्रमुख कहानियाँ यह सच है, दलाल, अपने लिए, वे कौन थे, कन्या, बाकी

सब ठीक है, सपनों की बारात, कदमों के आगे, सफर जारी है , लौट आओ प्यार, आदि । 'डॉ0 अविनाश' लिखते है – ''कथाकार की तो कम से कम यह धारणा है – वैसे यह सच है – इस संग्रह की ही बल्कि इधर प्रकाशित कुछ प्रसिद्ध कथाकारों की कहानियों से भी अधिक जीवंत कहानी है। इन कहानियों को पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि कथाकार की मन की आँखे खुली हैं । वे केवल देखती ही नहीं देखते हुए को अनुभव भी करती है या करने का प्रयास भी करती हैं, उनकी इन कहानियों की कोई घटना उनके मन का दर्पण बन जाता है, कोई चरित्र उनके अपने मानस की मूरत बन जाता है।'' (1)

'दलाल' जैसी कहानी भले ही वास्तविकता की धरती पर लड़खड़ाती आये, परन्तु उस चरित्र की पीड़ा पराई तो नहीं लगती । माँ का अपनी बेटी को वास्तविकता जानते हुए भी व्याघ्र की मार में भेजना सामान्य घटना भले न हो परन्तु आश्चर्य या अजूबा भी नहीं है।

'वे कौन थे' की समीक्षा करते हुए 'हेमचन्द पहारे' लिखते हैं –

''बहरहाल 'कन्या' व 'दलाल' कहानियों को संग्रह की अच्छी कहानियाँ कहा जा सकता है। 'कन्या' में एक अल्पवयस्क बालिका की विडंबना का यथार्थ चित्रण है जिसे उसका पिता एक कथा – वाचक पंडित की सेवा करने के लिए कहता है तथा पंडित उसका लाभ उठाता है। इसके विपरीत 'दलाल' में लड़की की माँ अपनी बेटी

---

1. पुस्तक समीक्षा – अविनाश, अक्षरा 20 अक्टूबर 91

को सर पर एक झोपड़ी पाने की लालच में एक ऐसे व्यक्ति के साथ रहने को मजबूर करती है जिसे लड़की नहीं चाहती है।'' (1)

प्रस्तुत संग्रह की कहानी 'वे कौन थे' में तकदीर के मारे तीन युवक का कुछ मार्मिक सा चित्रण है जो शहर में अपनी किस्मत आजमाने आते हैं और मात खाते हैं । और शेष सभी कहानियाँ सहृदयतावश पढ़ी जा सकती हैं।

मुआवजा कहानी संग्रह पांच कहानियों का संग्रह है। जिनमें प्रमुख हैं – उसका अपनापन, सवाल, पलकों पर ठहरी जिंदगी, ढहते कगार, मुआवजा आदि । इस संकलन में भाषा का प्रवाह और परिपक्वता निरीक्षण की क्षमता और कथ्य की स्पष्टता साफ परिलक्षित होती है प्रथम कहानी 'उसका अपनापन' में एक ऐसे बेटे की व्यथा – कथा की गयी है, जिसकी माँ को उसके पिता ने छोड़कर दूसरा विवाह रचा लिया है। जवान बेटा अभावों की मार से बेदम और पितृत्व की छाँव से छूटा हुआ है।

लेकिन इस सबके बाद भी उसके मन में अपने पिता के प्रति कोई आक्रोश न होकर एक अजीब करूण सा अपनापन है। वह जानता है कि उसकी नयी माँ के बच्चे कान्वेंट में पढ़ते हैं । वह अपने पिता से इतना ही चाहता है कि उसका छोटा भाई सरकारी स्कूल में ही पढ़ ले और उसे वह कुछ आर्थिक सहायता प्रदान करे । पिता (एल0पी0) ने दूसरा विवाह रचाने के बाद पहली पत्नी और बच्चों से किसी

1. 'अक्षर विश्व' 52 / ऋतु चक्र / जून / 1994

प्रकार का संबन्ध नही रखना चाहा । लेकिन इस उपेक्षित बेटे के अपनेपन के कारण उन्हें बार-बार आत्मग्लानि होती है।

इस कहानी का महत्व ऐसे पिता के व्यवहार और उपेक्षित अभाव ग्रस्त बेटे के सोच को वस्तुपरक ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम बन पड़ता है। दूसरी कहानी 'सवाल' में रिटायर्ड अध्यापक की व्यथा-कथा और उसकी बेरोजगारी को बड़ी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। तीसरी कहानी 'पलकों पर ठहरी जिन्दगी' में करूणा का स्त्रोत ही प्रवाहित हुआ है । इकलौते और अपाहिज बेटे की माँ ने अपना सारा ध्यान इसी पर केन्द्रित कर रखा है। पात्रों के चरित्रांकन तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में कहानी निश्चय ही पठनीय और प्रभाव प्रवण बन गयी है। चौथी कहानी 'ढहते कगार' सामान्य वर्गीय दंपति की करूण गाथा है। आजादी के इतने वर्षो के बाद भी असहाय श्रमिकों की शोषण गाथा इस कहानी में बड़ी संवेदना के साथ कही गयी है।

'केंचुली' कहानी संग्रह में कुल छः कहानियों का संकलन किया गया है । जिनमें साझेदारी, हिसाब, शून्य, सिगरेट, चौथी पगडण्डी, केंचुली आदि । प्रायः सभी कहानियों में प्रेम, विवाह, दहेज, विवाह से पूर्व एवं विवाह के पश्चात परिवार व्यक्ति, नौकरी, बड़े - बड़ों की बीमारी उनकी मानसिकता परिवार के संघटन की कथा - व्यथा, सास - बहू या परिवार के अन्य सदस्यों के साथ समायोजन, स्त्री के प्रति

पुरूष का स्वाभाविक अविश्वास, स्त्री की सरल समर्पण मानसिकता, दहेज, विवाह और प्रेम विवाह की भिन्न – भिन्न मानसिकताओं से उत्पन्न आचार – विचार की विविधता, स्त्री की आर्थिक स्वाधीनता पराधीनता की समस्या, पुरूष का दुर्व्यवहार और निरर्थक प्रभुताजन्य अंहकार तथा साथ ही नारी महिमा को स्वीकार करने की पुरूषों की श्रेष्ठ सामाजिक आधुनिक नगरीय जीवन जैसी समस्याएं इस कथा संग्रह में मुख्य विषय हैं।

'केंचुली' कहानी को अपनी प्रिय कहानी बना दिया है केंचुली कहानी की मुख्य पात्र लतिका आधुनिक वैज्ञानिक सभ्यता की मुक्त मानसिकता से प्रभावित एम0वी0बी0एस0 छात्रा है। जो स्वतंत्र जीवन की पक्षधर है दूसरी ओर उसके माँ–बाप भारतीय परम्परा के खानदान वाद का निर्वाह करने के लिये सम्भ्रांत परिवार के (सिविल जज, कानून विद, न्याय विद) से उसका विवाह कर देते हैं। ससुराल में लतिका को अविश्वास नियंत्रण और असहयोग मिलता है उसका जीवन अधूरा रहकर धीरे–धीरे टूट जाता है।

भारतीय समाज अपनी पुरानी केंचुली हरगिज नहीं छोड़ता जब तक व्यवस्था में परिवर्तन नहीं होगा, पुरानी केंचुली नही हटायी जायेगी । तब तक यह समाज शान्त और योग्य जीवन के लिए विषैला ही बना रहेगा, 'चौथी पगडण्डी' में दहेज 'साझेदारी' में अन्धे प्रेम, 'हिसाब' में पुनः दहेज 'शून्य' में प्रेमविवाह, 'सिगरेट' में दाम्पत्य जीवन की विविध समस्याएँ चित्रित हैं। अधिकांश कहानियों में जज,

मजिस्ट्रेट, व्यवस्थापक, अध्यापक, धनाड्य स्त्री पुरूषों का आगमन होता है। सभी कहानियाँ यथार्थपूर्ण हैं, जो आज के जीवन पर पड़े सफेद और काले पर्दे को हटाकर हमें वास्तविकता देखने को बाध्य करती है । प्रेमचन्द की भाँति यथार्थ भी न तो विविधता है और न ही समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था, किन्तु लेखिका जहाँ है वहाँ के वस्तु परक सम्यक् जीवन का चित्र कलात्मक सौष्ठव एवं अपेक्षित संशय के साथ प्रस्तुत करने में वह पूर्ण सफल रही है।

'सहमा हुआ कल' – कहानी संग्रह में सात कहानियों का संकलन किया गया है। जिनमें प्रमुख सहमा हुआ कल, प्रतिरोध, कोशिश, बाबा! मम्मी को रोको, शून्य अतीत जीवी, सिगरेट आदि । 'सहमा हुआ कल' में सात कहानियाँ संग्रहीत हैं। लेखिका की प्रस्तुत कहानी – संग्रह की कहानी इसी नाम से है। सवालों के झंझावात में दफन एक छोटी सी ग्यारह साल की लड़की की मानसिकता की यह कहानी है वह दिशा – दृष्टि चाहती है कि कोई उसे उसके मस्तिष्क में उठते हुए तीव्र वेग को, सार्थक अंजाम दे सके । वह अनेक प्रश्नों के घेरे में बुरी तरह गिरफ्त हो जाती है। वह अपने को बड़ों के आगे जाकर बार – बार दस्तक देती है, इस आशा में कि उसे एक ठहराव मिल जायेगा जिसकी उसे गहराई से तलाश है । अन्त में अबोध लड़की तिलमिला जाती है और घुटन महसूस करने लगती है। अन्ततः बीमार और बेहोशी में तड़पकर कहती है – "हम कविताएँ लिखेंगे, चित्र बनाऐंगे, गुलाब के

पौधे लगाएँगे।'' डॉ0 शिरीष ने लड़की द्वारा हमजोली बंटी को संबोधित चंदखानों के माध्यम से अपने कथ्य को एक ठोस आयाम दिया है।

संग्रह की एक अन्य कहानी 'शून्य' है बहुत प्रवाह है इस कहानी में वैसे भी डॉ0 शिरीष की भाषा और भाव में सहज सामंजस्य है। उसमें परिस्थितियों व खुद के सृजित जीवन समस्याओं में कमर कसकर जूझने की भरपूर शक्ति है और यही इस कहानी का कथ्य है।

पहले प्रेमी – प्रेमिका, बाद में पति – पत्नी के मन व हृदयाकाश में उठते हुए तरंगों का बड़ा ही मार्मिक ओजपूर्ण, मनोवैज्ञानिक चित्रण है।

'सिगरेट' कहानी में चानी किसी लड़की को प्यार करता है जिसकी मृत्यु एक्सीडेंट में हो जाती है। इस गम को भूल जाने के लिए वह सिगरेट का सहारा लेता है और हृदय रोग का शिकार हो जाता है । खासकर अपने परिवार के सदस्यों के प्रति अत्याधिक उन्मुख रहता है वह कहता है – हम कोई नही एक सिगरेट की तरह जलते रहे हैं ... जिसका एक सिरा चानी के होंठो पर और दूसरे पर सिर्फ राख बनते हम । बहुत दर्द, पीड़ा है जो मर्म को स्पर्श कर जाता है।

<u>कोशिश</u> – कहानी में संतान न रहने की तड़प राशि को है। अपनी बहन के लड़के को लाकर अपने पास रखती है लेकिन बहन की इस उक्ति पर 'जब राशि को दूसरे के बेटे से इतना लगाव है, तो हमें अपने बेटे से कितना प्रेम तथा लगाव हो सकता

है वह बिफर जाती है । फिर चाचा की बेटी को ले आती है, लेकिन वह घर का सामान चुरा-चुरा कर अपने माँ-बाप को देती रहती है। राशि को इस हरकत से बड़ा कष्ट होता है और वह उसे वापिस कर देती है। उसका पति रवि पत्नी की जिन्दगी में खुशी लाने के लिए राशि को बलात् इस पर राजी कर लेता है कि वह 'सीमन बैंक' से गायनेकोलाजिस्ट के निदेशन में कृत्रिम गर्भादान करवा ले और इसी क्रम में बच्चा हो भी जाता है। इस प्रकार इस तथाकथित मासिक बलात्कार की प्रतिक्रिया में राशि को महसूस होता है कि रवि को पिता का प्यार शिशु को उन्मुकता के साथ देना चाहिए वह नहीं दे पा रहा है। राशि और रवि के बीच संकोच की गाँठ बंधती चली जाती है आपस की दूरियाँ बढ़ती जाती हैं और दोंनों के जीवन में तनाव गहराता जाता है। इसी प्रकार 'बाबा! मम्मी को रोको' में उस बच्ची की संत्रास की कहानी है जिसके मम्मी और पापा अल्ट्रामार्डन हैं। बराबर घर से बाहर ही रहते हैं। माता-पिता के प्रेम व स्नेह के लिए बच्ची तरस जाती है।

'प्रतिरोध' और अतीत जीवी मुख्यतः नारी की मानसिकता की कहानी है । डॉ0 उर्मिला शिरीष के इस संकलन के प्रायः सभी कहानियों की भाव - भूमि मध्य वर्ग व कुछ-कुछ उच्च वर्ग से रही है। तत्वों को उभारने की अधिक कोशिश की है। कहानी के पात्र वास्तविकता और 'ट्रीटमेंट' तर्क संगत एवं क्रमबद्ध है। संत्रास की अनुभूतियाँ प्रखर हैं।

'शहर में अकेली लड़की' कहानी संग्रह में आठ कहानियों का संकलन किया गया है जिनमें प्रमुख हैं – शहर में अकेली लड़की, झूलाघर, वानप्रस्थ, चौथी पगडण्डी, अन्तिम यात्रा से पहले न बन्द करो द्वार, दाखिला, लौटकर जाना कहाँ है आदि । इस संग्रह की दाखिला या झूलाघर जैसी कहानियों को छोड़ दे तो इन कहानियों में हमारे बदलते समय की आहट उस तरह से मौजूद नहीं है जो इधर की कहानियों में एक महत्वपूर्ण स्वर की तरह मिलता है।

डॉ0 उर्मिला शिरीष की अधिकांश कहानियों का मूल विषय घर परिवार और उनमें आते बदलाव हैं इन कहानियों के जरिए वे हमारे बदलते संबन्धों को दिखाने का प्रयास करती हैं। उनकी विसंगतियों को उभारती है। लेकिन कुल मिलाकर सभी कहानियाँ संतोष नहीं दे पाती हैं।

'झूलाघर' अभी के समाज की उपज है जहाँ पति – पत्नी कामकाजी होने के कारण अपने बच्चों को यहाँ चंद घंटो के लिए छोड़ जाते हैं । यह अभी की जरूरत बन चुका है । कहानी में एक दंपति की व्यथा – कथा है। पत्नी के नौकरी पेशा होते ही घर का सारा अनुशासन बिगड़ने लगता है। बिटिया जिद्दी होने लगती है और बेटा कमजोर । बच्चे को झूलाघर में डाल देते है, जहाँ की संचालिका विमला, लालची और तंगदिल औरत है। कहानी का केन्द्र कमाऊँ दम्पति की विवशता बन जाती है। यह झूलाघरों की कलई खोलने वाली कहानी है।

'दाखिला' कहानी भी मध्यवर्गीय परिवारों की ओर बच्चों की मौजूदा समस्या को उठाने वाली कहानी है । अच्छे स्कूल में दाखिला महानगर में रहने वाले औसत मध्यमवर्ग की गम्भीर समस्या है।

ये सभी कहानियाँ औसत भारतीय मध्यवर्गीय घर-परिवार के दायरे की कहानियाँ हैं। यह कतई जरूरी नहीं कि अच्छी कहानी के लिए 'प्लाट' बाहर के ही हों अच्छी कहानी घर अथवा बाहर से नहीं, अपनी अंतर्वस्तु और संवेदना से बनती है।

'रंगमंच' कहानी संग्रह में दस कहानियों का संकलन किया गया है जिनमें रंगमंच, समुन्दर, भाग्यविधाता, चाँदी का वरक, उस रात का सपना, पत्ते झड़ रहे हैं, बाँधों न नाव इस ठाँव, बन्धु !, स्वाँग, तूफान, चीख आदि । डॉ0 उर्मिला शिरीष के इस कहानी संग्रह की हर कहानी में गहन गम्भीर विश्लेषण संकेत मिलता है कि लेखिका विभक्तियों की कायल नहीं है एक खास दायरे में बाहरी कुरूप एवं निरंकुश फोर्स से वह परिचित है और अन्दर के समीकरणों के बदलाव में उस बाहरी शक्ति का बड़ा हाथ है यह बात अलग है कि कहानियों के फलक में वह व्यापकता नहीं है जिसकी दरकार अब डॉ0 शिरीष से की जा सकती हैं, अन्याय, अत्याचार, बेबसी, स्वतंत्रता का अहसास कहानियाँ प्रदान करती है किन्तु उस छुपे हुए चक्रव्यूह पर वार नहीं करती हैं जिसके कुचक्र से अभिमन्यु जीवित नहीं लौट पाता है । 'चाँदी की

वरक' में वर्तमान समय की उन विसंगतियों को उकेरने का प्रयत्न किया गया है जिन्हें मिटाने की शपथ लेकर राजनीतिज्ञ विधानसभा या संसद तक पहुँचते हैं और जिन्हें उभरने न देने के लिए सरकारी तंत्र हर माह तन्ख्वाह पाता है। संग्रह की इन कहानियों को लेकर गहराई से सोचें तो महसूस होता है मनुष्य का स्वीकार और अस्वीकार अवसरवादिता की दृष्टि का मोहताज हो गया है । सुख और आनन्द में जो गहरा अंतर है वही हमारी चाहनाओं में भी समा गया है कि हम कहते कुछ और हैं और जीते कुछ और तरह हैं। इस संग्रह की कहानियाँ हमारे सामाजिक परिवेश पर आधारित हैं।

'निर्वासन' कहानी संग्रह में कुल नौ कहानियाँ संकलित की गई है जिनमें – दहलीज पर, किसका चेहरा, जुड़े हुए लोग, हैसियत, प्रतीक्षा, निर्वासन, पत्थर की लकीर, धरोहर, उसका अपना रास्ता आदि । यह संकलन भारतीय समाज में सदियों पुराने रिश्तों के टूटने को रेखांकित करता हुआ बताता चलता है कि अभी भी कहीं–कहीं रिश्तों की वह नर्म छुअन शेष है जो घिरते जा रहे अंधेरे में किसी टिमटिमाते दिये सी आशा बँधाती है। संकलन के नाम वाली कहानी निर्वासन ऐसी ही कहानी है जहाँ अपनी प्रतिभा से अर्जित सम्पत्ति को भी किसी गलत व्यापारिक निर्णय पर खो देने के कारण पिता पुत्रों द्वारा उपेक्षित व अपमानित होने के कारण घर छोड़ देता है और भीख माँगने पर विवश हो जाता है।

'दहलीज' शीर्षक पर लिखी गई कहानी ऐसा ही संकेत देती है जिसमें एक कम उम्र विधवा का पुर्नविवाह कर दिये जाने पर उसके स्कूल जाने वाले पुत्र के सामने एक बड़ा प्रश्नचिन्ह खड़ा हो जाता है? क्योंकि उसका पुनर्विवाह भी दो पुत्रों के एक विधुर से होता है जिसके पहले से ही दो पुत्र हैं । अंततः इस कहानी में मामी की मानवीयता जाग जाती है और वह इस बालक को स्वीकार कर लेती है।

इस संकलन की कहानियों के विषय में मौलिकता है तथा इनके 'ट्रीटमेंट' में एक भावुकता भरा हृदयस्पर्शी मानवीय स्वर उभर कर आता है । इस युग में यह आशावाद भले ही अपवाद जैसा लगता है पर पाठक को एक सन्तोष देता है उत्साह देता है।

'धर्म-अधर्म' कहानी में चौदह कहानियाँ संकलित की गई है जिनमें - माया महाठगिनी, अथ भागवत कथा, कब तक, चमगादड़, सुपारी, रामकन्या के हसीन सपने, प्रेमदीवानी, धर्म-अधर्म, बिनसुर-ताल, कंबल, धूप अभी शेष है, पुनरागमन गिरगिट, चपेटे आदि ।

'धर्म-अधर्म' की कहानियाँ वे कहानियाँ है जो गाँव - देहात से शुरू होकर महानगर तक की जीवनानुभूतियों को अभिव्यक्त करती है। छल-कपट, ऊँच-नीच, जातीय - द्वेष, दलितों की स्थिति, स्वतंत्रता के बाद भारतीय जीवन की वास्तविक तस्वीर, अभावों के बीच जीता हुआ मनुष्य जिसकी मानसिकता तथा चरित्र ऐसा

दिखाई देता है जो कभी नहीं बदलते हैं। जो लोक जीवन से लेकर समाज में उच्चवर्ग तक व्याप्त है। मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्तियों को कैसे बदला जा सकता है। एक तरफ बाहर के परिदृश्य में स्त्रियाँ भक्ति के रूप में उभरती दिखाई देती हैं। वही दूसरी ओर 'धर्म–अधर्म' की नायिका पारिवारिक हिंसा का, पति की प्रताड़ना का शिकार होती है। रिश्तों के खातिर, बच्चों की खातिर ये स्त्रियाँ संबधों के टेढ़े –मेढ़े रास्तों से गुजरकर लहुलूहान होती हुई मन में संबधों की डोर थामे रहती हैं इस विश्वास के साथ कि मनुष्य की कठोरता तथा दुष्टता कभी तो करुणा का रूप धारण करेगी।

'प्रेमदिवानी' की नायिका के दूसरे रास्ते पर चलकर सुख और प्रेम पाना चाहती है। बाँध लेना चाहती है पुरूष को, पर जबरदस्ती कोई किसी से बँधता है, प्रेम तो झरने की तरह होता है ... बहता हुआ ..... निरंतर भिगोता हुआ ।

'पुनरागमन' कहानी संग्रह में अठ्ठारह कहानियों का संकलन किया गया है – सहसा एक बूँद उछ्ली, प्रत्यारोपण, मुक्ति, माँ बेटी और चिड़िया, डोर, सखा, अंतरात्मा की आवाज, जीत, भय, टोहनी, पीली धातु मरीचिका, चपेटे, गिरगिट, अथभागवत कथा, पॅपट शो, मन न भए दस बीस आदि । उर्मिला शिरीष की कहानियाँ भी अलगाव और अमानवीयकरण और बदलते मानवीय संबधों के सन्दर्भ में अपने परिवार में ही पुनरागमन का दंश झेल रहे मनुष्यों की कहानियाँ हैं। हर कहानी बड़े सूक्ष्म ढंग से किसी पात्र के माध्यम से समस्या उठाती है और उनके पूरे परिवेश के यथार्थ और

उसके अन्तर्विरोधों को उजागर करती है । इन कहानियों में स्त्री और वृद्धों के प्रति गहरी संवेदना और जागरूकता दिखायी देती है, जो अपने घर-परिवार में ही हाशिये पर जी रहे हैं, उनकी व्यथा और भावनाओं को बड़े प्रभावशाली ढंग से उर्मिला जी ने व्यक्त किया है। इस संग्रह में 18 कहानियाँ , सबका अपना अलग कथा - विन्यास और शिल्प है।

'रंगमंच' कहानी संग्रह पर प्रख्यात शायर जावेद अख्तर से 'वागेश्वरी' पुरस्कार ग्रहण करते हुये कथा लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष

(ख) डा0 उर्मिला शिरीष के कथा साहित्य का प्रदेय :-

प्रदेय का अर्थ प्रेरणा होता है : डॉ0 उर्मिला शिरीष की प्रत्येक कहानी प्रेरणादायक है । सभी कहानियों के पात्र और चरित्र मानव समाज को किसी न किसी रूप में प्रेरणा देते है । डॉ0 उर्मिला शिरीष एक साक्षात्कार में कहती हैं -

"मैं काल्पनिक पात्रों को लेकर कभी कहानी नहीं लिखती । मेरी स्मृतियों में बसे आसपास के परिवेश से उठाये गये पात्र ही मेरी कहानियों के आधार होते हैं।" (1)

डॉ0 शिरीष के कथा साहित्य में कहानियां सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और धार्मिक प्रेरणाओं से भरी पड़ी हैं। उन प्रेरणाओं को कहानियों के माध्यम से प्राणी को अपनाना चाहिए । जिसमें जीवन सारगर्भित और संघर्षमय बन सके । सभी कहानियों से मानवीय जनमानस में विभिन्न प्रकार की सद प्रवृत्तियों का जन्म भी होता है। प्रत्येक कहानी का शीर्षक प्रेरणात्मक और चिन्तनीय है जिसे मनुष्य अपने व्यवाहारिक और प्रयोगात्मक जीवन में उनको यथार्थ के रूप में देखे । डॉ0 एम0षण्मुखन लिखते हैं -

"पाठ्क गण के दिल और दिमाग बच्चों की निरीह मुस्कुराहट पर ही नहीं, उर्मिला शिरीष की सर्जनात्मकता के करिश्मे पर भी फिदा हो जायेगें ; बेशक।"(2)

---

1. राष्ट्रीय सहारा -- मनीषा शर्मा फरवरी 2004
2. लेख -- प्रो0 हिन्दी विभाग कोच्चि केरला पृ0 6 (डॉ0 एम0 षण्मुखन)

डॉ0 शिरीष की कहानियों में वर्तमान प्रौद्योगिक समाज में नारी के प्रति समूचे समाज की नजरिए में बदलाव आया है। दुनिया भर के नारीवादी आंदोलनों के प्रभाव एवं नारीवादी संगठनों के प्रयास से नारी की सामाजिक हैसियत में बढ़ोत्तरी हुई है। सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र के सभी आयामों में उसे शरीक करने की मानसिकता समाज में पल्लवित हुई है। भारतीय संसद की कुल सदस्यता के तैंतीस प्रतिशत नारी समूह के लिए आरक्षित करने की मजबूत कल्पना इसका ज्वंलत सबूत है। यद्यपि उसके यथार्थ में तब्दील होने का आसार नजर नहीं आ रहा है। दरअसल ये सब नारी के प्रति जो सामंतीय दृष्टि कुछ वर्षों के पहले तक समाज में बरकरार रही थी और उसे समाज के हाशिये में दरकिनार करने का जो जद्दोजहद प्रयास चल रहा था उन सभी प्रतिक्रियावादी सोच और आचरण के खिलाफ उभर आए मजबूत कदम हैं। यही सोच आज की नारी की सोच है जिसके मूल स्वर डॉ0 शिरीष की कहानियों में उभर कर पाठक के सामने आते हैं।

कहानी का कलेवर कितना ही छोटा क्यों न हो उसको परत-दर-परत खोलना तथा संवेदनाओं के सूक्ष्म सूत्रों को पकड़ना, उर्मिला जी की खास शैली है। ऐसी शैली मनोवैज्ञानिक कथाकारों में देखने को मिलती है।

आधुनिक युग की सामाजिक जटिलताओं से उभरे पारिवारिक समस्याओं में उपेक्षित बच्चों और बुजुर्गों को सही अर्थ में प्रस्तुत करने वाली यथार्थवादी कहानीकार

है। 'निर्वासन' कहानी संग्रह में 'उसका अपना रास्ता' शीर्षक कहानी में आज की भोगवादी संस्कृति को 'सौंदर्य प्रतियोगिता' के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। कहानी की नायिका 'वृन्दा' अपने सुन्दर देह को पैसा कमाने का साधन मानकर कॉलेज से लेकर शहर तक की सुंदरी प्रतियोगिताओं में भाग लेती है। प्रथम स्थान पाती है। उसके परिवार के लोग इसे पसंद न करके भी मौन समर्थन करते रहते हैं। सभी कहानियाँ महिला वर्ग और वृद्ध वर्ग की सहज मानवीय संवेदनाओं को यथार्थ ढंग से प्रस्तुत करने में सफल हुई हैं। संयुक्त परिवारों के टूटते बंधन के लिए जिम्मेदार कारणों की तलाश करती है। यह यथार्थ है कि परिवारों के टूटने से अनेक तरह की सामाजिक समस्याएँ पैदा हुई हैं। आत्मीय बोध खत्म हो गया है। एकांगी सुखों को महत्व मिला है। इन्हीं सभी उद्देश्यों की पूर्ति प्रायः सभी कहानियाँ करती हैं। और आज वर्तमान समाज को एक नयी जीवंत प्रेरणा देती है।

'वे कौन थे' कहानी संग्रह से आज वर्तमान समाज को प्रेरणा मिलती है कि विवाह, मानवीय संबध, व्यवहार आदि समाज में हमें बड़ी चतुराई से निभाना चाहिए इसका परिणाम बहुत घातक होता है । घर – परिवार समाज सब कुछ विखर जाता है।

'मुआवजा' कहानी संग्रह से समकालीन पीढ़ी यह सबक लेती है, आज की युवा पीढ़ी कई समस्याओं से जूझ रही है, जैसे – बेरोजगारी, गरीबी, ऐसी समस्याएँ हैं जिससे युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिलता है। आज की युवा पीढ़ी को मनोवैज्ञानिक ढंग से काम लेना चाहिए ।

'केंचुली' कहानी संग्रह में कई सामाजिक समस्याओं का समाधान डॉ0 शिरीष ने किया है जैसे दहेज समस्या पर । डॉ0 शिरीष ने प्रेम विवाह को बढ़ावा दिया है और पुरानी रूढ़ियों व परम्पराओं को बदलने के लिए नए-नए तर्क कहानियों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत किए हैं।

'सहमा हुआ कल' कहानी संग्रह में लेखिका ने समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों का समाधान किया है कि प्रेमी – प्रेमिका का होना कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि कृष्ण और राधा जी प्रेमी और प्रेमिका ही थे आज वर्तमान समाज अगर उस पुरानी पद्धति को अपनाना चाहती है तो इसमें बुरा क्या है। इससे समाज में व्याप्त कई समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा – दहेज समस्या, परिवार विघटन आदि ।

कहानी संग्रह 'शहर में अकेली लड़की' के लिए प्रख्यात शायर निदा फाजली से भारतीय समर साहित्य पुरस्कार ग्रहण करते हुये कथा लेखिका डॉ0 उर्मिला शिरीष

(ग) कथा साहित्य में डॉ0 उर्मिला शिरीष का गौरवान्वित व्यक्तित्व :-

यदि यह कहे कि डॉ0 उर्मिला शिरीष जातीयवाद, सम्प्रदायवाद, कुनवापरस्ती, भाई-भतीजावाद से विमुख मानव धर्म और मानवीयता के संघर्ष गाथा के पक्षधर का नाम है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । अतः डॉ0 शिरीष की सारी दृष्टि उनकी सारी चिन्ता-विचिंता इस बात का साक्ष्य है कि उर्मिला शिरीष हिन्दी में आज अकेली एक ऐसी हस्ती हैं जिसने अपने आपको सदैव निर्भीकों से मुक्त रखने का सफल प्रयास किया है। वह हमेशा नारी जाति की संघर्ष गाथा की पक्षधर रही है कि किस प्रकार नारी जाति का उत्थान हो सके ।

कहानीकारों में डॉ0 उर्मिला शिरीष का स्थान कथाकार, कहानीकार तथा सम्पादक के रूप में है। मन्नू भण्डारी, शिवानी, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, सूर्यवाला, कुसुम अंसल, कृष्णा अग्निहोत्री आदि कहानीकारों में डॉ0 उर्मिला शिरीष का भी स्थान है।

डॉ0 अंजनी कुमार दुबे 'भावुक' लिखते हैं -

"कहानी लेखन की एक अलग शैली, उर्मिला जी की कहानियों में देखने को मिलती है। मानवीय मन की तहदार गहराइयों में उतरते भावों को परत-दर-परत खुलता देखकर एक भारीपन सा लगता है।" (1)

---

1. पुस्तक समीक्षा – 16 से 31 मई 2004 (भोपाल)

'निर्वासन' एक कहानी ही डॉ0 उर्मिला शिरीष को आज के महिला लेखन में एक अलग स्थान दिलाने में समर्थ है।

आज हिन्दी संसार में तरह-तरह की कहानियाँ लिखी जा रही है। इन तमाम कहानियों के बीच उर्मिला शिरीष की ये कहानियाँ अपने समय और समाज की जरूरी चिंताओं से रूबरू होने के कारण पाठ्कों का ध्यान अपनी ओर खीचने में सक्षम है।

डॉ0 शिरीष की कहानियाँ मानवीयता, प्रेम और संवेदनशीलता में यकीन की कहानियाँ हैं। अपने-अपने तरीके से ये कहानियाँ आज के क्रूर होते समय के विरुद्ध नयी दुनिया बनाने की जरूरत पर जोर देने वाली कहानियाँ है। इसीलिए नारी संवेदना को लेकर लिखी कहानियों के कारण डॉ0 शिरीष का स्थान सर्वोच्च है।

सन्दर्भ ग्रन्थ – सूची/पत्र–पत्रिकाएँ

1. 'अक्षर विश्व' 52 / ऋतु चक्र / जून 1994

2. राष्ट्रीय सहारा – मनीषा शर्मा फरवरी 2004

3. लेख – प्रो0 हिन्दी विभाग कोच्चि केरला पृ0 6 (डॉ0 एम0 षण्मुखन)

4. पुस्तक समीक्षा (दैनिक भास्कर) 16 से 31 मई 2004 (भोपाल)